301

उच्चतर माध्यमिक पागठ्यक्रम

(Intermediate (TOSS) Course)

हिन्दी

(Hindi)

अध्यन सामग्री

(Books 1-2-3-4-क & 5ख)

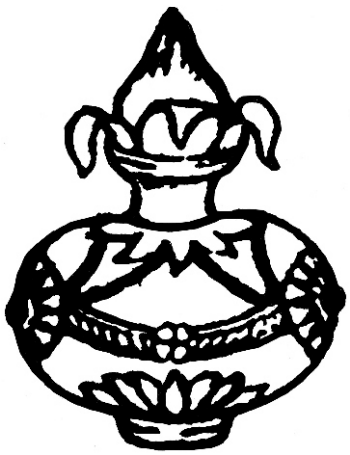

तेलंगाना मुक्त विधालयी शिक्षा संस्थान (TOSS) हैदरबाद

Telangana Open School Society ,SCERT Campus ,Opp .to L.B .Stadium ,Basheerbagh ,Hyderabad -500 001.

Phone :040-23299568 ,Swebsite :telanganaopenschool.org .E-mail :dirtoshyd@gmail.com

©TELANGANA OPEN SCHOOL SOCIETY
GOVERNMENT OF TELANGANA, HYDERABAD

First Print : 2013 (3000)
Second Print : 2015 (2008)
Third Print : 2016 (2213)
Reprint : 2017
Reprint : 2018
No .of Copies 1107

All Rights Reserved

No part of this publication may be reproduced ,stored in a retrieval system or transmitted ,in any form or by any means without the prior permission ,in writing of the publisher ,nor be otherwise circulated in any form of binding or cover.

Printed at :
Telangana Govenrment Text Book Press
Mint Compound ,Hyderabad.

Art & Design
Mhod. Abdullah Sulaiman, Quba Graphics, Hyd. 09704172672

FORE WARD

Education plays an important role in the modern society. Many innovations can be achieved through Education. Hence the Department of Education is giving equal importance to non-formal education through Open Distance Learning (ODL) mode on the lines of formal education. This is the first State Open School established in the country in the year 1991 offering courses up to Upper primary Level till 2008. From the academic year 2008-2009 SSC Course was introduced and Intermediate Course from the year 2010-2011. The qualified learners from the Open School are eligible for both higher studies and employment. So far 7,67,190 learners were enrolled in the Open Schools and 4,50,024 learners have successfully completed their courses.

With the aim of improving the administration at the grass-root level the Telangana Government re-organized the existing Districts and formed 31 new Districts. The formation of new Districts provide wide range of employment and Business opportunities besides self employment. Given the freedom and flexibilities available, the Open School system provides a second chance of learning for those who could not fulfill their dreams of formal education.

Government of Telangana is keen in providing quality education by supplying study materials along with the text books to enable the learners to take the exam with ease. Highly experienced professionals and subject experts are involved in preparing curriculum and study material based on subject wise blue prints. The study material for the academic year 2018-19 is being printed and supplied to all the learners throughout the state.

I wish the learners of Open School make best use of the study material to brighten their future opportunities and rise up to the occasion in building Bangaru Telangana.

With best wishes .....

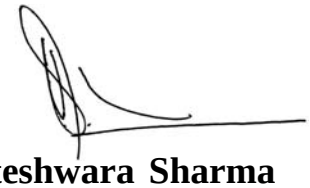

S. Venkateshwara Sharma
DIRECTOR,
Telangana Open School Society,
Hyderabad

301

हिंदी अध्ययन सामग्री निर्माण समिति

मुख्य संपादक

श्री. एस वेंकटेश**वरा** शर्मा
निदेषक
तेलंगाना मुक्त विद्यालयी षिक्षा संस्थान, हैदराबाद।

सलाहकार

डॉ. प्रभाकर त्रिपाठी एम.ए, पीएच. डी
सह आचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
हिन्दी महाविद्यालय, नल्लकुन्टा, हैदराबाद।

पाठ्य सामग्री संपादन

मुख्य संपादक

डॉ. घनष्याम एम.ए, एम.फिल, पीएच. डी,
सह आचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
बी.जे.आर सरकारी महाविद्यालय,
नामपल्ली, हैदराबाद।

सहायक संपादक

श्रीमती सी. पद्मजा एम.ए, एम.फिल
क्षेत्रीय समन्वय कर्ता,
तेलंगाना मु.वि. षिक्षा संस्थान
बषीरबाग, हैदराबाद।

पाठ्यसामग्री–लेखक

1. **डॉ. घनष्याम** एम.ए, एम.फिल, पीएच.डी
   सह आचार्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
   बी.जे.आर सरकारी महाविद्यालय,
   नामपल्ली, हैदराबाद।
2. **डॉ. रेणुका देवी सिंह** एम.ए., एम.ए, एम. ईडी एम.फिल, पीएच.डी
   गवर्नमेंट आई ए एस ई,
   मसाब टैंक, हैदराबाद।
3. **डॉ. सोनाली मेहता** एम.ए, पीएच.डी
   प्राध्यापक एवं उप प्राचार्य,
   सेईन्ट फ्रान्सिस जेवियर महा विद्यालय,
   बरकतपूरा, हैदराबाद।
4. **डॉ. टी.एस. अनिलकुमार** एम.ए, पीएच.डी
   प्रध्यापक, हिंदी विभाग,
   अरोरा महाविद्यालय,
   चिक्कडपल्ली, हैदराबाद।

5. **डॉ. लक्ष्मी उमारानी** एम.ए, पीएच.डी
प्राध्यापिका हिंदी विभाग,
हिंदी पण्डित प्रषिक्षण महाविद्यालय,
द.भा.हिं. प्रचार सभा,
खैरताबाद, हैदराबाद।

6. **श्री नन्दकुमार वैजवाडे** एम.ए
प्रधानाध्यापक,
धर्मवन्त हिंदी हाईस्कूल,
याकुतपुरा, हैदराबाद।

7. **श्रीमती जे जयश्री** एम.ए
विद्यालय सहायक, जि.हेच स्कूल,
काचिगूडा, हैदराबाद।

8. **श्रीमती जी. किरण** एम.ए
विद्यालय सहायक,
सरकारी हाईस्कूल फर डेफ,
मलकपेट, हैदराबाद।

9. **डॉ. राजीव कुमार सिंह** एम.ए, पीएच.डी
भाषा पण्डित – हिंदी,
केन्द्रीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,
मेड़चल, रंगारेड्डी।

10. **श्रीमती कविता** एम.ए

भाषा पण्डित – हिंदी,
जी. बी. हाईस्कूल, चादरघाट – 2,
आबिड्स, हैदराबाद।

11. **श्री के. षिवराजन** एम.ए
भाषा पण्डित – हिंदी,
उच्च प्राथमिक विद्यालय,
कोटगिरी मण्डल, जिला–निजामाबाद।

पाठ्यक्रम समन्वय

श्रीमती सी. पद्मजा एम.ए, एम.फिल
क्षेत्रीय समन्वय कर्ता,
तेलंगाना मु.वि. षिक्षा संस्थान
बषीरबाग, हैदराबाद।

301

HINDI Study Material Prescribed by

Chief Editor

Sri. S. Venkateswara Sharma
Director
Telangana State Open School Society, Hyderabad.

Advisor

Dr. Prabhakar Thripati M.A, Ph.D.
Reader & Head. Dept of Hindi
HINDI Mahavidyalaya, Nallakunta, Hyderabad

Editors of Study Material

Chief Editor

Dr. Ghanashyam M.A, Ph.D.
Reader & Head, Dept. Of Hindi
BJR Govt. Degree College
Nampally, Hyderabad – 1

Asst. Editor

Smt. C. Padmaja M.A, M.Phil.
Regional Co-ordinator
TOSS
Basheer Bagh, Hyderabad

Writers of the Study Material

1. **Dr. Ghanashyam** M.A, Ph.D
   Reader & Head, Dept. of Hindi,
   BJR Govt., Degree College,
   Nampally, Hyderabad.
2. **Dr. Renuka Devi Singh** M.A, M.A, M.Ed., M.Phil, Ph.D
   Lecturer Govt., IASE,
   Masab Tank, Hyderabad.
3. **Dr. Sonali Mehta** M.A, Ph.D
   Lecturer & Vice Principal,
   St. Francis Xevier Degree College,
   Barkathpura, Hyderabad.
4. **Dr. T. S. Anil Kumar** M.A, Ph.D
   Lecturer in Hindi,
   Arora Degree College,
   Chikkadapalli, Hyderabad.

5. **Dr. Laxmi Uma Rani** M.A, B.Ed., Ph.D
   Lecturer in Hindi,
   HPT College, DBHP Sabha,
   Khairatabad, Hyderabad.

6. **Sri Nandakumarvaijwade** M.A, B.Ed.
   Head Master,
   Dharmavanth High School,
   Yakuthpura, Hyderabad.

7. **Smt. J. Jayasree** M.A.
   School Asst, Hindi,
   Govt. High School]
   Kachiguda, Hyderabad.

8. **Smt. G. Kiran** M.A, B.Ed.
   School Asst, Hindi,
   Govt. High School for Deaf,
   Malakpet, Hyderabad

9. **Dr. Rajeev Kumar Singh** M.A, Ph.D
   L P. – Hindi,
   CUPS, Yadaram,
   Medchal, Ranga Reddy.

10. **Smt. Kavitha** M.A.
    L P. – Hindi,
    Govt. Boys High School,
    Chaderghat-2, Abids, Hyderabad.

11. **Sri K. Siva Rajan** M.A, B.Ed.
    L P. – Hindi,
    UPS, Suleman Nagar
    Kotagiri Mandal, Dist. Nizamabad

Course Co-Ordinator

Smt. C. PADMAJA M.A, M.Phil
Regional Co-Ordinator
Telangana Open School Society,
Basheer Bagh, Hyderabad.

हिंदी (301) अध्ययन सामग्री

विषय सूची

पुस्तक 1 – Book 1 – पृ.सं.

1. कविता कैसे पढ़ें – 1
2. रैदास – 5
3. तुलसीदास – 11
4. मीराँबाई – 17
5. रहीम – 21
6. गद्य कैसे पढ़ें – 25
7. एक था पेड़ और एक था ठूँठ – 35
8. दो कलाकार – 39
9. अच्छा कैसे लिखें – 48
10. सार कैसे करें – 58

पुस्तक 2 – Book 2 – पृ.सं.

11. बिहारी – 65
12. पद्माकर – 69
13. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – 73
14. महादेवी – 80
15. अनुराधा – 85
16. अनपढ़ बनाए रखने की साजिष – 89
17. पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ – 93
18. कुटल – 101
19. पत्र कैसे लिखें – 110
20. भाव पल्लवन – 119
21. प्रतिवेदन, टिप्पण और प्रारूपण – 126

पुस्तक 3 – Book 3 – पृ.सं.

22. रामधारी सिंह 'दिनकर' – 129
23. गजानन माधव मुक्तिबोध – 135
24. राजेंद्र उपाध्याय – 140
25. हिंदी कविता की विकास यात्रा – 146
26. क्रोध – 155
27. आखिरी चट्टान – 160
28. जिजीविषा की विजय – 164
29. निबंध कैसे लिखें – 171
30. तालिका, आरेख निर्माण .... आदि – 181
31. परियोजना कैसे लिखें – 187

पुस्तक 4 – Book 4 – पृ.सं.

32. विराटा की पद्मिनी – 192
33. तीन लघुकथाएँ – 198

पुस्तक 5क – Book 5A – पृ.सं.

सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी

34. सूचना प्रौद्योगिकी : स्वरूप और महत्व – 204
35. संचार माध्यम और उनके प्रकार – 209
36. संचार की प्रक्रिया – 212
37. संचार माध्यमों के प्रमुख अवयव – 216
38. संचार माध्यम की भाषा – 220

पुस्तक 5ख – Book 5B

विज्ञान की भाषा–हिंदी

34. वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक विकास – 223
35. भारतीय विज्ञान – 227
36. जनसंख्या वृद्धि और विज्ञान – 230
37. कंप्यूटर और हिंदी – 234
38. विज्ञान की भाषा – 23

1. कविता कैसे पढ़ें

1.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. कविता में भाव तत्व की प्रधानता होती है। कविता गद्य की अपेक्षा कम शब्दों और प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखी जाने के कारण व्यक्ति के मन पर अधिक प्रभाव डालती है।
2. कविता के दो महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं – भावपक्ष और कलापक्ष अर्थात् शिल्प–सौंदर्य।
3. जिसमें कवि की कल्पना, रस, विचार और संदेश शामिल होते हें, उसे भावपक्ष कहते हैं। छंद अलंकार, भाषा, शैली आदि कलापक्ष के अंतर्गत आते हैं।
4. कविता पढ़ने के लिए उसके रचनात्मक परिवेश, कवि का परिचय तथा रस, छंद, अलंकार आदि का ज्ञान आवश्यक होता है।
5. सस्वर पाठ से कविता का भाव स्पष्ट होता है तथा अर्थ खुलते हैं।
6. भाव और निहित रस के अनुसार ही भाषा में काव्य के अंग (छंद, अलंकार आदि) उभर कर सामने आते हें।
7. उससे कविता का शिल्प–सौंदर्य निखर उठता है।
8. कविता के मुख्य अवयव निम्नलिखित होते हैं :

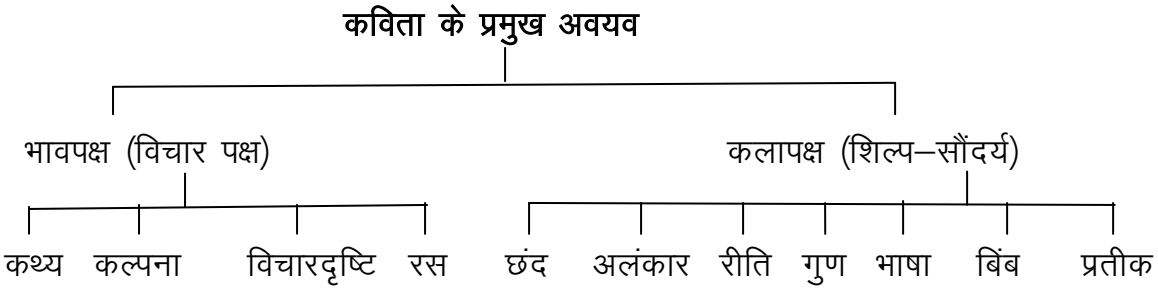

1.2. प्रश्न – उत्तर

4 अंक के प्रश्न

प्र.1. कविता का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उ. कविता के स्वरूप का निर्धारण इस तरह किया जा सकता है –

1. कविता में भाव तत्व की प्रधानता होती है।
2. कल्पना के मिश्रण से सौंदर्य चित्रण को कविता में सहज और ग्राह्य बनाया जाता है।
3. कविता में चिंतन और विचारों की जटिलता नहीं होती।
4. कविता की शब्दावली गद्य से विशिष्ट होती है। इसमें लयात्मकता होती है तथा शब्दों का संयोजन पाठक के हृदय को सहज रूप से छू जाता है।

5. कम–से–कम शब्दों में बड़ी–सी–बड़ी बात या समस्या को बहुत ही सुंदर ढंग से चित्रित किया जाता है।
6. कविता में केवल अर्थ ग्रहण कराकर बात को स्पष्ट करने की क्षमता ही नहीं होती, बल्कि इसके द्वारा बिंब–विधान भी किया जाता है। कविता का बिंब–विधान ही पाठक के मन में कविता के प्रभाव को स्थायित्व प्रदान करता है। बिंब एक प्रकार का शब्द चित्र होता है, जो कविता में ही उपस्थित होता है। इसी कारण कविता का अर्थ स्थिति की लाक्षणिकता के आधार पर ग्रहण किया जाता है।

प्र.2. कविता के भावपक्ष से आप क्या समझते हैं?

उ. भावपक्ष कविता का वह पक्ष है जिसमें कवि की कल्पना, रस, विचार और संदेश शामिल होते हैं। इन्हें हम तीन प्रमुख रूपों में देखते हैं – कथ्य, रस तथा विचार–दृष्टि। कथ्य का अर्थ होता है कविता में कही गयी बात। प्राचीनकाल में रस को कविता की आत्मा माना जाता था। किंतु आधुनिक कविता में रस अपने आप कथ्य और भाषा के कौशल से उत्पन्न हो जाता है। रस कविता का वह तत्व होता है जो पाठक के अंदर सोचे हुए स्थायी भावों को पगाकर कथ्य को ग्रहण कराने में सहायता पहुँचाता है। विचार–दृष्टि का अर्थ है, कवि किस चिंतन परंपरा से प्रभावित है या उसके विचारों में कौन से मूल तत्व है जो पूर्व चिंतन–परंपरा से उसके विचारों को जोड़ते अथवा अलग करते हैं। भाव पक्ष कविता का आधार और सबसे महत्वपूर्ण पक्ष माना जाता है। काव्य के भावपक्ष में कल्पना भी एक महत्वपूर्ण अवयव है। जो चीज वास्तव में नहीं होती कवि अपनी सोच के आधार पर उसका चित्र खींच देता है। इस प्रकार कविता का भावपक्ष महत्वपूर्ण पक्ष होता है।

प्र.3. प्रतीक तथा बिंब किसे कहते हैं?

उ. प्रतीक का अर्थ है किसी वस्तु के माध्यम से किसी अन्य वस्तु अथवा घटना संबंधित बात का कहा जाना। उदा :– सूरदास ने 'भ्रमरगीत' में बार–बार भ्रमर शब्द का प्रयोग किया है। भ्रमर का रंग श्याम (काला) होता है। उद्धव और कृष्ण का रंग भी श्याम था। भौरे का स्वभाव है फूलों का रसपान करना। अर्थात् गोपियाँ भौंरे के माध्यम से उद्धव पर व्यंग्य करती है। यहाँ भ्रमर प्रतीक के रूप में है।

बिंब का अर्थ होता है 'परछाई' अर्थात भाषा कौशल के द्वारा किसी स्थिति का चित्र खींचा जाना। जब बात कहने पर चित्र स्पष्ट होने लगे तो उसे बिंब कहते हैं। कई बार कविता पढ़ते समय ऐसा अनुभव होता है कि जो बात कही जा रही है उससे कई बातों का आभास मिल रहा है। दूसरी स्थितियों और घटनाओं के चित्र भी सामने उभरते चले जाते हैं। इसी भाषा–कौशल को बिंब कहते हैं।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. कविता पढ़ने के लिए किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ?

उ. कविता को पढ़ने का अंदाज कविता को कठिन और आसान बनाता है। इसीलिए कविता को ठीक से समझने और आनंद प्राप्त करने के लिए कविता को उचित लय, तान के साथ पढ़ना जरूरी है। कविता पढ़ने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना जरूरी है –

- कविता पढ़ने का उद्‌देश्य सिर्फ शब्दों के अर्थ जान लेने या व्याख्या समझ लेने से पूरा नहीं होता बल्कि कवि द्‌वारा व्यक्त भावनाओं तक पहुँचकर उसके द्‌वारा कही गयी बात ग्रहण करने से होता है। इसके लिए यह जानना आवश्यक है कि कवि ने किस परिस्थिति अथवा किस वातावरण में कविता लिखी है। जैसे :– स्वतंत्रता संग्राम के समय की कविताओं को पढ़ते समय उस समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त कर ली जाय तो कविता में कही गयी बातें अपने आप स्पष्ट हो जाती है। इसीलिए कविता पढ़ते समय उसके रचनाकार और रचनात्मक परिवेश की भी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।
- कवि का संक्षिप्त परिचय भी प्राप्त करना चाहिए। इससे कविता में निहित रस, विचार दृष्टि तथा भावात्मक तत्वों को समझने में सहायता मिलती है।
- कविता का सस्वर वाचन करना चाहिए। इससे उचित लय, गति आदि से तथा पढ़ने की उचित शैली से कविता को आसानी से समझा जा सकता है। कविता में नाद–सौंदर्य के आ जाने से भाषा संबंधी छोटी–मोटी जटिलताएँ अपने आप स्पष्ट हो जाती है।
- कविता के कलापक्ष को समझने के लिए भाषा, छंद, अलंकार तथा प्रतीक–बिंबों की स्पष्ट समझ आवश्यक होती है। कलात्मक समझ के बिना कविता में कही गई बात को विस्तार और गहराई से ग्रहण करना संभव नहीं होता।
- कविता की भाषा को भी समझने का प्रयास करना चाहिए। कविता की भाषा का अर्थ केवल शब्दों के अर्थ जानना नहीं है, बल्कि भाषा के माध्यम से चित्रात्मकता तथा भावात्मकता की अभिव्यक्ति का विश्लेषण भी होना चाहिए।
- संबंधित कविता के समान कोई और पढ़ी हुई कविता ध्यान में आ रही हो तो उससे प्रस्तुत कविता की तुलना की जानी चाहिए तथा दोनों में समानता और असमानता का अध्ययन किया जाना चाहिए।

इस प्रकार कविता पढ़ने के लिए साहित्य तथा अन्य विषयों की भी गहन जानकारी आवश्यक होती है। कविता पढ़ने का अर्थ है कवि की उस मनःस्थिति तक पहुँचने की कोशिश करना, जिसमें रमकर कवि ने रचना की है। अर्थात कवि की अनुभूति को समझने की कोशिश करना।

प्र.2. कविता के कलापक्ष के तत्वों का विश्लेषण कीजिए।

उ. कलापक्ष कविता का वह पक्ष होता है जिसके द्वारा कवि अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। कितने कलात्मक ढंग से और किन वस्तुओं के उत्कृष्ट प्रयोग से कवि ने अपनी बात को अभिव्यक्त करने की कोशिश की है, वह कलापक्ष के अन्तर्गत दिखाई देता है। कलापक्ष में भाषा शैली, छंद, अलंकार आदि प्रमुख तत्व होते हैं।

1. **भाषा शैली** :– कविता की भाषा विशिष्ट होती है। कम से कम शब्दों और प्रवाहपूर्ण भाषा में जब कवि अपनी बात कहता है तो वह कविता का रूप ले लेती है। इस प्रकार कलापक्ष के अंतर्गत भाषा का बारीकी से अध्ययन किया जाता है क्योंकि इसी के माध्यम से कवि द्वारा कही गयी बात स्पष्ट होती है। भाषा को कवि ने किस कौशल और कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है वह कवि की शैली कही जाती है।
2. **छंद** :– प्राचीन समय में कविता को छंदों के माध्यम से रचा जाता था। छंद का अर्थ होता है भाषा के लयात्मक रूप को एक निश्चित ढाँचे में बाँध कर रखना, जैसे – चौपाई, सोरठा, सवैया आदि छंदों के कुछ भेद है। कुछ छंदों में मात्राओं की गणना की जाती है और कुछ छंदों को वर्णों की संख्या के आधार पर पहचाना जाता है। मात्रा के आधार पर रचे गए छंदों को 'मात्रिक छंद' तथा वर्णों के आधार पर रचे गए छंदों को 'वार्णिक छंद' कहते हैं।
   छायावाद युग के बाद छंदों का प्रचलन कम हो गया है। आधुनिक कविता का स्वरूप मुक्त छंद हो गया है।

3. **अलंकार** :– प्राचीन कविता में कवि भाषा कौशल से अलंकारों का सृजन करते थे किंतु अब कवि अलंकारों पर ध्यान नहीं देते। कवि के भाषा कौशल तथा कथ्य की भंगिमा के कारण अलंकारों की सहज उत्पत्ति को रोका नहीं जा सकता। आज अलंकार कविता के महत्वपूर्ण अंग न होते हुए भी एक महत्वपूर्ण अवयव के रूप में अवश्य माने जाते हैं।
4. **अन्य** :– आधुनिक कविता में रस, छंद, अलंकारों का प्रयोग नहीं किया जाता है, किंतु कुछ ऐसे तत्व हैं जिन्हें जानबूझ कर कविता में लाने का प्रयास किया जाता है। इन तत्वों में मुख्य है प्रतीक और बिंब।

   प्रतीक का अर्थ है किसी वस्तु के माध्यम से किसी अन्य वस्तु अथवा घटना से संबंधित बात का कहा जाना। जैसे :– भौरे के माध्यम से उद्धव पर व्यंग्य करना।

   बिंब का अर्थ होता है परछाई अर्थात भाषा कौशल के द्वारा किसी स्थिति का चित्र खींचा जाना। जब बात कहने से चित्र स्पष्ट होने लगते हैं तो उसे बिंब कहते हैं।

   इस प्रकार सभी तत्व कविता की रचना में सहयोग प्रदान करते हैं।

2. रैदास

2.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. रैदास द्वारा रचित पदों और दोहों में भक्ति रस का माधुर्य भाव भरा हुआ है, जिन्हें सस्वर गाया जा सकता है।
2. रैदास के पद और दोहे भक्ति भाव से परिपूर्ण हैं। इनमें सदैव इस बात पर बल दिया कि किसी भी कुल में जन्म लेने से कुछ नहीं होता। सच्ची भक्ति मात्र से मानव उच्च श्रेयस्कर पद प्राप्त कर सकता है।
3. ईश्वर–भक्ति ही सच्ची भक्ति है, जब भक्त और ईश्वर में कोई भेद नहीं रह जाता तब ही मनुष्य की भक्ति सार्थक सिद्ध होती है।
4. भक्त और भगवान के संबंध को कवि रैदास ने अलग–अलग ढंग से स्पष्ट करने की चेष्टा की है, जैसे – चंदन–पानी, घन–मोर, दीपक–बाती, मोती–धागा, चाँद–चकोर, सोना–सुहागा आदि।
5. रैदास ने अपनी काव्य रचनाओं में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। जिसमें यत्र–तत्र अवधी की शब्दावली भी है। वैसे आपने जगह–जगह अरबी और फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया है।
6. रैदास ने काव्य की रचनापदों और दोहों के रूप में की। दोहे में दो–दो चरणों के दो–दो दल अर्थात चार चरण होते हैं। इसके विषय चरणों अर्थात् पहले और तीसरे चरण में 13–13 तथा सम चरणों अर्थात दूसरे और चौथे चरण में 11–11 मात्राएँ होती हैं।

2.2. प्रश्न – उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. संत रैदास द्वारा ईश्वर की उपमा कई उपमानों द्वारा दी गयी है किसी एक उदाहरण को प्रस्तुत कीजिए।

उ. मोती, दीपक, चाँद।

प्र.2. "भक्ति मार्ग में ऊँच–नीच एवं जाति–पाँति का भेद नहीं होता।" कवि रैदास के अलावा उनके समकालीन किस कवि ने इस मत का प्रचार किया?

उ कबीरदास

प्र.3. संत रैदास किस काल के कवि है?

उ. संत रैदास भक्तिकाल की निर्गुण भक्ति धारा की ज्ञान मार्गी शाखा के कवि है।

प्र.4. "जिनि पिआ सार रसु, तजै आनरस होई।" में कौन सा अलंकार है?

उ सार रसु में रूपक अलंकार है।

प्र.5. 'सार रस' से कवि रैदास का क्या तात्पर्य है?

उ भक्ति रस

प्र.6. कवि रैदास का लेखन किस भाषा में है?

(i) ब्रजभाषा (ii) डिंगल एवं पिंगल

(iii) अवधी (iv) खड़ी बोली हिंदी

उ ब्रज भाषा

प्र.7. "तजै आनु रस होई रसमगन डारे बिखु खोई।"

'बिखु खोई' में कौन सा अलंकार है?

(i) रूपक (ii) उपमा (iii) उत्प्रेक्षा (iv) दृष्टांत

उ रूपक अलंकार।

प्र.8. कवि रैदास ने प्रभु जी को चंदन और स्वयं को क्या माना है? उचित विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए।

(i) घन (ii) संपत्ति (iii) पानी (iv) अग्नि

उ (iii) पानी

प्र.9. मनुष्य के पास काम–क्रोध से मुक्ति प्राप्त करने का एक मात्र रास्ता है।

(i) स्वयं पर नियंत्रण (ii) उच्च कुल में जन्म लेना

(iii) ईश्वर का स्मरण करना (iv) माया मोह में फँसे रहना

उचित विकल्प चुन कर प्रश्न का उत्तर दीजिए।

उ (iii) ईश्वर का स्मरण करना।

प्र.10. एक शब्द में उत्तर दीजिए।

(i) हरि सा हीरा का अर्थ है –

उत्तर : हीरे समान अमूल्य ईश्वर

(ii) 'तेनर जमपुरि जाइसी' में 'जमपुरि' का अर्थ क्या है?

उत्तर : यम नगरी अर्थात् यमलोक।

(iii) 'चितवत चंद चकोरा' में किसके मिलन की ओर कवि का इशारा है?

उत्तर : चन्द्रमाँ और चातक पक्षी

(iv) 'गुन सब तोर, मोर सब औगुन' में 'मोर' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : मोर अर्थात् मेरा (स्वयं का)

प्र.11. रैदास की रचनाओं में ब्रज भाषा के अलावा कौन सी भाषा की शब्दावली का यत्र–तत्र प्रयोग मिलता है?

उ. अवधी, अरबी और फारसी

प्र.12. उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए।

''हरि सा हीरा छाँड़ि करि, करैं आन की आस।' में कुल कितनी मात्राएँ है?

(i) 13 (ii) 24 (iii) 11 (iv) 22

उ. 24

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. कवि रैदास ने किस दोहे में जीव के संसार में आवागमन की बात कही है?

उ. ''हरि सा हीरा छाड़ि करि करैं आन की आस।
ते नर जमपुरि जाइसी सति भाषै रैदास।।

प्र.2. दोहे में दो चरणों के दो दल होते हैं। (i) इनके विषम चरणों में कितनी मात्राएँ होती है? (ii) इनके सम चरणों में कितनी मात्राएँ होती है?

उ. (i) विषम चरणों में – 13 – 13 मात्रा
(ii) सम चरणों में – 11 – 11 मात्रा

प्र.3. सदाचरण के लिए कवि रैदास ने किसको त्याज्य माना है?

उ. काम, क्रोध, लोभ, मोह

प्र.4. कवि रैदास के अनुसार मनुष्य के बड़प्पन की कसौटी क्या है?

उ. चिंतन, आचरण और कर्म

प्र.5. ''सब घर अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना।।''

दास्य भाव से की गयी भक्ति का एक और उदाहरण देते हुए रैदास के प्रस्तुत दोहे की तुलना में कबीरदास जी का एक दोहा लिखिए।

उ ''सो साईं तन में बसै, भ्रम्यो न जणैं तास।
कहैं कबीर विचार करि जिन कोई खोजें दूरि।।''

प्र.6. ज्ञान मार्गी शाखा के तीन प्रमुख कवियों के नाम लिखिए –

उ. (1) कबीरदास (2) रैदास (3) सहजोबाई

प्र.7. रैदास ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए कौन से अलंकारों का प्रयोग किया है?

उ. (1) उपमा अलंकार (2) रूपक अलंकार (3) दृष्टांत अलंकार

प्र.8. प्रस्तुत पंक्ति में मात्रा की गिनती कीजिए।

''हरि सा हीरा छाँड़ि करि, करैं आन की आस।'

उ. 11 ऽ ऽऽ ऽ। ।। ।ऽ ऽ। ऽ ऽ।
हरि सा हीरा छाँड़ि करि, करैं आन की आस
कुल 24 मात्राएँ

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. संत रैदास ने किस योनि को सर्वश्रेष्ठ माना है? और क्यों?

उ संत कवि रैदास ने मनुष्य योनि को सर्वश्रेष्ठ माना है और उनके अनुसार यही जन्म भगवद् भक्ति और साधना के लिए सुअवसर प्रदान करता है। मानव शरीर मिलने पर ईश्वर की भक्ति अधिक से अधिक की जा सकती है, ईश्वर के निकट पहुँचा जा सकता है तथा मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

प्र.2. सच्चे भक्त का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ कवि रैदास के अनुसार माया–मोह से घिरा व्यक्ति निश्चित ही नरक कुंड में जाएगा एवं संसार में भी घृणा का पात्र होगा। सच्चा भक्त यदि छोटी जाति में भी जन्म ले परंतु उच्च संस्कार विकसित करे एवं अपने हृदय में ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम रखे तो उसके ज्ञान–चक्षु अवश्य खुल जाएँगे। वह ईश्वर को पहचान लेगा तभी सच्चा भक्त कहलाएगा। कवि के कहने का तात्पर्य है – ''जाति–पाँति पूछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।''

प्र.3. संत रैदास भारतीय अद्वैत वेदांत के समर्थक थे। प्रमाणित कीजिए।

उ संत रैदास भारतीय अद्वैत वेदांत के समर्थक थे। उनके अनुसार आत्मा और ब्रह्म दोनों एक ही है दोनों में कोई अंतर नहीं है। आत्मा माया में लिप्त होने के कारण ही जीवन कहलाती है। जीव माया में लिप्त रहता है और नाशवान है। चंचल है, अस्थिर है। ब्रह्म निर्गुण है, अचल है, अटल है। इसी भाव को प्रमाणित करने के लिए कवि रैदास के पद की पंक्ति प्रस्तुत है – ''सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना।'' कवि रैदास ने ईश्वर के निराकार रूप को स्वीकार किया है। जिसका न आदि है न अंत।

प्र.4. ''पंडित सूर छत्रपति राजा भगत।
बराबरि अउरू न कोई।।''

पंक्तियों में कवि रैदास ने भक्त की महत्ता किस प्रकार बतायी है?

उ. कवि रैदास भक्त की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि पंडित, वीर, छत्रपतिराजा कोई भी क्यों न हो, वह भक्त की बराबरी नहीं कर सकता। भक्त का स्थान इन सबसे ऊपर है। जैसे जल में कमल का पत्ता रहता है, जो जल में ही पैदा होता है और जल ही में प्राण त्याग देता है। वह पत्ता जल से प्राण–शक्ति ग्रहण तो करता है परंतु जल की एक बूँद अपने ऊपर ठहरने नहीं देता और जल के ऊपर तैरता रहता है। इसी संसार में पैदा होकर, इसी में रहते हुए संसार से निरपेक्ष रह कर भक्ति में लीन रहने के कारण भक्त की बराबरी कोई नहीं कर सकता।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए –

''हरि सा हीरा छाड़ि करि करैं आन की आस।
ते नर जमपुरि जाइसी सति भाषै रैदास।''

उ. **संदर्भ** :– प्रस्तुत दोहे में कवि रैदास ईश्वर भक्ति की महिमा का गुणवान करते हैं।

प्रसंग :– प्रस्तुत दोहे में कवि का भाव है कि ईश्वर–भक्ति में वह शक्ति है, जिसके द्वारा भक्त को मोक्ष प्राप्त होता है जबकि अन्य सांसारिक बंधनों में फँसने से उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है।

व्याख्या :– संत कवि रैदास का कथन सत्य ही प्रतीत होता है। उनके अनुसार हमें इस संसार के जन्म–जन्मांतर के आवागमन के चक्कर से बचना है और मोक्ष की ओर जाना है तो एक मात्र मार्ग ईश्वर–भक्ति है। कवि ने ईश्वर की भक्ति को हीरे के समान माना है जो बड़े यत्नों के बाद मिलता है। उसे छोड़कर सांसारिक मोह–माया में अपने चित्त को लगाने वाला व्यक्ति निश्चित ही यमलोक जाएगा, मोक्ष नहीं। कवि के अनुसार ईश्वर–भक्ति ऐसी अमूल्य वस्तु है जिसके सामने सभी सांसरिक वस्तुएँ तुच्छ है। यदि हम इस माया में उलझ गए तो इस लोक में आवागमन बना रहेगा।

विशेषता :– (1) प्रस्तुत दोहे में उपमा अलंकार है – ''हरि सा हीरा'' ऐसा माना जाता है वस्तुओं में सबसे मूल्यवान हीरा है। अतः हरि की भक्ति हीरे के समान है, तो अन्य सांसारिक वस्तुएँ उसके सामने तुच्छ है।

(2) भाषा – ब्रज भाषा

प्र.2. संत कवि रैदास का महत्व स्पष्ट कीजिए।

उ. संत किसी देश या जाति के नहीं, अपितु पूरे मानव समाज की अमूल्य संपत्ति होते हैं। कवि रैदास भी मूलतः संत थे उन्होंने काव्य रचना को कभी अपने जीवन का उद्‌देश्य नहीं रखा। वे मूलतः संत थे और साधना में लीन रहते थे। उनकी भक्ति सहज और सरल थी। वे निराकार ब्रह्म में विश्वास रखते थे। उन्हें भले ही पोथी ज्ञान न रहा हो परंतु उनकी वाणी में ओज था। वे अध्यात्म की जिस ऊँचाई तक पहुँचे वहाँ तक कुछ बिरले संत साधक ही पहुँच सकते हैं। उन्होंने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए जिस काव्य की रचना की वह संत परंपरा के किसी कवि की तुलना में कम नहीं थी। अपनी अनुभूतियों के संप्रेषण के लिए उन्होंने भावनाओं को सहज रूप में लिया और अपनी रचनाओं में व्यंजनाओं का प्रयोग किया जैसे –

हरि सा हीरा छाँड़ि करि करैं आन की आस।
ते नर जमपुरि जाइसी सति भावै रैदास।।

कवि रैदास के काव्य में रसानुभूति और आध्यात्मिक विचारों की झलक है। उनके सभी पद गेय हैं और अद्‌भुत राग–रागनियों में बँधे हुए हैं। संत कवि रैदास के काव्य में वैराग्य और

साधना से युक्त भाषा में विनम्रता और आत्मसम्मान का भाव है। रैदास ने भक्ति के क्षेत्र में 'अष्ठांग साधना' को अपनाया, जिसमें सदन, सेवा, सत्त, नाम, ध्यान, प्रणति, प्रेम तथा विलय को अंग के रूप में स्वीकार किया। वर्तमान संदर्भों में भी कवि रैदास का महत्व अमूल्य है। आज भी उनके विचारों तथा दिखलाए गए मार्ग की समाज को आवश्यकता है। वे साहित्य और भक्ति के क्षेत्र का एक विलक्षण हीरा है।

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. संदर्भ सहित व्याख्या।

पद 3 – प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग–अंग बास समानी।
प्रभुजी तुम धन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै 'रैदासा।'

उ. **संदर्भ** :– प्रस्तुत पद कवि रैदास द्वारा रचित है। संत कवि रैदास सामूहिक जन चेतना को जाग्रत करके, शोषित मानवता में नवीन स्फूर्ति का संचार करने वाले कवि माने जाते हैं। संत रैदास की रचनाओं में भक्ति–भाव के दर्शन होते हैं।

व्याख्या :– संत रैदास ने उपर्युक्त पद में ईश्वर और भक्त का अटूट संबंध व्यक्त किया है। उनके अनुसार भक्ति की भावना ही सबसे ऊपर है। भक्त की स्थिति पपीहे की भाँति है, जो स्वाति की बूँद रूपी ईश्वर के लिए एकाग्र होकर प्रतीक्षा करता है। भक्त और भगवान का मिलन चंदन और पानी के समान होना चाहिए। अन्य उदाहरण देते हुए कवि दीपक–बाती, सोना–सुहागा, मोती–धागा के माध्यम से दास और ईश्वर के संबंध को प्रस्तुत करते हैं।

कवि सिद्ध करना चाहते हैं कि भक्त का महत्व तभी बढ़ता है जब ईश्वर से संपर्क होता है। दोनों एक दूसरे से अनन्य रूप से जुड़े हुए हैं।

विशेषता :– अलंकार – द्रष्टांत अलंकार – प्रस्तुत पद में ईश्वर की चंदन, बादल, चाँद, दीपक, माती, सोने (स्वर्ण) और स्वामी से तथा भक्त की पानी, मोर, चकोर, बाती, धागे, सुहागे और सेवक से उदाहरण सहित तुलना की गई है। जब काव्य में दो प्रसिद्ध व्यक्तियों अथवा वस्तुओं की तुलना दृष्टांत द्वारा अर्थात् उदाहरण प्रस्तुत करके की जाती है तब दृष्टांत अलंकार होता है।

3. तुलसीदास

3.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. राम और भरत में परस्पर गहरा प्रेम है। भरत के मन में राम के प्रति आदर भाव है और वे चाहते हैं कि राम अयोध्या वापस लौट चले और उनके साथ ही रहें।
2. आवेश में कैकई के प्रति कहे वचनों के लिए भरत के मन में पश्चाताप भी है।
3. तुलसी की भाषा और कथन भंगिनाओं की भी आपने अनेक विशेषताएँ पढ़ी। कवि शब्दों का प्रयोग बड़ी चातुरी से करता है। मनोभावों के चित्रण में वह सिद्धहस्त है।
4. अनुप्रास के अतिरिक्त उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टांत आदि अलंकारों का तुलसी दास ने अपने काव्य में सुंदर प्रयोग किया है।
5. तुलसी ने रामचरित मानस की रचना अवधी भाषा में की है।

3.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. भरत के अनुसार कौन–सी विशेषता राम के स्वभाव की है?

(क) वे अपराधी पर क्रोध नहीं करते हैं।
(ख) वे भरत का दिल दुखाते हैं।
(ग) वे लक्ष्मण से अधिक प्रेम करते हैं।
उपयुक्त विकल्प का चयन करके प्रश्न का उत्तर दीजिए।

उ. (क) वे अपराधी पर क्रोध नहीं करते हैं।

प्र.2. 'नीरज नयन'नेह जल बाढ़े' कथन में कौन सा अलंकार नहीं है?

(क) उपमा (ख) रूपक (ग) उत्प्रेक्षा
उपयुक्त उत्तर चुनकर दीजिए।

उ. (ग) उत्प्रेक्षा

प्र.3. 'रामचरितमानस' में कौन से छंद का प्रयोग सबसे अधिक किया गया है? उपयुक्त उत्तर का चुनाव कीजिए।

(क) सवैया (ख) चौपाई (ग) घनाक्षरी

उ. (ख) चौपाई

प्र.4. 'नीरज नयन नेह जल बाढ़े' में 'नीरज नयन' में कौन सा अलंकार है? उपयुक्त उत्तर का चुनाव कीजिए।

(क) रूपक (ख) उपमा (ग) भ्रांतिमान

उ. (ख) उपमा

प्र.5. 'नीरज नयन नेह जल बाढ़े' में 'नेह जल' में कौन सा अलंकार है? उपयुक्त उत्तर का चुनाव कीजिए।

(क) अनुप्रास (ख) रूपक (ग) उत्प्रेक्षा

उ. (ख) रूपक

प्र.6. भरत माँ के प्रति अपराध भाव से ग्रस्त है, क्योंकि –

(क) कैकेयी ने राम को वनवास दिया।

(ख) कैकेयी ने भरत से परामर्श नहीं किया

(ग) भरत कैकेयी को भी चित्रकूट ले आया

उ. कैकेयी ने राम को वनवास दिया।

प्र.7. 'प्रभुकृपा की रीति' किस पंक्ति से प्रकट होती है।

(क) नीरज नयन नेह जल बाढ़े (ग) हारेहुँ खेल जितावहिं मोहि

(ख) लागत मोहि नीक परिनामू

उ. (ग) हारेहुँ खेल जितावहिं मोहि।

प्र.8. 'परिपाकू' के पर्यायवाची बताइए।

उ. फल, परिणाम।

प्र.9. 'प्रपंचु' का अर्थ क्या है?

उ. छल या कपट

प्र.10. कवि तुलसीदास ने प्रभु राम की आँखों की तुलना किस पुष्प से की है?

उ. नीरज अर्थात् कमल

प्र.11. 'नीरज' के दो पर्यायवाची शब्द बताइए।

उ. कमल, सरोज, जलज

प्र.12. 'भातृ' के समानार्थी शब्द बताइए।

उ. भाई, भ्राता।

प्र.13. 'पग–पग पर' में कौन सा अलंकार है?

उ. अनुप्रास अलंकार

प्र.14. चौपाई छंद में कितने चरण होते हैं?

उ. दो चरण

प्र.15. चौपाई छंद के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती है?

उ. 16–16

प्र.16. कवि तुलसीदास किस काल के कवि हैं?

उ. भक्तिकाल

प्र.17. तुलसीदास भक्तिकाल की किस धारा के कवि हैं?

उ. सगुण भक्ति धारा

प्र.18. 'रामचरितमानस' के अतिरिक्त कवि तुलसीदास की दो रचनाओं के नाम बताइए।

उ. (i) दोहावली (ii) कवितावली

प्र.19. रामभक्त कवियों में प्रमुख कवि कौन है?

उ. तुलसीदास

प्र.20. तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य कौन–सा है?

उ. रामचरितमानस

प्र.21. भरत किसके पुत्र थे?

उ. कैकेयी

प्र.22. तुलसीदास के इष्ट देवता कौन है?

उ. राम

प्र.23. तुलसीदास द्वारा लिखित सवैये किस भाषा में है?

उ. ब्रजभाषा

प्र.24. तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' किस भाषा में लिखा गया है?

उ. अवधी भाषा।

प्र.25. दोहावली, कवितावली, विनयपत्रिका ग्रंथ किस भाषा में लिखे गये हैं।

उ. ब्रज भाषा

प्र.26. कबीर, सूर, तुलसी, मीरा ये सब किस काल के कवि हैं?

उ भक्तिकाल

प्र.27. तुलसी किस ईश्वर के उपासक हैं?

उ. सगुण

प्र.28. तुलसीदास जी किसके भक्त हैं?

उ. राम

प्र.29. 'सुचाली' का अर्थ सदाचारी होता है, तो 'कुचाली' का अर्थ क्या होगा?

उ. दुराचारी

प्र.30. 'उदधि' के दो पर्यायवाची शब्द बताईए।

उ. समुद्र एवं सागर

प्र.31. 'अघ' अर्थात् 'पाप'।

'पाप' का विलोम शब्द बताईए?

उ. पुण्य

प्र.32. 'खेलत खुनिस न कबहूँ देखी' में 'खुनिस' का अर्थ क्या है?

उ. खुनिस – रंजिश, दुश्मनी, अप्रसन्नता

प्र.33. 'कहब मोर मुनिनाथ निबाहा' में 'मुनिनाथ' किसके संदर्भ में कहा गया है?

उ. गुरु वशिष्ठ के संदर्भ में।

प्र.34. 'तृप्ति' का अर्थ है 'तृप्त'

'तृप्त' का विलोम शब्द क्या होगा?

उ. अतृप्त

प्र.35. किसके कहने पर राजा दशरथ ने श्रीराम को वनवास गमन का आदेश दिया था?

उ. कैकेयी

प्र.36. भरत को अपनी माता कैकेयी द्वारा की गयी गलतियों से मन में कौन सा भाव उत्पन्न हो रहा था?

उ आत्मग्लानि।

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू' में छिपे अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

उ. भरत कहते हैं मेरे बड़े भाई श्रीराम ने बचपन से आज तक कभी मेरा मन नहीं दुखाया और मुझे विश्वास है वो आज भी मेरा मन नहीं दुखाएँगे एवं अयोध्या वापस लौट आएँगे।

4 अंक के प्रश्न

प्र.1. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित अलंकारों के नाम बताईए।

उ. (क) सुनि मुनि वचन राम रुख पाई।

(ख) नीरज नयन नेह जल बाढ़े।

(ग) मोर अभाग उदधि अवगाहू।

(घ) फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली।।

उ. (क) अनुप्रास अलंकार

(ख) उपमा, रूपक, अनुप्रास अलंकार

(ग) उपमा अलंकार

(घ) दृष्टांत अलंकार

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. प्रस्तुत पंक्तियों में मात्राओं की गणना कीजिए एवं छंद का नाम बताईए।

पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े।
नीरज नयन नेह जल बाढ़े।।
। । । । ऽ। । ऽ ।। ऽऽ

उ. (i) पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। = 16 मात्राएँ अंत में दो गुरु
ऽ ।। ।।। ऽ। ।। ऽऽ
नीरज नयन नेह जल बाढ़े। = 16 मात्राएँ अंत में दो गुरु

(ii) प्रस्तुत चौपाई मात्रिक छंद है।

7 अंक के प्रश्न

प्र.2. "महूँ सनेह संकोच बस, सनमुख कही न बैन।
दरसन तृपित न आजु लगि, प्रेम पिआसे नैन।।"
प्रस्तुत दोहे का भाव स्पष्ट कीजिए।

उ. **प्रसंग** :– कैकेयी को दिये वचनों का पालन करते हुए राजा दशरथ ने श्रीराम को वनवास गमन की आज्ञा दी थी। तब श्रीराम के वनवास चले जाने पर भरत बड़े दुःखी थे एवं श्रीराम को वापस लाना चाहते थे। भरत मुनि वशिष्ठ, माता कैकेयी एवं अयोध्यावासियों को लेकर चित्रकूट गए और वहाँ श्रीराम से लौट आने का आग्रह किया।

भाव :– भरत श्रीराम के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहते हें कि मैंने प्रेम और संकोच के कारण श्रीराम के सामने कभी मुख नहीं खोला। शिष्टाचार की परंपरा रही है कि बड़ों के सामने उद्दंड व्यवहार नहीं किया जाता। बड़ों के सामने मुख खोलना बड़ों का अनादर करना है। भरत कहते हैं मैं तो बस बड़े भाई श्रीराम के दर्शन ही करता रहा हूँ परंतु आज तक उनके दर्शनों से तृप्त नहीं हुआ। मेरी आँखें सदा राम के प्रेम की प्यासी ही बनी रहीं।

विशेष :– तुलसीदास जी रामचरितमानस कथा से आदर्श व्यवहार और आचरण की सीख देते हैं। इस अंश में भाइयों का परस्पर प्रेम झलकता है तथा गुरुजनों के सम्मान की सीख भी दी गयी है जा`आज के संदर्भ में उपयुक्त और प्रासंगिक है।

प्र.3. प्रस्तुत दोहे का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
"साधु सभा गुर प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ।
प्रेम प्रपंच कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ।।"

उ. **प्रसंग** :– नानिहाल से अयोध्या लौटने के बाद जब भरत को राम के वन गमन की सूचना मिली, तब उन्होंने अपनी माँ कैकेयी को बहुत बुरा–भला कहा था। उनको वह क्रोध और आवेश तात्कालिक था। वे माँ के प्रति दुर्व्यवहार के दोषी हो गए थे। अपने को कोसते हुए वे कहना

चाहते हैं कि माँ को भला बुरा कहकर वे पाप के भागी हैं और अपने हृदय में भलाई के उपाय ढूँढ़–ढूँढ़ कर हार गए हैं एवं उन्हें कोई उपाय ही नहीं सूझता।

अर्थ :– भरत स्वयं को दोषी जानकर कहते हैं समर्थ गुरु निकट बैठे हैं और भाई राम तथा भाभी सीता मेरे स्वामी हैं। इस सुयोग को देखकर मुझे विश्वास है जो भी परिणाम होगा अच्छा होगा। यह स्थान चित्रकूट पवित्र स्थल है और मैं जो कुछ कह रहा हूँ उसके पीछे भी सात्विक भाव है। मुनिवर वशिष्ठ जी और भाई राम यह भली–भाँति जानते हैं कि मेरी बातें प्रेम से भरी है या छल से, झूठी हैं या सच्ची।

10 अंक के प्रश्न

प्र.4. निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

''बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा।
नीच बीचु जननी मिस पारा।
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा।
अपनी समुसि साधु सुचि को भा।
मातु मंदि मैं साधु सुचाली।
उर अस आनत कोटि कुचाली।

(क) प्रस्तुत पंक्तियाँ किसने कहीं?

(ख) नीच किसे कहा गया है?

(ग) सदाचारी किसे कहा गया है?

(घ) 'मातु मंदि मैं साधु सुचाली' एवं 'अपनी समुझि साधु सुचि को भा।' में काव्य की कौन सी विशेषता है?

(च) उपर्युक्त पंक्तियाँ कौन सी भाषा में लिखी गयी हैं?

(छ) तुलसी की काव्य–शैली की दो विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ. (क) प्रस्तुत पंक्तियाँ रामचरितमानस में भरत ने कही।

(ख) भरत ने अपनी माता कैकेयी को नीच कहा है।

(ग) वे स्वयं (भरत) को सदाचारी मानते हैं।

(घ) दोनों ही पंक्तियों में नादात्मकता है।

(च) अवधी भाषा

(छ) (i) तुलसीदास जी ने पद शैली, चारणों की छप्पय, कवित्त, सवैया, दोहा, प्रेमाख्यानों की दोहा–चौपाई पद्धति आदि का सफल प्रयोग किया है।

(ii) 'रामचरितमानस' में तुलसी ने सभी अलंकारों का प्रयोग किया है परंतु उपमा, रूपक, दृष्टांत, अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग सर्वत्र दिखाई पड़ता है।

4. मीराँबाई

4.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. मीराँ का काव्य किसी बँधी–बँधाई काव्य परंपरा में नही आता।
2. मीराँ के पदों का वैशिष्ट्य उनकी तीव्र आत्मानुभूति में निहित है।
3. मीराँ के काव्य का विषय है – श्रीकृष्ण के प्रति उनका अनन्य प्रेम और भक्ति।
4. मीराँ ने प्रेम के मिलन (संयोग) तथा विरह (वियोग) दोनों पक्षों की सुंदर अभिव्यति की है।
5. श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम में मीराँ किसी भी प्रकार की बाधा या यातना से विकल नहीं होती। लोक का भय अथवा परिवार की प्रताड़ना दोनों का ही वे दृढ़ता के साथ सामना करती है।
6. गीतिकाव्य की दृष्टि से मीराँ के काव्य का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वे इस क्षेत्र में मध्यकालीन काव्य में सबसे अलग दिखाई पड़ती है।
7. मीराँ की रचनाएँ विभिन्न राग–रागनियों पर आधारित है तथा उन्होंने अनेक प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है।
8. मीराँ की भाषा राजस्थानी और गुजराती मिश्रित ब्रज है तथा सरल अभिव्यक्ति उनकी शैली की प्रमुख विशेषता है।

4.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. मीराँ किसके घर जाने की बात कहती है? (1)

1. कृष्ण के 2. अपनी माँ के 3. अपनी सहेली के 4. अपने पति के

प्र.2. मीराँ उनकी प्रीत पुराणी में किन दो लोगों के बीच की प्रीति की बात कही गई है? (2)

1. कृष्ण–राधा 2. कृष्ण– मीराँ 3. कृष्ण–रुक्तिणी 4. राम–सीता

प्र.3. मीराँ का मानना है (3)

1. जैसी उनकी मर्जी होगी, वे वैसे ही रहेंगी
2. कृष्ण के घर जाकर सामाजिक तौर तरीकों का पालन करेंगी।
3. कृष्ण की इच्छाओं के अनुरूप व्यवहार करेंगी।
4. कृष्ण की बातों को सोच–विचार कर ही मानेंगी।

प्र.4. मीराँ श्रीकृष्ण पर अपना तन और जीवन न्योछावर करती हैं क्योंकि? (1)

1. वे कृष्ण से प्रेम करती हैं
2. वे कृष्ण को वचन दे चुकी है।
3. उन्होंने कृष्ण को मोल ले लिया है।
4. उनका मन समाज से त्रस्त है।

प्र.5. मीराँ श्रीकृष्ण से दर्शन देने के लिए कहती है – क्योंकि (4)

1. अब जैसे कृष्ण चाहते हैं वे वैसे ही रहती हैं।
2. अब वे कृष्ण को मोल ले चुकी है।
3. वे मंदिर में उनके दर्शन नहीं कर पाती।
4. कृष्ण ने पिछले जन्म में उन्हें दर्शन देने का वचन दिया था।

प्र.6. मीराँ की काव्य रचना किस संप्रदाय से जुड़ी हुई है? (4)

1. ज्ञानमार्गी साधना 2. वल्लभाचार्य का पुष्टि मार्ग
3. सूफ़ी काव्यधारा 4. उपर्युक्त में किसी से नहीं

प्र.7. मीराँ की भाषा में अभाव है – (4)

1. चित्रात्मकता का 2. क्लिष्टता का
3. नाद सौंदर्य का 4. बिंब का

प्र.8. दुलहिनी संबोधन किसके लिए है – (1)

1. गाँव की स्त्रियों के लिए 2. घर की नई बहू के लिए
3. आत्मा के लिए 4. स्वयं कवि के लिए

प्र.9. मीराँ की रातों की नींद उड़ गई है क्योंकि – (3)

1. उन्हें अपने परिवार से धमकियाँ मिल रही हैं।
2. मीराँ का सारा शरीर दर्द से पीड़ित है।
3. वे प्रियतम कृष्ण के वियोग में बेचैन रहती है।
4. उनके मन में एक प्रकार का आंतरिक डर बैठ गया है।

प्र.10. भक्ति में चातक भाव की प्रतिष्ठा इसलिए है, कि वह (2)

1. सदैव ऊपर ईश्वर की तरफ़ देखता रहता है।
2. स्वाति नक्षत्र में गिरने वाली बूँद के प्रति अनन्य भाव रखता है।
3. बादलों के आने की प्रतीक्षा करता है।
4. पानी की शुद्धता और पवित्रता का पूरा ध्यान रखता है।

प्र.11. पद में मीराँ किस को बेचने की बात कहती है?

उ. मीराँ अपने आपको बेचने की बात कहती है।

प्र.12. मीराँ किस समय कृष्ण के घर जाना चाहती है?

उ. रात में

प्र.13. मीराँ किस बात को डंके की चोट पर स्वीकार करती हैं?

उ. कृष्ण से अपने प्रेम संबंध को

प्र.14. कृष्ण के प्रति मीराँ का प्रेम किस प्रकार का है?

उ. समर्पण भाव की माधुर्य भक्ति

प्र.15. मीराँ की आंतरिक पीड़ा का कारण क्या हैं?

उ. कृष्ण से वियोग

प्र.16. इस पद में चातक और मछली किसके प्रतीक है?

उ. मीराँ बाई के

प्र.17. मीराँ के भक्ति गीत समकालीन कवियों से किस अर्थ में भिन्न हैं?

उ. माधुर्य भक्ति, समर्पण भाव गीत पारंपरिक नहीं है।

प्र.18. काव्य रूप की दृष्टि से मीराँ के पद किसके अंतर्गत आते हैं?

उ. गीती काव्य

प्र.19. पंचतत्वों से क्या तात्पर्य है?

उ. पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश

प्र.20. कवि अपने को भाग्यवान क्यों मानता है?

उ. कृष्ण को अपने सर्वस्व (पति) रूप में पाकर

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. मीराँ की भाषा की विशेषताएँ उदाहरण देकर बताइए।

उ. मीराँ की भाषा मूलतः ब्रजभाषा है, जिसमें राजस्थानी तथा गुजराती के शब्दों की प्रचुरता भी है। खड़ी बोली के पूर्व रूप को भी मीराँ के काव्य में यत्र–तत्र देखा जा सकता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

1. खड़ी बोली :–

(1) पिव मेरा मैं पीव की (2) जोगी मत जा, मत, जा, मत जा,

(3) हँस कर निकट बुलावे (4) सुरत की कछनी काछूँगी।

2. राजस्थानी :– ''मेरी उणकी प्रीति पुराणी उण बिन पल न रहाऊँ।''

3. ब्रज भाषा :– ''पंक्तियाँ मैं कैसे लिखूँ लिख्यो री न जाए।''

10 अंक प्रश्न

प्र.1. मीराँ की भक्ति भावना पर टिप्पणी कीजिए।

उ. मीराँ बाई के पद में श्रीकृष्ण के प्रति मीराँ की समर्पण–भावना व्यक्त हुई है। समर्पण, प्रेम और भक्ति का अनिवार्य अंग है। समर्पण का अर्थ है – अपनी इच्छा–अनिच्छा, रुचि–अरुचि, मान–अपमान आदि से मुक्त हो प्रिय या आराध्य के आदेश या इच्छा के अनुसार व्यवहार करना

अर्थात् 'स्व' या 'मैं' की भावना से छुटकारा पाना। जब प्रेमी या भक्त 'मैं' की भावना से छूट जाता है तो उसकी आत्म निर्मल हो जाती है। माया और मोह इस 'मैं' की भावना का ही परिणाम है, इससे मुक्त व्यक्ति ही सच्चे आनंद की प्राप्ति करता है। मीराँ की पदावली में उनकी श्रीकृष्ण के प्रति अगाध भक्ति और पूर्ण समर्थण की भावना अभिव्यक्त हुई है।

प्र.2. क्या मीराँ के पदों की रचनाओं को किसी संप्रदाय से जोड़ना उचित है?

उ. भक्ति काव्य में मीरा एक अलग व्यक्तित्व की स्वामिनी है। उनके काव्य का अध्ययन करने वाले, उन्हें कभी संत काव्य की परंपरा में रखते हैं कभी महाप्रभु वल्लभाचार्य की पुष्टिमार्ग परंपरा में। मीरा में कभी चैतन्य महाप्रभु की माधुर्य भाव की भक्ति दिखाई देती है। तो कभी सूफी काव्य–परंपरा से भाव–साम्य भी। पर सत्य यह है कि मीरा इन सभी परंपराओं से अलग अपनी छाप छोड़ती है।

पंद्रहवीं–सोलहवीं शताब्दी में वैयक्तिक अनुभूतियों की ऐसी अभिव्यंजना वास्तव में अनूठी है। यह परंपरा आगे अधिक ठोस रूप में घनानंद तथा छायावाद के कवियों में ही मिलती है। इस रूप में मीराँ के काव्य को प्रवृत्ति स्थापक भी माना जा सकता है।

निष्कर्ष :– मीराँ के पदों में अनेक संप्रदायों की झलक दिखाई देने पर भी एक अलग विशिष्टता है जिनसे मीराँ के काव्य को प्रवृत्ति स्थापक माना जाता है।

प्र.3. मीराँ के पदों में गेयता (संगीतात्मकता) है – सिद्ध कीजिए।

उ. काव्य रूप की दृष्टि से मीराँ का काव्य गीतिकाव्य के अंतर्गत आता है। अनुभूति की तीव्रता और सघनता प्रायः गीतिकाव्य में ही व्यक्त होती है। गीतिकाव्य के आवश्यक तत्व हैं – भावानुभूति, वैयक्तिकता, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता तथा शैली की कोमलता।

मीराँ के काव्य का अध्ययन करने पर पता चलता है कि मीराँ ने संभवतः संगीत और नृत्य की भी शिक्षा पायी थी। पदावली में संगृहीत उनके पद लगभग सत्तर भिन्न रागों में निबद्ध हैं। उन्हें 'पीलू राग' अत्यंत प्रिय था। मीराँ के काव्य में राग–रागनियों का विशेष महत्व है। उनके पद चार–छह पंक्तियों में भी सिमट जाते है, तो कभी–कभी भावानुकूल विस्तार भी ग्रहण कर लेता है। उनकी शैली कोमल है। इस प्रकार वे गीतिकाव्य की सभी आवश्यकताओं का सुंदर निर्वाह करती हैं।

मीराँ अत्यंत सहज ढंग से साधारण भाषा में अपने हृदय की बात रखती हैं, उनका शिल्पगत सौंदर्य उनकी भावानुभूति की तीव्रता से ही अपना आकार ग्रहण करता है।

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने मीराँ पदावली में पंद्रह प्रकार के छंदों तथा रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा उत्युक्ति उदाहरण, वीप्सा आदि अलंकारों को रेखांकित किया है।

5. रहीम

5.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. रहीम को लोक–संस्कृति, लोक–व्यवहार तथा शास्त्रों का गहरा ज्ञान था। उन्होंने इस ज्ञान को सामान्य भाषा में बड़ी सहजता के साथ अपनी कविता में व्यक्त किया है। वे साधारण मनुष्य के दैनिक जीवन से उदाहरण लेकर नीति की गूढ़ बातों को आसानी से समक्षा देते हैं। सूक्ष्म अवलोकन, शास्त्रज्ञान और सहज अभिव्यक्ति उनकी निजी विशेषता है।
2. यद्यपि रहीम ने फारसी और संस्कृत में भी काव्य–रचना की है तथा अरबी और तुर्की भाषा में अनुवाद किए हैं, पर वे ब्रज और अवधी भाषा की काव्य रचनाओं के लिए जनता के बीच अधिक जाने जाते हैं। ब्रज तथा अवधी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले कवियों में तुलसी के बाद रहीम का नाम सबसे ऊपर है।
3. आपने रहीम की कविात पढ़ते हुए दोहा, सोरठा और बरवै छंदों का आनंद लिया है। आप जानते हैं कि दोहे में 13–11 – 13–11 की यति से चार चरण होते हैं जबकि सोरठे में इसके उलटे अर्थात् 11–13 – 11–13 की यति से। बरवै छंद में 12–7 – 12–7 की यति से कुल चार चरण होते हैं।
4. जब किसी बात को समझाने के लिए अपने आस–पास के क्रियाकलाप, लोक में प्रचलित कथाओं अथवा पौराणिक प्रसंगों से उदाहरण दिए जाते हैं, तो उन्हें दृष्टांत कहते हैं। रहीम ने अपनी कविता में दृष्टांतों का बहुत सटीक प्रयोग किया है।
5. रहीम का समय भक्तिकाल और रीतिकाल के बीच की कड़ी है। उनकी कविता के कंद्र में भक्ति, नीति और श्रृंगार के तत्व हैं।

5.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने 'हाँ' गलत के सामने 'नहीं' लिखिए।

1. शतरंज में प्यादे की चाल तिरछे खानों वाली होती है। (नहीं)
2. कोई भी प्यादा आख़िरी खाने में पहुँच कर उसी मोहरे के समकक्ष हो जाता है। (हाँ)
3. सामान्यतः व्यक्ति आकस्मिक रुप से महत्व पाकर घमंडी हो जाता है। (हाँ)
4. दीपक बालने को 'दिया बढ़ाना' कहा जाता है। (नहीं)
5. कुपुत्र बड़ा होने पर अत्यंत दुःख देता है। (हाँ)
6. जब कोई शब्द एक से अधिक अर्थ देता है तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। (नहीं)
7. आँखों से निकले आँसू व्यक्ति के मन के दुःख को व्यक्त कर देते हैं। (हाँ)
8. आँखें मानव देह रुपी घर के दरवाज़े हैं। (हाँ)
9. राम को लंका के सारे भेद उनके गुप्तचरों ने बताए थे, न कि विभीषण ने। (नहीं)

10. प्रेम साथ रहने से ही उत्पन्न होता है। (हाँ)
11. वैर जन्मजात होता है। (नहीं)
12. किसी क्षेत्र में सतत श्रेष्ठ प्रदर्शन से व्यक्ति को यश प्राप्त होता है। (हाँ)
13. रहीम ने श्रेष्ठ लोगों की तुलना माला के धागे से की है। (नहीं)
14. यदि किसी अपने से मनमुटाव हो जाए तो उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए। (नहीं)
15. सुजन शब्द में श्लेष अलंकार है। (हाँ)
16. काम पड़ने पर लोग किसी को बहुत अधिक महत्व देते हैं – किंतु बाद में उसे भुला देते हैं। (हाँ)
17. भाँवर पड़ने के बाद दूल्हा नित्य मौर को सिर पर धारण करता है। (नहीं)
18. परोपकारी मनुष्य दूसरों का भला करने के साथ–साथ अपने अस्तित्व को सार्थक करता है। (हाँ)
19. मँहदी बाँटने वाले के हाथों में भी रच जाती है। (हाँ)
20. व्यक्ति को परोपकारी नहीं होना चाहिए। (नहीं)
21. आत्मसम्मान की रक्षा किसी भी कीमत पर करनी चाहिए। (हाँ)
22. अमृत ज़हर की तुलना में हर स्थिति में बेहतर है। (नहीं)
23. नायिका दीपक को इसलिए बुझा देती है, कि कहीं उसकी सास बेकार में तेल खर्च करने पर न डाँटे। (नहीं)
24. पति की प्रतीक्षा में व्याकुल नायिका बार–बार द्वार तक जाना चाहती है। (हाँ)
25. नायिका छतरी लेकर अपने पति के साथ निकलती है। (नहीं)
26. बरसते हुए मार्ग में छप्पर की छतरी छाने के लिए नायिका खुरपी लेकर घर से निकलती है। (हाँ)

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. शतरंज का प्यादा किस श्रेणी के लोगों का प्रतीक है?

उ. शतरंज का प्यादा सामान्य श्रेणी के लोगों का प्रतीक है

प्र.2. साधारण व्यक्ति अचानक ऊँचा उठ जाने पर कैसा हो जाता है?

उ. साधारण व्यक्ति अचानक ऊँचा उठ जाने पर घमंड़ी हो जाता है।

प्र.3. रहीम के दूसरे दोहे में दीपक किसका प्रतीक है?

उ. रहीम के दूसरे दोहे में दीपक कुपुत्र का प्रतीक है?

प्र.4. जो रहीम गति दीप की ..... बढ़ै अँधेरो होय।

इस दोहे में बारे शब्द का क्या अर्थ है?

उ. बारे शब्द का अर्थ बचपन, दिया जलाना।

प्र.5. व्यक्ति के हृदय के दुःख को कौन व्यक्त करता है?

उ. व्यक्ति के हृदय के दुःख को आँसू व्यक्त करता है।

प्र.6. विभीषण लंका से निकाले जाने पर किसकी शरण में जाता है?

उ. विभीषण लंका से निकाले जाने पर राम की शरण में जाता है।

प्र.7. परस्पर साथ रहने से कौन से भाव उत्पन्न होते हैं?

उ. परस्पर साथ रहने से प्रेम और बैर भाव उत्पन्न होते हैं।

प्र.8. रहीम किन लोगों को मनाने की बात कहता है?

उ. रहीम अपने–अच्छे लोगों को मनाने की बात कहते हैं।

प्र.9. सोरठे के आधार पर बताइए रहीम को क्या अच्छा नहीं लगता?

उ. सोरठे के आधार पर रहीम को आत्मसम्मान के बिना जीवन अच्छा नहीं लगता।

प्र.10. कवि को किस स्थिति में मरना भी अच्छा लगता है?

उ. कवि को सम्मान के साथ विषव पीना अच्छा लगता है।

प्र.11. बरवै दस में कवि ने किस ऋतु का वर्णन किया है?

उ. बरवै दस में कवि ने वर्षा ऋतु का वर्णन किया है।

प्र.12. बरवै किस भाषा में लिखे गए हैं?

उ. बरवै अवधि भाषा में लिखे गए हैं।

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. रहीम ने प्यादे और फ़रज़ी का दृष्टांत क्यों दिया है?

उ. रहीम कहते हैं कि यदि किसी साधारण व्यक्ति को किन्हीं कारणों से कोई ऊँचा पद मिल जाता है तो वह उतना ही इतराने लगता है जैसे कि शतरंज के खेल में प्यादा फ़रजी बनते ही टेढ़ा–टेढ़ा चलने लगता है अर्थात् जब किसी व्यक्ति को उसके गुण, शक्ति और सामर्थ्य से बढ़कर कुछ अधिक (पद, पैसा इत्यादि) प्राप्त हो जाता है, तो वह अपने सहज व्यवहार को त्यागकर घमंड से भर जाता है और अन्य लोगों से सीधे मुँह बात नहीं करता।

प्र.2. आँसुओं को आँखों से बाहर क्यों नहीं निकालना चाहिए?

उ. रहीम ने आँसुओं के द्वारा मन का दुःख प्रकट होने की बात के उदाहरण से घर की बात घर के भीतर ही रखने का संकेत किया है। रहीम कहते हैं कि आँखों से आँसू निकलकर व्यक्ति के हृदय के दुःख को व्यक्त कर देते हैं और वे करें भी क्यों नहीं, जब किसी को घर से निकाला जाएगा तो वह घर का भेद तो दूसरों तक पहुँचाएगा ही। यहाँ दो बातों का उल्लेख अत्यंत

आवश्यक है, शास्त्रों में मानव देह का वर्णन घर के रूप में किया गया है जिसके दस दरवाजें हैं, जिनमें दो दरवाजे दोनों नेत्र हैं।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. रहीम ने आत्म सम्मान की रक्षा का महत्व कैसे समझाया है?

उ. रहीम ने आत्म सम्मान की रक्षा के महत्व को समझाते हुए कहते हैं कि – यदि कोई आत्म सम्मान को ठेस पहुँचा कर अमृत पिलाए तो वह मुझे स्वीकार नहीं हैं, जबकि प्रेम और सम्मान के साथ यदि कोई ज़हर भी प्रस्तुत करे तो मुझे उसे पीकर मर जाना अच्छा लगेगा। व्यक्ति को आत्म सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। यदि किसी से उसका आत्म सम्मान छीन लिया जाए तो जीवन में कुछ भी नहीं बचता, फिर वह अमर होकर भी क्या करेगा और यदि कहीं प्रेम और सम्मान मिलता है तो ज़हर पीने में भी नुकसान नहीं, क्योंकि जीवन में प्रेम से अधिक पाने को कुछ भी नहीं है। जहाँ प्रेम है, वहाँ व्यक्ति के सम्मान की रक्षा भी है। इसी आत्म सम्मान की रक्षा के लिए व्यक्ति से लेकर राष्ट्रों तक ने युद्ध लड़े हैं। दुनिया की सारी चीज़ें (धन–दौलत, पद) आज हैं, कल नहीं भी हो सकतीं और यदि आज नहीं है, तो कल प्राप्त की जा सकती हैं पर व्यक्ति सम्मान को एक बार खोकर पुनः प्राप्त नहीं कर सकता।

6. गद्य कैसे पढ़ें

6.1. पाठ के स्मरणीय बिंदु

1. सामान्य बोलचाल की भाषा को गद्य कहते हैं।
2. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद से गद्य को और अधिक प्रश्रय मिला। साहित्य के स्तर पर गद्य का पहली बार भारतेंदु हरिश्चंद्र के काल में विकास हुआ।
3. गद्य में निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रा, संस्मरण, व्यंग्य, संपादकीय आदि विधाओं की रचना होती है। विषय, समय और परिस्थिति के अनुसार इनकी भाषा बदल जाती है।
4. गद्य को पढ़ते समय उसके विचार तत्व, भाषा तथा शैली पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।
5. गद्य के साहित्यिक रूप को इस प्रकार वंर्गीकृत किया जा सकता है।

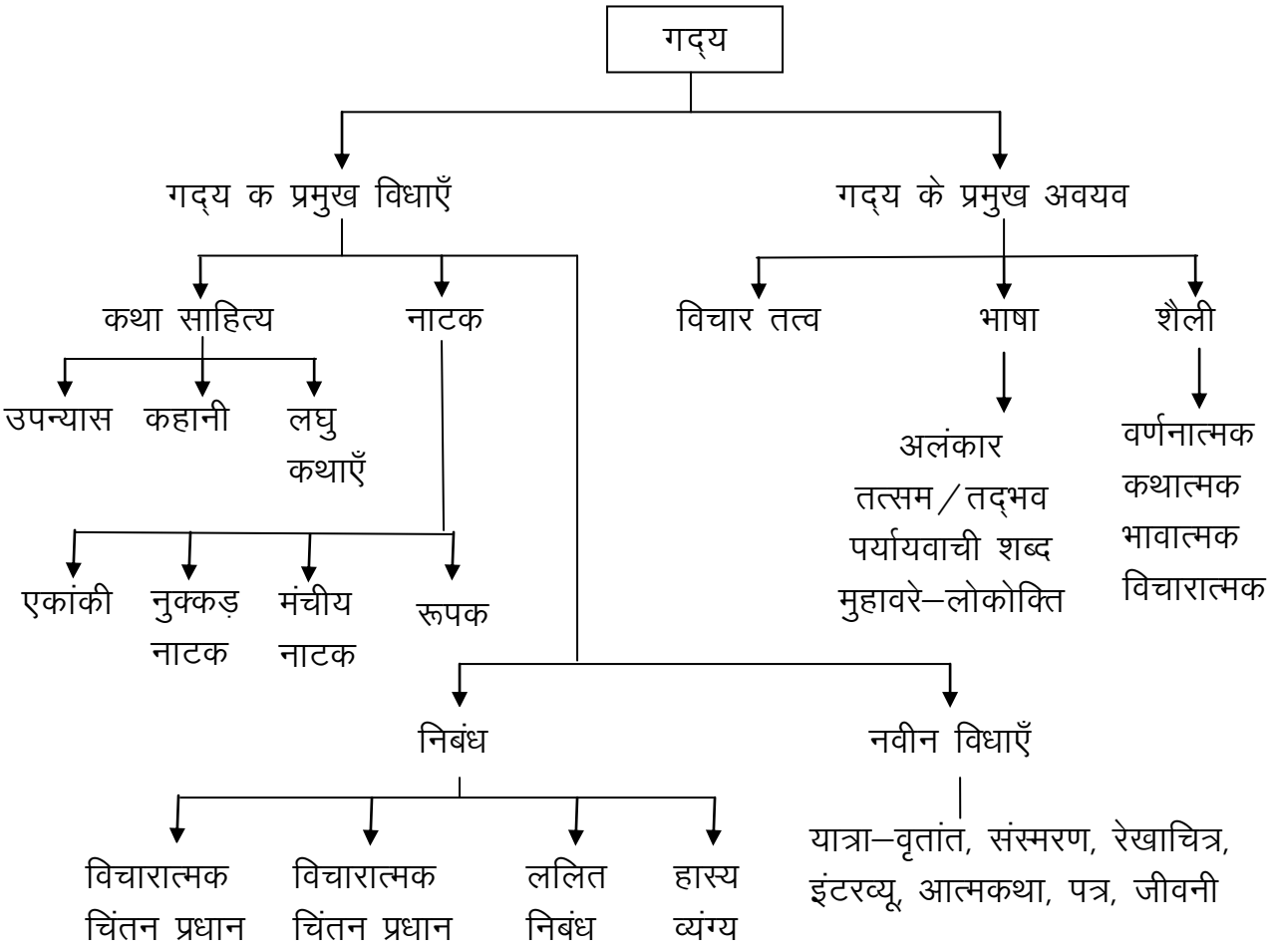

6.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. गद्य किसे कहते हैं?

उ. जिस भाषा का हम सामान्य बातचीत में प्रयोग करते हैं, वही गद्य कहलाता है।

प्र.2. किस युग को हिंदी गद्य साहित्य का प्रारंभ माना जाता है?

उ. भारतेंदु युग को हिंदी गद्य साहित्य का प्रारंभ माना जाता है।

प्र.3. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कब और कहाँ हुई?

उ. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना सन् 1800 में कलकत्ता में हुई।

प्र.4. हिंदी खड़ीबोली गद्य के जन्मदाताओं के नाम बताइए।

उ. हिंदी खड़ीबोली गद्य के जन्मदाता मुंशी सदासुखलाल, इंशा अल्ला खाँ, लल्लूजी लाल और सदल मिश्र।

प्र.5. सबसे पहले लिखी गई कहानी और उसके रचनाकार का नाम बताइए।

उ. 'रानी केतकी की कहानी' नामक कहानी सबसे पहले लिखी गई। इसके रचनाकार 'सैय्यद इंशा अल्ला खाँ' थे।

प्र.6. फोर्ट विलियम कॉलेज के कौन से प्राध्यापक के निरीक्षण में खड़ीबोली गद्य में पुस्तकें लिखवाने की योजना बनी?

उ. फोर्ट विलियम कॉलेज के प्राध्यापक सर जॉन गिलक्राइस्ट के निरीक्षण में खड़ीबोली गद्य में पुस्तकें लिखवाने की योजना बनी।

प्र.7. ब्रह्म समाज के संस्थापक कौन थे? उन्होंने क्या अनुवाद किया?

उ ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय थे, उन्होंने वेदांत के सूत्रों का खड़ीबोली में अनुवाद किया।

प्र.8. आर्य समाज के संस्थापक कौन थे? उन्होंने क्या अनिवार्य किया?

उ. स्वामी दयानंद सरस्वती आर्य समाज के संस्थापक थे। उन्होंने सभी के लिए हिंदी का पढ़ना और पढ़ाना अनिवार्य कर दिया।

प्र.9. स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने ग्रंथों में कैसी भाषा का प्रयोग किया?

उ. स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने ग्रंथों में संस्कृतनिष्ठ एवं ओज, हास्य और व्यंग्य से भरपूर भाषा का प्रयोग किया।

प्र.10. प्रसिद्ध यात्रा ग्रंथ 'घुमक्कड़–शास्त्र' के रचनाकार कौन थे?

उ. राहुल सांस्कृत्यायन प्रसिद्ध यात्रा ग्रंथ 'घुमक्कड़–शास्त्र' के रचनाकार थे।

प्र.11. जब भी हम कुछ नया पढ़ना शुरू करते हैं तो वह क्या कहलाता है?

उ. जब भी हम कुछ नया पढ़ना शुरू करते हैं तो वह अपठित कहलाता है।

प्र.12. निम्न के लिए एक शब्द लिखिए।

उ. ऐसा व्यवहार जो मनुष्य के हित में हो। उत्तर मानवता

प्र.13. मुख्यतः पत्र कितने प्रकार के होते हैं –

उ. 1. औचारिक 2. अनौपचारिक

प्र.14. निम्न शब्द को स्पष्ट कीजिए।

उ. विश्व बंधुत्व = उत्तर : दुनिया भर में भाई चारा, किसी प्रकार का भेदभाव या झगड़ा न होना।

प्र.15. कथात्मक शैली का लक्ष्य क्या है?

उ. कथात्मक शैली का लक्ष्य होता है अपने विचारों को कहानी अथवा घटना के माध्यम से पुष्ट करते हुए कहना।

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. अपठित गद्य को पढ़ते समय किन–किन अंशों पर ध्यान देना चाहिए।

उ. किसी भी गद्य को चाहे वह पठित हो या अपठित पढ़ने का तरीका समान ही होता है। इसके लिए निम्न अंशों पर ध्यान देना चाहिए।

- पढ़ने की गति
- चिंतन–मनन
- विचारों का बोध
- अंतर्निहित उद्देश्यों को समझना
- शब्दकोश देखने की आदत डालना।

प्र.2. गद्य की किन्हीं छः विधाओं के नाम बताइए।

उ. गद्य की विधाएँ निम्नलिखित हैं।

1. कहानी 2. उपन्यास 3. नाटक
4. लेख 5. जीवन 6. आत्मकथा

प्र.3. गद्य के प्रमुख अवयवों का वर्गीकरण कीजिए।

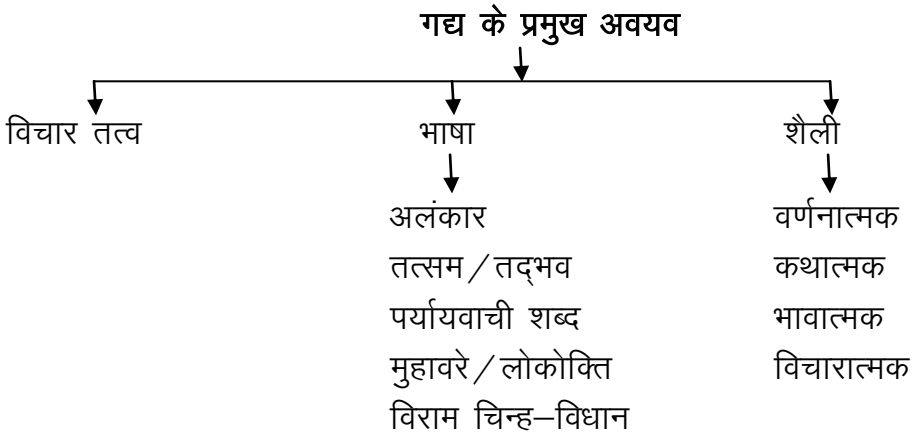

प्र.4. हिंदी साहित्य को कितने कालों में विभाजित किया गया है? उनके नाम बताइए। अंतिम काल के विभिन्न चरणों का उल्लेख कीजिए।

उ. हिंदी साहित्य चार कालों में विभाजित है – (1) आदिकाल (2) भक्तिकाल (3) रीतिकाल (4) आधुनिक काल।

भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि हिंदी साहित्य के अंतिम काल के विभिन्न चरण हैं।

प्र.5. शैलियों के आधार पर निबंध कितने प्रकार के होते हैं? उनके नाम क्या हैं? कुछ प्रमुख निबंधकारों के नाम बताइए।

उ. विभिन्न शैलियों के आधार पर निबंध तीन प्रकार के होते हैं।

1. ललित निबंध 2. विचारात्मक निबंध 3. वर्णनात्मक निबंध

प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवकीराय आदि हिंदी के प्रमुख निबंधकार हैं।

प्र.6. संस्मरण किसे कहते हैं?

उ. उचित प्रकार से किसी व्यक्ति अथवा स्थान का स्मरण करना संस्मरण कहलाता है। संस्मरण में आत्मीयता का होना एक विशिष्ट गुण है। इसमें किसी व्यक्ति से अत्यधिक भावनात्मक जुड़ाव होने के कारण अनुभूत स्मृतियों और घटनाओं के प्रति निजी दृष्टिकोण का होना स्वाभाविक होता है। संस्मरण विधा अतीत से जुड़ी विधा है। इसमें किसी भी छोटे अथवा बड़े व्यक्ति को तटस्थता से याद कर लिपिबद्ध किया जाता है।

प्र.7. आजकल पत्र–पत्रिकाओं में कौन–कौन सी विधाएँ पाई जाती है?

उ. आजकल कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, यात्रा, संस्मरण, डायरी, नाटक, रेडियो रूपक, परिचर्चा आदि अनेक विधाओं में पर्याप्त साहित्य लिखा जा रहा है। पत्र–पत्रिकाओं में ये नई विधाएँ पाई जाती हैं।

प्र.8. कहानी और उपन्यास में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उ. कहानी और उपन्यास में जीवन अथवा समाज में घटित घटनाओं का वर्णन होता है। किंतु उपन्यास में कहानी की अपेक्षा अधिक विस्तारपूर्वक कथा का वर्णन कियाक जाता है। कहानी किसी एक घटना पर आधारित होती है, जबकि उपन्यास में कई घटनाएँ होती हैं। कहानी में किसी एक छोटे क्षण की घटना का चित्रण होता है जबकि उपन्यास जीवन के लंबे समय में घटित कई घटनाओं को चित्रित करता है। उपन्यास में कई उप–कहानियाँ एक साथ चलती हैं।

प्र.9. नाटक किस प्रकार उपन्यास या कहानी से भिन्न होते हैं?

उ. नाटक में भी कहानी ही प्रमुख होती हैं किंतु इसमें कहानी अथवा उपन्यास की तरह किसी घटना का वर्णन नहीं होता बल्कि उस कहानी के पात्रों द्वारा संवाद बुलवाकर और अभिनय के माध्यम से स्थिति का वास्तविक चित्रण करने का प्रयास किया जाता है। नाटक की भाषा बोलचाल के अत्यंत करीब होती है, इसीलिए यह साधारण से साधारण मनुष्य को भी समझ में आ जाती है और यदि न भी आए तो नाटक के पात्रों के अभिनय (पात्रानुकूल भाषा) से वह स्पष्ट हो जाती है। नाटक में लेखक पात्रों के माध्यम से अपनी बात कहलवाता है।

प्र.10. निबंध से क्या तात्पर्य है? इसे गद्य लेखन की कसौटी क्यों कहा जाता है?

उ. निबंध का अर्थ है – 'बिना बंधन का' अर्थात् किसी विषय पर लिखते समय विचारों के ऊपर कोई बंधन अथवा प्रतिबंधन न हो, वह रचना निबंध कहलाती है। निबंध किसी भी विषय पर लिखे जा सकते हैं। इसके लिए केवल साहित्यिक विषयों का ही चुनाव आवश्यक नहीं है। सामान्यतः निबंध में किसी विषय पर विचारपूर्ण लेख लिखे जाते हैं। निबंध में विचारों की शृंखला कहीं से भटक कर कहीं भी जा सकती है। इन्हीं कारणों से निबंध को गद्य–लेखन की कसौटी माना जाता है।

प्र.11. काव्य की अपेक्षा गद्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत है – कैसे?

उ. गद्य की भाषा सरल तथा बोधगम्य होती है, जबकि काव्य की भाषा लयात्मक और विशिष्ट होती है। गद्य की भाषा सहज, सरल तथा बोधगम्य होने के कारण ही हम अपने विचार आसानी से अभिव्यक्त कर पाते हैं। काव्य में विचार नहीं बल्कि भावनाओं की प्रधानता होती है। यही कारण है कि काव्य की अपेक्षा गद्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत होता है।

प्र.12. हिंदी गद्य के विकास में भारतेंदु युग की क्या भूमिका रही?

उ. साहित्यिक रूप में हिंदी गद्य का विकास सबसे पहले भारतेंदु युग में हुआ। भारतेंदु युग से पूर्व काव्य की भाषा 'ब्रज' भाषा थी। भारतेंदु ने ही खड़ी बोली को साहित्यिक रूप में विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके लिए उन्होंने ब्रज को काव्य तक सीमित रखा और खड़ी बोली को गद्य में अभिव्यक्ति का माध्यम सुनिश्चित किया। साथ ही उन्होंने अनेक विधाओं को अपनाया। उन्होंने भाषणों तथा लेखों के माध्यम से हिंदी खड़ी बोली गद्य का प्रचार किया।

प्र.13. गद्य साहित्य का वाचन करते समय किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

उ. 1. पढ़ने से पूर्व पुस्तक की भूमिका तथा परिचय अवश्य पढ़ लें, यदि सारांश दिया गया हो तो उसे भी पढ़ें। इससे वांछित विषय को पढ़ने में सहायता मिलती है।

2. पहले और अंतिम अनुच्छेदों को ध्यानपूर्वक पढ़े, क्योंकि इसमें मुख्य बातों का सार दिया जाता है।

3. पढ़ते समय विराम चिन्हों का ध्यान रखते हुए रुक–रुक कर पढ़ें। उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट होना चाहिए, नहीं तो कई बार अर्थ बदल जाते हैं। संवादों को ठीक ढंग से बोलने का प्रयास करें अन्यथा अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है।

4. पढ़ते समय बीच–बीच में रुक–रुक कर न सोचें, नहीं तो क्रम बिगड़ जाता है और विषय समझ में नहीं आता, इसीलिए तेज गति से पढ़ने की आदत डालें।

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. गद्य के प्रमुख अवयवों की जानकारी दीजिए।

उ. गद्य के मुख्यतः तीन अवयव होते हैं – विचार तत्व, भाषा, शैली।

1. विचार तत्व :– प्रत्येक गद्य रचना में विचार तत्व प्रधान होता है। इस विचार तत्व के अध्ययन के लिए सर्वप्रथम रचनाकार का परिचय तथा उनके काल की विशेषताओं की जानकारी लेना आवश्यक होता है। रचना के पीछे रचनाकार का उद्देश्य भी जान लेना चाहिए।

रचना में विचार तत्व की व्याख्या के लिए गहन अध्ययन जरूरी है क्योंकि गद्य में भावनाओं की प्रधानता नहीं होती। कभी–कभी तर्क या विचारों की गहराई तक पहुँचने के लिए उस रचना से संबंधित ग्रंथों का अध्ययन करना भी जरूरी होता है। अध्ययन के उपरांत आप पायेंगे कि आपके मन में आए विचार दूसरे रचनाकारों के विचारों से मेल खाते हैं। आपको इन विचारों की तुलना करनी चाहिए।

2. भाषा :– भाषा विचारों की संवाहिका है। भाषा विचार, विषय–वस्तु, परिवेश और स्थितियों पर आधारित होती है। प्रत्येक रचनाकार की अपनी भाषा होती है। भाषा–संबंधी अध्ययन के लिए पर्यायवाची शब्दों का अध्ययन, लोकोक्तियों तथा मुहावरों का ज्ञान तथा तत्सम–तद्भव शब्दों का अध्ययन जरूरी है। क्योंकि रचनाकार भाषा को सरल, प्रभावशाली तथा सुबोध बनाने के लिए मुहावरों, देशज, तद्भव या किसी प्रचलित शब्द के बदले दूसरे शब्दों का प्रयोग करता है अतः रचनाकार के लिए व्याकरण का ज्ञान भी अत्यंत आवश्यक है।

3. शैली :– गद्य रचना में शैली का महत्वपूर्ण स्थान है। शैली के अनुसार भाषा का स्वरूप बदल जाता है। एक ही विषय पर अलग–अलग रचनाकारों द्वारा लिखी गई बातें, शैली अलग होने के कारण अलग–अलग रूप में प्रभावित करती हैं। वर्णनात्मक शैली, विचारात्मक शैली, कथात्मक शैली, भावात्मक शैली आदि हिंदी गद्य की प्रचलित शैलियाँ हैं।

प्र.2. गद्य की किन्हीं चार प्रमुख विधाओं की संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

उ. **1. यात्रा–वृत्तांत** :– इस विधा के अंतर्गत लेखक अपनी यात्रा के अनुभवों को लिखता है। यह यात्रा किसी देश, पहाड़ या स्थान की होती है। यात्रा के दौरान तरह–तरह की कठिनाइयाँ भी आती हैं, कई रोमांचक अनुभव भी होते हैं तथा आनंद भी प्राप्त होता है। यात्राओं में प्राप्त अनुभवों का वर्णन ही यात्रा–वृत्तांत कहलाता है।

2. संस्मरण :– अतीत (बीते हुए) को याद करना ही संस्मरण कहलाता है। संस्मरण में आत्मीयता का होना एक विशिष्ट गुण है। इसमें किसी व्यक्ति से अत्यधिक भावनात्मक जुड़ाव होने के कारण अनुभूत स्मृतियाँ और घटनाओं के प्रति निजी दृष्टिकोण का होना स्वाभाविक होता है। इसमें किसी भी छोटे अथवा बड़े व्यक्ति को तटस्थता से याद कर लिपिबद्ध किया जाता है।

3. व्यंग्य :– समाज में फैली बुराई, किसी विचार, परंपरा अथवा घटना का वर्णन करते हुए यदि उसकी खिल्ली उड़ाई जाए, व्यवस्था पर चोट की जाए अथवा हँसती–गुदगुदाती भाषा में उसका चित्रण किया जाए तो वह रचना व्यंगय कही जाएगी। व्यंग्य में कहानी भी हो सकती है और निबंध की तरह स्वतंत्र विचार भी हो सकते हैं। कुल मिलाकर कहें तो व्यंग्य एक प्रकार का निबंध होता है, जिसमें व्यंग्यात्मक ढंग से किसी विषय का चित्रण होता है।

4. संपादकीय :– हर पत्र–पत्रिकाओं में एक संपादकीय अवश्य होता है। यह पत्र या पत्रिका के संपादक द्वारा लिखा जाता है। संपादकीय में संपादक तत्कालीन समस्याओं, घटनाओं पर अपने विचार प्रकट करता है अथवा उस पत्र–पत्रिका से संबंधित समस्याओं पर लेख लिखता है। अखबार तथा पत्रिका के संपादकीय में अंतर होता है। अखबार प्रतिदिन आता है अतः इसका संपादकीय प्रायः समाचारों पर आधारित होता है। जबकि पत्रिकाओं की एक निश्चित अवधि होती है इसीलिए उनके संपादकीय में किसी सामाजिक मुद्दे अथवा समस्या पर समीक्षात्मक टिप्पणी की जाती है।

प्र.3. विचार क्या हैं? चिंतन–मनन में इनका क्या स्थान हैं?

उ. विचार किसी भी व्यक्ति के सोचने के तरीके, उसके आस–पास के वातावरण, सामाजिक स्थितियों और संस्कारों से उपजी हुई एक दृष्टि होती है, किसी भी चीज को देखने का एक नज़रिया होता है, जिसके आधार पर वह एक धारणा बनाने पर विवश होता है। यही विचार कहीं–न–कहीं उसकी समझ में भी उतर कर आता है। कई बार पढ़ते हुए हमें जगह– जगह कुछ वाक्य ऐसे मिल जाते हैं जिन्हें हम रेखांकित करके दूसरों से बातें करते समय उनका प्रयोग करते हैं। अर्थात् उनमें से कोई–न–कोई विचार ऐसा होता है जो हमारे मन को छू जाता है।

पुस्तक पढ़ते समय लेखक या कवि के इन विचारों का बोध भी आवश्यक होता है। केवल पढ़ लेने से विचारों का बोध नहीं हो पाता। जब हम पढ़ी हुई बातों को अपने परिवेश, वातावरण और स्थितियों से जोड़कर देखते हैं, तभी वे ठीक ढंग से समझ में आते हैं। इसके अलावा हमने जीवन में जो कुछ पढ़ा, समझा या सीखा है वे सभी इन विचारों के बोध में सहायक होते हैं। इसीलिए विचारों के बोध के लिए हमें पाठ्य–पुस्तकों के अलावा भी अलग–अलग विषयों की पुस्तकें पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। अपने आसपास की चीज़ों को देखना, उनके बारे में

चिंतन करना, लोगों से विचार–विमर्श करना भी ज़रूरी होता है। विचारों के बोध के लिए चिंतन–मनन की आदत विकसित करना अनिवार्य है।

प्र.4. गद्य के विकास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उ. पहली बार सरकारी स्तर पर हिंदी गद्य के विकास तथा प्रयोग का प्रयास फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद अंग्रेज शासकों द्वारा किया गया। भारतेंदु युग से पूर्व कोई एक ऐसी भाषा नहीं थी, जिसको सीखकर सामान्य जनता के बीच बातचीत का क्रम बनाया जा सके। अतः फोर्ट विलियम कॉलेज में देश की भाषा सीखने की व्यवस्था की गई। गिलक्राइस्ट महोदय ने खड़ी बोली में हिंदी गद्य को स्वतंत्र रूप से भाषा के रूप में स्वीकार किया तथा खड़ी बोली गद्य में पुस्तकें लिखवाने की योजना बनी।

फोर्ट विलियम कॉलेज के तत्वावधान में लल्लूजी लाल ने 'प्रेमसागर' और सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की। इस कार्य के आरंभ से पूर्व मुंशी सदासुखलाल 'ज्ञानोपदेश' और सैय्यद इंशा अल्ला खाँ 'रानी केतकी की कहानी' लिख चुके थे। ये चारों लेखक हिंदी खड़ी बोली के जन्मदाता (प्रवर्तक) माने जाते हैं।

लगभग पचास वर्षों के बाद इसाई पादरियों ने खड़ी बोली में बाइबिल का अनुवाद करवाया। ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने वेदांत सूत्रों का खड़ी बोली में अनुवाद किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना करके हिंदी का पढ़ना पढ़ाना अनिवार्य कर दिया। उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अनेक ग्रंथ लिखे, जिनमें 'सत्यार्थ प्रकाश', 'संस्कार विधि', 'वेदों का भाष्य' आदि प्रमुख है। इसी समय पंडित श्रद्धाराम फुल्लौरी ने सनातन धर्म के प्रचार के लिए 'सत्यामृत प्रवाह' नामक गद्य–ग्रंथ की रचना की। उनके व्याख्यानों और कथावचनों से पंजाब में हिंदी का अधिक प्रचार हुआ।

हिंदी गद्य को आगे बढ़ाने में तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन सभी के प्रयत्नों से खड़ी बोली में जीवन का संचार हुआ और भविष्य के लिए गद्य का रूप भी स्पष्ट हो गया।

प्र.5. निम्नलिखित शब्दों को कोश–क्रम में लगाइए।

1. विश्वबंधुत्व	2. अंबु	3. मानवता	4. अंबुज
5. प्रतिष्ठा	6. अंबर	7. पराधीन	8. आभार
9. सौभाग्य	10. मृत्यु	11. संक्षित	12. मनका
13. शैली	14. मानसिक	15. परिभाषा	16. मौलिक
17. हास्य	18. व्यवहार	19. विधाओं	20. नागफनी
21. बेल	22. पीपल	23. विकास	24. गुलमोहर
25. हस्तांतरण	26. उज्जवल	27. अंजु	28. निजात
29. अनार	30 संयम	31. क्षति	32. त्रासदी

उ.

1. अंजु	2. अंबर	3. अंबु	4. अंबुज
5. अनार	6. आभार	7. उज्जवल	8. क्षति
9. गुलमोहर	10. त्रासदी	11. नागफनी	12.निजात
13. पराधीन	14. परिभाषा	15. पीपल	16. प्रतिष्ठा
17. बेल	18. मनका	19. मानवता	20. मानसिक
21. मृत्यु	22. मौलिक	23. विकास	24.विधाओं
25. विश्वबंधुत्व	26. व्यवहार	27. शैली	28. संक्षिप्त
29. संयम	30. सौभाग्य	31. हस्तांतरण	32. हास्य

प्र.6. विभिन्न संस्थाओं ने धर्म के प्रचार में खड़ी बोली का प्रयोग कैसे किया?

उ. भारतीयों में अपने धर्म का प्रचार करने के लिए ईसाई पादरियों ने खड़ी बोली को अपनाकर इसमें बाइबिल आदि पुस्तकों का अनुवाद करवाया। लगभग इसी समय हिंदू शिक्षित वर्ग के अपने धर्म की रक्षा करने की इच्छा जागी, जिससे ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज जैसे संस्थाएँ खड़ी बोली के माध्यम से धार्मिक सिद्धांतों का प्रचार करने लगी। ब्रह्मसमाज संस्थापक राजा राममोहन राय ने वेदांत सूत्रों का खड़ी बोली में अनुवाद किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अनेक ग्रंथ लिखें, जिनमें 'सत्यार्थ प्रकाश', 'संस्कार विधि', 'वेदों का भाष्य' आदि प्रमुख है। उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना करके सबके लिए हिंदी का पढ़ना और पढ़ाना आवश्यक कर दिया। वे हिंदी को आर्यभाषा के नाम से भी पुकारते थे। पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मुंबई में आर्यसमाज के प्रभाव से हिंदी गद्य का प्रसार और प्रयोग सर्वाधिक रूप से होता रहा। इसी समय पंडित श्रद्धाराम फल्लौरी ने सनातन धर्म के प्रचार के लिए 'सत्यामृत प्रवाह' नामक गद्य–ग्रंथ की रचना की। वे बड़े प्रभावशाली वक्ता थे। उनके व्याख्यानों और कथावचनों से पंजाब में हिंदी का बहुत अधिक प्रचार हुआ। उनका 'भाग्यवती' नामक सामाजिक उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हुआ था। इसके अतिरिक्त 'धर्म रक्षा', 'उपदेश संग्रह', 'शतोपदेश' आदि उनकी उल्लेखनीय गद्य रचनाएँ हैं।

प्र.8. गद्य पठन में शब्दकोश की क्या उपयोगिता है?

उ. कोई भी पुस्तक या पाठ पढ़ते समय कभी–कभी हमारे सामने ऐसे शब्द आते हैं जिसका सही अर्थ हमें मालूम नहीं होता। ऐसे समय हम उनके निहितार्थों से काम चला लेते हैं। लेकिन इस तरह शब्दों का सही अर्थ जाने बिना छोड़ देना ठीक नहीं होता। पढ़ते समय जैसे ही हमारे समक्ष कोई कठिन शब्द आए तो हमें शब्दकोश से उसका अर्थ जान लेना चाहिए। उसका प्रयोग और अलग–अलग संदर्भों में भी उसका अर्थ जान लेना चाहिए। इससे सही अर्थ समझने के साथ–साथ हमारे शब्द भंडार में भी वृद्धि होती है जो हमारे अपने लेखन कार्य में बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। इसीलिए पढ़ते समय शब्दकोश को अवश्य साथ रखना चाहिए।

प्र.7. गद्य की प्रमुख विधाओं को वर्गीकृत कीजिए।

उ.

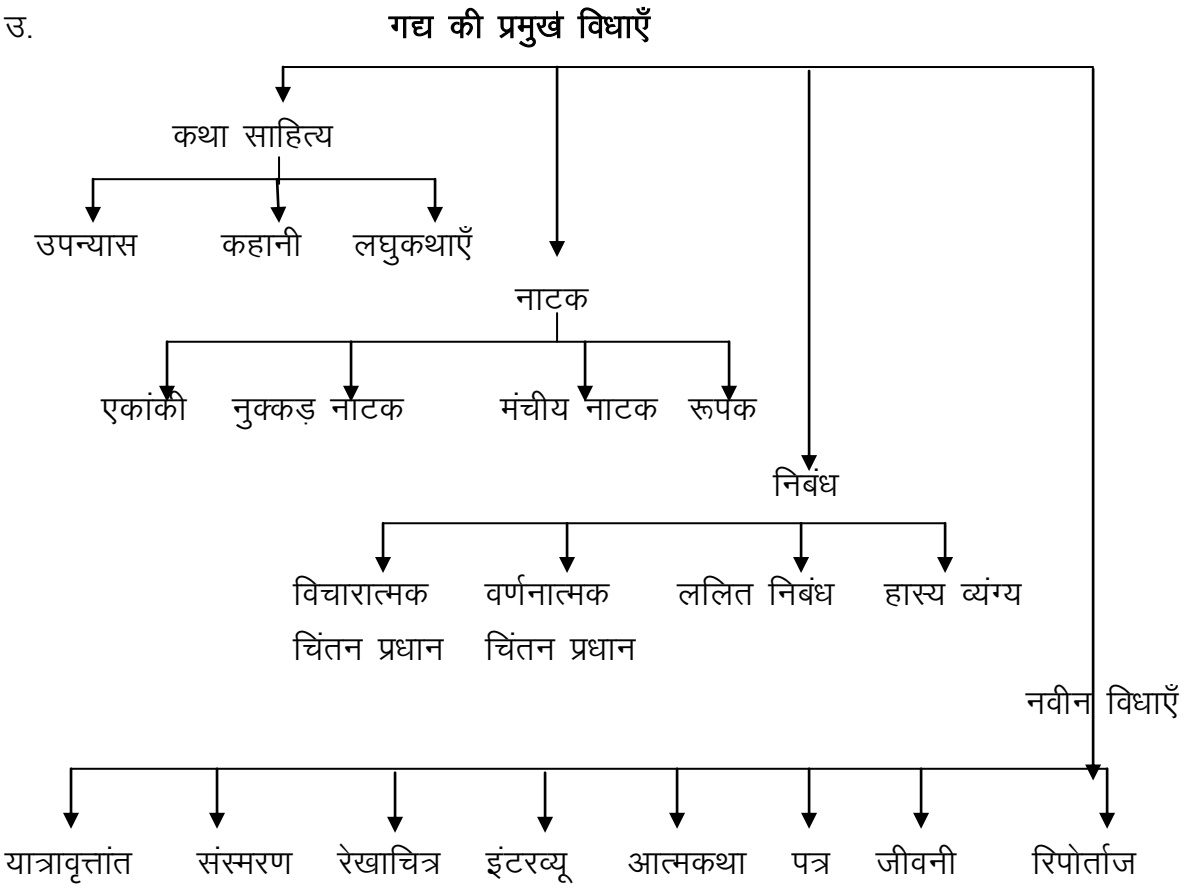

7. एक था पेड़ और एक था ठूँठ!

7.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. जीवन में परिस्थितियों से समझौता करना एक सीमा तक जरूरी है।
2. एक पेड़ की जड़ के समान हमें अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर दृढ़ रहना चाहिए और हवा में झूमते पेड़ के समान समन्वयवादी होना चाहिए।
3. विपरीत परिस्थितियों में विवेक से काम लेना चाहिए तथा परिस्थितियों से समझौता सोच–समझ कर करना चाहिए।
4. यह निबंध प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है। यह एक विचारात्मक और चिंतन प्रधान ललित निबंध है।
5. सूत्र वाक्यों का प्रयोग करते हुए यह ललित निबंध सरल और प्रभावपूर्ण ढंग से लिखा गया है।
6. पाठ की भाषा साधारण आम बोलचाल की भाषा है पर पाठ का विषय चिंतन प्रधान है।

7.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. लेखक कहाँ ठहरा? (3)

(1) होटल में (2) महल में (3) मकान में (4) झोंपड़ी में

प्र.2. खिड़की से लेखक को सबसे पहले क्या दिखाई दिया? (3)

(1) सरसों के झाड़ (2) सुंदर जानी पहचानी लड़की
(3) बाँझ का पेड़ (4) बर्फील पहाड़ी

प्र.3. बाँझ का झूमता हुआ पेड़ प्रतीक है (4)

(1) हमेशा खुश रहने का (2) हमेशा परेशान रहने का
(3) आदर्शों पर डटे रहने का (4) स्थितियों से समझौता करने का।

प्र.4. विचारों के क्रम में अचानक लेखक का ध्यान गया (2)

(1) गहरी घाटी की ओर (2) ठूँठ की ओर
(3) पहाड़ की चोटी की ओर (4) सुंदर भवन की ओर

प्र.5. सूखा वृक्ष देखकर लेखक को लगा जैसे कोई – (4)

(1) गरीब आदमी खड़ा हो। (2) सुंदर कलाकृति हो।
(3) कोई बहुत दिनों का प्यासा हो। (4) पेड़ का कंकाल हो।

प्र.6. विश्व की भाषा है – (3)

(1) न दे, न ले (2) दे, न ले (3) दे, ले (4) न दे, ले

प्र.7. विश्व की यात्रा का पथ है। **(1)**

(1) मान, मना (2) मान, न मना (3) न मान, न मना (4) मना, न मान

प्र.8. ठूँठ का पेड़ प्रतीक है – **(1)**

(1) जड़ता का (2) निर्जीवता का (3) दृढ़ता का (4) स्थिरता का

प्र.9. लेखक को पेड़ और ठूँठ में क्या अंतर दिखाई दिया? **(1)**

(1) एक वृक्ष झूमता है, दूसरा स्थिर है। (2) एक खुश है दूसरा दुःखी।

(3) एक सुंदर है, दूसरा कुरूप। (4) दोनों में कोई अंतर नहीं।

प्र.10. जीवन का अर्थ है। **(2)**

(1) न हिलना (2) समस्याओं से लड़ते रहना

(3) हिलना झुकना (4) सदैव प्रसन्न रहना

प्र.11. मनुष्य हिलने और झुकने से कब इनकार करता है – **(1)**

(1) ज़िद्दीपन के कारण (2) बेवकूफी के कारण

(3) असहयोग के कारण (4) बुद्धिमत्ता के कारण

प्र.12. निर्जीव जड़ता का जीवन में अर्थ है। **(4)**

(1) आदर्शों पर दृढ़ रहना (2) सूखे पेड़ की जड़

(3) बेजान सूखा पेड़ (4) अड़ियल

प्र.13. रावण और हिरण्यकश्यप की हार हुई, क्योंकि वे – **(3)**

(1) शक्तिहीन थे (2) कुछ अधिक ही बुद्धिमान थे।

(3) जिद्दी और अत्यधिक आत्मविश्वासी थे।

(4) परिस्थितियों से लड़ नहीं पाए।

प्र.14. इस पाठ में किस प्रकार की शैली है? **(2)**

(1) विवरणात्मक (2) चिंतन प्रधान (3) व्यंग्यात्मक (4) हास्य प्रधान

प्र.15. इस पाठ के वाक्यों का गठन कैसा है? **(1)**

(1) सरल (2) लंबा (3) कठिन (4) गंभीर

प्र.16. "भले ही वह उस ठूँठ की तरह निर्जीव हो या रावण की तरह जिद्दी।" वाक्य में अलंकार है – **(3)**

(1) रूपक (2) उत्प्रेक्ष (3) उपमा (4) यमक

प्र.17. यह निबंध किस श्रेणी के निबंध में आता है?

उ. ललित निबंध

प्र.18. कुल्हाडी–कुदाल में कौन–सा अलंकार है?

उ. अनुप्रास

प्र.19. कुल्हाड़ी का काम क्या है?

उ. किसी भी अंश को काटकर फेंक देना।

प्र.20. कुदाल का कार्य क्या है?

उ. उलट–पलट देना

प्र.21. जड़ से लेखक का क्या तात्पर्य है? **(4)**

(1) जीवन की सार्थकता (2) कुल्हाडी और कुदाल

(3) घृणा और द्वेषभाव (4) पर्वत का शिखर

प्र.22. डिक्टेटरी–अधिनायकता का तात्पर्य है – **(1)**

(1) दूसरों पर शासन करना (2) अपने को ही सही मानना

(3) अपना प्रभुत्व बनाए रखना (4) अपना अधिकार न छोड़ना

प्र.23. अहंकारी मानव से दुनिया किस भाषा से बात करती है। **(4)**

(1) ले, दे (2) कुल्हाड़ी और कुदाल

(3) मान, मना (4) न कह, न सुन

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. बाँझ के पेड़ को देखकर लेखक सबसे पहले क्या महसूस करता है?

उ. बाँझ के पेड़ को देखकर सबसे पहले लेखक को महसूस होता है, जैसे उसका कोई दोस्त सामने आकर खड़ा हो गया है और उसका हाल–चाल पूछ रहा है।

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. इस निबंध में लेखक हमें किस दृष्टि से दृढ़ रहने की शिक्षा देता है?

उ. जीवन–दृढ़ता ही हमारी पहचान बनाती है। जो अपनी संस्कृति, अपनी परंपरा, अपनी विशेषता और सिद्धांतों पर दृढ़ बने रहकर स्थापित होती है। सत्य और आदर्शों पर चलना सिखाती है। जीवन में अपने सिद्धांतों पर डटे रहना और उचित समय पर झुकना ही जीवन है। इस प्रकार लेखक हमें सिद्धांतों पर दृढ़ रहने के लिए ज़ोर देते हैं।

प्र.2. लेखक ने इस निबंध में हिटलर और स्टॉलिन का उदाहरण किस रूप में दिया है?

उ. लेखक ने इस निबंध में हिटलर और स्टॉलिन का उदाहरण उनके ज़िद्दीपन और अधिनायकता के रूप में लेते हैं। वे अड़ियल थे। उन्होंने सही बात मानने से, सही राह पर चलने से इनकार कर दिया था। इसलिए उन्हें जीवन में हार माननी पड़ी। पौराणिक पात्र रावण और हिरण्यकश्यप का स्मरण भी इसी संदर्भ में करते हैं।

7 अंक के प्रश्न

प्र.1. इस निबंध में 'वृक्ष का ठूँठ' किसका प्रतीक है?

उ. इस निबंध में वृक्ष का ठूँठ एक ऐसे व्यक्ति का प्रतीक है जो निर्जीव, कंकाल और रावण के समान ज़िद्दी होते हैं, न किसी को कुछ देते हैं, न किसी से कुछ लेते हैं, न किसी से कुछ कहते हैं न किसी की सुनते हैं, न किसी की मानते है न किसी को मनाते हैं। सिर्फ़ अपने निर्णय को स्वीकार करते हैं, अपनी चलाते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन जीते हुए भी सूखे ठूँठ के समान होते हैं।

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. बाँझ के हरे–भरे पेड़ और ठूँठ के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उ. बाँझ के हरे–भरे पेड़ और ठूँठ के माध्यम से लेखक यह समझाते हैं कि –

1. जीवन में परिस्थितियों से समझौता करना एक सीमा तक ज़रूरी है।

2. बाँझ के हरे–भरे झूमते पेड़ के समान समन्वयवादी होना चाहिए। पेड़ के जड़ के समान हमें अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर दृढ़ रहना चाहिए।

3. विपरीत परिस्थितियों में होशियारी से काम लेना चाहिए। तथा परिस्थितियों से समझौता, सोच–समझ कर करना चाहिए।

4. परेशानियों से समझौता करो, वह भी एक सीमा तक, जहाँ तक झुकना चाहिए उतना ही झुकना, इतना भी नहीं झुकना कि हम टूट जाएँ।

5. अपने आदर्शों पर दृढ़ रहें।

6. हमारी यह जीवन दृढ़ता ही हमारी पहचान बनती है। अपनी संस्कृति, अपनी परंपरा, अपनी विशेषता और सिद्धांतों पर दृढ़ रहना चाहिए। यह रचना हमें सत्य और आदर्श पर चलना सिखाती है। जीवन में अपने सिद्धांतों पर डटे रहना और सही समय पर झुकना (समझौता करना) ही जीवन है।

प्र.2. जीवन में कष्ट और परेशानी आने पर मनुष्य को क्या करना चाहिए?

उ. जीवन में कष्ट और परेशानी आने पर मनुष्य को उन से समझौता करना चाहिए। वह भी एक सीमा तक अर्थात जहाँ तक झुक सकते हैं वहीं तक झुकना यानी समझौता करना। इतना भी नहीं झुकना चाहिए कि हम टूट जाएँ। उसके साथ अपने आदर्शों पर दृढ़ रहें। सिद्धांतों से नहीं डिगना चाहिए। जीवित व्यक्ति वही है जो परिस्थितियों को समझे और उसके अनुसार अपने को ढाले। सदैव समय का ध्यान रखते हुए समुचित स्थान पर विवेकपूर्ण निर्णय लेना चाहिए। इन बातों का जो ध्यान नहीं रखता वह अड़ियल कहलाता है, पेड़ का ठूँठ कहलाता है, निर्जीव या जड़ कहलाता है। उसमें जीवन की दृढ़ता नहीं होती है। इसलिए जीवन में समयानुकूल समझौता करना ही उचित है। तभी हम जीवन में आनेवाले कष्ट और परेशानियों में सम्भल सकते है।

8. दो कलाकार

8.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. कहानी पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, वैज्ञानिक आदि किसी भी पक्ष से जुड़ी हुई हो सकती है।
2. कहानी और उपन्यास में अंतर होता है। कहानी किसी एक घटना पर आधारित होती है, जबकि उपन्यास में कई घटनाएँ सम्मिलित होती हैं।
3. मुख्यतः किसी भी कहानी के छह तत्व होते हैं।
   1. कथावस्तु अथवा कथानक
   2. चरित्र–चित्रण
   3. देशकाल और वातावरण
   4. कथोपकथन या संवाद
   5. भाषा–शैली
   6. उद्देश्य।
4. 'दो कलाकार' कहानी का क्रम इस प्रकार है –
   - चित्रा और अरुणा दो अच्छी दोस्त। हॉस्टल में एक साथ रहना।
   - चित्रा का अपना नया चित्र अरुणा को दिखाना।
   - चित्रा का एक प्रतिभाशाली कलाकार होना।
   - अरुणा का गरीबी के बच्चों को पढ़ाना और फुलिया दाई के बच्चे को बचाने का प्रयास करना।
   - चित्रा का मृत भिखारिन और उसके बच्चों का चित्र बनाना और विदेश गमन।
   - चित्रा का देश–विदेश में ख्याति प्राप्त करना।
   - अरुणा का मृत भिखारिन के बच्चों का गोद लेना।
   - दोनों सखियों का मिलन और एक की श्रेष्ठता।
5. कहानी के संवादों से दोनों सखियों की उपहास वृत्ति की झलक मिलती है।
6. संवाद छोटे, मुहावरेदार, असरदार और सरल है।
7. भाषा आत्मीयता और सहजता के गुणों से युक्त है।

8.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. अरुणा किसके बच्चे को बचा नहीं पाई?

उ. फुलिया दाई के बीमार बच्चे की तत्परता से सेवा करने के बावजूद अरुणा बच्चे को नहीं बचा पाई।

प्र.2. 'दो कलाकार' कहानी में किस काल खंड का वातावरण दिखाई देता है?

उ.. 'दो कलाकार' कहानी में आधुनिक काल का वातावरण दिखाई देता है।

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. कलाकार किसे कहते हैं?

उ. ऐसा व्यक्ति जिसका किसी–न–किसी कला से संबंध हो जैसे चित्रकार, संगीतकार, मूर्तिकार, साहित्यकार, अभिनेता के अलावा कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति या समाज को नया जीवन दे दे, उसे सुधार दे, गढ़ दे, सुन्दर बना दे तो उसे भी कलाकार कहते हैं।

प्र.2. 'दो कलाकार' कहानी का मूल संदेश क्या है?

उ. कहानीकार मन्नू भंडारी द्वारा लिखित 'दो कलाकार' कहानी का मूल संदेश समाज–सेवा को श्रेष्ठ बताना और कला का दर्जा देना है। चित्रों की अपेक्षा समाज सेवा में कला की सच्ची संवेदना है। दूसरों की पीड़ा से अनुप्रेरित होने के कारण समाज–सेवा, चित्रकला से अधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण है।

4 अंक के प्रश्न

प्र.1. निम्नलिखित वाक्यों के वाक्य–भेदों को पहचानिए

(1) चित्रा ने सोती हुई अरुणा को उठाया। (साधारण या कथनात्मक वाक्य)
(2) 'ऐ रुनी, उठ'। (आज्ञार्थक)
(3) 'अरे यह क्या?' (प्रश्नार्थक वाक्य)
(4) 'आ गये सब बच्चे?' (प्रश्नार्थक वाक्य)
(5) 'तेरी तरह लकीरें खींचकर समय बर्बाद नहीं करते'। (निषेधार्थक वाक्य)
(6) 'अमृता शेरगिल की तरह मेरा भी नाम गूँज उठे'। (इच्छार्थक वाक्य)
(7) ओह! तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी'।

(अंतिम वाक्य 'ओह' से प्रारंभ हो रहा है और मनोवेग को सूचित कर रहा है ऐसे वाक्य 'मनोवेगात्मक वाक्य' कहे जाते हैं।)

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. दो कलाकार कहानी का अंतिम भाग क्यों महत्वपूर्ण है?

उ. कहानी का अंतिम भाग भी संवादों और घटनाओं से ही विस्तार पाता है। यह खंड दोनों सखियों में चली आ रही उस बहस का भी अंत कर देता है जो अपने–अपने कामों को उत्तम सिद्ध करना चाहती थीं। अपनी चित्र प्रदर्शनी में अरुणा के साथ आए दोनों बच्चों को देखकर चित्रा चकित होती है। और जब उसे यह पता चलता है कि वे दोनों, मृत भिखारिन के बच्चे हैं, जिसका उसने स्केच बनाकर प्रसिद्ध पाई है, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। वह स्वयं को छोटा महसूस करती है और अरुणा को महान कलाकार समझती है। इस प्रकार पूरी कहानी घटना और संवादों के माध्यम से सहज रूप से आगे बढ़ती है। कहीं से भी कथानक न तो अनगढ़ लगता है और न ही कृत्रिम। ऐसा लगता है कि जीवन का एक टुकड़ा पूरी सच्चाई, ईमानदारी और जीवंतता के साथ मूर्त कर दिया गया है।

प्र.2. 'दो कलाकार' कहानी के कहानीकार (लेखक) का परिचय दीजिए।

उ. मन्नू भंडारी नए दौर के प्रसिद्ध कहानीकार है। इनका जन्म 3 अप्रैल 1931 ई. को भानपुरा, राजस्थान में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर में हुई। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. करने के बाद कलकत्ता में अध्यापन कार्य करने लगीं। कुछ समय बाद इनकी नियुक्ति दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका के पद पर हो गई। आपने अधिकतर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक लेखन किया है। आपके प्रमुख कहानी संग्रह है – :मैं हार गई', 'एक प्लेट सैलाब', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है' आदि। इनके 'महाभोज' और 'आपका बंटी' प्रसिद्ध उपन्यास है। 2006 में उन्हें सलाका सम्मान से सम्मानित किया गया।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. कहानी कैसे पढ़े? या कहानी के मुख्य तत्व क्या है? (8 अंक)

उ. कहानी मनोरंजन का साधन है, साथ ही किसी जीवन–मूल्य की तरफ संकेत भी करती है। कहानी, राजा–रानी की और काल्पनिक परियों से लेकर पौराणिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सामाजिक आदि किसी भी विशेष से जुड़ी हो सकती है। यह जीवन की कई घटनाओं पर आधारित होती है। तभी तो सुप्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचंद ने कहा है कि कहानी 'एक गमला है तो उपन्यास पूरा उद्यान'।

किसी भी कहानी को अच्छी तरह से समझने के लिए हम कहानी के निम्नलिखित छः तत्वों का अध्ययन करते हैं।

(1) कथावस्तु
(2) देशकाल तथा वातावरण
(3) चरित्र चित्रण
(4) कथोपकथन अथवा संवाद
(5) उद्‌देश्य
(6) भाषा–शैली

लेकिन कभी–कभी इनमें से कोई एक तत्व नहीं भी होता।

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'दो कलाकार' कहानी का सारांश क्या है?

(या)

'दो कलाकार' कथा के प्रमुख चरण या मुख्य तत्व क्या है?

उ. कहानी में चित्रा और अरुणा दो सखिया हॉस्टल में एक साथ रहती थी उनके व्यवहार और आदतों में अंतर होते हुए भी दोनों घनिष्ठ मित्र थीं। एक–दूसरे के सुख–दुःख का ध्यान रखती थीं। आगे कहानी इस प्रकार आगे बढ़ती है।

1. अरुणा का विवाह मनोज से निश्चित हो चुका है।
2. चित्रा धनी पिता की इकलौती पुत्री है।

3. अरुणा एक समाज सेविका है।
4. चित्रा एक चित्रकार, प्रसिद्ध पाने की उत्सुक, जिसे गुरूजी का प्रोत्साहन प्राप्त है।
5. अखबारों से पता चलता है कि लगातार मूसलाधार बारिश से बाढ़ आ गई है। बाढ़ पीढ़ितों की हालत बिगड़ चुकी है।
6. अरुणा शिविर में जाती है और बाढ़ पीड़ितों की सेवा करती है।
7. चित्रा उन पर आधारित चित्र बनाती है।
8. 'गर्ग स्टोर पर भिखारिन की मृत्यु हो जाती है। चित्रा उस मरी हुई भिखारिन और उसके बच्चों का चित्र बनाती है और फिर चली जाती है। भिखारिन वाले चित्र पर चित्रा को विशिष्ट पुरस्कार मिलता है। चित्रा विदेश से वापस आती है और भव्य प्रदर्शनी का आयोजन करती है, जिससे उसे अपूर्व प्रसिद्धि मिलती है।
9. प्रदर्शनी में अरुणा का चित्रा से मिलन होता है।
10. अरुणा के साथ दो बच्चों को देखकर चित्रा अवाक् रह जाती है।
11. चित्रा को पता चलता है कि अरुणा के साथ आए दोनों बच्चें उसी भिखारिन के हैं – जिसका चित्र उसने बनाया था।
12. वह खुद को अरुणा के सामने बहुत छोटा महसूस करती है। कहानीकार मन्नू भंडारी ने कहानी में एक ही पद्धति को अपनाया है, पहले कुछ स्थितियों को बताया है और बाद में एक घटना प्रस्तुत की है।

प्र.2. कहानी में कथावस्तु क्या है? दो कलाकार कहानी की कथावस्तु क्या है?

उ. कथावस्तु घटनाओं और पात्रों के संयोग से होता है। वास्तव में लेखक अपने कथ्य के अनुसार ही कथावस्तु का स्वरूप तैयार करता है। उसी के अनुसार कभी घटनाओं की प्रधानता हो जाती है, कभी चरित्र और कभी वातावरण की। इस कहानी में वातावरण की कोई विशेष भूमिका नहीं है। केवल छात्राओं के हॉस्टल का परिवेश दिखाया गया है और उसी के इर्द–गिर्द रहने वाले लोगों की सेवा में जुटी अरुणा को कलाकार कहा गया है।

कहानी के प्रारंभ में छात्रावास में रहने वाली चित्रा और अरुणा की रुचियों, उपहास–वृत्ति और प्रगाढ़ मैत्री को संवादों, हरकतों और कार्यों से रेखांकित किया गया है। इस घटना से न केवल अरुणा की सेवा भावना का पता चलता है बल्कि छात्रावास की छात्रा सविता की ईर्ष्या और आराम परस्ती की वृत्ति का भी पता चलता है। इस प्रकार कहानी को आगे बढ़ाया गया है। कहानीकार ने अपने कथ्य को संवादों के जरिए स्पष्ट किया है। अरुणा कागज पर चित्र बनाने की बजाए लोगों की जिंदगी बनाना ज्यादा श्रेयस्कर समझती है अरुणा का संवाद कि 'किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे' ही कहानी का मूल संदेश है। पूरा कथानक रंगों और लकीरों की बजाए मानव–सेवा को महत्व देने के लिए गढ़ा गया है।

कहानी का अंतिम भाग भी संवादों और घटना से ही विस्तार पाता है। यह खंड दोनों सखियों में चली आ रही उस बहस का भी अंत कर देता है जो अपने–अपने कामों को उत्तम सिद्ध करना चाहती थी। अपनी चित्र प्रदर्शनी में अरुणा के साथ आए दोनों बच्चों को देखकर चित्रा चकित होती है। और जब उसे यह पता चलता है कि, वे दोनों मृत भिखारिन के बच्चे हैं, जिसका उसने स्केच बनाकर प्रसिद्धि पाई हैं, किंतु अरुणा उनकी सेवा करके उन्हें जीवनदान देती है। चित्रा अपने को छोटा महसूस करती है और अरुणा को महान कलाकार समझती है। इस प्रकार पूरी कहानी घटना और संवादों के माध्यम से सहज रूप से आगे बढ़ती है। कहीं से भी कथानक न तो अनगढ़ लगता है और न ही कृत्रिम। ऐसा लगता है कि जीवन का एक टुकड़ा पूरी सच्चाई, ईमानदारी और जीवंतता के साथ मूर्त कर दिया गया है।

प्र.3. कहानी में देशकाल तथा वातावरण क्या है? दो कलाकार कहानी किस वातावरण को दर्शाती है?

उ. कहानी लिखते समय और उसमें निहित स्थितियाँ ही देशकाल या वातावरण कहलाता है। कहानी में देशकाल से आशय उन सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक स्थितियों से है जिनमें कहानी लिखी गई होती है या जिन्हें कहानी में उभारने की कोशिश की गई होती है। कहानी में देश की जिस सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों तथा काल खंड का वर्णन मिलता है या परोक्ष रूप से ये दिखाई देते हैं उसे देशकाल कहा जाता है। वातावरण का आशय किसी भी काल खंड की स्थितियों से होता है। उदाहरण के लिए जब आप राजा–रानी की कोई कहानी पढ़ते हैं तो आपको स्पष्ट हो जाता है कि कहानी प्राचीन समय के वातावरण को उजागर कर रही है।

'दो कलाकार' कहानी आधुनिक काल खंड में भारतीय समाज के वातावरण को दर्शाती है। चित्रा और अरुणा दो सहेलियाँ हैं जो हॉस्टल में रहती हैं लेखिका ने उन्हें हॉस्टल में रहते हुए दिखा कर आधुनिक भारतीय समाज के वातावरण को दर्शा दिया है। क्योंकि आधुनिक काल से पहले लड़कियों का इस तरह से कहीं बाहर रहना और अपनी मर्जी से काम करने का प्रचलन नहीं था। कहानी के दोनों प्रमुख पात्र सहेलियाँ है जो स्वतंत्र और खुले विचारों की हैं। दोनों अपने पुरुष मित्रों के बारे में खुलकर बातें करती हैं और इसे बुरा नहीं मानतीं। आधुनिक शिक्षा और सोच के कारण किस तरह हमारे समाज में बदलाव आया है उससे समाज में महिलाओं की आजादी, उन्हें भी पुरुषों की तरह अपने जीवन का निर्णय लेने और समय से काम करने की परंपरा विकसित हुई है। इस कहानी में इस काल खंड की प्रवृत्तियों को साफ देखा जा सकता है। दोनों में आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता है।

प्र.4. 'दो कलाकार' कहानी के मुख्य पात्र का चरित्र चित्रण विस्तार से कीजिए।

(या)

कहानी के प्रमुख पात्र की चरित्रगत विशेषताओं को विस्तार से लिखिए।

उ. **अरुणा का चरित्र चित्रण** :– अरुणा एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की है जो संस्कारों से परोपकारी तथा कर्म के प्रति समर्पित है। वह समाज सेवा के लिए हमेशा तैयार रहती है, इसलिए उसकी सखी चित्रा उसे पढ़ाई के प्रति सचेत कतरे हुए कहती है ''तेरे इन्तिहान सिर पर आ रहे हैं कुछ पढ़ती– लिखती तू है नहीं, सारे दिन बस भटकती रहती है।'' अरुणा के हृदय में समाज सेवा के लिए इतना उत्साह है कि, वह प्रधानाचार्य से स्वयं–सेवकों के दल सम्मिलित होने की अनुमति पा लेती है। संवेदनशील अरुणा बाढ़ पीड़ितों की सेवा में दिन–रात एक कर देती है और भूख प्यास की परवाह किए बिना समाज सेवा में लगी रहती है।

दरअसल अरुणा के स्वभाव में रोगियों, बाढ़ पीड़ितों, दुखियों के लिए अपार प्रेम है। जब वह फुलिया दाई के बच्चे की बीमारी के बारे में सुनती है तो फ़ौरन उसकी सेवा में तत्पर हो जाती है। सेवा करने के बावजूद वह बच्चे को बचा नहीं पाती, तो वह उस दिन भोजन भी नहीं करती। वह कई दिनों तक उदास रहती है और आखिर चित्रा को कहना पड़ता है ''जो होना था सो हो गया अब भूखे रहने से क्या होगा थोड़ा–बहुत खा ले।

कहानी के आरंभ में अरुणा की उपहास वृत्ति का पता चलता है किंतु वास्तविकता यह है कि स्वभाव से वह गंभीर है। जीवन के उपयोगी और रंजक पक्षों में से अरुणा को उपयोगी पक्ष ही बेहतर लगता है। वह लोगों के दुःख–दर्द को बाँटने में ही जीवन की सार्थकता समझती है। वह चित्रा से कहती है, 'कागज पर निर्जीव चित्रों को बनाने के बजाय दो चार की जिंदगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य भी है और साधन भी। किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दें। वह कला और जीवन को लेकर कई बार चित्रा से बहस करती दिखाई देती है।

अरुणा न केवल समाज सेविका है अपितु अपने संबंधों के प्रति भी पूर्णतः जागरूक है। वह अपनी सखी चित्रा का बराबर ध्यान रखती है। उसके हृदय में दूसरों के लिए इतना दर्द है कि वह हर परिस्थिति में उसकी सहायता करना चाहती है। 'गर्ग स्टोर के सामने वाले पेड़ के नीचे बैठने वाली भिखारिन की घटना सुनते ही वह अपनी सखियों को छोड़ उसे देखने चली जाती है। वह भिखारिन के बच्चों को सँभालने में इतनी तल्लीन हो जाती है कि अपनी प्रिय सखी को विदा करने के लिए स्टेशन पर भी नहीं जा पाती। वह भिखारिन के रोते–चीखते दोनों बच्चों को सँभालती है और उन्हें अपने पास रख कर भरण–पोषण करके नया जीवन देती है।

अरुणा के इस प्रेम भाव से चित्रा भी चकित रह जाती है। जब अरुणा चित्रा की चित्र प्रदर्शिनी में अपने साथ मृत भिखारिन के दोनों बच्चों को लाती है और चित्रा को पता चलता है

कि वे दोनों बच्चे वे ही हैं जिनकी वजह से उसे इतनी प्रसिद्धि मिली है तो विस्मय से उसकी आँखें फैली की फैली रह जाती है। वस्तुतः उसी दिन उसे इस बात का अहसास होता है कि वास्तविक कला तो दूसरों को जीवन देना है, जिसे उसकी सखी अरुणा ने इन दो बच्चों को दिया है। इस प्रकार हम देखते है कि, अरुणा के हृदय में सच्ची संवेदना है। दया, करुणा, मैत्री, परोपकार तथा सहानुभूति से भरा उसका हृदय कर्म के प्रति अनुप्रेरित करता रहता है।

प्र.5. दो कलाकार कहानी के मुख्य पात्र चित्रा के चरित्र चित्रण विस्तार से लिखिए।

उ. चित्रा धनी पिता की इकलौती संतान है। वह चित्रकला की छात्रा है और महत्वाकांक्षी है। कोई भी चित्र जब पूरा हो जाता है उसे दिखाने का उसे शौक है इसीलिए वह सोती हुई अरुणा को उठाकर अपना नया चित्र दिखाती है। चित्रकला की लगन उसे इतनी है कि वह हर समय रंगों में डूबी रहती है, ऐसे में उसे दीन–दुनिया तक की खबर नहीं रहती। चित्रकला को वह इतना महत्व देती है कि हरेक घटना में अपनी कला के लिए आइडिया की तलाश में रहती है। अरुणा उससे कहती है कि, दुनिया में बड़ी सी बड़ी घटना घट जाए पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए कोई आइडिया नहीं तो तेरे लिए उस घटना का कोई महत्व नहीं। बस हर घड़ी हर जगह तू मॉडल खोजा करती है। उसकी इस लगन को देखकर गुरुजी कहते हैं कि वह समय दूर नहीं जब हिन्दूस्थान के कोने में तेरी शोहरत गूँजेगी। इस कला के लिए वह अपनी सखी अरुणा से बहस भी करती है और 'समाज–सेवा' से 'कला' को बेहतर मानती है। कला की साधना से वह देश–विदेश में ख्याती प्राप्त करती है। अखबारों में प्रसिद्ध हुई। उसके चित्रों की प्रदर्शनी चर्चा का विषय बनती है। वह प्रथम पुरस्कार जीतती है और सम्मान पाती है।

कला में लगन के साथ–साथ चित्रा विनोदी स्वभाव की छात्रा है इसीलिए अपने हॉस्टल में वह इतनी लोकप्रिय है कि रेलवे स्टेशन पर अनेक छात्राएँ उसे विदा करने आती है। गुरूजी से मिलकर लौटने में देरी होने पर सभी छात्राओं को उसकी चिंता रहती है।

चित्रा अपने मैत्री संबंधों का सदा ही ध्यान रखती है। वह अरुणा को खाना खिलाने का प्रयास करती है वह बहुत स्नेह से अरुणा की पीठ थपथपाते हुए कहती है, 'जो होना था सो हो गया अब भूखे रहने से क्या होगा थोड़ा बहुत खा ले'। कॉलेज से लौटते ही वह अरुणा के लिए चाय बनाती है। उसकी चिट्ठियों का ध्यान रखती है अरुणा को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि चित्रा जहाँ एक ओर कला के लिए समर्पित है वह अपनी अनन्य मैत्री के प्रति निष्ठा से सब का दिल भी जीतती है।

प्र.6. दो कलाकार कहानी का कथोपकथन अथवा संवाद योजना तत्व को समझाइए।

उ. कहानी में संवाद योजना एक महत्वपूर्ण तत्व होता है। कहानी अथवा नाटकों में जब पात्र आपस में बातचीत करते हैं तो उसे संवाद कहा जाता है। प्रस्तुत कहानी 'दो कलाकार' संवादात्मक शैली में लिखी गई है। छोटे–छोटे संवादों के माध्यम से कहानी को विकसित किया गया है। कहानी जहाँ हास–उपहास से आरंभ होती हैं वहीं इसका अंत अत्यंत कारुणिक है। अंतिम

घटना दो कलाकारों में से एक को कहीं अधिक उदास बना देती है। पूरी कहानी में आम बोलचाल के छोटे–छोटे संवाद हैं।

मन्नू भंडारी की इस कहानी की दूसरी विशेषता है – आत्मीयता। अरुणा और चित्रा के इन संवादों में उनके आत्मीय व्यवहार को देखिए –

1 'ऐ रुनी उठा'

अरे क्या है?

देख मेरा चित्र पूरा हो गया।

ओह! तो दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी, बदतमीज़ कहीं की।

2 चित्र को घुमाते हुए अरुणा बोली किधर से देखूँ यह तो बता दे। हजार बार कहा है जिसका चित्र बनाए उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलत फहमी न हुआ करे, वरना तू बनाए हाथी और हम समझें उल्लू।''

3 'जरा सोचकर बता यह किसका प्रतीक है'।

'तेरी बेवकूफी का'

उक्त अंश में ऐसा आत्मिक व्यवहार है कि कहानी–कहानी न लगकर जीवन का सच्चा प्रतिबिंब लगती है। दोनों सहेलियों के संवादों में उपहास, छेड़छाड़ और एक दूसरे के लिए बेचैनी साफ दिखाई देती है।

प्र.7. 'दो कलाकार' कहानी का उद्देश्य क्या है?

उ. हर रचना का कोई न कोई उद्देश्य होता है कहानीकार मन्नू भंडारी द्वारा रचित इस कहानी का उद्देश्य समाज सेवा को कला का दर्जा देना है। चित्रों की अपेक्षा समाज सेवा में कला की सच्ची संवेदना है। दूसरों की पीड़ा से अनुप्रेरित होने के कारण समाज सेवा, चित्र कला से अधिक उपयोगी है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कहानीकार ने ऐसी स्थितियों और घटनाओं का चयन किया है, जिसमें दोनों ही पक्ष हिस्सा लेते हैं, और अपने–अपने कार्यों की उत्तमता का दावा करते हैं। कहानी के आरंभ में चित्रा कुछ लकीरें खींचकर दुनिया के श्रम को उजागर करती है, तो अरुणा हॉस्टल के इर्द–गिर्द रहनेवाले बच्चों को पढ़ाकर और फुलिया दाई के बीमार बच्चों की सेवा करके सामाजिक कार्यों में संलग्न रहती है। इसी तरह एक बाढ़–पीड़ितों के काल्पनिक चित्र तैयार करती है तो दूसरी उनके लिए चंदा इकट्ठा कर शिविर में जाती है और लोगों को जीवन दान देने के पुण्य कार्यों में जुटी हुई है।

तीसरे खंड में चित्रा एक भिखारिन के बच्चों का स्केच बनाकर प्रसिद्ध पाती है और अरुणा भिखारिन की मृत्यु के बाद उसके दोनों बच्चों को पालती पोसती है। कहानीकार ने इन सभी घटनाओं के माध्यम से समाज– सेवा को सहज रूप से उत्तम सिद्ध करना चाहा, और बताया कि मानवीय संवेदनाओं से भरा व्यक्ति ही सच्चा कलाकार हो सकता है। किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे।

'दुनिया की बड़ी सी बड़ी घटना भी इसे आंदोलित नहीं करती, जब तक उसमें कला के लिए कोई स्थान न हो'।

अरुणा का यह संवाद कि, इन निर्जीव चित्रों की बजाए दो–चार की जिन्दगी क्यों नहीं बना देती' जैसे संवादों से कहानीकार ने अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफलता पाई है।

प्र.8. दो कलाकार कहानी की भाषा–शैली की विशेषता क्या है?

उ. मन्नू भंडारी नई कहानी के दौर की कथाकार है। इस दौर में कहानी की भाषा में एक गुणात्मक परिवर्तन आया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है – बोलचाल की भाषा। परिवेश और पात्र के अनुसार भाषा बदलती रहती है। बोलचाल की भाषा का नमूना देखिए –

1 क्यों बड़–बड़ कर रही है। ले मैं आ गई। चल, बना चाय।

2 तेरे मनोज की चिट्ठी आई है।
तूने पढ़ ली होगी फाड़कर
चल हट।

3 'नहीं चित्रा, अब रहने दे, बस तू लैंप बुझा दें।'

कहानी की भाषा में कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि वह जबरदस्ती ठूँसी गई है। भाषा में सब जगह सरलता, सहजता और बोलचाल के गुण लिए हुए हैं। इसलिए वाक्य छोटे हैं तथा तद्भव और देशज शब्दावली के साथ–साथ बोलचाल की अंग्रेजी और उर्दू के शब्दों का प्रयोग हुआ है। अंग्रेजी शब्दों में लैकचर, बोर, आइडिया, कंफ्यूजन, प्रिंसिपल, वार्डन जैसे अनेक शब्द हैं।

उर्दू के इम्तिहान, हुनर, बहस, अखबार, खस्ता, हालत आदि जैसे आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग है। कहानी में कहीं भी वाक्य भारी और बोझिल नहीं है। संवाद छोटे, चुस्त और प्रिय हैं। जैसे –

1 'मासी तुम जरूर ड्राइंग में फस्ट आती होगी'।
'तुम भी अपनी क्लास में फर्स्ट आती हो'।
'तुम हमारे घर आओगी तो अपनी कॉपी दिखाऊँगी'।

2 'ये बच्चे क्यों रो रहे हैं मासी'।
'उनकी माँ मर गई, देखती नहीं मरी पड़ी है'।
'ये सचमुच के बच्चे थे मासी'।
'अरे सचमुच के बच्चे को देखकर ही तो बनाई थी यह तस्वीर'।

मन्नू जी की अपनी विशेषता है कि, वे कहानी की स्थिति के अनुसार भाषा व्यवहार का पूरा ध्यान रखती है।

9. अच्छा कैसे लिखें

9.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. सबसे पहले अपनी बात व्यक्त करने के लिए हम सही शब्द की तलाश करते हैं।
2. जब सिर्फ शब्दों से काम नहीं चलता तो अपनी बात दूसरों को समझाने के लिए हम वाक्य गढ़ते हैं।
3. जब हमारी बात एक वाक्य में पूरी नहीं होती तो हम अनुच्छेद या पैरा बनाते हैं।
4. जब एक अनुच्छेद में भी हमारी बात पूरी नहीं समाती तो हम कई अनुच्छेद वाला निबंध या आलेख तैयार करते हैं।
5. लेखन के समय हम विषय का ध्यान रखते हैं।
6. प्रयोजन और पाठक का भी ध्यान रखते हैं। अर्थात् क्यों लिख रहे हैं और पढ़ने वाला कौन है, इस बात का ध्यान अवश्य रखना आवश्यक है।
7. हम यह भी ध्यान रखते हैं कि बातें उपयुक्त क्रम से रखी जाएँ और एक अनुच्छेद की बात दूसरे अनुच्छेद में गडमड न हो या उनका दुहराव न हो।

अच्छे लेखन के लिए हमेशा ध्यान रखें कि –

- आप क्या किसके लिए लिख रहे हैं।
- लिखते समय ध्यान में रहे कि आप क्यों लिख रहे हैं।
- लेखन विषय के अनुरूप है अथवा नहीं।
- तथ्वों का क्रम ठीक है अथवा नहीं।
- आपके शब्दों का चुनाव और प्रयोग सटीक है अथवा नहीं।
- आपकी भाषा शुद्ध है अथवा नहीं।
- विराम चिह्नों का प्रयोग ठीक ढंग से हुआ है अथवा नहीं।

9.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. निम्नलिखित वाक्यों को चुस्त–दुरूस्त बनाकर लिखिए।

(क) बीमार रोगी को काटकर रोज एक सेब खिलाइए।

(ख) हिन्दुस्तान रोज प्रकाशित होता समाचार पत्र है।

(ग) पटना बिहार की राजधानी में से होकर अपनी गाड़ी जाएगी।

उ. (क) बीमार रोगी को रोज एक सेब काटकर खिलाइए।

(ख) हिन्दुस्तान समाचार पत्र रोज प्रकाशित होता है।

(ग) बिहार की राजधानी पटना से अपनी गाड़ी जाएगी।

प्र.2. अच्छे लेखन की तीन शर्तें क्या है?

उ. (1) लेखन प्रभावी हो। (2) जो लिखा जाए, वह सटीक हो।
(3) जो लिखा जाए, वह व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध हो।

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. बोलने और लिखने में क्या अंतर है?

उ. बोलने में तो वक्ता प्रत्यक्ष दिखाई देता है और आवाज के उतार–चढ़ाव, पदबंधों की पुनरुक्ति, शारीरिक भाषा आदि के द्वारा वह अपनी बात को आसानी से समझा देता है। पर लिखने में हमारे वाक्य ही मूक प्रेषक होते हैं। अतः उनमें स्पष्टता और शुद्धता आवश्यक है। वाक्यों की शुद्धता की बात करते हुए हमारा ध्यान सबसे पहले अन्विति की ओर जाता है। अंतर थोड़ा ही है।

प्र.2. निम्नलिखित अनुच्छेद में उपयुक्त स्थान पर विराम चिह्न लगाइए।

एक तो यह कि आप सोच विचार कर निश्चय कर लें कि कहाँ जाना है कब जाना है और कहाँ–कहाँ घूमना है यह भी हिसाब लगाएँ कि कितना खर्च होगा फिर उसी के अनुसार छुट्टी लीजिए आरक्षण कराइए होटल बुक कीजिए या संबंधियों को बताइए जिनके साथ आप टिकना चाहते हैं।

उ. एक तो यह कि, आप सोच–विचार कर निश्चय कर लें कि, कहाँ जाना है, कब जाना है और कहाँ–कहाँ घूमना है। यह भी हिसाब लगाएँ कि, कितना खर्च होगा। फिर उसी के अनुसार छुट्टी लीजिए। आरक्षण कराइए। होटल बुक कीजिए या संबंधियों को बताइए जिनके साथ आप टिकना चाहते हैं।

4 अंक के प्रश्न

प्र.1. शुद्ध लेखन से क्या तात्पर्य है?

उ. शुद्ध लेखन का अर्थ है कि लेखन सुंदर हो, और शब्दों की वर्तनी शुद्ध हो। वाक्य की बनावट ठीक हो। उसमें व्याकरण संबंधी कोई गलती न हो। सटीक लेखन का अर्थ है कि आपकी बात बिल्कुल साफ और स्पष्ट हो जो आप कहना चाहते हैं, वहीं अर्थ निकले और वही दूसरों तक पहुँचे। इसके लिए आप सही शब्द चुने और सही वाक्य बनाएँ। ऐसे में पढ़ने वाले को कोई उलझन नहीं होनी चाहिए। स्वच्छता, सुंदरता और सुडौल अक्षर–निर्माण, हाशिया छोड़कर लिखना, अक्षर, शब्द और वाक्य के बीच दूरी को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है।

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. लिखना किसे कहते हैं? लिखना सिखाने के उद्‌देश्य बताइए।

उ. हम अपने विचारों को जब लिखित रूप में अभिव्यक्ति करते हैं तो उसे लिखना कहते हैं या विचारों को लिपिबद्ध करना लेखन है। उद्‌देश्य :–

(1) सही शब्द–चयन, वाक्य–विन्यास और वाक्य गठन करना सीख सकेंगे।
(2) शुद्‌ध हिंदी–लेखन के गुर पहचान सकेंगे।
(3) लिखित अभिव्यक्ति को मुहावरे, लोकोक्ति आदि के प्रयोग से अधिक प्रभावी बना सकेंगे।
(4) अपने विचारों को सही क्रम देते हुए उन्हें अपनी भाषा में ढाल सकेंगे।
(5) विरामचिह्न आदि का सही प्रयोग सीख सकेंगे।
(6) अनुच्छेद, कहानी, आलेख आदि को पढ़कर अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

प्र.2. दिए गए विशेषणों और मुहावरों में से कम से कम पाँच का ठीक प्रयोग करते हुए एक अनुच्छेद लिखिए।

विशेषण – झगडालू, नासमझ, असहिष्णु, दूरदर्शी, भारी–भरकम, उदार, समझदार

मुहावरे – सिर झुकाना, आँख दिखाना, नौ–दो ग्यारह होना, आँखे खुलना, गड़े–मुर्दे उखाड़ना, सिर चढ़ाना, तीन–पाँच करना।

उ. जो मनुष्य झगडालू प्रवृत्ति का होता है, वह बे–वजह दूसरों को आँख दिखाने लगता है। बात–बात पर गडे–मुर्दे उखाड कर वाद–विवाद का भारी– भरकम बोझ अपने मन पर ढ़ोता है। ऐसा मनुष्य नासमझ होता है, उसमें दूरदर्शिता की कमी होती है। ऐसे मनुष्य को चाहिए कि वह स्वयं समझदार बने तथा सोच समझकर सही निर्णय के आगे अपना सिर झुकाए अपने गुस्से को नौ–दो ग्यारह करें। अपने अहंकार को सिर चढ़ाना नहीं चाहिए।

प्र.3. विराम चिह्नों की उपयोगिता क्या है?

उ. वाक्य का अर्थ ठीक–ठीक समझने में विराम चिह्न भी सहायक होते हैं। भाषा में विराम चिह्नों की बड़ी आवश्यकता है, इन्हें उपयुक्त स्थान पर न लगाने से अर्थ अस्पष्ट होता है और कभी–कभी अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है। जैसे –

तुम उठो मत बैठे रहो। (अस्पष्ट)
तुम उठो, मत बैठे रहो। (उठने का आदेश)
तुम उठो मत, बैठे रहो। (न उठने का आदेश)

लंबे और जटिल वाक्यों में विराम चिह्नों की उपयोगिता और बढ़ जाती है, क्योंकि उन्हीं से मालूम होता है कि, वाक्य का कौन–सा हिस्सा किस अंश से जुड़ा और कहाँ किस पर कितना बल हैं।

7 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'विशेषण हमारी भाषा और अभिव्यक्ति को जानदार और प्रभावी बनाते है।' उदाहरण सहित समझाइए।

उ. विशेषण हमारी भाषा और अभिव्यक्ति को जानदार और प्रभावी बनाते हैं। विशेषण के बिना भाषा नीरस लगती है। उदा :

(क) मेरी भाभी अच्छी है। उनकी आँखें अच्छी हैं। उनका माथा अच्छा है। माथे पर बिंदी अच्छी लगती है। वह कानों में झुमके पहनती हैं और नाक में लौंग भाभी के गाल भी बड़े अच्छा हैं।

(ख) मेरी भाभी बहुत सुंदर है। वे चौड़े माथे पर बड़ी–सी बिंदी लगाती है। उनके बाल काले, लंबे और रेशम–से मुलायम हैं। बड़ी–बड़ी चमकीली गोल आँखें तो गज़ब की हैं। तीखी नाक में छोटी–सी जगमगाती लौंग और बड़े कानों में लंबे–से झूलते झुमके बड़े प्यारे लगते हैं। उनके पके सेब जैसे गुलाबी और कोमल गालों का तो कहना ही क्या है।

उपर्युक्त दो वर्णनों में से कौन–सा प्रभावी है और क्यों? उत्तर है – (ख) केवल विशेषणों के कारण। हम उपयुक्त विशेषणों का जितना अच्छा प्रयोग करेंगे, आपकी रचना उतनी ही प्रभावी बनेगी।

प्र.2. भावों को व्यक्त करने में तुलना और उपमाओं का प्रयोग कैसे करना चाहिए?

उ. भावों को सुंदर और प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में तुलनाएँ/उपमाएँ बहुत सहायक होते हैं। जैसे –

आँखें	–	झील–सी, कमल–सी, हिरण–सी, मछली–सी
नाक	–	तोते–सी, चोंच–सी, गिद्ध–सी
दाँत	–	मोती–से, सीप–से
हवा	–	तीर–सी, आग–सी
क्रोध	–	आग–सा, उबाल–सा
कंठ अथवा स्वर	–	कोयल–सा, गधे–सा
रंगरूप (काला)	–	आबानूस–सा, साँझ–सा, तवे–सा
रंगरूप (गोरा)	–	चाँद–सा, चंपे–सा, सोने–सा, गुलाब–सा, मक्खन–सा
बुद्धिमान	–	चाणक्य–सा, कालिदास–सा, बृहस्पति–सा
बलवान	–	भीम–सा, अर्जुन–सा, गामा–सा
धनी	–	कुबेर–सा

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. भाषा किसे कहते हैं? भावों की अभिव्यक्ति हम कैसे करते हैं?

उ. 'विचारों, भावों की अभिव्यक्ति ही भाषा है।' हम अपने भावों को मौखिक और लिखित रूप से अभिव्यक्ति करते हैं। 'ध्वनि–संकेतों की सहायता से हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं तो

उसे मौखिक भाषा कहते हैं।' 'विचारों को क्रमबद्धता देकर अपने भावों के अनुकूल भाषा का शुद्ध, स्वाभाविक और स्पष्ट लिखने का प्रयास करते हैं, तो उसे लिखित अभिव्यक्ति कहते हैं।' किसी भी विषय पर ठीक से लिखने के लिए सबसे पहले उस विषय पर हमें एकाग्रभाव से चिंतन–मनन की जरूरत होती है। फिर वही चिंतन जब हमारे दिमाग में परिपक्व हो जाता है, तब विचारों के अनुकूल शब्दों का चुनाव किया जाता है और भाषा के सहारे लिखा जाता है। उदाहरण के लिए प्रसन्नता और आश्चर्य की लिखित भाषा में अभिव्यक्ति को देखिए। प्रसन्नताः अरे। मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। आश्चर्यः देखो, यह तस्वीर क्या कमाल की है।

भावों की वाहिनी–भाषा के लेखन में मोटे तौर पर देखें तो मुख्यतः दो पक्ष हैं। एक तो बाहरी पक्ष अर्थात स्वरूप पक्ष है, जिसमें शब्द–चयन, वाक्य गठन, मुहावरा–प्रयोग अभिव्यक्ति, शैली आदि आते हैं और दूसरा भीतरी पक्ष जिसे भाव या विचार पक्ष कह सकते हैं। इसमें विचारों या भावों की गंभीरता, स्पष्टता, सरलता आदि समाहित हैं।

प्र.2. भाषा में मुहावरों का प्रयोग क्यों किया जाता है?

उ. हम अपनी लेखन शैली को प्रभावशाली और चुस्त बनाना चाहते हैं तो सरल, मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करना होगा। प्रसंगानुसार शब्दों, मुहावरों तथा सूक्तियों के प्रयोग से हमारी भाषा सुंदर हो जाती है। कभी–कभी हम सुनते हैं कि 'यह तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है'। इसका अर्थ है यह काम बहुत सरल हैं। यहाँ कहने वाले ने अपनी बात मुहावरे के सहारे आसानी से व्यक्त कर दी है और यह कथन असरदार भी हैं। लेकिन मुहावरों का सटीक प्रयोग हो। मान लीजिए आपके भाई आपसे नाराज है। आपने लिखा कि क्रोध में उनका चेहरा कमल के समान लाल हो गया। यह उपमा सटीक नहीं है। कमल के फूल से कोमलता का भाव आता है। यह उपमा सुंदरता बताने के लिए दी जा सकती है। मुहावरें भी भाषा को जीवंत और प्रभावी बनाते हैं। मुहावरों में कम शब्दों में अधिक अभिव्यक्ति देने की क्षमता होती हैं और मुहावरा–प्रयोग से जो 'प्रभाव पड़ता है, वह केवल सीधे–सादे शब्दों से नहीं पड़ता। उदा :

(1) भारतीय सैनिक लड़ने में जीवन की चिंता नहीं करते।

(2) इस बच्चे की शैतानियों से मैं बड़ी परेशान हूँ।

उक्त वाक्यों की अपेक्षा उचित मुहावरों के प्रयोग से भाषा में उत्पन्न चमत्कार को देखिए।

(1) भारतीय सैनिक सिर (जान) हथेली पर रखकर लड़ते हैं।

(2) इस बच्चे ने मेरी नाक में दम कर रखा है।

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. प्रभावी लेखन किसे कहते हैं? प्रभावी ढंग से कैसे लिखा सकता है?

(या)

प्रभावी ढंग से लिखने के लिए किन विषयों की ओर ध्यान देना चाहिए।

उ. प्रभावी लेखन वह है जिसमें शब्दों का प्रयोग सटीक और वाक्यों की बनावट सुगठित होती है। लिखने में आसान हो और पढ़ने वाले को समझना आसान हो विचार क्रम से रखें, ताकि पढ़नेवाले का मन लगे।

प्रभावी ढंग से कैसे लिखें?

1. सबसे पहले हम अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए सही शब्दों का चयन करते हैं।
2. शब्दों से काम नहीं चलता तो हम अपने विचारों को दूसरों तक समझाने के लिए वाक्य गढ़ते हैं।
3. जब हमारी बात एक वाक्य में पूरी नहीं होती तो हम अनुच्छेद या पैरा बनाते हैं।
4. जब एक अनुच्छेद में भी हमारी बात पूरी नहीं समाती तो कई अनुच्छेद वाला निबंध या आलेख तैयार करते हैं।
5. लेखन के समय हम विषय का ध्यान रखते हैं।
6. प्रयोजन और पाठक का भी ध्यान रखते हैं। अर्थात् कैसे लिख रहे हैं और पढ़नेवाला कौन है? क्यों लिख रहे हैं? किसके लिए लिख रहे हैं?
7. लेखक विषय के अनुरूप है अथवा नहीं।
8. तथ्यों को उपयुक्त क्रम से रखा जाएँ और एक अनुच्छेद की बात दूसरे अनुच्छेद में गड़मड न हों या उनका दुहराव न हो।
9. शब्दों का चुनाव और प्रयोग सटीक है अथवा नहीं।
10. भाषा की शुद्धता की ओर ध्यान देना चाहिए।
11. विराम चिह्नों का प्रयोग ठीक से हुआ है या नहीं।
12. विशेषण और मुहावरों की ओर भी ध्यान देना चाहिये।

प्र.2. वर्ण, शब्द और वाक्य की कौन सी अशुद्धियाँ होती है? स्पष्ट कीजिए।

उ. अगर हमें शुद्ध लिखना आता ही नहीं तो हम अपने आपको अभिव्यक्त नहीं कर पाएँगे। इसके लिए हमें भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण और शब्द से परिचित होना होगा। अगर हम सही शब्दों का चयन नहीं कर पाते तो लिखते समय वर्तनी के गलत होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे कई लोग 'स्नान' के लिए 'अस्नान', 'स्थाई' को 'अस्थाई' की तरह उच्चरित करते हैं। जिससे लिखते समय अशुद्धियाँ हो जाती हैं। इसी प्रकार एक उदाहरण देखिए – ''माँ का, दूध बच्चे के लिए पूर्ण अहार होता है।' इस वाक्य में अहार के स्थान पर आहार लिखा जाएगा। कुछ लोगों द्वारा 'व' और 'ब' संबंधी अशुद्धियाँ भी लेखन में हो जाती हैं। 'वर्षा' को

'बर्षा' और 'वनस्पति' को 'बनस्पति' लिख जाते हैं। 'ट' और 'ठ' के लेखन में भी खूब अशुद्धियाँ होती है। 'विशिष्ट' के स्थान पर 'विशिष्ठ' और 'संतुष्ट' की जगह 'संतुष्ठ' लिखा जाता हैं। इसी तरह हमें 'क्ष' और 'छ' लिखते समय भी अशुद्धियों से बचना होगा। 'क्षमा' के स्थान पर 'छमा' या 'छिमा' लिख देते हैं। जो कि गलत है और 'कक्षा' की जगह 'कच्छा', 'लक्ष्मी' की जगह 'लच्छमी', 'लक्ष्मण' की जगह 'लच्छमन' लिख देते हैं। इस तरह की अशुद्धियाँ बड़ी अशुद्धियों की श्रेणी में गिनी जाती हैं।

अक्सर हम देखते हैं लोग बात करते समय हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का बेमेल प्रयोग करते हैं। हालाँकि आजकल बोलचाल की भाषा में इस तरह की भाषा का प्रचलन है। किंतु लेखन में बेमल मिश्रित भाषा का प्रयोग गलत है। जैसे – बिफोर कि वह कुछ बोले मैंने ऐसा कर दिया। स्कूल जाते समय मुझे राम एंड शामू वॉक करते हुए मिल गए। इस प्रकार दो या तीन भाषाओं के मिले–जुले शब्दों के प्रयोग को 'कोडमिश्रण' कहते है।

इसी तरह कई बार पत्र के अंत में 'आपका भवदीय अशोक' आदि लिख देते हैं। किंतु ऐसा करना व्याकरण–नियम के विरुद्ध है। एक ही अर्थ देने वाले दो–दो शब्दों का प्रयोग एक ही वाक्य में नहीं होना चाहिए। यह पुनरुक्ति अथवा दुहराव दोष होता है। जैसे –

(1) मुझे इसी खतरे का भय था।

(2) गुनगुन गरम पानी से नहाने में बड़ा मज़ा आता है।

(3) कालचक्र के पहिए के नीचे दब कर सब समाप्त हो जाता है।

अशुद्ध–भाषा, उच्चारण–दोष, वर्तनी–दोष, शब्द प्रयोग तथा वाक्य–रचना संबंधी दोष हमारी मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति में बाधक बनते हैं। शुद्ध बोलना या लिखना एक कौशल है, हुनर है।

प्र.3. भाषा को प्रभावी बनाने में उपयुक्त शब्दों का चयन करना एक कला है। स्पष्ट कीजिए।

उ. उपयुक्त शब्दों के अभाव में हम अपने विचारों या अनुभवों को व्यक्त करने में अक्षम होते हैं। विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए उचित शब्द के चयन के साथ–साथ उनका मेल बैठता है या नहीं इसकी ओर भी ध्यान देना चाहिए। मान लीजिए आपको लिखना है कि 'मेरे माँ–बाप बूढ़े हो गए हैं।' इसकी जगह यदि आप लिखें कि 'मेरे मम्मी–बाप बूढ़े हो गए हैं' तो अच्छा नहीं लगेगा। मम्मी के साथ बाप का मेल नहीं बैठता या तो 'मम्मी–पापा' लिखा जाएगा या 'माँ–बाप' या 'अम्मी–अब्बा' या माता–पिता लिखा जाएगा यदि आप लिखे कि 'केरल में लिट्रेसी दर सबसे अधिक है।' तो यह ठीक नहीं होगा। क्योंकि यहाँ शब्दों का प्रयोग बेमेल है। 'लिट्रेसी' अंग्रेजी का शब्द है और 'दर' हिंदी का। यहाँ हिंदी में 'साक्षरता–दर' लिखिए या फिर 'लिट्रेसी रेट'। एक अलग उदाहरण के तौर पर यदि हम लिखें कि, रानी, लक्ष्मी बाई ने अंग्रेज़ों से घनघोर युद्ध किया था। तो यहाँ 'घनघोर' शब्द का चयन अनुपयुक्त माना जाएगा। घनघोर की जगह अगर हम 'घमासान' शब्द का प्रयोग करते हैं, तो यह शब्द चयन उपयुक्त है। और

एक उदाहरण देखिए 'विनोद विगत टू डेज से मैं तुमसे मिलना चाहता था, मगर तुम नहीं मिले। तुम्हें ज्ञातव्य हो कि आसन्न परीक्षा के मैनेज़र मुझे तुम से बहुत जरूरी काम है'। इस तरह से लिखना बिल्कुल ठीक नहीं। क्योंकि आप इसमें जो कहना चाहते हैं वह ठीक–ठीक व्यक्त नहीं हो पा रहा है। उपयुक्त शब्द चयन और व्यवस्थित तथा सटीक ढंग से कही बात ज्यादा प्रभावशाली होती है। यहाँ आपकी भाषा अटपटी है, साथ ही 'विगत टू डेज' जैसे शब्दों का प्रयोग भी ठीक नहीं है। हमेशा अपनी बात सीधे और सही तरीके से कहनी और लिखनी चाहिए। आप उस वाक्य को ऐसे लिखें कि, 'मित्र विनोद! पिछले दो दिनों से मैं तुम से मिलना चाहता था। आनेवाली परीक्षा के संबंध में तुम से मिलना बहुत ज़रूरी है।' और कुछ उदाहरण देखिए।

(1) शिमला पहाड़ पर बसा देखने योग्य स्थान है।
(2) आपके माँ–बाप क्या करते हैं?
(3) वर्षों बाद बेटे को देखकर माँ भाव विभोर गई।
(4) जीवन और मरना तो लगा ही रहता है।
(5) चुटकुला सुनकर मैं लोटपोट हो गया।
(6) माँ प्रातः काल शिवलिंग पर गंगा का पानी चढ़ाती है।

उपर्युक्त वाक्यों की अपेक्षा निम्नलिखित वाक्य अधिक चुस्त और प्रभावी हैं।

(1) शिमला दर्शनीय पर्वतीय स्थल है।
(2) आपके माता–पिता क्या करते हैं?
(3) वर्षों बाद बेटे को देखकर माँ भाव विभोर हो गई।
(4) जीवन–मरण (जीना–मरना) तो लगा ही रहता है।
(5) चुटकुला सुनकर मैं हँसते–हँसते लोट पोट हो गया।
(6) माँ प्रातः काल शिवलिंग पर गंगाजल चढ़ाती है।

प्रभावी लिखने के लिए हमारे पास अधिक से अधिक शब्दों की जानकारी हो और उनका हम ठीक–ठीक प्रयोग भी कर सकें। आवश्यकता हो तो हम उपसर्गों–प्रत्ययों की सहायता से नया शब्द भी बना सकें। पर्याय, विलोम, द्विरुक्ति, वाक्य के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग आदि कर सकते हैं।

प्र.4. अन्विति किसे कहते हैं? वाक्य रचना में अन्विति संबंधी ध्यान में रखने वाली मुख्य बातों को स्पष्ट कीजिए।

उ. अन्विति का अर्थ है – वाक्य के भीतर पदों के परस्पर संबंध के अनुसार वाक्य में उनका स्थान'। निम्नलिखित वाक्य को देखिए। ''महात्मा गाँधी का देश सदा आभारी रहेगा। एक तरह से देखने में वाक्य ठीक लगता है, क्रिया है – आभारी रहेगा। कौन आभारी रहेगा? देश (कर्ता) किसका आभारी रहेगा?'' महात्मा गाँधी का; पर महात्मा गाँधी का पद का निकटतम संबंध है – देश से। इसलिए इस वाक्य का अर्थ हुआ महात्मा गाँधी का देश सदा आभारी रहेगा। ठीक अन्विति होगी –

''देश महात्मा गाँधी का सदा आभारी रहेगा।'' इस वाक्य में पदों की परस्पर अन्विति ठीक है।

''दो शब्दों के लिंग, वचन अर्थात् पुरुष, कारक और काल की जो समानता होती है। उन शब्दों के ठीक–ठाक संबंध को जानने के लिए उनका एक दूसरे से सामंजस्य ही अन्विति कहलाता है। जैसे 'छोटी लड़की रोती है'। उदाहरण में 'छोटी' शब्द का 'लड़की' से लिंग और वचन का तालमेल है और 'रोती है' शब्द लड़की से वचन और क्रिया में अन्विति है।

1. **वाक्य रचना में अन्विति संबंधी ध्यान में रखने वाली बाते कर्ता–कर्म–क्रिया की अन्विति** :– कई लोग 'गीता ने फल खाई', 'राकेश ने कहानी सुनाया' जैसे वाक्यों का प्रयोग करते हैं इससे पता चलता है कि प्रयोग करने वाले को क्रिया, लिंग, वचन और कारक का सही ज्ञान नहीं है।

नियम के अनुसार – कर्ता + कर्म + क्रिया गीता + फल + खाना

यहाँ कर्ता 'गीता' स्त्री लिंग हैं कर्म 'फल' पुंलिंग है इसलिए क्रिया पुंलिंग 'खाया' होगी और वाक्य बनेगा – 'गीता ने फल खाया'। ठीक दूसरे वाक्य में कर्म (कहानी) स्त्री लिंग है इसलिए वाक्य बनेगा – राकेश ने कहानी सुनाई।

2. **विशेष्य–विशेषण प्रयोग में अन्विति** :– शुद्ध लेखन के लिए वाक्यों में प्रयुक्त विशेष्य और विशेषण का ज्ञान होना हमारे लिए आवश्यक है उदाहरण के लिए – लाल गाय, काली बिल्ली, सफेद हाथी, ऊँची दुकान, फीका पकवान, मोटा लड़का, पतली लड़की आदि। इनमें पहला शब्द विशेषण और दूसरा विशेष्य है।

3. **संज्ञा–सर्वनाम की अन्विति** :– वाक्य रचना में संज्ञा प्रयोग में भी अशुद्धि देखने को मिल जाती है, जैसे –

डाकुओं का एक गिरोह पकड़े गये। फूलों का गुच्छा बहुत अच्छे लगते हैं।

यह वाक्य बनाने वाले की बहुत भारी भूल है पहले वाक्य में 'पकड़ा गया' और दूसरे में 'अच्छा लगता है' का प्रयोग होना चाहिए। क्योंकि वाक्यों का, की, के बाद में आनेवाली संज्ञा कर्ता होती है और कर्ता के हिसाब से क्रिया एक वचन होगी।

4. **सर्वनाम का प्रयोग** :– 'सुमित कल सुबह आया था। सुमित हिंदी की किताब लाया था।' इस वाक्य में दो बार सुमित आया है। यह वाक्य ठीक नहीं लग रहा है। इसमें सर्वनाम का प्रयोग करने से वाक्य सही बनेगा जैसे 'सुमित कल सुबह आया था। वह हिंदी किताब लाया था।' ऐसे शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाते हैं।

5. **कर्ता, कर्म, क्रिया अन्विति** :– वाक्य में क्रिया का लिंग, वचन, पुरुष उसके कर्ता के अनुसार होता है, जैसे –

	अशुद्ध	**शुद्ध**
1.	लड़का लोग गए	लड़के गए।
2.	राम, लक्ष्मण और सीता गई।	राम, लक्ष्मण और सीता गए।
3.	आप हमारे घर आ जाओ।	आप हमारे घर आ जाइए।

6. **<u>ने और को का प्रयोग</u>** :– कर्ता के साथ 'ने' लगाकर केवल भूतकाल का वाक्य बन सकता है, जैसे राम ने पाठ पढ़ा। इसमें क्रिया कर्ता के अनुसार नहीं, कर्म के लिंग, वचन के अनुसार होती है, जैसे –

राम ने रोटी खायी।
राम ने पाठ पढ़ा।
राम ने पुस्तक पढ़ी।
राम ने पुस्तकें पढ़ी।

'ने' वाक्य में कर्म के साथ 'को' लगा हो तो क्रिया सदा अन्य पुरुष एक वचन में रहेगी; जैसे –

राम ने पाठ को पढ़ा।
राम ने पुस्तक को पढ़ा।
राम ने पुस्तकों को पढ़ा।

10. सार कैसे करें

10.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. मूल सामग्री में से विस्तार देने वाली बातों, जैसे – उदाहरण, उद्धरण, अलंकार आदि को हटाकर मूल सामग्री का सार लिखा जा सकता है।
2. कार्यालयी कामकाज को जल्दी और ठीक ढंग से निपटाने के लिए पत्रों तथा टिप्पणियों का सार बनाया जाता है। सार की सहायता से एक अधिकारी कई सहायकों का काम सीमित समय में देख लेता है।
3. संक्षेपण या सार लेखन के लिए मूल सामग्री के मूलभाव को समझना आवश्यक होता है।
4. सार–संक्षेपण की उपयोगिता इस बात पर निर्भर होती है कि वह कितनी सावधानी से बनाया गया है। अतः कार्यालयी सार बनाने में पर्याप्त सावधानियों अपेक्षित होती हैं। मूल पत्र या टिप्पणी को गहराई से पढ़ने के बाद ही सार तैयार किया जाना चाहिए। सार बनाते समय इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए कि मूल पत्र की कोई बात संक्षिप्तता के फेर में छूट न जाए।
5. सार मूल सामग्री का लगभग एक तिहाई होता है।
6. अच्छा सार वही होता है जिसमें पूर्णता, संक्षिप्तता, स्पष्टता, संबद्धता प्रभावोत्पादकता के गुण विद्यमान हो। अतः कार्यालयी पत्रों का सार बनाते समय हमें इस बात के प्रति सजग रहना चाहिए कि हमारा सार पूर्ण, संक्षिप्त, स्पष्ट, क्रमबद्ध और प्रभावपूर्ण हो।
7. सार–लेखन से कार्यालयी कार्यों को निपटाने में सुगमता होती है और साथ ही समय और शक्ति की भी बचत होती है। सार–लेखन से कार्यालय की लेखन–सामग्री के खर्च में भी किफायत होती है। सहायकों के बीच कार्य के हस्तांतरण में भी सार–लेखन से मदद मिलती है। सार–लेखन से उच्च अधिकारियों का समय बचता है और वे अधिक काम निपटा लेते हैं।
8. रिपोर्ट आकार में प्रायः बड़ी होती है, इसलिए रिपोर्ट का सारांश देना आवश्यक होता है।
9. रिपोर्ट का सार बनाते समय सार के अन्य गुणों के साथ–साथ संक्षिप्तता की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए।
10. रिपोर्ट की मुख्य बातों के प्रति सजग रहना चाहिए। साथ ही हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि आनवश्यक बातें सार में न आएँ और सभी मुख्य बातों का इसमें समावेश भी हो।
11. रिपोर्ट के सार की सहायता से रिपोर्ट की मुख्य–मुख्य बातों का ध्यान रखना सरल होता है।

10.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. सार लेखन किसे कहते हैं?

उ. किसी विस्तृत विषय–वस्तु या अंश के मूल भावों को कम से कम शब्दों और वाक्यों में लिखने को सार–लेखन कहते हैं। सार मूल सामग्री का लगभग एक तिहाई होता है।

प्र.2. सार लेखन की आवश्यकता क्या है?

उ. सार लेखन की आवश्यकता कार्यालय, वाणिज्य, पत्रकारिता, शिक्षा आदि कई क्षेत्रों में पड़ती है।

प्र.3. क्या सार मूल सामग्री का स्थान ले सकता है?

उ. नहीं। सार मूल सामग्री का स्थान नहीं ले सकता है।

प्र.4. शीर्षक देने के लिए अधिकतर किस पद्धति का प्रयोग किया जाता है?

उ. शीर्षक देने के लिए अधिकतर समास पद्धति का प्रयोग किया जाता है।

प्र.5. रिपोर्ट के सार की सहायता से किन बातों को ध्यान में रखना सरल होता है?

उ. रिपोर्ट के सार की सहायता से किन बातों का ध्यान में रखना सरल होता है।

प्र.6. रिपोर्ट का सारांश लिखने की क्या आवश्यकता है?

उ. रिपोर्ट आकार में प्रायः बड़ी होती है, इसलिए रिपोर्ट का सारांश लिखने की आवश्यकता होती है साथ ही सार की सहायता से रिपोर्ट की मुख्य–मुख्य बातों को ध्यान में रखना सरल होता है।

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. संक्षेपण और सार में क्या अंतर है ?

उ. संक्षेपण किसी दी हुई सामग्री का संक्षिप्त अथवा छोटा रूप होता है परंतु सार, संक्षेपण से और भी अधिक छोटा होता है। सार और सारांश दोनों ही शब्द एक रूप में प्रयुक्त होते हैं। प्रायः मूल अवतरण से संक्षेपण एक तिहाई होता है। इसके लिए सभी शब्दों को गिन कर उनमें तीन का भाग देकर जितनी संख्या आती है उतने ही शब्दों में अवतरण का केन्द्रीय भाव अपनी भाषा में लिखा जाता है।

प्र.2. सामग्री में मूल विचार क्या हैं?

उ. जब हम किसी सामग्री का सार प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमारा मस्ति क एक मथानी का काम करता है। हम पढ़कर या सुनकर किसी सामग्री को मस्ति क में पहुँचाते हैं और हमारा मस्ति क उस मूल सामग्री के विस्तार को अलग करके सार प्रस्तुत कर देता है। इसी को हम मूल विचार कहते हैं।

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. सार लिखने के उद्देश्य क्या है ?

उ. (1) छात्र सार–संक्षेपण के अर्थ को समझ सकेंगे।
(2) सार लेखन के उपयोग का उल्लेख कर सकेंगे।
(3) सार लिखने के प्रमुख चरणों का सूचीकरण कर सकेंगे।
(4) मूल भाव (केन्द्रीय भाव) की पहचान कर सकेंगे।
(5) दिए गए अनुच्छेद का सार लिख सकेंगे।

(6) मूल भाव के आधार पर सार के शीर्षक की पहचान कर सकेंगे।

(7) कार्यालयी कामकाज में सार लेखन का उपयोग आवश्यकतानुसार कर सकेंगे।

(8) कार्यालयी पत्रों, टिप्पणियों और रिपोर्टों का सार लेखन कर सकेंगे।

(9) मूल सामग्री को एक तिहाई बनाने के योग्य बनेंगे।

प्र.2. मलू सामग्री का क्या महत्व है? मूल सामग्री का अध्ययन क्यों किया जाता है?

उ. साधारणतः कथ्य की संवेदनशीलता, भाषा का चमत्कार, अनुभव की ऊष्मा सार में नहीं पायी जाती। सार से काम तो चल जाता है, किन्तु रचनात्मकता का उसमें अभाव रहता है। अतः कथ्य को पूरी तरह जानने और समझने के लिए, भाषा के चमत्कार का आनंद लेने के लिए और सामग्री की रचनात्मकता से विभोर होने के लिए मूल सामग्री का अध्ययन किया जाता है। वैसे तो हमें अपनी बात कम–से–कम शब्दों में और संक्षेप में कहनी चाहिए तथा अनर्गल बातों से बचना चाहिए, किंतु भावों को पूरी तरह से प्रकट करने और उसे प्रभावपूर्ण शैली में व्यक्त करने के लिए मूल सामग्री की आवश्यकता होती है। सार मूल सामग्री का स्थान नहीं ले सकता। कभी–कभी किसी तथ्य की जानकारी के लिए मूल सामग्री पढ़ी जाती है।

प्र.3. लेखक मूल सामग्री के भाव को स्पष्ट करने के लिए या विस्तार करने के लिए क्या करता है?

उ. मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए और उसे प्रभावी बनाने के लिए लेखक या व्यक्ति अनेक उपाय करता है जैसे भाव को स्पष्ट करने के लिए अनेक तरह से व्याख्या करता है। ऐसे उदाहरण देता है, जिससे भाव स्पष्ट हो सके। आवश्यकता पड़ने पर वह भाव को एक या अधिक बार दोहराता है। अपने भाव को प्रभाव पूर्ण बनाने के लिए लेखक या व्यक्ति मुहावरे, लोकोक्तियों का प्रयोग करता है, अलंकारपूर्ण भाषा का व्यवहार करता है। लोक–प्रसिद्ध या संबंधित कथाओं और चुटकुलों आदि का प्रयोग करता है। प्रसिद्ध साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों आदि की उक्तियों का उल्लेख करता है और संवाद आदि का व्यवहार करके शैली को रचनात्मक बनाता है।

7 अंक के प्रश्न

प्र.1. रिपोर्ट का सार–संक्षेपण बनाने में कौन–कौन–सी सावधानियाँ जरूरी हैं?

उ. रिपोर्ट का सार बनाते समय सार के अन्य गुणों के साथ–साथ संक्षिप्तता की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। रिपोर्ट की मुख्य बातों के प्रति सजग रहना चाहिए। साथ ही हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि, अनावश्यक बातें सार में न आएँ और सभी मुख्य बातों का इसमें समावेश भी हो।

रिपोर्ट में अनेक विषयों से संबंधित आँकड़े विस्तार से दिए जाते हैं। सार में उनका उल्लेख संक्षेप में होना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि हम आय–व्यय के कुल आँकड़ों को लें तो रिपोर्ट में विभिन्न पदों के आय–व्यय के ब्योरे के स्थान पर आय–व्यय के कुल आँकड़े दिए जा सकते हैं। रिपोर्ट के सार–संक्षेपण में अच्छे सार के सभी गुण होने चाहिए। संक्षिप्तता तो

सार का प्राण है। सार का आकार मूल का लगभग एक तिहाई होता है। यही बात रिपोर्ट के बारे में भी लागू होती है।

प्र.2. पत्रों और टिप्पणियों का सार लिखने में क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

(या)

सार–लेखन के समय कौन–कौन–सी बातें ध्यान में रखनी चाहिए?

उ. (1) पत्रों, टिप्पणियों और रिपोर्टों का सार तैयार करते समय मूलसामग्री को एक, दो या अधिक बार पढ़ना चाहिए, क्योंकि यदि पत्र में दी गयी बातें ठीक से समझ न आएँ तो सार में गलती हो सकती है।

(2) सामग्री में आई व्याख्याओं, उदाहरणों और भावों के दोहराव को रेखांकित करना।

(3) मूलभाव को अलग कागज पर लिखना।

(4) मूल भाव और उससे संबंधित भावों के आधार पर विवरणात्मक अन्य पुरुष शैली में मूल सामग्री से लगभग एक–तिहाई आकार में सार–संक्षेपण लिखना।

(5) आवश्यक होने पर मूल भाव के आधार पर सार संक्षेपण का शीर्षक लिखना।

(6) लिखित सार को पढ़ना और देखना कि कहीं उसमें कोई मुख्य बात छूट तो नहीं गई है।

(7) आवश्यकता होने पर सार का संपादन करना। संपादन का अर्थ है कि सार में कोई मुख्य बात आने से रह गई हो तो उसे जोड़ना। यदि उसमें कोई दोहराव है, तो उसे हटाना और भाषा शैली को उपयुक्त व चुस्त बनाना।

प्र.3. सार–लेखन की उपयोगिता क्या है? या उसके महत्व को समझाइए।

उ. सार–लेखन का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। इसमें किसी विस्तृत विषय–वस्तु या अंश के मूल भावों को कम से कम शब्दों और वाक्यों में लिखा जाता है। इसकी आवश्यकता कार्यालय, वाणिज्य, पत्रकारिता, शिक्षा आदि कई क्षेत्रों में पड़ती है। इसके द्वारा व्यक्ति कम समय में अधिक बातें जान सकते हैं। कार्यालयी काम काज को जल्दी और ठीक ढंग से निपटाने के लिए पत्रों तथा टिप्पणियों का सार बनाया जाता है। सार की सहायता से एक अधिकारी कई सहायकों का काम सीमित समय में देख सकते हैं। कार्यालयी कार्यों को निपटाने में सुगमता होती है साथ ही समय और शक्ति की भी बचत होती है। सार लेखन से कार्यालय की लेखन–सामग्री के खर्च में भी किफायत होती है। सहायकों के बीच कार्य के हस्तांतरण में सार–लेखन से मदद मिलती है। इसको पढ़कर व्यक्ति अपनी रुचि का समाचार, लेख या कहानी चुन लेता है।

प्र.4. अच्छा सार लिखने की क्या प्रक्रिया है?

उ. अच्छा सार लिखने की प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण है –

(1) मूल सामग्री का बोध

(2) मूल भाव की पहचान

(3) संबंधित भावों की पहचान

(4) मूल भाव को स्पष्ट करने वाली व्याख्या, उदाहरण और दोहराव की पहचान।

(5) मूल भाव को प्रभावी बनाने वाले तत्वों अर्थात कथाओं, अलंकारों, प्रसिद्ध कथनों और रचनात्मक तथा व्यास शैली की पहचान।

(6) मूल भाव को स्पष्ट के लिए विस्तार देने वाले वाक्यों को हटाते हुए सार लेखन।

सबसे पहले हम मूल सामग्री को एक बार दो बार या अनेक बार पढ़कर उसे समझते हैं और पता लगाते हैं कि उसमें क्या कहा गया है। इसे पढ़ने और समझने के दौरान हम जान लेते हैं कि सामग्री का मूल भाव क्या है और उससे संबंधित अन्य भाव कौन से हैं।

प्र.5. रिपोर्ट के सार–लेखन की क्या आवश्यकता है? रिपोर्ट किसे कहते हैं?

उ. किसी घटना, स्थिति या अवसर विशेष के विवरण को रिपोर्ट कहते हैं। रिपोर्ट में हर बात विस्तार से लिखी जाती है, इसलिए उसका सार अलग ढंग से बनाया जाता है। हमें पता है कि, प्रत्येक संस्था अपने कार्य का विवरण देने के लिए साप्ताहिक, मासिक, अर्धवार्षिक, त्रैमासिक और वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित करती है। इनमें संस्था के उत्पादन, लागत, आय–व्यय आदि से संबंधित आँकड़े होते हैं। इन रिपोर्टों में संस्था द्वारा किए गये कार्य के विवरण के साथ उसके भाावी कार्यक्रम की रूपरेखा भी होती है। इन नियमित रिपोर्टों के साथ विशिष्ट अवसरों पर विशेष रिपोर्ट भी प्रकाशित की जाती है। जैसे शताब्दी रिपोर्ट, रजत जयंती रिपोर्ट आदि। इसके अलावा संस्थाओं की प्रगति का जायज़ा लेने के लिए कभी–कभी विशेष समितियों या आयोगों का गठन किया जाता है। ये समितियाँ या आयोग अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं जिनमें संस्था के कार्यों और उसकी प्रगति का विवरण रहता है। इसलिए रिपोर्ट का सार तैयार करना आवश्यकता होता है।

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. भाषा के संदर्भ में सार क्या हैं?

उ. अपनी बात (या कथ्य) को प्रभावी और रोचक बनाने और उसे पाठकों की समझ में आ सकने योग्य बनाने के लिए लेखक अपनी बात को दोहराता है, मुहावरे–लोकोक्तियों का प्रयोग करता है, किसी कथा प्रसंग से उसे प्रामाणित करता है। विद्वानों की उक्तियों को उद्धृत करके उसे ठोस बनाता है, अलंकार–युक्त शब्दावली का प्रयोग करता है और कथ्य को विस्तार देता है। यह स्थिति वैसी है जैसे कि, दही को हम उसके मूल रूप में खाते हैं, हमारा शरीर विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा उसके सार को अपना लेता है और शेष सामग्री का त्याग कर देता है। ठीक इसी प्रकार किसी पाठ की सामग्री में भी सार और निस्सार बातों में अंतर किया जा सकता है। जो बातें महत्व की होती हैं, उन्हें हम स्वीकार कर लेते हैं और शेष को छोड़ देते हैं। जैसे कि हम जानते हैं, साधु और सूप भी यही काम करते हैं।

'साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार–सार को गहि रहै, थोथा देत उड़ाय।।'

जैसे दही से मक्खन निकलता है, उसी प्रकार हमारा मस्तिष्क पूरी सामग्री या बातचीत में से उसका सार निकाल लेता है। कुल मिलाकर 'सार' पूरी सामग्री के आधार पर तैयार किया गया वह मसौदा है, जो संक्षिप्त होते हुए भी सामग्री की सभी मुख्य बातों को अपने में समेट लेता है, जिसके आधार पर पूरी सामग्री को समझा जा सकता है।

प्र.2. सार–संक्षेपण की विधियाँ कौन सीं?

उ. अवतरण के मूलभाव को जीवित रखते हुए शब्दों को कम करना भी एक कला है। इसकी दो विधियाँ हैं।

(1) त्याग विधि और (2) परिवर्तन विधि

1. त्याग विधि :– इसके अंतर्गत शब्दों को छोड़ना (त्याग करना) होता है अर्थात् जो शब्द काम के नहीं है, जिन्हें हटा देने पर भी अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं आता, उसे त्याग विधि कहते हैं। इसमें लेखक का परिचय, पता आदि नहीं लिखा जाता। किसी बात को यदि उदाहरण आदि देकर समझाया गया है तो उन्हें छोड़ दिया जाता है। केवल मूल संदेश ही लिया जाता है। लोकोक्ति, अलंकार आदि का प्रयोग भी त्याग दिया जाता है। वाक्यों को संकुचित करके लिखा जाता है। अनेक शब्दों के लिए एक शब्द से काम चलाया जाता है। भाषा में चुस्ती और कसाव अपेक्षित है, जिससे संक्षेपण सरल, स्वाभाविक, सुंदर और प्रभावी लगे। इन बातों का कार्यालय में पत्रों, टिप्पणियों, रिपोर्टों आदि को संक्षेप में लिखते समय भी ध्यान रखना आवश्यक होता है।

2. परिवर्तन विधि :– इस विधि में मूल अवतरण की भाषा को ज्यों–का–त्यों न उतार कर कुछ परिवर्तन करना होता है, जैसे – संधि और समास का प्रयोग करके शब्दों को कम किया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'पीला वस्त्र पहनने वाले कृष्ण भगवान' के लिए हम केवल 'पीताम्बर' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं या फिर 'राजा का पुत्र' के लिए मात्र 'राजपुत्र' कह सकते हैं। इसी प्रकार कई शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग कर वाक्यों को छोटा किया जा सकता है। जैसे 'जो ईश्वर को न मानता हो' उसे 'नास्तिक' शब्द कहकर काम चलाया जा सकता है या फिर जिस पर मुकदमा चल रहा हो, वह 'अभियुक्त' कहलाता है। 'अच्छे आचरण वाला', 'सदाचारी' और 'जो पढ़ा जा सके' वह 'पठनीय' आदि।

प्र.3. शीर्षक का चयन कैसे करना चाहिए?

उ. निश्चित अनुच्छेद का शीर्षक छाँटना भी एक कला है। शीर्षक सदैव सामग्री पर आधारित और उसके केन्द्रीय भाव से जुड़ा हुआ होना चाहिए। शीर्षक सदैव आकर्षक और रुचिकर होना चाहिए। साथ ही वह उपयुक्त भी हो जिसमें संपूर्ण सामग्री का तथ्य अथवा आशय स्पष्ट होता हो। एक बार शीर्षक पढ़कर पाठक यह अंदाज लगा ले कि अनुच्देद में क्या होगा। साथ ही शीर्षक में इतना अधिक आकर्षण हो कि, वह पाठक को सामग्री पढ़ने पर मजबूर कर दे।

शीर्षक चुनने के लिए हमें अवतरण को दो–तीन बार पढ़कर इसके केन्द्रीय भाव पर विचार करना होता है कभी–कभी केन्द्रीय भाव, अवतरण के शुरू में ही मिल जाता है परंतु इसका कोई कड़ा नियम नहीं है। कभी–कभी यह अवतरण के मध्य में अथवा अंत में भी हो सकता है।

प्रायः शीर्षक एक शब्द अथवा एक पदबंध का ही होता है। शीर्षक देने के लिए अधिकतर समास–पद्धति का प्रयोग किया जाता है। कभी कोई सूक्ति या वाक्य भी उपयुक्त शीर्षक हो सकता है। अनुच्छेद समझ कर, कई बार पढ़ने के बाद आपके मन को जो ठीक लगतता है वही उपयुक्त शीर्षक हो सकता है। शीर्षक को बहुत सोच विचार करके ही चुनना चाहिए इसीसे हमारी बुद्धि की परख होती है। उदाहरण के लिए किसी अनुच्छेद का केन्द्रीय अथवा मूलभाव है 'कवि तुलसीदास का प्रभावशाली व्यक्तित्व'। अतः शीर्षक घूम–फिर कर इसी से संबंधित होगा। जैसे 'कवि तुलसीदास', 'प्रभावी कवि तुलसी', हिंदी साहित्य में तुलसीदास का स्थान', 'हिंदी साहित्य का सितारा तुलसी', 'रचनाकार तुलसी' आदि हो सकते हैं। सार–संक्षेपण तथा सारांश दोनों प्रकार के लेखन में शीर्षक का बहुत महत्व होता है।

11. बिहारी

11.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. बिहारी रीतिकाल के सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रतिनिधि कवि हैं।
2. उन्होंने श्रृंगार, भक्ति, नीति और प्रकृति–चित्रण से संबंधित अत्यंत सुंदर दोहों की रचना की है।
3. श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का चित्रण करते समय बिहारी ने नायक–नायिका की दैनिक गतिविधियों को चुना है।
4. घर के भीतर अपने प्रेम को व्यक्त करने तथा दूसरे को देखते ही प्रेम की अनुभूति होने के चित्र बिहारी के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।
5. बिहारी के भक्ति परक दोहे भक्तिकालीन काव्य से अलग हटकर हैं। उन्होंने सख्य भाव से अत्यंत अंतरंगता के साथ कृष्ण का स्मरण किया है।
6. कृष्ण उनके काव्य में श्रृगार के नायक के रूप में भी उपस्थित हैं।
7. बिहारी ने प्रकृति के कोमल और रूचिकर रूपों के साथ–साथ उसके प्रचंड रूपों का भी सुंदर वर्णन किया है।
8. बिहारी के काव्य में तत्सम शब्दों से लेकर ठेठ ग्रामीण शब्दों तक का प्रयोग हुआ है।
9. लोक में प्रचलित मुहावरों का काव्यात्मक प्रयोग करने में बिहारी दक्ष हैं।
10. बिहारी के दोहों में अनेक अर्थों तथा अर्थ–छवियों की संभावना रहती है, जिसके कारण उनके विषय में कहा जाता है कि बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है।
11. आलंकारिकता बिहारी की भाषा की प्रमुख विशेषता है। उन्होंने अपने काव्य में अनेक अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है।
12. बिहारी ने अपनी रचनाओं में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग किया है अर्थात् उनके सामान्य से दीखने वाले शब्द–प्रयोग और उक्तियाँ अपने में विशिष्ट अर्थ–संकेतों को व्यक्त करने की सामर्थ्य रखती हैं।

11.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के लिए

1. 'दीरघ–दाघ निदाघ' में अलंकार है – (4)
   1. श्लेष 2. उपमा 3. यमक 4. अनुप्रास
2. 'धँस्यो मनौ हिय–घर समर' में कौन–सा अलंकार है – (2)
   1. उपमा 2. उत्प्रेक्षा 3. संदेह 4. भ्रांतिमान
3. बिहारी लाल 'समर' कहके किसे संबोधित करते हैं (3)
   1. श्रीकृष्ण 2. नंद 3. मन्मथ 4. शिव

4. 'जगत–गुरु, जगन्नाथ जगवाय' में कौन–सा अलंकार है? (2)

1. श्लेष 2. अनुप्रास 3. संदेह 4. यमक

5. बिहारी की भाषा क्या है ? (3)

1. खड़ी बोली 2. अवधी 3. ब्रज 4. मैथिली

6. हिम–घर में _____ अलंकार है। (3)

1. संदेह 2. उत्प्रेक्षा 3. रुपक 4. उपमा

7. कृष्ण के कुंडलों की आकृति कैसी है? (2)

1. मृग 2. मकर 3. मीन 4. मोर

4 अंक के प्रश्न

निम्नलिखित पंक्तियों की संदर्भसहित व्याख्या कीजिए।

प्र.1. कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत–गुरु, जगन्नाथ जगवाय।।

अंक विभाजन
संदर्भ के लिए – 1 अंक
व्याख्या के लिए – 2 अंक
विशेषता के लिए – 1 अंक

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'बिहारी' से उद्धरित है। बिहारीलाल रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं, इस दोहे में कवि को श्री कृष्ण से शिकायत व्यक्त हुई है। बिहारी कहते हैं कि –

व्याख्या : सारी दुनिया के गुरु, हे जगत के स्वामी श्री कृष्ण मैं कब से तुम्हें दीन स्वर में पुकार रहा हूँ पर तुम मेरी सहयता नहीं करते, लगता है कि तुम्हें भी इस संसार की हवा लग गई है। जैसे इस दुनिया में सब लोग अपने आप में मस्त रहते हैं, कोई किसी के दुःख में हाथ नहीं बँटाता।

विशेषता :'नए जमाने की हवा लगना' मुहावरे का सुंदर प्रयोग हुआ है। 'स' और 'ज' अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है। भाषा सरल है।

प्र.2. मकराकृत गोपाल कैं, कुँडल सोहत कान।
धँस्यों मनौ हिय–घर समर, ड्यौढ़ी लसत निसान।।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'बिहारी' से उद्धरित है। बिहारीलाल रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि है, इस दोहे में कवि श्री कृष्ण के रूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि –

व्याख्या : श्री कृष्ण के कानों में मकर की आकृति के कुंडल शोभायमान हो रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो कामदेव ने उनके हृदय रूपी घर में प्रवेश कर, उसे जीतकर विजय का मकर–ध्वज श्री कृष्ण के कानों में लहराया है।

विशेषता : 'हिय–घर' (हृदय रूपी घर) रुपक अलंकार का प्रयोग हुआ है। भाषा सरल है।

प्र.3. जब–जब वै सुधि कीजियै, तब–तब सब सुधि जाँहि।
आँखिन आँखि लगी रहै, आँखें लागति नाँहि।।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'बिहारी' से उद्धरित है। विहारीलाल रीतिकाल के प्रतिनिध कवि है। प्रस्तुत दोहे में बिहारी ने नायक की याद में डूबी हुई नायिका का वर्णन किया है।

व्याख्या : विरहग्रस्त नायिका अपनी सखी से अपनी मनोदशा का वर्णन करती है – जब–जब मुझे अपने प्रिय की याद आती है तो मैं अपनी सारी सुध–बुध (चेतना) गँवा बैठती हूँ। मेरी आँखें उसकी ही आँखों में उलझी रहती हैं फलस्वरूप मुझे नींद भी नही आती।

विशेषता : 'आँख लगना' मुहावरे का प्रयोग हुआ है। 'ज', 'ब' और 'आंकी आवृति में 'अनुप्रास' अलंकार का प्रयोग हुआ है। भाषा सरल है।

प्र.4. कनक कनक तै सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौरात है, या पाएँ बौराय।।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'बिहारी' से उद्धरित है। बिहारीलाल रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि है, प्रस्तुत दोहे में कवि धन के नशे का वर्णन करते हैं।

व्याख्या : सोना (कनक), धतूरे (कनक) से अधिक नशीला होता है, क्योंकि धतूरे के सेवन से नशा चढ़ता है, जबकि स्वर्ण (सोना, धन) के प्राप्त होने मात्र से आदमी को नशा (घमंड) आ जाता है।

विशेषता : यमक अलंकार। भाषा चमत्कारिक।

प्र.5. सघन कुँज–छाया सुखद, सीतल सुरभि–समीर।
मनु हवै जात अजौं वहै, वा जमुना के तीर।।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहे 'बिहारी' से अवतरित हुआ है। बिहारीलाल रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि है। इस दोहे में कवि ने कृष्ण–वियोग में दुःखी गोपिकाओं की बातचीत का उल्लेख किया है। एक गोपी कहती है –

व्याखा : कृष्ण के न होने पर भी मन उन्हीं डुबा है। सघन कुंज की छाया और शीतल, सुगंधित पवन जो वास्तव में वियोगी को अधिक दुःखी करती है किंतु श्रीकृष्ण का स्मरण इस वातावरण को भी शीतल और सुखद बना देता है।

विशेषता : 'मन है जात अजौं वहैं – वक्रोक्ति अलंकार का प्रयोग है। साल भाषा का प्रयोग है।

प्र.6. बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं, भौहनु हँसै, दैन कहै नटि जाय।।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'बिहारी' से उद्धरित है। बिहारीलाल रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि है, प्रस्तुत दोहे में कवि श्री कृष्ण और गोपिका की रासलीला का वर्णन करते हैं।

व्याख्या : गोपियों को कृष्ण से बात करना अच्छा लगता हे। कोई एक गापिका उनकी बाँसुरी को छिपा देती है। कृष्ण उसे कसम देते तो वह भौंहों से मुस्कुराती है। वापस देने की बात कहने पर मुकर जाती है।

विशेषता : अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है। सरल भाषा का प्रयोग है।

प्र.7. काम देव के कोई चार नाम लिखिए।

उ. प्रेम और श्रृंगार की भावना जगाने वाले देवता का नाम कामदेव है। उनके अन्य नाम हैं, जैसे मदन, मन्मथ, रतिनाथ अनंग और मकर ध्वज।

प्र.8. कवि ने क्यों कहा है कि ईश्वर को दुनिया के आम आदमी की हवा लग गई है ?

उ. दुनिया के आम आदमी अपने आप में मस्त रहते हैं, वे कोई किसी के दुख में हाथ नहीं बँटाते और अपनी प्रशंसा और प्रभुता का आनंद लेते रहते हैं, ऐसा ही ईश्वर भी कर रहे है, वे दीन स्वर में पुकार ने पर भी कवि की सहायता नहीं करते, दुःखों को दूर नहीं कर रहे हैं। इसी करण कवि कहते हैं कि ईश्वर को दुनिया की हवा लग गई है।

प्र.9. कवि ने कान रूपी ड्योढ़ी की कल्पना क्यों की है।

उ. मन में प्रेम की भावना का उदय होने पर कान की लवें गरम व लाल होने लगती है यानी प्रेमोदय का असर व्यक्ति के कान पर लक्षित होता है। इसी कारण कवि ने कान रूपी इयोढ़ी की कल्पना की।

प्र.10. पाँचवे दोहे में 'वा जमुना के तीर' से कवि का क्या आशय है, स्पष्ट कीजिए।

उ. 'वा जमुना के तीर' में कवि 'वा' यानी यमुना किनारे का वह (निश्चित) स्थान, जहाँ कृष्ण गोपी मिलते थे उसे दर्शना चाहते है।

प्र.11. बिहारी का परिचय दीजिए ?

उ. कवि बिहारीलाल रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि हैं। वे महाराज जयसिंह के दरबारी कवि थे। 'बिहारी सतसई' उनकी एक मात्र रचना है। उन्होंने इस ग्रन्थ में श्रृंगार, भक्ति, नीति, प्रकृति संबंधी और लोक–व्यवहार संबंधी दोहे लिखे है। बिहारी राधावल्लभ संप्रदाय के कवि है, इस कारण उन्होंने राधा को भी अधिक महत्व दिया है। बिहारी सतसई एक श्रृंगार–प्रधान रचना है। किंतु इसमें एक ओर भक्ति भावना के ऐसे दोहे संकलित हैं जो आत्मा की सच्ची पुकार है तो दूसरी ओर नीति के बहु लौकिक ज्ञान से भरपूर दोहे संकलित हैं। बिहारी एक छोटे से दोहे में भव और भाव दोनों को असाधारण रूप से अभिव्यक्त करने में सक्षम थे। इसीलिए उनकी सतसई 'गागर में सागर' सिद्ध हुई है।

12. पद्माकर

12.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. पद्माकर रीतिकाल के अंतिम समर्थ कवि हैं। उनका काव्य भी उनके जीवन की तरह ही उल्लास और ऐश्वर्य से युक्त है।
2. पद्माकर की भाषा में रीतिकालीन काव्य–भाषा और शिल्प की समस्त सरसता, सुघढ़ता, कोमलता और आलंकारिकता मिलती है। ब्रजभाषा का प्रौढ़ साहित्यिक रूप पद्माकर के काव्य में बड़े स्वाभाविक रूप में विद्यमान है।
3. उनके रूप चित्र भी रंगीन और आकर्षण हैं। फाग के जो नयनाभिराम सहृदयता भरे दृश्य चित्र कवि ने अंकित किए हैं, उनमें भाव–प्रवणता और दृश्यविधायिनी क्षमता का पूरा परिचय मिलता है।

12.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'वसंत ऋतु के आने पर तन, मन और बन और ही प्रकार के हो गए है'', कथन से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उ. वसंत आगमन पर सभी खुश होकर नाच उठे हैं। वनों में भी पक्षी तथा जानवर भी चहकते हुए प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं।

प्र.2. अचानक पेड़ों पर किसकी गुंजार अधिक सुनाई दे रही है और क्यों ?

उ. भौरों की, ऋतुराज वसंत के आगमन से।

प्र.3. गोपी बार–बार किसे और क्यों धो–धो कर हार गई है?

उ. गोपी बार–बार नेत्रों को धो–धो कर हार गई। यहाँ कृष्ण के प्रति उमड़े प्रेम को आँखों में अबीर पड़ने की स्थिति का वर्णन किया गया है, जितनी सरलता से अबीर धुल जाता है उतनी सरलता से कृष्ण प्रेम नहीं धुल सकता।

प्र.4. गोपिका की आँखों से क्या बाहर निकल गया और क्या उसके अंदर ही रह गया?

उ. गोपिका की आँखों से गुलाल निकल गया और कृष्ण छवि उसके अंदर ही रह गयी।

प्र.5. छलिया–छबीले–छैल में कौन सा अलंकार है ?

उ. अनुप्रास

प्र.6. पक्षियों की आवाज़ भी कुछ और ही तरह की क्यों हो गई है?

उ. वसंत की मादकता के कारण।

4 अंक के प्रश्न

निम्नलिखित पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

प्र.1. औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर,
औरै डौर झौरन पै बौरन के ह्वै गये।
कहै पद्माकर सु औरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरै छबि छवै गये।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ 'पद्माकर' से उद्धरित हैं। इसमें कवि पद्माकर ने वसंत के कारण प्रकृति के रूप–सौंदर्य में आए परिवर्तन का चित्रण किया है।

व्याख्या : ऋतुराज वसंत का आगमन प्रकृति में और समाज में बाहर भीतर मादकता भर देता है। वसंत को आए अभी कुछ ही दिन हुए है, कुंजों में भौंरों की भीड कुछ और ही तरह से गूँजने लगी है। गली–गलियारों में बने–ठने युवक–युवतियाँ भी वसंत के सौंदर्य से हर्षित हैं।

विशेषता : अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है, सरल भाषा का प्रयोग हुआ है।

प्र.2. औरै भाँति बिहग–समाज में अवाज होति,
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।
औरै रस, औरै रीति, औरै राग, औरै रंग,
औरै तन, औरै मन, औरै बन ह्वै गये।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ 'पद्माकर' से उद्धरित है। इसमें कवि पद्माकर ने वसंत के कारण प्रकृति के रूप–सौंदर्य में आए परिवर्तन का चित्रण किया है।

व्याख्या : ऋतुराज वसंत का आगमन प्रकृति में और समाज में मादकता भर देता है। ऐसे मोहक ऋतुराज बसंत को आए अभी कुछ ही समय बीता है। पक्षी भी सामूहिक रूप से प्रसन्नतापूर्वक चहकने लगे हैं। कवि कहता है कि यह परिवर्तन सब ओर दिखाई दे रहा है। सारा वातावरण रस से, रंग से, रीति से, गीत और प्रेम से बदल गया है। तन मन और वन सभी में बदलाव आ गया है।

विशेषता : तन–मन में अनुप्रास का प्रयोग है। सरल भाषा का प्रयोग है।

प्र.3. एकै संग धाए नंदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगनि गए जु भरि आनंद मढ़ै नहीं।
धोय–धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,
अब तौ उपाय एक चित्त में चढ़ै नहीं।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ 'पद्माकर' से उद्धरित है। इसमें कवि पद्माकर ने फाग (होली) का बड़ा हृदय स्पर्शी चित्र अंकित किया है।

व्याख्या : होली के अवसर पर गुलाल हवा में उड़ाया (उछाला) गया है, यह उड़ता गुलाल गोपिका की आँख में चला गया है, उस गुलाल के साथ नंदलाल भी आँखों में बस गया है।

गोपी आँखें धो–धोकर हार गई है, उसे सफलता नहीं मिल रही है। गुलाल तो धुल गया मगर आँखों से कृष्ण की छवि नहीं हट रही है।

विशेषता : कवित्त छंद का प्रयोग है, ब्रज भाषा का प्रयोग है।

प्र.4. कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ, कौन सुनै,
कोऊ तो निकासों, जासै दरद बढ़ै नहीं।
एरी मेरी बीर! जैसे–तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ 'पद्माकर' से उद्धरित है। इसमें कवि पद्माकर ने फाग (होली) का बड़ा हृदय स्पर्शी चित्र अंकित किया है।

व्याख्या : गोपी आँखों में गिरे गुलाल को धोने की प्रयत्न करती है, वह असफल रहती है और सोंच में रह जाती है, ऐसा क्यों हो रहा है? अब क्या करूँ? किसे कहूँ? मेरी बात कौन सुनेगा? कौन मुझ पर विश्वास करेगा? नंदलाल, गुलाल दोनों को आँखों बस जाने का दर्द दूर करने के लिए वह आखे धोने लगी। आँखों से अबीर (गुलाल) तो निकल गया, पर अहीर (कृष्ण की छवि) नहीं निकल पाया।

विशेषता : कवि आँखों में तद्वारा हृदय में बसे श्री कृष्ण को निकालना कठिन सिद्ध करना चाहते हैं। कवित्त छंद का प्रयोग है, ब्रज भाषा का प्रयोग है।

प्र.5. 'फाग' कविता में गोपिका अपनी किस विवशता का वर्णन कर रही है।

उ. यहाँ श्री कृष्ण के प्रति उमड़े प्रेम को आँखों में अबीर (गुलाल) पड़ने की स्थिति का वर्णन किया गया है, पर जितनी सरलता से अबीर (गुलाल) धुल जाता है उतनी सरलता से कृष्ण प्रेम नहीं धुल सकता। न गोपी ऐसा चाहती है, वह तो अपनी सहेली की सौगंध खाकर उसे आश्वासन दिलाना चाहती है कि वह कृष्ण को निकाल नहीं पा रही है और न उसे इसका कोई उपाय सूझ रहा है।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. पद्माकर की काव्य भाषा पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।

उ. कवि पद्माकर रीतिकाल के रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रतिभा–संपन्न कवि हैं। वे श्रृंगार–रस के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। वे लाक्षणिकता और मधुरता के कवि है। उत्कृष्ट कल्पना की उड़ान और विषय–विवेचन की विशुद्धता भी पद्माकर की विशेषता है। वे अनुप्रास अलंकार के प्रयोग में सक्षम थे, जिससे अद्भुत चमत्कार पैदा हो जाता है।

उदा : कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में
क्यातिन में कलिन कलीन किलकत हैं।

ब्रज भाषा का सुंदर साहित्यिक रूप आपकी रचनाओं को अलग ही पहचान दिलाता है। आप उत्कृष्ट प्रतिभा संपन्न कवि हैं। आपकी काव्य भाषा की दो विशेषताएँ मुख्य है –

(i) दृश्य और शब्द–योजना के द्वारा प्रकृति के माध्यम से ऋतु–वर्णन और कल्पना का उद्‌भुत प्रयोग।

(ii) आनंद और उल्लास से संपन्न शब्द–योजना।

रस निरूपण के आचार्य कवि के रूप में आप प्रसिद्ध हैं। आप रीतिकाल के अंतिम श्रेष्ठ कवि हैं।

13. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

13.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि ने मजदूरनी के माध्यम से शोषक और शोषितों के जीवन की विषमता का चित्रण किया है, तो 'मौन' कविता प्रेमी युगल के संदर्भ से मौन का महत्व समझाती है।
2. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि ने बताया है कि मजूदर प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मन लगाकर काम करते हैं, पर उन्हें शोषकों के अत्याचारों और विषमताओं का बोध है। वे स्वाभिमान से जीना चाहते हैं और यह क्षमता भी रखते है कि वे अपने हथौड़े से इस पत्थर–दिल व्यवस्था को भी छिन्न–भिन्न कर सकें।
3. 'मौन' कविता में कवि कुछ क्षणों के लिए अपने प्रिय के साथ एकांत में चुपचाप बैठना चाहता है। ऐसे में मौन ही मधु–सा मीठा लगने लगता है। वाणी मूक हो जाती है और मन प्रवाह के साथ पानी की बूँद–सा बहने लगता है।
4. भाव और भाषा की दृष्टि से दोनों रचनाएँ बेजोड़ हैं। 'मौन' कविता में छायावादी विशेषताएँ दिखाई पड़ती है और 'वह तोड़ती पत्थर' में प्रगतिवादी। दोनों कविताओं में शब्दों का बड़ा ही प्रासंगिक प्रयोग दिखाई पड़ता है।

13.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में किस प्रकार के मौसम का वर्णन है?

उ. तमतमाती गरमी के मौसम का वर्णन है।

प्र.2. पत्थर तोड़ने वाली औरत के सामने क्या है ?

उ. भवन, सुंदर अट्टालिकाएँ आदि।

प्र.3. वह तोड़ती पत्थर 'कविता छंद की दृष्टि से किस तरह की है ?

उ. मुक्त छंद कविता

प्र.4. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि की सहानुभूति किसके साथ है?

उ. शोषित महिला के साथ है।

प्र.5. निराला किस युग के कवि है?

उ. छायावादी युग

प्र.6. मौन कविता कहाँ से संकलित है ?

उ. निराला ग्रंथावली भाग – 2 से संकलित है।

प्र.7. 'मौन' कविता के शिल्प की विशेषता है – **(ख)**

क. स्वच्छंदता ख. मुक्तछंद ग. गीतात्मकता घ. संवादात्मकता

प्र.8. 'मौन मधु हो जाए' कथन का आशय है **(घ)**

क. मौन होकर मधु पिया जाए। ख. मौन और मधु दोनों मीठे होते हैं।

ग. मौन बैठे रहने में बड़ा लाभ है। घ. मौन मधु–सा आनंद दे सके।

प्र.9. 'देख मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं' कथन से **(ग)**

क. दीनता ख. सहिष्णुता ग. स्वाभिमान घ. पराधीनता

प्र.10. 'दिवा का तमतमाता रूप' कथन से आशय है **(घ)**

क. दिया जगमगा रहा था ख. मजदूर क्रोध से तमतमा रहें थे।

ग. जगमगाता दिन बहुत सुंदर लग रहा था। घ. सूर्य मानो आग बरसा रहा था।

प्र.11. 'रूई ज्यों जलती हुई भू' का आशय है **(ग)**

क. धरती पर आग लगी थी ख. रूई धीरे–धीरे जल रही थी।

ग. असहनीय गरमी पड़ रही थी। घ. धरती मानो सुलग रही थी।

प्र.12. कवि ने मज़दूरनी के लिए वह सर्वनाम का प्रयोग किया है, क्योंकि **(ग)**

क. उसका कोई नाम नहीं है

ख. कवि उसका नाम नहीं जानता।

ग. वह किसी भी श्रमिक की बात हो सकती है।

घ. महिला के लिए 'वह' कहना उचित है।

4 अंक के प्रश्न

निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

प्र.1. वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म–रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार–बार प्रहार
सामने तरू–मालिका अट्टालिका, प्राकार।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'तोडती पत्थर' नामक कविता से ली गयी है। कवि निराला जी इलाहाबाद के मार्ग पर कड़ी छूप में बैठी पत्थर तोड़नेवाली मजदूरनी का चित्रण करते है।

व्याख्या : छायावाद और प्रगतिवाद के प्रमुख कवि निराला पत्थर तोड़नेवाली औरत का चित्रण करते हुए कहते हैं – इलाहाबाद के मार्ग पर पत्थर तोड़नेवाली मजदूरनी को मैं ने देखा। वह पत्थर तोड रही थी। उसके आस–पास कोई छायादार वृक्ष नहीं था, जिसके नीचे बैठकर वह कुछ देर विश्राम कर सके। श्याम तन में उसका उभरा हुआ यौवन था। अर्थात् वह नवयुवती थी। वह अपने प्रिय कर्म–पत्थर तोड़ने में लीन थी। भारी हथौडा हाथ में लिए नीचे की ओर देखते हुए वह लगातार पत्थर तोड़ रही थी। उसके सामने बड़ी और ऊँची अट्टालिकाएँ और भवन खड़े थे।

विशेषता : खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग है। यहाँ निराला जी ने पत्थर तोड़नेवाली का जीवंत चित्रांकन करते हैं जो श्रम–श्रमिक सौंदर्य का अद्‌भुत चित्रण है।

प्र.2. चढ़ रही थी छूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रूई ज्यों जल्ती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गयीं,
प्रायः हुई दुपहर
वह तोड़ती पत्थर।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'तोडती पत्थर' नामक कविता से ली गयी हैं। कवि निराला जी इलाहाबाद के मार्ग पर कड़ी धूप में बैठी पत्थर तोड़नेवाली मजदूरनी का चित्रण करते है।

व्याख्या : गर्मियों के दिन थे। सूरज का तमतमाता रूप प्रकट हो रहा था। झुलसाती हुई लू (गरम हवाएँ) चल रही थी। धरती इतनी गर्म हुई मानों रूई जल कर भस्म–सी होती थी। धूल की रज गर्मी के कारण आग की चिनगारियाँ लगती थी। प्रायः दोपहर का समय हो गया था। लेकिन उस मजदूरनी को समय की कोई सुधि नहीं। वह पत्थर तोड़ने में ही लीन थी।

विशेषता : खड़ी बोली हिंदी है। यथार्थवादी कविता है। तमतमाती धूप में, लू के वातावरण में भी वह युवती अपने काम में लीन होकर पत्थर तोड़ती रहती है। श्रमिक सौंदर्य का अद्‌भुत चित्रण है।

प्र.3. देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार,
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोयी नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

संदर्भ : कवि निराला यहाँ पत्थर तोड़नेवाली मजदूरनी की अंतर्वेदना व्यक्त करते हैं।

व्याख्या : पत्थर तोड़नेवाली नारी ने एक बार कवि निराला की ओर देखा और फिर सामने निर्मित बड़े भवन की ओर नजर दौड़ाई। उसकी अंतर्वेदना सहम गई। वहाँ और कोई नहीं था, फिर मेरी ओर उस भावना से उसने देखा जो मार खा कर रोई नहीं। मैंने अपने सहज भावनारूपी सितार की वह झंकार सुनी जो कभी झंकृत नहीं हुई थी। अर्थात् पत्थर तोडने वाली की अव्यक्त भावनाएँ भी निराला के लिए अभिव्यक्त हो गयी।

विशेषता : खड़ीबोली हिंदी है। यथार्थवादी कविता है। पत्थर तोडनेवाली नारी की दीन किंतु संघर्षमय दृष्टि का चित्रीकरण हुआ है।

प्र.4. एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर
ढुलक माथे से गिरे सीकार,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा –
'मैं तोड़ती पत्थर।'

संदर्भ : कवि निराला पत्थर तोड़नेवाली औरत का वर्णन करते है। पत्थर तोड़नेवाली नारी पसीने से तर होकर कहती है 'मै तोड़ती पत्थर।'

व्याख्या : एक क्षण समय बीत जाता है। पत्थर तोड़नेवाली नारी के कंपित होने पर उसके माथे से पसीने की बूँदे ढुलक कर नीचे गिर जाती हैं। वह अपने काम में लीन होकर मानो कह रही हो 'मैं ताड़ती पत्थर'। अर्थात् संवेदनहीन पत्थर रूपी समाज को बदलने के लिए वह जीवन–संघर्ष कर रही है।

विशेषता : खड़ीबोली हिंदी का प्रयोग है। यथार्थ वादी कविता है।

प्र.5. बैठ लें कुछ देर,
आओ, एक पथ के पथिक से
प्रिय, अंत और अनंत के,
तम–गहन–जीवन घेर।
मौन मधु हो जाय,
भाषा मूकता की आड़ में,
मन सरलता की बाढ़ में
जल–बिंदु–सा बहजाय।
सरल, अति स्वच्छंद
जीवन, प्रात के लघु–पात से

उत्थान–पतनाघात से

रह जाए चुप, निर्द्वन्द्व।

संदर्भ : मौन शीर्षक कविता के कवि छायावाद के प्रमुख कवि निराला है। प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी कविता 'मौन' से ली गयी है। यह निराला ग्रंथावली भाग – 2 में संकलित कविता है। प्रस्तुत कविता में एक व्यक्ति अपने प्रियतम से कुछ क्षण शांति से मौन रहकर व्यतीत करने का आग्रह कर रहा है।

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों के कवि निराला अपने प्रियतम को मौन का महत्व समझाते हुए कहते हैं। 'हे प्रिय, आओ दोनों कुछ देर के लिए बैठ लें। जीवन तो निरंतर गतिशील है। उस गतिशीलता में कुछ पल बैठकर स्वयं को विश्राम दे। हम दोनों एक ही जीवन मार्ग के पथिक हैं। आओ, जीवन के गहरे अंधेरे को, असफलताओं को छोड़ कर बैठें। उन पर चुपचाप मनन करें। मधु–से मीठे मौन का आस्वादन करें, भाषा से परे भावनाओं को समझे। जैसे बूँदें नदी में चुपचाप बह जाती हैं, वैसे ही हमारा मन जीवन के विशाल प्रवाह में बूँदों–सा चुपचाप बह जाए। हमारा जीवन सरल और बंधनों से मुक्त हो अपने वश में हो। वह उत्थान और पतन की चोटों को ऐसी सरलता से सह जाए जैसे प्रातः काल की वायु से छोटे–छोटे पत्ते कभी ऊपर कभी नीचे हिलते–डुलते दिखाई देते हैं। ऐसे ही हम जीवन के उतार–चढ़ावों को झेलते तनाव मुक्त (निर्द्वन्द्व) रहें।

विशेषता : खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग है। सरल भाषा में मौन का अद्‌भूत वर्णन मिलता है। मौन को मधु जैसा मीठा बताया गया है। मौन–मधु में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

प्र.6. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर ग्रीष्म ऋतु की भीषणता का वर्णन कीजिए।

उ. ग्रीष्म ऋतु के दिन थे। धूप चढ़ रही थी। सूरज का तमतमाता रूप प्रकट हो रहा था। सूरज की किरणें तमतमाने लगीं। गरम हवाएँ चल रही हैं। धरती इतनी गर्म हुई मानों रूई की तरह जल कर भस्म हो रही हो। धूल की रज गर्मी के कारण आग की चिनगारियाँ लगती थी। असहनीय गर्मी पड़ रही थी।

प्र.7. निराला की शैली और शिल्प सौंदर्य पर प्रकाश डालिए ?

उ. शैली और शिल्प–सौंदर्य की दृष्टि से 'वह तोड़ती पत्थर', 'मौन' अद्‌भुत रचनाएँ हैं। परंपरागत छंदों से हटकर निराला जी ने इन कविताओं में 'मुक्त छंद' का प्रयोग किया है। 'वह तोड़ती पत्थर' में तुकांतता है। छोटी–बड़ी पंक्तियों से एक प्रवाह से यह कविता चलती है। कवि शब्द बिंबों के द्वारा पाठक के सामने एक–चित्र–सा खींच देता है।

जैसे – कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,

मौन कविता में तत्सम शब्दों की प्रधानता है, वह तोड़ती पत्थर कविता की भाषा सरल और बोलचाल की है पर कुछ तत्मम शब्दावली का प्रयोग है जैसे – तरू– मालिका, अट्‌टालिका।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'मौन' कविता में गीतात्मकता है।

'मौन' कविता का केंद्रीय भाव बताइए।

उ. निराला जी की कविता 'मौन' का केंद्रीय भाव मौन का महत्व समझाता है। इस कविता में कवि अपने प्रियतम को मौन का महत्व समझाते हुए कहते हैं

'हे प्रिय, आओ दोनों कुछ देर के लिए बैठ लें, जीवन तो निरंतर गतिशील है। उस गतिशीलता में कुछ पल बैठकर स्वयं को विश्राम दें। हम दोनों एक ही जीवन मार्ग के पथिक है। आओ, जीवन के गहरे अंधेरे को, असफलताओं को छोड़ कर बैठें। उन पर चुपचाप मनन करें। मधु–से मीठे मौन का आस्वादान करें, भाषा से परे भावनाओं को समझे। जैसे बूदें नदी में चुपचाप बह जाती है, वैसे ही हमारा मन जीवन के विशाल प्रवाह में बूँदों–सा चुपचाप वह जाए। हमारा जीवन सरल और बंधनों से मुक्त हो, अपने वश में हो। वह उत्थान और पतन की चोटों को ऐसी–सरलता से सह जाए जैसे प्रातः काल की वायु से छोटे–छोटे पत्ते कभी ऊपर कभी नीचे, हिलते–डोलते दिखाई देते हैं। ऐसे ही हम जीवन के उतार–चढावों को झेलते तनाव मुक्त रहे।

प्र.2. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता का मुख्य प्रतिपाद्य क्या है ?

(या)

'वह तोड़ती पत्थर' कविता का सारांश लिखिए ?

उत्तर : छायावादी, रहस्यवादी तथा प्रगतिवादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का स्थान आधुनिक हिंदी साहित्य–धारा में अद्वितीय है। पौरुष और ओज, कठोरता और कोमलता का मिश्रण निराला के साहित्य में दर्शित होता है। प्रस्तुत कविता 'वह तोड़ती पत्थर' में कवि निराला जी की प्रगतिवादी भावनाएँ व्यंजित होती है। इस कविता में कड़ी धूप में हथौडे से पत्थर तोड़नेवाली मजूदरनी का चित्रांकन किया गया हैं।

सारांश : प्रगतिवाद के उदीयमान कवि पत्थर तोड़नेवाली का चित्रण करते हुए कहते हैं – इलाहाबाद के मार्ग पर पत्थर तोड़नेवाली मजूदरनी को मैं ने देखा। वह पत्थर तोड़ रही थी। उसके आस–पास कोई नहीं था। जिसके नीचे बैठकर वह कुछ देर विश्राम कर सके। श्याम तन में उसका उभरा हुआ यौवन था। वह अपने प्रिय कर्म पत्थर तोड़ने में लीन थी। मजबूत हथौडा हाथ में लिए नीचे की ओर देखते हुए वह बार–बार पत्थर तोड़ रही थी। उसके सामने बड़ी–बड़ी अट्टालिकाएँ और प्राकार खड़े हुए थे।

धूप चढ़ रही थी और गर्मियों के दिन थे। सूरज का तमतमाता रूप प्रकट हो रहा था। सूरज की किरणें तमतमाने लगीं, झुलसाती हुई लू उठी (गरम हवाएँ चल रही थी)। धरती इतनी गर्म हुई मानों रूई की तरह जल कर भस्म हो जाएगी। धूल की रज गर्मी के कारण आग की चिनगारियाँ लगती थीं। प्रायः दोपहर का समय हो गया था। लेकिन मजूदरनी को समय की कोई सुधि नहीं। वह पत्थर तोड़ने में ही लीन थी।

पत्थर तोड़नेवाली नारी ने एक बार मेरी ओर (कवि की ओर) देखा और फिर सामने निर्मित बड़े भवन की ओर नजर दौडाई। उसकी अन्तर्वेदना सहम गई। वहाँ और कोई नहीं था, फिर मेरी ओर इस भावना से देखा मानो कह रही हो कि वह ऐसी स्त्री है जो मार खा कर रोई नहीं। मैंने अपने सहज भावनारूपी सितार की वह झंकार सुनी जो आज से पहले कभी सुनी नहीं थी। अर्थात् निराला ने उस मजदूरनी की वह अंतर्व्यथा सुनी जो उसने (पत्थर तोड़ने वाली) कही ही नहीं थी। एक क्षण समय बीत जाता है। पत्थर तोड़नेवाली नारी कुछ कंपित हो जाती है। उसके माथे से पसीने की बूँदे ढुलक कर नीचे गिर जाती हैं। वह अपने काम में लीन होकर फिर कह देती है – ''मैं तोड़ती पत्थर।''

विशेषता : कविता की भाषा में ओज है, प्रवाह है, चोट है, कसक है और है एक विचित्र गरिमा। संस्कृत तथा उर्दूमिश्रित व्यावहारिक खड़ीबोली में कविता ढ़ली है।

14. महादेवी वर्मा

14.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. महादेवी वर्मा की रचनाओं में वैयक्तिक भावनाओं–प्रेम, विरह, पीड़ा आदि की अभिव्यक्ति हुई है।
2. बदली के उमड़ने, घिरने, बरसने के माध्यम से कवयित्री अपने मन में वेदना के उमड़ने और बरसने को संकेतित करती है।
3. कवयित्री अपनी वैयक्तिक भावनाओं का आरोप प्रकृति के क्रिया व्यापारों में करती हैं।
4. महादेवी की कविता में छायावादी काव्य की प्रायः सभी विशेषताएँ लक्षित होती हैं।

14.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'क्रंदन में आहत विश्व हँसा' कथन का भाव है कि बादलों के गरजने पर **(घ)**

क. लोग हंसने लगे। ख. चारों ओर चीख–पुकार मच गई।

ग. विरहिणी आहत हुई। घ. ग्रीष्म की प्रखरता से पीड़ित लोग प्रसन्न हुए।

प्र.2. 'नभ के नवरंग बुनते दुकूल' का आशय है कि इंद्रधनुष **(ग)**

क. बादलों के लिए कपड़े बुनते हैं। ख. बादलों के साथ उड़ते रहते हैं।

ग. बादलों को रंगीन आभा देते हें। घ. प्रिय के दुपट्टे जैसा लगता है।

प्र.3. 'मैं नीर भरी दुख की बदली' में अलंकार है – **(ख)**

क. अनुप्रास ख. उपमा ग. रुपक घ. उत्प्रेक्षा

प्र.4. 'मैं क्षितिज–भृकुटि पर घिर धूमिल, **(ग)**

चिंता का भार बनी अविरल

उपर्युक्त पंक्तियों में छायावादी विशेषताएँ हैं।

क. रूपक, मानवीकरण ख. मानवीकरण, उत्प्रेक्षा

ग. मानवीकरण, मूर्त की तुलना अमूर्त से घ. मानवीकरण, विशेषता विपर्यय

4 अंक के प्रश्न

निम्न लिखित पंक्तियों का संदर्भसहित व्याख्या कीजिए।

प्र.1. मैं नीर भरी दुःख की बदली
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली।

संदर्भ : ये पंक्तियाँ महादेवी कृत ''मैं नीर भरी दुःख की बदली'' नामक कविता से ली गयी है। प्रेम और वेदना की मूर्ति महादेवी छायावाद तथा रहस्यवाद की प्रमुख कवयित्री है।
प्रस्तुत पंक्तियों में महादेवी रहस्यवादी विचारधारा युक्त अपनी वेदना व्यक्त करती हैं।
व्याख्या : महादेवी रहस्यवादी विचारधारा में अपनी वेदना व्यक्त करते हुए कहती हैं – मेरे स्पंदन में चिर–निस्पंद परमात्मा बहता है। मेरे क्रंदन में आहत होकर विश्व हँस पड़ा। मेरे नेत्रों में दीपक सी ज्योति जलती रहती है। मैं उनकी राह देखती रहती हूँ। मेरी पलकों में आँसू झरना बनकर बहते हें।
विशेषता : रूपक अलंकार का प्रयोग है। महादेवी आँखों में ज्योति जलाकर और पलकों में आँसू भर कर प्रियतम की राह देखती रहती है। संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग है।

प्र.2. **मेरा प्रति पग संगीत भरा,**
श्वासों से स्वप्न–पराग झरा,
नभ के नव रंग, बुनते दुकूल,
छाया में मलय–बयार पली!

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ महादेवी कृत 'मै। नीर भरी दुःख की बदली' नामक कविता से ली गयी हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री प्रियतम के लिए बनी अपनी मधुर भावनाओं को व्यक्त करती हैं।
व्याख्या : मेरा प्रति पग संगीत माधुरी से भर कर लयान्वित हुआ है। मेरे श्वासों में स्वप्न–पराग झडता है। आकाश में बादलों को रंगीन आभा देते हें।
विशेषता : अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है। महादेवी जी यहाँ प्रकृतितत्व से अपना प्रतीक जोड़ती है। भाषा–संस्कृत निष्ठ खडी बोली।

प्र.3. **मैं क्षितिज–भृकुटि पर घिर धूमिल,**
चिंता का भार बनी अविरल,
रज–कण पर जल–कण हो बरसी,
नवजीवन–अंकुर बन निकली।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ महादेवी कृत 'मैं नीर मरी दुःख की बदली' नामक कविता से ली गयी हैं। महादेवी यहाँ अपनी अन्तर्वेदना व्यक्त करती है।
व्याख्या : मैं क्षितिज रूपी भृकुटि पर घिर कर धूमिल हो गयी। मैं अविरल चिंता का भार बन गयी हूँ। मैं जलकण हो कर धरती पर बरसती हूँ। फिर से मैं नया जीवन धारण कर अंकुर के रूप में धरती से निकल आती हूँ।
विशेषता : मानवीकरण का प्रयोग है। महादेवी जीव के पुनर्जीवन का संकेत देती है। भाषा–संस्कृत निष्ठ खड़ीबोली।

प्र.4. पथ को न मलिन करता आना,
पद–चिन्ह न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में,
भुख की सिरहन हो अंत खिली।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ महादेवी कृत 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' नामक कविता से ली गयी हैं। प्रेम और वेदना की मूर्ति महादेवी छायावाद तथा रहस्यवाद की प्रमुख कवयित्री हैं। वे प्रस्तुत पंक्तियों में प्रियतम को आने की सूचना देती हैं।

व्याख्या : हे प्रियतम! तुम मार्ग को कदापि मलिन न करो। लौटकर जाते समय भी अपने पदचिन्ह न देते जाओ। इस अनंत जग में मेरी सुधि दुख का कंपन हो कर खिलती है।

विशेषता : अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है। प्रियतम के आवागगन को यहाँ महादेवी जी अंकित करती हैं। भाषा–संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली

प्र.5. विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना, इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ महादेवी कृत 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' नामक कविता से ली गयी हैं। महादेवी जी यहाँ जीवन का चरमांक व्यक्त करती हैं।

व्याख्या : हे प्रियतम! आकाश का कोई भी कोना मेरा कदापि नहीं। इस विश्व में मेरा अपना कुछ न हो। इतिहास में मेरा परिचय इतना ही है कि कल मेरा जन्म हुआ था और आज मिट रही हूँ। इस संसार में कोई भी स्थिर नहीं।

विशेषता : महादेवी जी यहाँ निर्वेद प्रकट करती हैं। भाषा–संस्कृत निष्ठ खड़ीबोली।

4 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' कविता का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए।

उ. कविता में महादेवी ने अपने जीवन की तुलना बदली से करते हुए अपनी विरह वेदना को अभिव्यक्त किया है। मानव जीवन क्षणिक है, वह चिरस्थायी नहीं है। जो आज है, वह कल नहीं होगा, अतः मानव जीवन का यही परिचय और इतिहास है कि वह आज हैं, किंतु कल नहीं होगा इस प्रकार कविता में निराशावादी दृष्टिकोण और जीवन के प्रति अनास्था का स्वर मुखरित हो उठा है।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. पठित कविता के आधार पर महादेवी के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

(या)

महादेवी जी के काव्य में छायावादी काव्य के लक्षणों को सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

उ. महादेवी जी के काव्य में छायावादी काव्य के लक्षण :

1. मानवीकरण : छायावादी कवि के लिए प्रकृति उसकी माँ, सखी, प्रेयसी और सबकुछ थी। प्रकृति को मानवरूप में अभिव्यकत करना मानवीकरण है।

उदा : 'श्वासों से स्वान–पराग झरा'

'नभ के नवरंग बुनते दुकूल'

'क्रंदन में आहत विश्व हँसा'

'मैं क्षितिक–भृकुटि पर घिर धूमिल।

2. बिंब योजना : शब्दों के माध्यम से दृश्य एवं शब्द बिंबों को हमारे सामने रखना।

उदा : नभ के नवरंग बुनते दुकूल–दृश्य बिंब

3. छन्द विधान : छायावादी कवि ने छंद के रूढ़ शास्त्रीय बन्धनों को तोड़कर नवीन छन्दों का आविष्कार किया। इन्होंने मुक्त–छंद के द्वारा एक नवीन संगीत की सृष्टि की।

उदा : मैं नीर भरी दुःख की बदली।

4. आत्माभिव्यक्ति : वैयक्तिक व्यथा और भावनाओं का प्रकृति पर आरोप संपूर्ण कविता में है। कवयित्री स्वयं दुःखी रहने के कारण पूरी प्रकृति में उसे दुःख दिखाई दे रहा है।

उदा : मैं क्षितिज–भृकुटि पर घिर धूमिल।

5. मूर्त की अमूर्त से तुलना

मैं <u>क्षितिज भृकुटि</u> पर चिर धूमिल

<u>चिंता का भार</u> बनी अविरल।

6. अमूर्त की मूर्त से तुलना

<u>मैं नीर</u> भरी <u>दुख की बदली'</u>।

7. अमूर्त की अमूर्त से तुलना –

'<u>सुधि मेरे आगम</u> की जग में

सुख की सिहरन हो अंत खिली।

8. वेदना की विवृति : यथार्थ और कल्पना के बीच के अंतर की अधिकता के कारण कवि को वास्तविक स्थिति पर अत्यंत दुःख का अनुभव होता है।

'मैं नीर भरी दुख की बदली।'

प्र.2. 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता का सारांश लिखिए।

परिचय : प्रेम और वेदना की मूर्ति महादेवी छायावाद तथा रहस्यवाद की प्रमुख कवयित्री हैं। असीम चेतना उस परमात्मा को वह अपना प्रियतम मानती थी। उस परमात्मा के प्रति अपनी कविताओं में विरह व्यंजित करने के कारण उसे आधुनिक मीरा कहा जाता है।

प्रस्तुत कविता 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' में कवयित्री महादेवी परमात्मा के साथ अपना भावात्मक संबंध जोड़कर वेदना व्यक्त करती है।

कविता का सारांश :– कवयित्री महादेवी रहस्यवादी विचारधारा में अपनी वेदना व्यक्त करते हुए कहती हैं – मेरे हृदय स्पंदन में चिर–निस्पंद परमात्मा बसता हे। मेरे क्रंदन में आहत होकर विश्व हँस पड़ा। मेरे नेत्रों में दीपक–सी ज्योति जलती रहती है। मैं परमात्मा की राह देखती रहती हूँ। मेरी पलकों में आँसू झरना बनकर बहते हैं। मेरा प्रति पग संगीत माधुरी से भर कर लयान्वित हुआ है। मेरे श्वासों में स्पप्न–पराग झड़ता है। आकाश में बननेवाले नवरंग वस्त्र बुनते हैं। मेरी छाया में मलय–पवन पलता है। मैं क्षितिज रूपी भृकुटि पर घिर कर धूमिल हो गयी। मैं अविरल चिंता का भार बन गयी हूँ। मैं जलकण हो कर धरती पर बरसती हूँ। फिर–से मैं नया जीवन धारण कर अंकुर के रूप में धरती से निकल आती हूँ। हे प्रियतम! तुम मार्ग को कदापि मलिन न करो। तुम ऐसा आओ कि मार्ग मलिन न हो। लौटकर जाते समय भी अपने पदचिह्न न देते जाओ। इस अनंत जग में मेरी सुधि दुःख का कम्पन होकर खिलती है। हे प्रियतम! आकाश का कोई भी कोना मेरा कदापि न हो। इस विश्व में मेरा अपना कुछ न हो। इतिहास में मेरा परिचय इतना ही है कि कल मेरा जन्म हुआ था और आज मैं मिट रही हूँ। इस संसार में कोई भी स्थिर नहीं।

15. अनुराधा

15.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. 'अनुराधा' कहानी में नारी–मन की अंतर्व्यथा का चित्रण है।
2. परिवार में एक एड्स रोगी के होने से संबंधियों, माता–पिता, भाई–पत्नी आदि पर भी प्रभाव पड़ता है।
3. एड्स रोगियों की समयपूर्वक जाँच तथा सावधानी, समाज को इसके भयावह रूप से बचा सकती है।
4. किसी भी समस्या पर खुलकर चर्चा करने से हम अनेक विकट परिस्थितियों से बाहर आ सकते हैं।
5. नारी को अपनी शक्ति और अपने अस्तित्व का ज्ञान प्रारंभ से ही होना चाहिए ताकि वह विवेकपूर्ण निर्णय खुद ले सकें। समाज को भी इसमें पूर्ण समर्थन देना चाहिए।
6. कठिन परिस्थितियों, मुसीबतों से भागना उनसे बचने का उपाय नहीं है। संघर्ष कर उन्हें पराजित करना ही जीवन का लक्ष्य है।
7. समस्या प्रधान इस कहानी में अनेक शैलियों का सहारा लेकर पाठकों का ध्यान ऐसे एड्स रोगियों की ओर खींचा गया है जो सामाजिक उपेक्षा का दंश झेल रहे हैं।
8. कहानी में हिंदी शब्द भंडार के तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्द लिए गए हैं।
9. कहानी की भाषा सरल तथा पात्रानुकूल है।
10. भाव–बोध की दृष्टि से कहानी में गहराई है। एड्म रोग द्वारा उत्पन्न सामाजिक, मानसिक जैसी अनेक प्रकार की समस्याओं को उभारा गया है।

15.2. प्रश्न–उत्तर

4 अंक के प्रश्न

निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

प्र.1. यह अधिकार तो केवल सबल के हिस्से में आता है। निर्बल के लिए तो केवल कर्तव्य और दायित्व ही आते हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश 'अनुराधा' नामक कहानी से लिया गया है। इसके कहानीकार श्री पंकज कुमार जी हैं। प्रस्तुत गद्यांश में उन्होंने भारतीय परिवार में नारी की स्थिति और उसके संघर्ष की गहन विवेचना प्रस्तुत की है।

व्याख्या : कहानी की नायिका 'अनु' अपने चिंतन–मनन से जीवन के वास्तविक संदर्भों में 'अधिकार' का अर्थ खोजने का प्रयास करती है। उसे लगता है कि अधिकार तो सबके लिए समान रूप से बनते है परंतु उनका लाभ केवल सबल लोग ही उठा पाते हैं। निर्बल को तो अपने अधिकारों का ज्ञान भी नहीं होता या ज्ञान होता भी है तो वह इनसे वंचित रहकर केवल

कर्तव्य पालन में ही जीवन व्यतीत कर देता है। कहानी की नायिका अनुराधा भी आरंभ में समाज और उसकी मर्यादाओं के कारण अपने अधिकारों के प्रति लापरवाह रहती है, किंतु बाद में वह भी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो जाती है। यह सब तभी संभव होता है जब वह अपने भीतर शक्ति और बल का संचार कर लेती है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि हम तब तक अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं हो सकते जब तक हम स्वयं अपने को सबल नहीं बना लेते।

प्र.2. एक मानसिक आरोग्यशाला में किसी मनोरोगी की भयावह मौत तो मैं बिल्कुल नहीं मरना चाहती। मुझे मुक्त होना ही होगा – अतीत से, अपने रोग से और अपने भय से। (4 अंक)

सदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश 'अनुरोधा' कहानी से अवतरित है। इसके कहानीकार पंकज कुमार जी है। पति की मृत्यु के पश्चात् अनुराधा की मानसिक व्यथा का मर्मस्पर्शी चित्रण इस गद्यांश में हुआ है।

व्याख्या : पति की मृत्यु के पश्चात् 'अनुराधा' के गर्भरती होने पर भी उसके सास– ससुर उसके स्वास्थ्य की जाँच करवाने को तैयार नहीं होते हैं। वह जाँच करवाना चाहकर भी सास के तर्कों के आगे झुक जाती है। परिस्थितियों से वशीभूत होकर जब ससुर देवर के साथ बैंक में उसका संयुक्त खाता खोलते हैं तो वह अपने सहज अधिकारों के लिए विद्रोह पर उतर आती है और ठान लेती है कि मैं वह मरना नहीं चाहती है, न तो बीमारी की अवस्था में बिना जाँच और इलाज कराए, न ही मन–ही–मन घुटते घुटते मानसिक आरोग्यशाला में मनोरोगी बनकर। वह निश्चय कर लेती है कि वह शहर जायेगी, जाँच करवायेगी और आवश्यकता पड़ने पर इलाज भी करवायेगी। इस प्रकार वह अपने अतीत, रोग और भय से मुक्त होगी। इस तरह शक्ति और साहस बटोरकर, ठोस निर्णय लेकर वह ससुर के सम्मुख खड़ी हो जाती है और अपनी जाँच की इच्छा प्रकट करती है। नकारात्मक उत्तर मिलने पर वह विद्रोहात्मक स्वर में विरोध करती है और अकेली ही इलाज करवाने शहर आ जाती है।

अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि दृढ़ निश्चय द्वारा हम असंभव से प्रतीत होने वाले कार्य को भी संभव बना सकते हैं।

4 अंक के प्रश्न

प्र.1. अनुराधा कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उ. अनुराधा के चरित्र के माध्यम से नारी के जीवन की समस्याओं को उबारना ही इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है। साथ ही साथ लेखक यह भी चाहते हैं कि समाज एड्स जैसे रोगों और उसके निवारण के प्रति सचेत हो। व्यक्ति अपने मन से भ्रमों को निकालकर खुलकर इन विषयों पर चर्चा कर सके। अनेक भयावह परिणाामों से स्वयं को बचाने में सक्षम हो सके। इसके दुष्परिणामों में रोगी अपने परिवार को, समाज को बचा सकता है पर इसके लिए स्वस्थ दृष्टिकोण तथा सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों की समझ आवश्यक है। विजय की

नासमझी दिखाकर लेखक ने इसी ओर ध्यान आकर्षित किया है। अजय के माध्यम से पाठ के अंत तक आते–आते जिम्मेदारियों से न भागने की प्रेरणा देते हुए लेखक का कहना है कि – जिम्मेदारियों के साथ जीना ही उचित जीवन–शैली है। अनुराधा के माध्यम से वे अस्तित्व–रक्षा की प्रेरणा देते हैं। साथ ही यह भी बताना चाहते हैं कि समस्याएँ, कठिनाइयाँ और अवरोधों के बावजूद जो संघर्ष करते हुए जीना सीख जाता है, वह सफल हो जाता है।

प्र.2. 'अनुराधा' कहानी के इस शीर्षक की उपयुक्तता पर अपने विचार बताइए।

उ. किसी भी रचना का उपयुक्त शीर्षक वह होता है जो उसके मूल कथ्य से पूरी तरह जुड़ा होता है। इस दृष्टि से 'अनुराधा' शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि कहानी का ताना–बाना उसकी प्रमुख नायिका 'अनुराधा' पर ही बुना गया है। पूरी कथा उसके दर्द–गिर्द घूमती है। दूसरे पात्र जो हैं वे भी 'अनुराधा' की ही चारित्रिक विशेषताओं को उबारने में सहायक सिद्ध होते हैं। अनुराधा एक ऐसी भारतीय नारी का प्रतीक है, जो संस्कारों और शालीनता से बंधी अपने पति तथा पति–गृह के सारे दायित्वों को पूर्ण करती है। जो चाहकर भी विरोध नहीं कर पाती है तथा मर्यादाओं में रहकर अनेक विडंबनाओं का शिकार बनती है। परंतु अंत में सीख जाती है कि यदि अपना अस्तित्व कायम रखना है तो अपना आत्मबल एकत्रित कर संघर्षशील बनना ही होगा। कहानी का यह 'संदेश' अनुराधा के माध्यम से ही उभरकर सामने आता है। इस दृष्टिकोण से हम कह सकते हैं कि यह शीर्षक पूर्णतया उपयुक्त है।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. अनुराधा कहानी में नारी मन की अंतर्व्यथा का चित्रण है। सिद्ध कीजिए।

उ. कहीन के आरंभ से ही नारी मन की अंतर्व्यथाएँ दृष्टिगोचर होती है। अनुराधा सोचती है कि निर्बल लोग तो केवल कर्तव्य और दायित्वों के निर्वाह के लिए जीते हैं जबकि 'अधिकार' सबल लोगों के हिस्से में आते हैं, अर्थात यहाँ पर नारी वर्ग के लिए 'निर्बल' शब्द का प्रयोग हुआ है। यही नहीं 'दासी' शब्द के प्रयोग द्वारा यह भी सिद्ध होता है कि औरत कितनी भी सक्षम क्यों न हो उसे पति का स्वामित्व स्वीकार करना ही पड़ता है। ललित कला में बी.ए. पास अनुराधा नौकरी करना चाहती है किंतु यह विचार कि ब्याह के बाद लड़की को घर संभालना चाहिए, उसके कैरियर में रुकावट बन जाता है। विवाह के दो वर्ष बाद भी माँ न बनने पर सास का व्यवहार उसके अंतर्मन पर चोट करता है। उसकी व्यथा उस समय और भी बढ़ जाती है जब उसे पता चलता है कि उसके पति को एच.आई.वी. पॉजिटीव है। इतना होने पर भी प्रधानता पति को ही दी जाती है। उसे कदम–कदम पर कर्तव्यों का ज्ञान दिया जाता है और पति के हर कार्य में सहयोग देने पर मजबूर किया जाता है। संक्रामक रोग से पीड़ित उसका पति यह नहीं सोचता कि इसका दुष्परिणाम उसकी पत्नी को भोगना पड़ सकता है। वह प्यार के नाम पर उसके साथ छल करता जाता है। पति की मृत्यु के पश्चात् रिश्तों की दुहाई दी जाती है। पति के बीमे की राशि को देवर के हवाले कर दिया जताा है। जब वह अपने बच्चे और स्वयं

की जाँच करवाना चाहती है तो उसे नकार दिया जाता है। यही से आरंभ होता है उसका मनसिक संघर्ष। बहुत सोच–विचार के बाद निश्चय करके विरोध स्वरूप वह ससुर के समक्ष उनके द्वारा किये गये कार्यों का प्रतिकार करती है और बड़े ही आत्मविश्वास के इस भयावह समस्या से जूझने के लिए शहर आ जाती है। यहाँ उसकी सबसे बड़ी व्यथा यह है कि ससुर तो पुरुष वर्ग से संबंधित है किन्तु सास नारी होने पर भी उसकी व्यथा को समझ नहीं सकी और वह अकेले ही अपनी मनोव्यथा को दूर करने आत्मविश्वास के साथ चल पड़ती है। इस प्रकार कहानी में नारी मन की अंतर्व्यथाओं का पूर्ण चित्रण है।

प्र.2. 'अनुराधा' कहानी की भाषा–शैली के बारे में सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।

उ. अनुराधा कहानी समस्या प्रधान है। इसकी शैली चिंतन–प्रधान है। नारी मन की अंतर्व्यथा का वर्णन करते हुए मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। जैसे :– नहीं ! मैं मरना नहीं चाहती थी।

लेखक प्रश्नात्मक शैली के माध्यम से समाज के सामने प्रश्नों की झड़ी लगा देते हैं। पाठक मजबूर होकर इन प्रश्नों के हल तलाशने लगते हैं। जैसे अजय कहता है कि 'डर कर आदमी कहाँ तक भागे?'

गाँव के घर का वर्णन करते हुए जहाँ वर्णनात्मक शैली को प्रधानता दी गयी है वहीं पर विजय की मृत्यु के बाद की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए वृत्तात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। कहीं–कहीं व्यंग्यात्मक और चित्रात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है।

भाषा की दृष्टि से इस कहानी में वाक्य–संरचना सरल तथा आम बोलचाल की भाषा है जिसमें भावानुरूप तद्भव, तत्सम, देशज और विदेशी शब्दों का प्रयोग परिस्थितियों और संदर्भों के अनुकूल हुआ है। उदाहरण :– तद्भव – आज, मेरा। तत्सम – कर्तव्य, प्रवाह। देशज – घर्र–घर्र। विदेशी – वजूद, हजामत आदि।

कहानी में अनेक सूक्ति वाक्य भी हैं। जैसे :–

1. ''यह अधिकार सिर्फ सबल के हिस्से ही आता है।'' कहानी में अभिधा ही नहीं लक्षणा और व्यंजना द्वारा भी लेखक ने अव्यक्त को स्पष्ट कर दिया है। जैसे :– ''विजय पुरुष थे, मेरे स्वामी थे और मैं उनके जन्म– जन्मांतर की 'दासी'।''

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि लेखक ने भाव, संदेश, कथानक और वातावरण को ध्यान में रखते हुए अनेक प्रकार की शैलियों का यथास्थान प्रयोग किया है। मूल कथा की सहजता को बनाये रखने के लिए अनेक भावगत और विषयगत शब्दों का प्रयोग किया है।

16. अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश

16.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. साहित्यिक हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी में अंतर होता है। साहित्यिक हिंदी आलंकारिक, लालित्यपूर्ण और मुख्य रूप से कविता और गद्य साहित्य के लेखन में प्रयुक्त होती है। जबकि प्रयोजनमूलक हिंदी भाषा का व्यावहारिक पक्ष है, जो मुख्यतः तकनीकी भाषा, कार्यालयी भाषा, वाणिज्य की भाषा, जन संचार की भाषा और सामाजिक व्यवहार में प्रयुक्त भाषा होती है।
2. संपादकीय पत्र–पत्रिकाओं की वह विधा है, जिसमें किसी समसामयिक विषय या समस्या पर चिंतनपूर्ण ढंग से टिप्पणी की जाती है और उसमें पत्र–पत्रिका का दृष्टिकोण व्यक्त होता है।
3. 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' विषयवस्तु, समसामयिकता, विवेचनात्मकता, दृष्टिकोण की स्पष्टता, भाषा आदि तत्वों की दृष्टि से प्रशंसनीय संपादकीय है, परंतु स्वरूप की दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक लंबा है।
4. आम लोगों को शिक्षा से वंचित रखने के उद्देश्य से सामंतवादी और पूंजीपति वर्गों द्वारा ऐसी परिस्थितियाँ पैदा की जा रही हैं, जिनसे जनता में चेतना और जागृति न आ सके।
5. संपादकीय स्वरूप और भाषा की दृष्टि से समाचार से काफी भिन्न होता है।
6. संपादकीय का शीर्षक 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' विषय को प्रभावशाली, और व्यंग्यपूर्ण ढंग से व्यक्त करता है।

16.2. प्रश्न–उत्तर

4 अंक के प्रश्न

I. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

प्र.1. दुनिया के सारे तानाशाहों ने सबसे पहले या तो पुस्तकालय जलाए हैं या किताबों को कुचला है।

संदर्भ :– प्रस्तुत गद्यांश 'अनपढ़ बनाये रखने की साजिश' संपादकीय से अवतरित है। इसके संपादक राजेन्द्र यादव जी हैं। इस संपादकीय का मुख्य उद्देश्य उन तथ्यों को उजागर करना है, जिनसे जाने–अनजाने लोगों को शिक्षा से वंचित रखने की साजिश की जा रही है।

व्याख्या :– प्रस्तुत संपादकीय में राजेन्द्र यादव जी ने बड़ी ही चुटीली और व्यंग्यात्मक शैली में सरकारी तंत्र पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि – एक तरफ तो सरकार शिक्षा का प्रसार और साक्षरता का नारा लगाती है। दूसरी ओर कागज़ और स्याही के दाम बढ़ा देती है ताकि लोग पढ़ न सकें। क्योंकि ये एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिससे साक्षरता में वृद्धि होती है। यदि किताबें ही नहीं रहेंगी तो उसके कार्यों के बारे में जानकारी कहाँ से प्राप्त होगी? इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि दुनिया को जीतने वाले या सारी दुनिया पर शासन करने का दम

भरने वाले तानाशाहों ने भी सबसे पहले पुस्तकालयों को जला दिया था और किताबों को नष्ट कर दिया था।

इससे यह स्पष्ट होता है कि चाहे तकनीकी कितनी भी विकसित क्यों न हो जाए, किताबें ही वे साधन जिससे एक आम आदमी जागरूक बन सकता है।

प्र.2. जिसे जाहिल, मूर्ख या परतंत्र बनाकर रखना है, उसके हाथ में किताब नहीं दी जायेगी।

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ 'अनपढ़ बनाये रखने की साजिश' से अवतरित है। इसके संपादक श्री राजेंद्र यादव जी है। इस संपादकीय का मुख्य उद्देश्य उन तथ्यों को उजागर करना है जिनसे जाने–अनजाने लोगों को शिक्षा से वंचित रखने की साजिश की जा रही है।

व्याख्या :– प्रस्तुत संपादकीय में किताब की महिमा के बारे में बताते हुए सरकारी नीतियों पर व्यंगय करते हुए यादव जी कहते हैं कि – किताब आदमी को ज्ञान देती है, विचार देकर उसका दिमाग ठीक करती है, नियति और वास्तविकता से उसका साक्षात्कार कराती है, उसे सपने और भविष्य देती है। किताब ही है, जो स्वतंत्र है। ऐसी किताब को पढ़कर यदि आदमी सरकारी नीतियों को समझने लग जायेगा तो सरकार का भविष्य खतरे में पड़ जायेगा, इसीलिए कागज़, छपाई और डाकखर्च में पैसे बढ़ाकर आम आदमी के हाथ से किताब छीन ली जायेगी। यदि आदमी को एकदम मूर्ख और अनपढ़ बनाकर रखना है तो उसके हाथ से किताब छीनना आवश्यक है या फिर उसे इतना दुर्लभ बना देना चाहिए कि उसके होने या न होने से कोई फ़र्क न पड़े।

इस प्रकार इसमें संपादक ने एक ओर तो किताबों की महिमा का गुणगान किया है वहीं ज्ञान का सशक्त माध्यम किताबों में उपयोगी कागज़ और स्याही के दाम बढ़ाये जाने पर सरकारी नीतियों की आलोचना की है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50 शब्दों में लिखिए।

प्र.1. संपादकीय की परिभाषा बताते हुए समाचार लेख से उसके अंतर को स्पष्ट कीजिए।

उ. हर समाचार पत्र या अखबार में संपादकीय पृष्ठ होता है, जिसमें लेख, संपादकीय टिप्पणियाँ, संपादक के नाम पत्र छपे होते हैं। उसी संपादकीय पृष्ठ के एक हिस्से में उस दिन की मुख्य खबरों या कुछ दिन पहले घटी या निकट भविष्य में घटने वाली घटना पर टिप्पणियाँ छपी होती है। इसे ही संपादकीय कहा जाता है। संपादकीय को किसी पत्र या पत्रिका का दर्पण माना जाता है।

समाचार लेख और संपादकीय में बहुत अंतर होते हैं। समाचार लेखों को अखबार के किसी भी पृष्ठ पर स्थान मिल सकता है किंतु संपादकीय के लिए संपादकीय पृष्ठ का एक हिस्सा सुनिश्चित होता है।

समाचार लेख किसी के द्वारा भी लिखे जा सकते हैं किन्तु संपादकीय लिखने की जिम्मेदारी संपादक की होती है।

समाचार लेख किसी भी अखबार में प्रकाशित किये जा सकते हैं किन्तु संपादकीय अधिकांश विषय से संबंधित पत्रिकाओं में उसी विषय को आधार बनाकर लिखा जाता है। उदाहरण :– फिल्मी पत्रिका में फिल्मी विषय से संबंधित संपादकीय लिखा जाता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संपादकीय किसी भी पत्रिका की आत्मा होती है।

प्र.2. पुस्तकों की उपेक्षा में लेखक द्वारा बताये गये तीन कारणों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

उ. पुस्तक ज्ञान–वृद्धि का महत्वपूर्ण साधन होती है। इसे पढ़कर आम आदमी अपनी ज्ञान पिपासा को शांत करता है। कुछ समय पहले ही यह देखने में आया है कि पुस्तकों की उपेक्षा हो रही है। इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं।

जनता का ध्यान शोषण से हटाने के लिये या शोषण को जायज सिद्ध करने के लिए आधुनिक सामंत किताबों के स्थान पर सारे देश को दूरदर्शन केंद्र के जाल में बाँधकर घटिया मनोरंजन पिला रहा है।

सरकार और सरकार परस्त इसे निहायत ही फालतू चीज़ समझते हैं जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं है। इसीलिए वे इसका दाम बढ़ा रहे हैं। इसके अलावा यह भी हो सकता है कि वे किताबों को घातक हथियारों के समान समझ रहे हैं जिसके बल पर आम आदमी सरकारी षड़यंत्रों की जानकारी प्राप्त कर सकता है। उदाहरण के लिए राधाकृष्ण, राजगोपालाचारी, जवाहरलाल नेहरू जैसे महापुरुषों ने अपने ज्ञान का विकास किताबों द्वारा ही किया था, शायद इसी कारण वे कागज़ और स्याही के दाम बढ़ाकर आदमी को किताबों से दूर रखना चाहते हैं। शिक्षा, जागरूकता, अनुसंधान जैसे विषयों से ध्यान हटाने के लिए भी पुस्तकों की उपेक्षा की गई है।

इन्हीं सब बातों को लेखक ने पुस्तक की उपेक्षा के कारणों में सम्मिलित किया है।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. संपादकीय के विभिन्न तत्वों के नाम बताते हुए, इसमें विषय–वस्तु की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उ. संपादकीय किसी पत्र–पत्रिका की गंभीर और चिंतन प्रधान विधा है, जिसमें विश्लेषणपूर्ण शैली में किसी समसामयिक विषय या घटना का संक्षिप्त विवेचन किया जाता है। संपादकीय के मुख्य तत्व इस प्रकार हैं –

1. विषय–वस्तु, 2. समसामयिकता, 3. विवेचनात्मकता, 4. दृष्टिकोण की स्पष्टता, 5. भाषा–शैली, 6. उद्‌देश्य।

इन सभी तत्वों का अपना–अपना विशेष महत्व है। किन्तु इसका मूलतत्व है – संपादकीय की विषय वस्तु। किसी कहानी, उपन्यास, नाटक आदि में जो स्थान कथानक का रहता है वही इस विधा में विषय वस्तु का है। संपादकीय क्योंकि अत्यंत संक्षिप्त विधा है,

इसीलिए इसकी विषय–वस्तु में अधिक विस्तार और व्यापकता की गुंजाइश नहीं होती है। इसमें प्रायः एक ही विषय को उठाया जाता है तथा तर्क–वितर्क और उदाहरणों की सहायता से विषय का विवेचन करने के उपरांत निष्कर्ष निकाला जाता है, जिससे पाठकों को उस विषय पर अपनी राय बनाने में मदद मिलती है। 'अनपढ़ बनाये रखने की साजिश' में मुख्य रूप से भारत के आम लोगों को साक्षर बनाने में आ रही बाधाओं का विवेचन किया गया है। यह संपादकीय 1976 में आम बजट के कुछ प्रावधानों को आधार बनाकर लिखा गया था, जिसमें एक ओर कागज़ के दाम बढ़ाये गये थे वहीं दूसरी ओर पूँजीपतियों और अमीर लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली ऐशो–आराम की चीज़ों के आयात में छूट दी गई है। इस दृष्टि से देखे जाने पर इस संपादकीय की विषय–वस्तु एकदम सटीक और प्रासंगिक सिद्ध होती है।

प्र.2 साहित्यिक हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी में अंतर स्पष्ट करते हुए प्रयोजनमूलक हिंदी के मुख्य क्षेत्रों के बारे में बताइए।

उ. साहित्यिक हिंदी से तात्पर्य है वह हिंदी जो साहित्य की विविध विधाओं के लेखन में प्रयोग की जाती है। साहित्यिक हिंदी में शैलीगत विशेषताएँ होती हैं, मुहावरेदार भाषा होती है, सूक्ति, लोकोक्ति आदि का प्रयोग किया जाता है। प्रयोजनमूलक हिंदी वह होती है जिसका उपयोग सरकारी पत्राचार, संक्षेपण, संपादकीय, बैंक की गतिविधियों को निपटाने के लिए कामकाजी हिंदी के रूप में किया जाता है। प्रयोजनमूलक हिंदी में प्रायः मुहावरों, सूक्तियों और लोकोक्तियों का अभाव होता है। कोई भी बात घुमा–फिराकर नहीं कही जाती है। प्रयोजनमूलक हिंदी के मुख्य रूप से छह क्षेत्र हैं :–

1. **तकनीकी भाषा** :– इंजीनियरी, विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में प्रयुक्त भाषा और शब्दावली।
2. **कार्यालयी भाषा** :– सरकारी कामकाज या प्रशासन में प्रयुकत होने वाली भाषा।
3. **वाणिज्यिक भाषा** :– वाणिज्य, बैंकों और मंडियों में प्रयुक्त भाषा।
4. **जनसंचारी भाषा** :– पत्रकारिता, आकाशवाणी, दूरदर्शन और विज्ञापनों में प्रयुक्त भाषा।
5. **सामाजिक भाषा** :– सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा प्रयुक्त भाषा।
6. **साहित्यिक भाषा** :– काव्य, नाटक आदि में प्रयुक्त भाषा।

प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष रूप से किया जाता है। उदाहरण के लिए लेखा विभाग में लेखा–संबंधी शब्द अधिक होते हैं।

17. पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ

17.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' एक व्यंग्य रचना है, जो साहित्यिक क्षेत्र के वृद्धों और युवकों की मानसिकता को स्पष्ट करती है।
2. व्यंग्य में शब्दों की गहरी मार होती है जो व्यक्ति को झकझोर देती है।
3. व्यंग्य में विचार की महराई होती है जो व्यक्ति को सोचने पर मजबूर करती है। व्यंग्य को अंग्रेजी में 'सटायर', गुजराती में 'कटाक्ष' और उर्दू में 'तज' कहते हैं।
4. व्यंग्य में मुहावरे और व्यंग्योक्तियों का बहुत महत्व होता है, जो भाषा को अधिक प्रभावशाली और पैना बनाता है।
5. पाठ में छोटे–छोटे वाक्य संवादात्मक और व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किए गए हैं।
6. भाषा सरल है। मुहावरों का सटीक प्रयोग किया गया है।
7. पाठ में दो पीढ़ियों का संघर्ष दर्शाया गया है।

17.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' व्यंग्य में तरुणों ने वृद्धों से कहा –

उ. आप देवता बनकर आराम से रहें।

प्र.2. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' व्यंग्य में तरुण चाहते थे कि –

उ. वृद्धों की बात न मानें।

प्र.3. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' व्यंग्य में देवता जब अकेले छूट गए, उनका ध्यान तरुणों पर गया क्योंकि –

उ. उन्होंने वृद्धों का स्थान ले लिया था।

प्र.4. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' पाठ में वृद्ध बातें करते–करते एकदम उदास हो गए थे क्योंकि

उ. वे देवता बनकर मंदिर में सजे थे और युवा आनंद मना रहे थे।

प्र.5. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' पाठ में वृद्ध तरुणों पर पत्थर मार रहे थे क्योंकि–

उ. वे मान रहे थे कि उन्हें सुविधाओं से वंचित किया गया है।

प्र.6. पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' पाठ में एक वृद्ध क्यों मंदिर के दूसरे कोने में चला गया?

उ. वह युवकों से सहानुभूति रखता था।

प्र.7. 'लड़के इस समय ने जाने क्या कर रहे होंगे' – वृद्ध के इस कथन में कौन–सा भाव निहित था।

उ. देवता बन जाने पर भी बाहर संसार का मोह न छोड़ पाने का।

प्र.8. 'दो पीढ़ियों की कलागत मूल्यों पर बहस चल रही है।' इस कथन के द्वारा नागरिक –

उ. देवताओं और तरुणों पर व्यंग्य कस रहा था।

प्र.9. अंग्रेजी भाषा में व्यंग्य को क्या कहते हैं? इसका क्या अर्थ है?

उ. अंग्रेजी भाषा में व्यंग्य को 'सटायर' कहते है। इसका अर्थ है 'गड्बड़झाला/ कटाक्ष/तंज

प्र.10. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' व्यंग्य के लेखक का नाम बताइए।

उ. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' व्यंग्य के लेखक का नाम 'श्री हरिशंकर परसाई' है।

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. इस रचना में नई पीढ़ी के लोगों ने पुरानी पीढ़ी के लोगों को कहाँ स्थापित कर दिया?

उ. नई पीढ़ी के अनुसार पुरानी पीढ़ी के लोग वृद्ध और यशस्वी हो चुके हैं। अतः उन्हें आराम करना चाहिए और आशीर्वाद देते रहना चाहिए, क्योंकि अब वे पूजनीय हो गए हैं। युवकों के अनुसार जिस प्रकार देवताओं को मंदिर में स्थापित कर उनकी पूजा की जाती है, वैसी ही पूजा अब उन वृद्धों की भी होनी चाहिए। इसीलिए नई पीढ़ी के लोगों ने पुरानी पीढ़ी के लोगों को मंदिर में स्थापित कर दिया।

प्र.2. नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से क्या चाहती है?

उ. नई पीढ़ी सोचती है कि बुजुर्ग केवल इसी लायक रह गए हैं कि बैठकर अगली पीढ़ी को आशीर्वाद दें और समाज में मूर्ति के रूप में रहे। पुरानी पीढ़ी जीवन के उस पड़ाव पर पहुँच चुकी है। जहाँ सर्जनात्मकता या कुछ करने की संभावना समाप्त हो जाती है और जीवन निष्क्रिय हो जाता है। उनकी जरूरतें भी अधिक नहीं रह जाती। अतः उन्हें जितना मिले उसी में ही संतोष करना चाहिए और अधिक प्राप्त करने का लालच छोड़ देना चाहिए। उन्हें राग–द्वेष से भी दूर रहना चाहिए।

प्र.3. पुरानी पीढ़ी के लोग नई पीढ़ी को आगे क्यों नहीं आने देते।

उ. पुरानी पीढ़ी के लोग चाहते हैं कि नई पीढ़ी उन राहों पर न चले, जिन पर वे चले थे, उनका भोज्य खाएँ तथा उन्हीं के झंडे फहराये। अर्थात पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को दायित्वहीन करना चाहती है। पुरानी पीढ़ी भयभीत है कि कहीं नई पीढ़ी उनका वर्चस्व समाप्त करके अपना वर्चस्व स्थापित न कर ले। इसीलिए वे लोग नई पीढ़ी के लोगों को आगे आने नहीं देते।

प्र.4. एक देवता जो मंदिर के दूसरे हिस्से में चला गया, उसके बारे में अपने विचार लिखिए।

उ. वह देवता जो मंदिर के दूसरे हिस्से में चला गया वह दूसरों की अपेक्षा समझदार है। उसके अनुसार वृद्धों का भोग का जीवन समाप्त हो चुका है अतः युवक हमारी वंदना करते हैं इसी में संतुष्ट रहना चाहिए। वृद्धों को अपनी स्थिति और क्षमता का बोध होना चाहिए। दूसरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए विशेषकर युवाओं के प्रति। लेखक भी ऐसे वृद्धों पर व्यंग्य नहीं कसता जो अपने निरर्थक स्वार्थ के कारण दूसरों का मार्ग रोककर नहीं खड़े नहीं रहते।

प्र.5. स्नेहपूर्ण सामाजिक वातावरण, युवकों के मानसिक भावनात्मक विकास और भौतिक उपलब्धियों के लिए पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच किस प्रकार का संबंध आवश्यक है?

उ. पीढ़ियों के बीच चले आ रहे संघर्ष के कारण नई पीढ़ी को दायित्वहीन कहने वाली पुरानी पीढ़ी वास्तव में नए लोगों पर दायित्व सौपना नहीं चाहती। उसे भय है कि नई पीढ़ी कहीं उनका वर्चस्व समाप्त करके अपना वर्चस्व न स्थापित कर ले। पुरानी पीढ़ी की यह लालसा और झूठा भय समाज की युवा पीढ़ी के विकास, उसकी स्वतंत्रता और सुख–समृद्धि को प्रभावित करती है। ऐसे समाज के युवक कुंठित, आत्म–विश्वासविहीन तथा अकेलेपन से ग्रस्त होकर समाज विरोधी होंगे।

प्र.6. युवकों ने वृद्धों को कर्मशील बने रहने के लिए क्या सलाह दी?

उ. वृद्धों का सोचना था कि कर्म के बिना कैसे जीवित रहा जा सकता है क्योंकि जीवन में कुछ न कुछ कार्य अवश्य करना चाहिए। अच्छे कार्य को, अपने कर्तव्य को निभाना ही कर्म कहलाता है। इस पर युवकों ने इन्हें विगत जीवन के संस्मरण सुनाने का सुझाव दिया ताकि उसकी रिकॉर्डिंग करके पुस्तकें छपवाई जा सके। इस प्रकार युवकों ने वृद्धों को कर्मशील बने रहने के लिए सलाह दी कि वे आपस में बैठकर बीती बातें, किस्से और रोचक संस्मरण सुनाते रहें।

प्र.7. वृद्ध सबसे अधिक किस बात पर क्षुब्ध थे?

उ. वृद्ध युवकों की इस बात पर सबसे अधिक वृद्ध युवकों की इस बात पर सबसे अधिक क्षुब्ध थे कि उन्हें मंदिरों में देवता बनाकर प्रतिष्ठित करके युवक बाहरी दुनिया का आनंद उठा रहे हैं। बाहर युवकों में से कोई नाटक देख रहा होगा तो कोई पकवान खा रहा होगा। सब खुश है, मस्त है जबकि वृद्ध मंदिर रूपी कारागार में बंद हैं। युवकों के जीवन की खुशी और उत्साह के प्रति उनमें ईर्ष्या या जलन का भाव उत्पन्न होने के कारण वे क्षुब्ध हुए।

प्र.8. डॉ. विजय शुक्ल के अनुसार व्यंग्य के क्या लक्षण होते हैं?

उ. डॉ. विजय शुक्ल के अनुसार 'व्यंग्य केवल परिहास या मनोरंजन मात्र नहीं है। कुछ और है, जिसे उसका लेखक अपने वैषम्य व बेतरतीब, माहौल के बीच पकड़ता है। वह अमृत भी हो सकता है, जहर भी, और कुछ भी जिसे पीकर, अपने आप पर ढालकर, किसी एक संपूर्ण चिंतन का रूप देकर, तब उसे कलात्मक खुशनुमा लिफाफे में रखकर पाठक के सामने रख देता है।

व्यंग्य मुख्यतः सत्य को सामने लाता है। पाखंड का पर्दाफ़ाश करता है। जीवन की सच्चाई प्रस्तुत करता है। सीधे–सीधे शब्दों का प्रयोग कर अर्थ में चमत्कार पैदा करता है।

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. लेखक ने सभी वृद्धों पर व्यंग्य किया है या खास प्रकार के वृद्धों पर? पाठ से उदाहरण देते हुए अपनी बात सिद्ध कीजिए।

उ. लेखक ने खास प्रकार के वृद्धों पर व्यंग्य किया है। क्योंकि कुछ वृद्धजन देवता बनने के बावजूद मोह को न छोड़ पाए। इसीलिए युवकों के जीवन की खुशी और उत्साह के प्रति उनमें ईर्ष्या या जलन का भाव उत्पन्न होता है। वे सोचते हैं कि उन्हें देवता बनाकर मंदिर रूपी कारागार में बंद करके युवक बाहरी दुनिया का आनंद उठा रहे हैं। कोई नाटक देख रहा होगा तो कोई पकवान खा रहा होगा। सब खुश और मस्त होंगे। किंतु एक देवता का इन बातों से असहमत होकर मंदिर के दूसरे हिस्से में चले जाना सिद्ध करता है कि लेखक ने खास प्रकार के वृद्धों पर कटाक्ष किया है न कि सभी पर।

प्र.2. पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ एक व्यंग्यात्मक रचना है – स्पष्ट कीजिए।

उ. पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ एक व्यंग्यात्मक रचना है, जो साहित्यिक क्षेत्र के वृद्धों और युवकों की मानसिकता को स्पष्ट करती है। अन्य व्यंग्यात्मक रचनाओं की तरह इस व्यंग्य में भी शब्दों की गहरी मार है जो व्यक्ति को झकझोर देती है। इसमें निहित विचारों की गहराई व्यक्ति को सोचने पर मजबूर करती है। इसमें मुहावरों और व्यंग्योक्तियों का भरपूर प्रयोग हुआ है जो इसकी भाषा को अधिक प्रभावशाली और पैना बनाता है। पाठ में छोटे–छोटे वाक्य भी संवादात्मक और व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किये गये हैं। भाषा सरल एवं मुहावरों के सटीक प्रयोग से युक्त है। पाठ में दो पीढ़ियों के संघर्ष को उजागर किया गया है। संघर्ष प्रायः विचार, सोच, मत के धरातल पर होता है, जिसे व्यंग्यात्मकतापूर्वक दर्शाया गया है।

प्र.3. किसी भी व्यंग्य रचना में प्रायः कौन–सी शब्द–शक्ति सर्वाधिक उपयोग में लाई जाती है।

उ. शब्द–शक्तियों मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं – अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। जब किसी बात को सीधे–सादे शब्दों में कहा जाता है और वे शब्द प्रचलित अर्थ बताते हैं, अभिधा कहलाती है। शब्दों की वह शक्ति जो मुख्य अर्थ से हटकर अर्थ और साथ–साथ अन्य अर्थ की कल्पना करनी पड़े तो वह लक्षणा कहलाती है। तीसरे प्रकार की शक्ति को व्यंजना कहते हैं। व्यंजना का अर्थ है – विशेष प्रकार का अर्थ। यह परिस्थिति के अनुसार होता है। किसी भी व्यंग्य में 'व्यंजना' शब्द–शक्ति का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है।

प्र.4. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' व्यंग्य के लेखक का परिचय दीजिए।

उ. प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त 1922 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में हुआ। नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. करके उन्होंने कुछ समय तक नौकरी की।

उन्होंने सन् 1957 से लेखन को ही अपनी आजीविका का साधन बनाया। जबलपुर से 'वसुधा' नामक पत्रिका निकाली। 'नई दुनिया' 'नई कहानियाँ' तथा 'सारिका' में स्थायी स्तंभ लिखे। आप व्यंग्य–सम्राट कहे जाते हैं। आपकी रचनाओं में 'रानी नागफनी की कहानी', 'सदाचार का ताबीज', 'वैष्णव की फिसलन', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'विकलांग श्रद्धा का दौर' प्रमुख हैं। आपकी समस्त रचनाएँ 'परसाई रचनावली' के रूप में छह खंडों में संकलित है। आपके व्यंग्य कथात्मकता और करुणा लिए होते हैं। दिनांक 18 अगस्त 1995 को जबलपुर में आपका देहावसान हुआ।

7 अंक के प्रश्न

प्र.1. पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उ. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' व्यंगय उम्र और अनुभव भेद को दर्शाती है। पुरानी पीढ़ी के अंतर्गत वृद्ध माता–पिता, गुरु आदि आते हैं तथा नई पीढ़ी के अंतर्गत युवा, शिष्य, पुत्र आदि आते हैं। हर पीढ़ी की अपनी अलग सोच होती है, जो पीढ़ी के बदलते ही नया रूप ग्रहण कर लेती है। प्रायः पीढ़ी का यह क्रम बारह से सोलह वर्षों में बदल जाता है, क्योंकि लगभग इतने समय में ही छोटे बच्चे युवक बन जाते हैं।

गिट्टियाँ होती हैं ढेले, छोटे–छोटे पत्थर या इसी प्रकार का कोई अन्य तत्व।

एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को गिट्टियाँ मारती है, पत्थर मारती है अर्थात् प्रताड़ित करती है। नई पुरानी पीढ़ियों में कोई भी अपने को दूसरे से नीचा नहीं देखना चाहता, इसलिए दोनों में संघर्ष चलता रहता है। संघर्ष प्रायः विचार, सोच, मत के धरातल पर होता है। लेखक ने संकेत से इसे गिट्टियाँ कहा है।

अपने विचारों को दूसरे पर लादने के कारण इस रचना का यह शीर्षक 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' सार्थक लगता है।

प्र.2. 'दो पीढ़ियों की कलागत मूल्यों पर बहस चल रही है।' – स्पष्ट कीजिए।

उ. जब देवताओं ने सोचा कि उन्हें उन सबसे वंचित कर दिया गया है, जो कल तक उनका था, तब उन्होंने युवकों के आने पर उन पर पथराव शुरू किया और कहा कि जिन राहों पर वे चले थे, उन पर युवक न चलें, उनका भोजन न खाये और उनके ही झंडे फहराएँ जाये। नवयुवक उनकी बात मानने से इनकार करके देवताओं को वापस पत्थर मारने लगे। दोनों ओर से हमले होने लगे और जब एक राहगीर ने दूसरे से मामला पूछा तो जवाब आया – यह लड़ाई नहीं है बल्कि दो पीढ़ियों के बीच कलागत मूल्यों पर बहस हो रही है। कलागत मूल्य व्यंग्योक्ति है। बरसों तक कला को लेकर प्रश्न उठते रहे हैं किंतु आज तक उनके निश्चित उत्तर नहीं मिल पाए। नई और पुरानी पीढ़ी के बीच सदा ऐसे ही बहस जारी रहती है। अतः लेखक व्यंग्य कसते हुए कहते हैं कि ऐसी बहस से समाज को कुछ भी हासिल नहीं होता।

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. व्यंग्य किसे कहते है? 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' एक व्यंग्य रचना है, सिद्ध कीजिए।

उ. जब कही गई बात का अर्थ कुछ और हो तथा जो किसी विसंगति (यानी जो होना चाहिए, वह न होकर कुछ और हो) पर चोट करता हो – व्यंग्य कहलाता है। व्यंग्य में शब्दों की गहरी मार होती है जो व्यक्ति को ऊपर से नीचे तक झकझोर कर रख देती है। प्रस्तुत पाठ 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' का आरंभ इस व्यंग्य से आरंभ होता है कि वयोवृद्ध साहित्यकार थक चुके हैं। अर्थात यहाँ साहित्यिक क्षेत्र के ऐसे बूढ़ों का उल्लेख किया गया है जिन्होंने जीवन भर भरपूर सुख और प्रसिद्धि को प्राप्त करने के बावजूद सुखों और प्रतिष्ठा को छोड़ना नहीं चाहते।

युवकों द्वारा उन्हें देवता के समान मंदिर में स्थापित करके सब कुछ प्राप्त कराने के पीछे व्यंग्य यह है कि वे बुजुर्ग केवल इसी लायक रह गये हैं कि बैठकर अगली पीढ़ी को आशीर्वाद दें और समाज में मूर्ति के रूप में रहें। वे अब जीवन के उस पड़ाव पर पहुँच चुके हैं जिसके बाद सर्जनात्मक या कुछ नया करने की संभावना समाप्त हो जाती है और जीवन निष्क्रिय हो जाता है। देवता नाम में भी व्यंग्य है जिस प्रकार देवता राग–द्वेष से दूर रहते हैं, उसी प्रकार इन बूढ़ों को भी रहना चाहिए लेकिन ये देवता का पद अपना लेते हैं पर देवताओं जैसा आचरण नहीं कर पाते।

आगे के प्रकरण में वृद्धों की हठधर्मिता और मोह पर व्यंग्य कसा गया है। ऐसे प्रकाशकों को भी नहीं छोड़ा गया जो रॉयल्टी देने में आनाकानी करते हैं। व्यंग्य के अंतिम भाग में युवकों के जीवन की खुशी और उत्साह के प्रति उनकी ईर्ष्या या जलन पर व्यंग्य कसा गया है।एक बूढ़े व्यक्ति की अलग सोच के बारे में लेखक का इशारा है कि बुजुर्गों को अपनी स्थिति और क्षमता का बोध होना चाहिए। दूसरों के प्रति सहानुभूति होनी चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि लेखक सभी बुजुर्गों पर व्यंग्य नहीं करता। केवल ऐसे लोगों पर व्यंग्य करता है जो अपने निरर्थक स्वार्थ के कारण दूसरों का मार्ग रोककर खड़े हो जाते हैं।

प्र.2. निम्नलिखित उक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(i) वे भोजन से अधिक मात्रा में पाचन का चूरन खाते थे।

उ. ये व्यंग्यात्मक कटाक्ष साहित्य के क्षेत्र में कार्यरत वयोवृद्ध और जीवन से थके व्यक्तियों के लिए लिखा गया है। वृद्धावस्था में कम मात्रा में भोजन लिया जाता है किंतु उनकी चूरन खाने की मात्रा भोजन से अधिक होती है यानी कि वे भोजन पचाने के लिए भोजन से अधिक चूरन खाने पर मजबूर है। अन्य शब्दों में जितना उन्हें भोगना था भोग चुके हैं पर अभी भी तमन्ना है हर चीज को और अधिक भोगने की। संतुष्टि कहीं भी नहीं है।

(ii) आपको हम हर पाठ्य–पुस्तक में रखवायेंगे और जो प्रकाशक धन देने में आनाकानी करेगा उसे ठीक करेंगे।

उ. ये बातें साहित्यकारों पर कटाक्ष करती है। साहित्यकार सदैव रॉयल्टी के लिए परेशान रहते हैं, पाठ्य–पुस्तकों में अपनी रचनाएँ रखवाने के लिए हा–हा खाते हैं, प्रकाशकों से हमेशा परेशान रहते हैं और विशेष रूप से 'ठीक करेगे' शब्द से स्पष्ट होता है कि डंडे के बल पर प्रकाशक से रॉयल्टी वसूल करेंगे। यह कटाक्ष ऐसे प्रकाशकों पर भी किया गया है जो रॉयल्टी देने में आनाकानी करते हैं।

(iii) आप लोगों की संस्मरण की अवस्था है। आप लोग आपस में संस्मरण सुनायेंगे ही। उनका रिकार्डिंग होता जाएगा और हम पुस्तक छपवा देंगे।

उ. लेखक के अनुसार एक वयोवृद्ध ने महत्वपूर्ण सवाल किया कि वे कर्म के बिना कैसे जीवित रहेंगे क्योंकि जीवन में कुछ तो कार्य करना ही चाहिए। इस पर युवकों का सुझाव था कि वृद्ध लोग आपस में अपने विगत जीवन के संस्मरण सुनाएँ जिसकी रिकार्डिंग करके पुस्तक छाप दी जाएगी। अक्सर वयोवृद्ध अपने अतीत की प्रशंसा करते हुए संस्मरण सुनाते हैं। अब बूढ़े भी इसी लायक रह गये हैं कि आपस में बैठकर आपबीती सुनाए जिसकी रिकार्डिंग करके पुस्तक छपवाई जाएगी।

प्र.3 हरिशंकर परसाई द्वारा रचित व्यंग्य 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' की भाषा–शैली पर टिप्पणी कीजिए।

उ. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' हरिशंकर परसाई की एक व्यंग्य–रचना है। किसी भी बात को सीधे–सीधे न कहकर उचित शब्दों और मुहावरों का उलट– पुलट और चमत्कृत प्रयोग ही बात में व्यंग्य पैदा करता है। यह व्यंग्य आम बोलचाल की भाषा में लिखा गया है। इसमें वाक्य छोटे–छोटे हैं, जो संवाद के रूप में लिखे गये हैं। ये संवाद विषय के अनुरूप और सटीक है। कहीं–कहीं तो लेखक ने हाज़िरजवाबी का परिचय दिया है।

लेखक ने स्थान–स्थान पर मुहावरों का सटीक प्रयोग किया है, जैसे – आनाकानी करना, किसी बात को टालना ठीक करना – बलपूर्वक काम करवाना, ऊँचा सुनना – कम सुनाई देना, खाने – खेलने देना – जीवन का आनंद लेने देना। जगह–जगह शब्द–शक्तियों का भी प्रयोग होता है, जो मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं – अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। जब किसी बात को सीधे–सादे शब्दों में कहा जाता है और वे शब्द प्रचलित अर्थ बताते हैं, अभिधा कहलाती है। उदाहरण – यदि यह कहा गया कि मैंने चाँद देखा, इसका सीधा अर्थ होगा कि रात को आकाश में चाँद देखा। यदि यह कहा गया कि मैंने सुबह–सुबह चाँद देखा तो इसका अर्थ होगा कि मैंने अपने प्रिय व्यक्ति का चेहरा देखा क्योंकि सुबह–सुबह चाँद नहीं दिखता। शब्द की वह शक्ति जो मुख्य अर्थ से हटकर अर्थ दे और अन्य अर्थ की कल्पना की गुंजाइश छोड़े तो वह लक्षणा कहलाती है। तीसरे प्रकारकी शक्ति व्यंजना है। इसका अर्थ है विशेष

प्रकार का अर्थ जैसे किसी सोते व्यक्ति से कहा जाए कि बाहर सवेरा हो गया चिड़िया चहचहा रहीं हैं तो इसका अर्थ होगा कि अब तुम भी बिस्तर छोड़कर उठ जाओ। अन्य व्यंग्य रचनाओं की भाँति इस व्यंग्य में भी 'व्यंग्य' शब्द–शक्ति का अधिक से अधिक प्रयोग किया गया है।

प्र.4. निम्न उक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(i) लड़के बाहर ऐसा आनंद कर रहे हैं और देवता बने हम मंदिर की कारा में बैठे है।

उ. 'पीढ़ियाँ और गट्टियाँ' नामक व्यंग्य के अंतिम भाग में वयोवृद्ध साहित्यकारों को देवता बनाकर मंदिरों में प्रतिष्ठित कर दिया जाता है। देवता बनकर प्रतिष्ठित होने के बाद इन वृद्धों का ध्यान युवकों पर गया। वे उनके बारे में बात करने लगे कि वे बाहर की दुनिया का आनंद ले रहे होंगे और हम मंदिर रूपी कारागार में बंद हैं। बाहर कोई युवक पकवान खा रहा होगा तो कोई नाटक देख रहा होगा। लेखक ने देवता बने वृद्धजनों पर व्यंग्य कसा है कि वे देवता तो बन गए लेकिन मोह न छोड़ पाए। इसीलिए युवकों के जीवन की खुशी और उत्साह के प्रति उनमें ईर्ष्या या जलन का भाव उत्पन्न होता है।

(ii) तुम बिल्कुल निःसत्व हो। तुम्हें इस बात का बुरा नहीं लगता कि जहाँ–जहाँ हम थे, वहाँ–वहाँ वे जम गए हैं।

उ. सभी देवताओं से असहमत एक देवता कहता है, 'वे युवक हैं, तरुण हैं,' खेलने–खाने लायक हैं। हमारा भोग का जीवन समाप्त हो चुका है। यही हमारे लिए ठीक है कि वे हमारी वंदना करते हैं। दूसरे देवताओं को यह बात पसंद नहीं आई उन्होंने प्रतिवाद में कहा कि जो हमारा था उस पर युवकों ने अधिकार जमा लिया। सभी देवताओं के मन में अपने अधिकार वापस लेने की लालसा थी। किंतु लेखक का मानना है कि बुजुर्गों को अपनी स्थिति और क्षमता का बोध होना चाहिए। दूसरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए, विशेषकर युवाओं के प्रति। लेखक केवल ऐसे बुजुर्गों पर कटाक्ष करता हैं जो अपने निरर्थक स्वार्थ के कारण दूसरों का मार्ग रोककर खड़े हो जाते हैं।

18. कुटज

18.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. 'कुटज' शिवालिक की नीरस और कठोर चट्टानों में उगने वाले एक ठिगने से वृक्ष का नाम है।
2. 'शिवालिक' का अर्थ शिवा की अलके अथवा शिव के जटाजूट का निचला हिस्सा है।
3. पद अथवा पदार्थ में पद का महत्व पदार्थ से कम नहीं होता, क्योंकि वह सामाजिक स्वीकृति से निर्धारित होता है।
4. कुटज को उसकी अनेकानेक विशेषताओं के आधार पर अनेक नाम दिए जा सकते हैं, जैसे – वनप्रभा, गिरिकांता, गिरिकूट बिहारी।
5. संस्कृत साहित्य में, विशेषकर कालिदास के साहित्य में कुटज को विशेष सम्मान दिया गया है।
6. कभी–कभी रहीम जैसे साहित्यकार भी गलत बयानी के शिकार होकर, कुटज जैसे सरीखे वृक्ष का मूल्य आँकने में असफल हो सकते हैं।
7. कुटज 'घर' अथवा 'घड़े' से उत्पन्न व्यक्ति को, 'कुटिया' में उत्पन्न 'कुटकारिका' या 'कुटहारिका' (दासी) से उत्पन्न किसी व्यक्ति को कहा जाता है। इसी प्रकार कुटज के अनेक अर्थ हैं।
8. कुटज 'आग्नेय' अथवा 'कोल' भाषा–परिवार का एक शब्द है।
9. अपराजेय जीवनी–शक्ति का स्वामी कुटज नाम और रूप दोनों में अद्वितीय है। सूखी, नीरस और कठोर चट्टानों के मध्य प्रतिकूल परिस्थितियों में जीते हुए भी वह पुष्पों से सदा रहता है तथा अपने मूल नाम की हजारों वर्षों से रक्षा करता हुआ हमें भी जीवन का उद्देश्य सिखाता रहता है।
10. कुटज के समान हमें अपने संकीर्ण स्वार्थ के लिए नहीं, वरन् परमार्थ के लिए स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर, कर्मठ, त्यागी और दूसरों की भलाई के लिए भी कुछ सोचना चाहिए।
11. उपकार, अपकार की बातें छोड़कर हमें 'कर्म' में आस्था रखनी चाहिए तथा यथासंभव अच्छे कर्म करते रहने का प्रयत्न करना चाहिए।
12. सुख और दुख की भावना हमारी मानसिक भावना से ही उपजती है, अतः हमें मन को जीतने का प्रयत्न करना चाहिए।
13. निबंधकार की भाषा–शैली अद्भुत तथा शब्द–संपदा अद्वितीय है। लेखक ने प्रस्तुत निबंध में सभी–भावों, शैलियों, शब्दों, भाषा–रूपों का समुचित सामंजस्य किया है।

18.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

निम्नलिखित में गलत विकल्प चुनिए।

प्र.1. स्वार्थ – ( )

1. मोह को बढ़ावा देता है
2. तृष्णा को उत्पन्न करता है।
3. मनुष्य को दयनीय कृपण बना देता है।
4. मानव को अविचलित जीवन दृष्टिकोण देता है।

प्र.2. कुटज ( )

1. मिथ्याचारों से मुक्त है
2. अपने मन पर नियंत्रण रखता है।
3. भोगों में लिप्त है।
4. बैरागी है।

प्र.3. याज्ञवल्क्य ऋषि ने कहा ( )

1. सबकुछ स्वार्थ के लिए है।
2. आत्मानुस्तु कामाय सर्वप्रियं भवति।
3. सुख वा यदि वा दुखं वा यदि वाड प्रियम्
4. पुत्र के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता।

प्र.4. 'कुटज' क्या केवल जी रहा है ... सोल्लास ग्रहण करों। अनुच्छेद द्वारा लेखक ( )

1. व्यक्तियों को जीने की कला सिखा रहे है।
2. चाटुकारिता, चापलूसी के गुणों पर प्रकाश डाल रहे हैं।
3. वर्तमान जीवन की विडंबना दर्शा रहे हैं।
4. मानव मूल्यों के ह्रास पर व्यंग्य कर रहे हैं।

प्र.5. आचार्य द्विवेदी के कुटज के अतिरिक्त अन्य निबंध है। ( )

1. अशोक के फूल
2. शिरीष के फूल
3. शिवालिक की पहाड़ियाँ
4. आम फिर बौरा गए।

प्र.6. 'दुर्जन' शब्द का अर्थ है – ( )

1. अत्याचारी
2. पापी
3. दुष्कर्म करने वाला
4. कष्टकारी

प्र.7. 'विरुद' शब्द का अर्थ है – ( )

1. कीर्ति
2. गाथा
3. प्रशंसक
4. प्रशंसा सूचक पदवी

प्र.8. 'परमार्थ' शब्द का अर्थ है – ( )

1. उत्कृष्ट वस्तु
2. परम पूज्य
3. परोपकार
4. मोक्ष

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. शिवालिक का क्या अर्थ है?

उ. शिवालिक का अर्थ है भगवान शिवजी की जटा या केशराशि। ऐसा माना जाता है कि हिमालय पर तपस्या में लीन शिवशंकर की जटायें बढ़कर सूखी, नीरस और कठोर हो गईं हैं, बिल्कुल उस शिवालिक श्रृंखला की भाँति जो हिमालय के एक ओर फैली हुई है। हिमालय के पाद–मूल प्रदेश में काली–काली चट्टानें और शुष्क रेती फैली हुई हैं। इनके बीच से कहीं–कहीं बहुत दूर–दूर पर कुछ सूखे झाड़–झंखाड़ दिखाई देते हैं। इन्हीं के कारण इनको शिव के जटाजूट के निचले हिस्से का पर्याय नाम 'शिवालिक' दिया गया है।

प्र.2. 'कुटज' शब्द की उत्पत्ति और अर्थ समझाइए।

उ. शिवालिक की सूखी पहाड़ियों में उत्पन्न होने वाले हरे–भरे वृक्ष का नाम कुटज है। गिरिकूट पर उत्पन्न होने के कारण इस वृक्ष को कुटज नाम मिला है। यदि कुटज शब्द की व्युत्पत्ति पर ध्यान दिया जाये तो कुटज का अभिप्राय होगा–जो कुट से उत्पत्ति या उत्पन्न हुआ हो। कुट 'घर' को भी कहते हैं और 'घड़े' या :गमले' को भी। पर कुटज वृक्ष न घर में उगता है, न ही घड़े या गमले में। संस्कृत में दासी को 'कुटहारिका' तथा 'कुटकारिका' कहा जाता है। संस्कृत भाषा में फूलों, वृक्षों और खेतों–बागवानी के अधिकांश शब्द आग्नेय अथवा कोल भाषा–परिवार के हैं। इसीलिए संभवतः कुटज भी इसी भाषा–परिवार का शब्द है।

प्र.3. कुटज से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उ. कुटज नामक पेड़ अपराजेय जीवनी–शक्ति का स्वामी है। यह अपने नाम और रूप दोनों में अद्वितीय है। सूखी, नीरस और कठोर चट्टानों के बीच प्रतिकूल परिस्थितियों में जीते हुए भी वह सदा पुष्पों से लदा रहता है तथा अपने मूल नाम की हजारों वर्षों से रक्षा करते हुए जी रहा है। यह वृक्ष हमें जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में अपना मान–सम्मान, गौरव आदि बनाये रखते हुए जीने की प्रेरणा प्रदान करता है। हमें अपने संकीर्ण स्वार्थ को छोड़कर परमार्थ के लिए स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर, कर्मठ, त्यागी और दूसरों की भलाई के लिए जीवन–यापन की प्रेरणा देता है। कठिन परिस्थितियों में भी प्रसन्नतापूर्वक और हृदयपूर्वक जीने की कला सिखाता है।

प्र.4. कुटज के निःस्वार्थ गुणों की चर्चा कीजिए।

उ. कुटज अत्यंत स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर, कर्मठ, त्यागी और दूसरों की भलाई अर्थात् परमार्थ के गुणों से भरपूर है। वह अपने संकीर्ण स्वार्थ के लिए नहीं जीता। 'कर्म' में आस्था रखते हुए सदा परोपकार करता है।

कुटज जीने की कला से परिचित है। अनेक विघ्न–बाधाओं को सहते हुए, हार न मानकर अपने अस्तित्व की रक्षा करता है। नाना प्रकार के कष्ट और विपदाओं में भी अपराजेय तथा परोपकारी भावना से जीवन–यापन करता है।

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'कुटज' का संपूर्ण जीवन सोद्देश्य है, पुष्टि कीजिए।

उ. कुटज का संपूर्ण जीवन सोद्देश्य है। वह पग–पग पर हमें जीवन का आदर्श सिखाता चलता है। वह अपने जीवन का उदाहरण हमारे सामने रखकर हमें सिखाता है कि आत्मनिर्भर बनिए, भीख मत माँगिए, किसी पर आश्रित मत रहिए। ईश्वर के अलावा किसी से मत डरिए। नीति और धर्म के उपदेश मात्र मत दीजिए उन्हें अपने व्यवहार से दर्शाते हुए उन्नति के लिए कर्म कीजिए, कर्मशील बनिए, किसी की चापलूसी मत कीजिए। दूसरों को अपमानित करने, दुःख पहुँचाने के लिए ही सिर्फ ग्रहों की पूजा–अर्चना कर उनकी खुशामद मत कीजिए। अपना भाग्य बदलने के लिए विभिन्न रत्न धारण करने पर श्रद्धा मत रखिए, कर्मठ और धैर्यवान बनिए। कुटज के माध्यम से लेखक यह संदेश देता है कि मनुष्य छल–कपट छोड़ दें, हीन– भावना से ग्रसित न हो, चाटुकार न बनें बल्कि संयमी, विवेकवान, उदात्त, संघर्षशील और स्वाभिमानी बनें।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. प्रस्तुत निबंध से पाँच अंग्रेजी के, दस संस्कृत तथा दस अरबी–फारसी के शब्द छाँट कर लिखिए।

उ. प्रस्तुत निबंध 'कुटज' में अन्य भाषाओं से आए शब्द निम्नलिखित हैं –

अंग्रेजी शब्द :– 1. ह्वाट्स देअर इन ए नेम, 2. सोशल सैंक्शन, 3. मूड, 4. आस्ट्रो–एशियाटिक, 5. सिलवाँ लेवी / हॉब्स / हेल्वेशियस

संस्कृत शब्द :– 1. उल्लास–लोल, 2. चारुस्मित कुटज, 3. नीलोत्पल, 4. अर्घ्य, 5. हृदयेनपराजितः, 6. शापेनास्तंगमितमहिमा, 7. अनुत्युच्च पर्वत शृंखला, 8. कुटहारिका, 9. कुटकारिका, 10. गिरि–कांतर, 11. शत्रुमर्दन, 12. द्राक्षा, 13. सुस्मिता, 14. शुभ्र किरीटिनी, 15. अलकावतंसा।

अरबी–फारसी शब्द :– 1. दरख्त, 2. मस्तमौला,3. अजीब–सी अदा, 4. कमबख्त, 5. दरियादिल आदमी, 6. फक्कडाना मस्ती, 7. अदना–सा, 8. ठालत–बयानी, 9. धधकती लू, 10. खुशामद करना, 11. हाँ–हजूरी, 12. इज्जत, 13. कद्रदान, 14. काबिल, 15. बल–बूते पर।

प्र.2. प्रस्तुत गद्यांश के वाक्यों का क्रम कुछ उल्ट–पुलट हो गया है, पाठ के अनुसार नहीं रहा है। क्या आप इन्हें क्रम में लिखने में हमारी मदद करेंगे।

'कुटज' अर्थात् जो कुट में पैदा हो। 'कुटिया' या 'कुटीर' शब्द भी कदाचित् इसी शब्द से सम्बद्ध है। कुट अर्थात घड़े से उत्पन्न होने के कारण प्रतापी अगस्त्य मुनि भी 'कुटज' कहें जाते हैं। क्या इस शब्द का अर्थ घर ही है? 'कुट' घड़े को भी कहते हैं, घर को भी कहते हैं। संस्कृत में 'कुटकारिका' दासी को कहते हैं। कोई और बात होगी। घड़े से तो क्या उत्पन्न हुए होंगे। क्यों कहते हैं?

उ. 1. कुटज अर्थात् जो कुट से पैदा हुआ हो।

2. 'कुट' घड़े को भी कहते हैं, घर को भी कहते हैं।

3. कुट अर्थात् घड़े से उत्पन्न होने के कारण प्रतापी अगस्त्य मुनि भी 'कुटज' कहे जाते हें।

4. घड़े से तो क्या उत्पन्न हुए होंगे।

5. कोई और बात होगी।

6. संस्कृत में 'कुटहारिका' या 'कुटकारिका' दासी को कहते हैं।

7. क्यों कहते हैं?

8. 'कुटिया' या 'कुटीर' शब्द भी कदाचित इसी शब्द से सम्बद्ध है।

9. क्या इस शब्द का अर्थ घर ही है?

प्र.3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का परिचय दीजिए।

उ. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य जगत के श्रेष्ठ निबंधकार, उपन्यासकार, आलोचक के अतिरिक्त कुशल वक्ता और सफल अध्यापक थे। आपका जन्म सन् 1907 में बलिया जिले के एक गाँव में हुआ था। इनका नाम हजारी प्रसाद कैसे पड़ा यह भी एक रोचक घटना है। जिस दिन इनका जन्म हुआ, इस दिन रास्ते में इनके पिता को एक हजार रुपए की थैली पड़ी मिली और इनके पिता ने इन्हें हज़ार रुपए का प्रसाद समझकर ग्रहण किया।

आप बहुत ही हँसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके मुक्त भाव की हँसी के ठहाकों को लोग आज भी याद करते हैं।

द्विवेदी जी का अध्ययन क्षेत्र अत्यंत व्यापक था। संस्कृत, हिंदी, प्राकृत, अपभ्रंश, बांग्ला आदि भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार था, इसके अतिरिक्त इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र, संस्कृत आदि विषयों का गहरा ज्ञान था। इसका अंदाज़ा इस निबंध (कुटज) से लगाया जा सकता है।

द्विवेदी जी कई विश्वविद्यालयों के हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहे। सन् 1957 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। 19 मई 1979 को इनका देहांत हो गया।

प्र.4. निम्नलिखित गद्यांशों की अपने शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

याज्ञवल्क्य ने जो बात धक्कामार ढंग से कह दी थी, वह अंतिम नहीं थी। वे 'आत्मनः' का अर्थ कुछ और बड़ा करना चाहते थे। व्यक्ति की 'आत्मा' केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है, वह व्यापक है। अपने में सब और सब में आप – इस प्रकार की एक समष्टि–बुद्धि जब तक नहीं आती, तब तक पूर्ण सुख का आनंद नहीं मिलता। अपने आपको दलित द्राक्षा की भाँति निचोड़कर जब तक 'सर्व' के लिए निछावर नहीं किया जाता। तब तक 'स्वार्थ' खंड–सत्य है, वह मोड़ को बढ़ावा देता है, तृष्णा को उत्पन्न करता है और मनुष्य को दयनीय कृपण बना देता है।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'कुटज' नामक निबंध से लिया गया है।

प्रसंग : इस गद्यांश में लेखक ने कुटज की जीवनशैली के माध्यम से वर्तमान जीवन पर व्यांग्यात्मक ढंग से अपनी चिंता व्यक्त की है।

व्याख्या : लेखक के अनुसार याज्ञवल्क्य ऋषि की बात पूर्णतः असत्य तो नहीं है पर हाँ, वेद अर्धसत्य अवश्य है। उसे अंतिम सत्य मान लेना गलत है। वास्तव में उनके द्वारा प्रयुक्त 'आत्मनः' शब्द का अर्थ 'केवल अपने लिए' मान लेना, इस शब्द का अर्थ संकुचित करना है। 'आत्मनः' का अर्थ बहुत व्यापक है, जिसमें संपूर्ण समाज का, पूरी मानव जाति का हित समाया हुआ है। क्योंकि आत्मा, परमात्मा का एक अंश है तथा वह सभी में विद्यमान है। अतः ब्रह्मवादी याज्ञवल्क्य के 'आत्मनः' शब्द का सही अर्थ जानकर, सबके हित और कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए।

अपने में सबको और सबमें अपने आपको देखकर व्यक्ति जब कोई कार्य करता है, तभी उसे पूर्ण सुख और संपूर्ण आनंद की प्राप्ति होती है, क्योंकि तब वह सबके हित में ही अपना हित देखने लगता है तथा स्वार्थ और संकीर्णताओं से ऊपर उठकर परहित, परोपकार की ओर अग्रसर होता है। उस समय सबके कल्याण के लिए वह स्वंय का बलिदान करने से भी पीछे नहीं हटता। अपने को वह उसी प्रकार गलाकर, नष्ट कर दूसरों की प्रसन्नता का साधन बनाता है। जिस प्रकार अंगूर स्वयं को मिटाकर दूसरों को अपने स्वाद का आनंद प्रदान कराते हैं जो कुछ क्षणों के लिए ही सही, मानव के सारे दुःखों को दूर कर देता है।

प्र.5. निम्नलिखित गद्यांशों की अपने शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

जो समझता है कि वह दूसरों का उपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरे का अपकार कर रहे हैं, वह बुद्धिहीन है। कौन किसका उपकार करता है? कौन किसका अपकार कर रहा है? मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास–विधाता की योजना के अनुसार। किसी को उससे सुख मिल जाये, बहुत अच्छी बात है, नहीं मिल सका, कोई बात नहीं, परंतु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश 'कुटज' नामक निबंध से अवतरित किया गया है। इसके लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी है।

प्रसंग : लेखक का विचार है कि सच्चा जीवन दर्शन यही है कि व्यक्ति कर्म करते रहें तथा यथासंभव अच्छे कर्म करने का प्रयास करें। यदि ऐसा करने से किसी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों का भला होता है तो उसे स्वयं पर अभिमान नहीं करना चाहिए कि वह भाग्यविधाता है या पुण्यात्मा है। इसके विपरीत यदि वह सत्कर्म नहीं कर पाता तथा दूसरों को कष्ट या दुःख पहुँचा कर यह सोचता है कि वह सर्वशक्तिशाली, सर्वशक्तिमान है तो वह भी उसकी बुद्धिहीनता का प्रमाण है, क्योंकि यह सर्वव्यापी सत्य है कि जब तक ईश्वर न चाहे कोई किसी का अपकार या उपकार नहीं कर सकता। हम तो मात्र उसकी इच्छानुसार कार्य करते है। उसने भाग्य में जो लिखा दिया, वही हमारा कर्म है। हमारे कर्मों से किसी का भला हो जाए यही अच्छी बात है

ईश्वर की कृपा दृष्टि हम पर है। यदि ऐसा न हो पाए तो भी कोई दुःख नहीं। हमें तो कर्म करते रहते चाहिए। अनिवार्य यह है कि हमें कभी भी अपने कर्मों पर गर्व नहीं करना चाहिए। सुख पहुँचाने का गर्व गलत है और दुःख पहुँचाने का गर्व हमारी विकृत्त प्रवृत्ति का प्रतीक है।

सारांश : भाग्यविधाता की इच्छानुसार हम कर्म करते हैं। अपने अच्छे या बुरे कर्म पर अभिमान करना छोड़ कर हमें यथासंभव सत्कर्म करने का प्रयास करना चाहिए।

प्र.6. निम्नलिखित गद्यांशों की अपने शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करों; वायुमंडल को चूसकर, झंझा–तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो, आकाश को चूमकर अवकाश की लहरी में झूमकर उल्लास खींच लो।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी रचित 'कुटज' नामक गद्य से अवतरित की गई हैं।

प्रसंग : कुटज सूखी, नीरस और कठोर धरती से, बहुत संघर्षों के बाद अपने लिए जीवन–रस तलाश कर पाता है। परंतु फिर भी वह कंजूस और स्वार्थी नहीं, सहिष्णु है। सबकुछ वह स्वयं ही नहीं ले लेना चाहता। वह तो औरों को भी संकेत देता है कि रस का स्रोत कहाँ है। वह कहना चाहता है कि यदि आप जीना चाहते हैं तो चाहे आपके सामने विपदाओं का पहाड़ आ पड़े या दुःख के सागर लहराने लगे अथवा भयंकर आँधी–तूफान आपको चारों ओर से घेर लें पर सबसे जूझकर भी आप अपना वह 'प्राप्य' प्राप्त कर लीजिए जो सिर्फ आपके लिए है, जिसे विधाता ने सिर्फ आपके भाग्य में लिखा है। आप कर्मशील और परिश्रमि बन कर उसे प्राप्त कीजिए तथा दुःख की राहों में भी हर्षोल्लास का क्षण चुन लीजिए, संघर्ष का सामना कीजिए तथा देखिए कि विजय आपकी कैसे हो जाती है।

सारांश : कुटज के जीवन का यही उद्‌देश्य है कि जीना भी एक कला है। सिर्फ कला ही नहीं, तपस्या है जिसमें अनेक विघ्न–बाधाएँ आती ही रहती हैं, फिर भी हमें हार नहीं माननी चाहिए, बल्कि आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनकर जीना चाहिए।

प्र.7. दुनिया में त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, परार्थ नहीं है, परमार्थ नहीं है, केवल प्रचंड स्वार्थ। भीतर की जिजीविषा जीते रहने की प्रचंड इच्छा ही अगर बड़ी बात हो तो फिर यह सारी बड़ी–बड़ी बोलियाँ, जिनके बल पर दल बनाए जाते हैं, शत्रुमर्दन का अभिनय किया जाता है। देशोद्धार का नारा लगाया जाता है, साहित्यिक और कला की महिमा गाई जाती है, झूठ है। इसके द्वारा कोई न कोई अपना बड़ा स्वार्थ सिद्ध करता है। लेकिन अंतरतर से कोई कह रहा है, ऐसा सोचना गलत ढंग से सोचना है।

संदर्भ : ये गद्यांश 'कुटज' नामक निबंध से लिया गया है। इस के रचनाकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी है।

प्रसंग : संसार में जो कुछ भी हो रहा है वह केवल अपने स्वार्थ के लिए है। क्या मनुष्य को मात्र जीने के लिए जीना चाहिए। मौत विधाता के हाथों लिखी है, वह हमारे हाथ में नहीं है, क्या यही तथ्य हमारे जीने का कारण होगा। सभी मनुष्य सोचते हैं कि इस स्वार्थी दुनिया में सब केवल अपने लिए जीते हैं। ब्रह्मवादी महान तत्ववेत्ता ऋषि याज्ञवल्क्य ने भी अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश में कहा था कि दुनिया में जो भी होता है या हो रहा है, यह सब व्यक्ति के स्वार्थ के लिए है। किसी को अपनी पत्नि, पुत्र, बहन, बेटी या अन्य संबंधी इसीलिए प्रिय नहीं होते क्योंकि उनसे वे एक रिश्ते में जुड़े हुए होते हैं, बल्कि वे सब उसे इसीलिए प्रिय होते हैं क्योंकि वह कभी न कभी किसी न किसी प्रकार से उसकी सहायता करते हैं, उसे लाभ पहुँचाते हैं। क्या दुनिया में त्याग, प्रेम, ममता, परार्थ, परमार्थ आदि प्रचंड स्वार्थ के आगे कुछ न कुछ यदि ये सत्य है तो फिर परहित, लोकमंगल, मानव– कल्याण आदि बड़ी–बड़ी बाले झूठी सिद्ध होगी और मात्र बकवास कहलाएगी।

सारांश : संसार में सभी अपने स्वार्थ के लिए जीते है, ऐसा सोचना गलत है। यदि ऐसा होता तो देशोद्धार के नारे नहीं लगाए जाते और साहित्य के माध्यम से त्याग, बलिदान की महिमा नहीं गाई जाती। असत्य पर सत्य की विजय नहीं दर्शायी जाती।

प्र.8. निम्नलिखित गद्यांशों की अपने शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

दुःख और सुख तो मन के विकल्प है। सुखी वह है जिसका मन वश में है दुःख वह है जिसका मन परवश है। परवश होने का अर्थ है खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ हुजूरी। जिसका मन वश में नहीं है, वही दूसरे के मन का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडम्बर रचता है, दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश कुटज नामक निबंध से लिया गया है। इस गद्य के लेखक आचार्य हजीर प्रसाद द्विवेदी जी है।

प्रसंग : द्विवेदी जी हमें जीवन–दर्शन सिखाते हुए कहते हैं कि सुख और दुःख तो व्यक्ति के मन के अनुरूप होते हैं। जैसे कोई भी सुख मनुष्य के सुख का कारण नहीं हो सकता, वैसे ही कोई भी दुःख मनुष्य को दुःखी नहीं करता। कोई परिस्थिति यदि अमुक व्यक्ति के लिए सुख का कारण हो तो दूसरे के लिए दुःख का कारण हो सकती है। ऐसा व्यक्ति जिसका मन कमजोर, अस्थिर या चंचल होता है, उसके वश में नहीं रहता तो बाह्य जीवन की परिस्थितियों से वह जल्दी प्रभावित हो जाता है। जल्दी सुखी या दुःखी हो जाता है। उसकी इंद्रियाँ उसके नियंत्रण में नहीं रहती और वह सदैव असंतुष्ट रहता है, निष्कर्ष रूप में वह अपनी क्षुद्र स्वार्थ भावना को लेकर किसी की खुशामद करता है तो कभी दाँत निपोर कर दूसरों को अपने स्तर पर लाने, हानि पहुँचाने के लिए कुटिल चालों के जाल बिछाता है तथा दूसरों के इशारों पर नाचता है। इस प्रकार वह निरंतर पतन के मार्ग की ओर अग्रसर होता चला जाता है।

सारांश : जीवन में सुख और दुःख का चक्र लगातार चलता रहता है। इंद्रियों को अपने वश में न रखने वाले व्यक्ति का आत्म–सम्मान, आत्म–गौरव, आत्म– विश्वास सब समाप्त हो जाता है। अपनी कमजोरियों को छिपाने वह झूठी शान दिखाकर दूसरों की खुशामद या जी हुजूरी करता है। और पतन की ओर बढ़ता चजा जाता है।

19. पत्र कैसे लिखें

19.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. पत्र के द्वारा हम अपने भावों और विचारों को दूसरों तक लिखकर पहुँचाते है।
2. अच्छे पत्र में निम्नलिखित गुण होते हैं :
   (क) संक्षिप्तता, (खा) सरलता, (ग) सहजता (घ) प्रभावशीलता।
3. अनौपचारिक पत्रों का प्रयोग सगे संबंधियों, मित्रों आदि के साथ संवाद के लिए किया जाता है। विशेष प्रयोजन के लिए लिखे जाने वाले पत्र औपचारिक पत्र कहलाते हैं। कुछ प्रमुख – औपचारिक पत्र हैं – व्यावसायिक पत्र, निमंत्रण पत्र, संवेदना पत्र आदि।
4. मंत्रालयों, विभागों, प्राधिकरणों तथा आयोगों में प्रशासनिक कार्यों से संबंधित पत्र–व्यवहार कार्यालयी–पत्राचार कहलाता है।
5. कार्यालय में जिन पत्रों का प्रयोग किया जाता है उनकी अपनी अलग विशेषताएँ होती है और उनका स्वरूप भी भिन्न–भिन्न होता है। उनके कई प्रकार हो सकते हैं, जैसे – सरकारी पत्र, अर्धसरकारी पत्र, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश, परिपत्र, आवेदन पत्र आदि।
6. केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों, राज्य सरकारों, सरकारी उपक्रमों, सार्वजनिक निकायों, व्यावसायिक धर्मों आदि के साथ होने वाले पत्र–व्यवहार में सामान्यतः सरकारी पत्र का प्रयोग करते है।
7. अर्धसरकारी पत्र का प्रयोग सरकारी अधिकारियों के आपसी पत्र व्यवहार में विचारों या सूचनाओं के आदान–प्रदान अथवा प्रेषण के लिए किया जाता है।
8. ज्ञापन का प्रयोग किसी मंत्रालय या प्रभाग के भीतरी पत्र–व्यवहार के लिए होता है। कार्यालय अपने कर्मचारियों की तैनाती, छुट्टी, उनके अथवा अनुभागों के बीच काम के वितरण आदि से संबंधित आदेश कार्यालय आदेश के रूप जारी करते हैं। अनेक स्थानों को सूचना देने अथवा सूचना मँगाने के लिए एक साथ, एक रूप में भेजे जाने वाले पत्र 'परिपत्र' कहलाते हैं।

19.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

I. एक शब्द या एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. सरकारी और अर्धसरकारी पत्रों में से कौन–सा अनौपचारिक पत्र होता है। (अर्धसरकारी पत्र)
2. 'महोदय' का प्रयोग किस प्रकार के पत्र में किया जाता है। (औपचारिक पत्र)
3. आप 'भवदीय' का प्रयोग किस प्रकार के पत्रों में करेंगे। (औपचारिक पत्र)
4. सरकारी पद पर रहते हुए भी मित्रभाव से कौन–सा पत्र लिखा जाता है? (अर्ध–सरकारी)
5. सामान्यतः 'पृष्ठांकन' किस प्रकार के पत्र में किया जाता है। (सरकारी)

II. वर्ग 'क' में कुछ कथन दिए गए हैं। प्रत्येक कथन का संबंध वर्ग 'ख' में आए किसी एक शब्द से है। इन्हें मिलाइए।

	वर्ग 'क'	वर्ग 'ख'
1.	पत्रों की विशेषता	अ) प्रणाम
2.	अपने से छोटी को संबोधन	आ) सरलता
3.	अपनों से बड़ों का अभिवादन	इ) प्रसन्न रहो
4.	बराबर वालों या मित्रों को अभिवादन	ई) महोदय
5.	औपचारिक पत्र में संबोधन	उ) नमस्ते

उ. 1. (आ) सरलता, 2. (इ) प्रसन्न रहो, 3. (अ) प्रणाम, 4. (उ) नमस्ते, 5. (ई) महोदय

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए।

1. दुकानदारों, प्रकाशकों तथा कंपनियों को लिखे जाने वाले पत्र को क्या कहा जाता है? (व्यावसायिक पत्र)
2. पत्र में हस्ताक्षर कब और कहाँ किये जाते हैं? (पत्र की समाप्ति पर, दाहिने ओर)
3. व्यक्तिगत पत्रों के किंन्हीं दो प्रकारों के नाम लिखिए। (1. बधाई पत्र, 2. निमंत्रण पत्र)
4. प्रार्थना पत्र में कृतज्ञता कब प्रकट की जाती है? (अंत में)
5. अनौपचारिक पत्र किस शैली में लिखे जाते हैं? (स्वाभाविक बातचीत की शैली में)

IV. रिक्त स्थान भरिए।

1. संबोधन के बाद _____ चिन्ह का प्रयोग किया जाता है (अल्पविराम)
2. पत्र के माध्यम से हम दूसरों को अपना _____ भेजते हैं। (संदेश)
3. यदि पत्र पहली बार लिखा जा रहा है तो हमें अपना आशय पत्र के पहले _____ में ही स्पष्ट लिख देना चाहिए। (अनुच्छेद)
4. पत्र–लेखन एक _____ है। (कला)
5. सांत्वना पत्र को _____ पत्र भी कहते हैं। (संवेदना)

3 अंक का प्रश्न

प्र.1. पत्र–लिखने की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

उ. पत्र–लेखन, भावों तथा विचारों के आदान–प्रदान का एक शक्तिशाली माध्यम है। मन के भावों या विचारों को संदेश के रूप में कागज पर लिखकर उपयुक्त व्यक्ति को डाक द्वारा या संदेश वाहक द्वारा भेजा जाता है। पत्र द्वारा अपनी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं को भी व्यक्त किया जा सकता है। पत्र व्यवहार का संबंध केवल अपने निकटतम संबंधियों से ही नहीं बल्कि अपने व्यापार/व्यवसाय या कार्यालय से भी जुड़ा होता है। व्यापारी या दुकानदार से हम एक ग्राहक के रूप में पत्राचार करते हैं तो कार्यालय में अपने अधिकारियों और कर्मचारियों से हम कार्यालयीन संबंधी पत्र व्यवहार करते हैं।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. अनौपचारिक पत्रों के विभिन्न अंशों जैसे संबोधन, अभिवादन और समाप्ति आदि को तालिका के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

उ. अनौपचारिक पत्रों के संबोधन, अभिवादन और समाप्ति संबंधी विवरण निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

संबंध	संबोधन	अभिवादन	समाप्ति
अपने से बड़ों को	पूज्य पिताजी पूजनीय माताजी आदरणीय भैयाजी / भाई / जीजी / बनजी / साहब / पिताश्री / माताश्री	चरण स्पर्श सादर नमस्ते नमस्कार	आपका आज्ञाकारी पुत्र आज्ञाकारी पुत्री स्नेहाकांक्षी
बराबर वालों या मित्रों को	प्रिय, प्रियवर, परम मित्र	नमस्ते, सप्रेम नमस्ते, नमस्कार	तुम्हारा मित्र तुम्हारा अभिन्न मित्र
अपने से छोटों को	चिरंजीव प्रिय (नाम) परम मित्र	सुखी रहो, आशीर्वाद, प्रसन्न रहो, आशीष, शुभाशीष	शुभ चिंतक, शुभाकांक्षी, शुभेच्छु

प्र.2. सरकारी पत्र और अर्धसरकारी पत्र में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उ. 1. सरकारी पत्र या शासकीय पत्र :

केंद्रीय सरकार के मंत्रालय, राज्य सरकारे, सरकारी उपक्रमों, सार्वजनिक निकायों, व्यावसायिक फर्मों आदि के साथ होने वाले परस्पर पत्र–व्यवहार में सामान्यतः सरकारी पत्र लेखन का प्रयोग किया जाता है। भारत सरकार के मंत्रालयों के आपसी पत्र–व्यवहार में भी सामान्यतः सरकारी पत्र लेखन का प्रयोग नहीं किया जाता। उसके लिए कार्यालय ज्ञापनों अथवा अर्धसरकारी पत्रों को प्रयोग होता है।

अर्धसरकारी पत्र :– अर्धसरकारी पत्र का प्रयोग अधिकारियों के आपसी पत्र व्यवहार में विचारों या सूचना के आदान–प्रदान या प्रेषण के लिए किया जाता है। जब किसी अधिकारी का ध्यान किसी मामले की ओर व्यक्तिगत रूप से दिलवाना हो, या किसी मामलें की विशेष स्थिति या पहलू पर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करना हो, तभी इसका प्रयोग होता है। इस प्रकार का

पत्र प्रथम पुरुष में मित्रभाव से लिखा जाता है। इसके आरंभ में 'प्रिय ...' या 'प्रियवर....' या 'प्रिय श्री ....' होता है और अंत में 'आपका' लिखा जाता है। भेजने वाला अधिकारी इस पर नीचे अपना हस्ताक्षर करके उसके नीचे अपना पदनाम नहीं लिखता।

सरकारी पत्र और अर्धसरकारी पत्र में अंतर :

अंतर के स्थल	**सरकारी पत्र**	**अर्धसरकारी पत्र**
स्वरूप	औपचारिक	अनौपचारिक
प्राप्तकर्ता का विवरण	प्रेषक के नीचे	आपका के नीचे पृष्ठ के दाहिनी ओर
संबोधन	महोदय	प्रिय ... जी. प्रियश्री ...
आभार प्रदर्शन या धन्यवाद ज्ञापन	नहीं किया जाता	किया जाता है
स्वनिर्देश	भवदीय	आपका
पृष्ठांकन	होता है	नहीं होता

प्र.3. कार्यालयी पत्राचार से आप क्या समझते हैं? उसके कौन–कौन से अंग है?

उ. कार्यालयी स्तर पर लिखे गए पत्र औपचारिक पत्र होते हैं। इन पत्रों में केवल काम की बातें लिखी जाती हैं। अतः ये पत्र ऐसे लोगों को लिखे जाते हैं जिनसे हमारा कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं होता। संबंधों की इस दूरी के कारण इन पत्रों की भाषा में नियमबद्धता का पालन किया जाता है।

कार्यालयी पत्रों के अंग :

1. प्रारंभ : पत्र के ऊपर दाई ओर दिनांक लिखा जाता है तथा पत्र का संदर्भ भी लिखा जाता है। बाईं ओर पहले सेवा में लिखकर पत्र प्राप्त करने वाले का पद, नाम व पूरा पता लिखा जाता है। इसके बाद पत्र का विषय भी लिखा जाता है।

2. संबोधन और मुख्य विषय : प्रारंभ के बाद संबोधन और पत्र का विस्तार होता है, जिनमें विषय का क्रमबद्ध उल्लेख और पत्र–लेखन का प्रयोजन लिखा जाता है।

3. समापन : पत्र की समाप्ति पर 'भवदीय' शब्द लिखकर प्रेषक के हस्ताक्षर और उसका पूरा नाम व पता लिखा जाता है।

कार्यालयी पत्र प्रायः टंकित भेजे जाते हैं। वर्तमान समय में कंप्यूटर की सुविधा के कारण पत्र का समापन भी बाई ओर ही किया जा रहा है। कुछ सरकारी पत्रों में विशेष रूप से छपे 'लेटर हैड' में प्रेषक या अधिकारी का नाम तथा पता बाई ओर छपा होने के कारण इनमें पत्र भेजने वाले का पता नीचे देने की आवश्यकता नहीं होती।

प्र.4. अपने माता–पिता की ओर से भाई के विवाह के लिए एक निमंत्रण पत्र तैयार कीजिए।

उ.

मान्यवर

चि.सौ. निहारिका

(पुत्री श्रीमती और श्री गुलाबचंद शर्मा)

एवं

चि. आशीश

(पुत्र श्रीमती और श्री ताराकांत गुप्ता)

का शुभविवाह दिनांक 24–04–2012 मंगलवार के दिन रात्रि 8.35 पर होना निश्चित हुआ है। कृपया सपरिवार पधार कर वर–वधू को आशीर्वाद प्रदान कर अनुग्रहित करें।

दर्शनाभिलाषी

समस्त शर्मा परिवार

कार्यक्रम

मंगलवार, दिनांक 24–04–2012

बरात स्वागत : सायंकल 7 बजे

वरमाला : 8 बजे

प्रीतिभोज : रात्रि 8.30 बजे से

विदाई : रात्रि 11.35 मिनट पर

स्थान : श्री सत्य साई कल्याण मंडपम्

श्रीनगर कॉलोनीए हैदराबाद

10 अंक के प्रश्न

प्र.1 अनौपचारिक तथा औपचारिक पत्रों में क्या भेद हैं?

उ मूलतः पत्र दो प्रकार के होते हैं।

1. अनौपचारिक 2. औपचारिक

1. <u>अनौपचारिक पत्र</u> :– अनौपचारिक (अन्+औपचारिक = जो औपचारिक न हो) का अर्थ है सरल तथा स्वाभाविक व्यवहार जो किसी नियम या परिपाटी से मुक्त होता है। अपने मित्रों या संबंधियों को लिखे पत्र अनौपचारिक होते हैं। इन पत्रों की भाषा सरल होती है जिसमें अपनापन झलकता है। इन पत्रों को संवाद के रूप में लिखा जाता है जिससे लगता है कि पास बैठे बातचीत की जा रही हो। ऐसे पत्रों में हम सरल भाषा में अपनी कुशलता की बात कहते हुए उनकी कुशलता का समाचार पूछते है। अपनी व्यक्तिगत समस्याएँ आदि का भी उल्लेख करते है तथा उनकी व्यक्तिगत समस्याओं आदि की जानकारी प्राप्त करते हुए उचित सलाह भी देते हैं।

2. <u>औपचारिक पत्र</u> :– औपचारिक पत्र का अर्थ है कामकाजी, सरकारी या कार्यालयी स्तर पर लिखे गए पत्र। सरकारी कामकाज के लिए लिखे गए पत्र औपचारिक पत्र कहलाते हैं। ऐसे पत्र प्रायः उन लोगों को लिखे जाते हैं जिनसे हमारा कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं होता। इन पत्रों में हम केवल काम की बात करते हैं। व्यक्तिगत संबंध न होने के कारण इन पत्रों में भाषा की नियमबद्धता का पालन करते हैं।

औपचारिक और अनौपचारिक पत्रों में आरंभ, संबोधन, विस्तार एवं समाप्ति नामक अंग होते हैं। इन अंगों में आनेवाली सामग्री विषयानुसार बदल जाती है। दोनों प्रकार के पत्रों में ऊपर दाई ओर दिनांक लिखा जाता है। दोनों की तुलना करने पर पता चलता है कि औपचारिक पत्रों में पत्र का संदर्भ लिखा जाता है जबकि अनौपचारिक पत्र संबोधन या अभिवादन से शुरू होता है तो औपचारिक पत्र में पहले 'सेवा में' लिखकर पत्र प्राप्त करने वाले का पद, नाम व कार्यालय का पूरा पता लिखा जाता है। इसके बाद पत्र का विषय भी लिखा जाता है जो अनौपचारिक में नहीं होता।

इसके बाद संबोधन तथा पत्र का विस्तार होता है, जिनमें अनौपचारिक पत्रों की तुलना में भाषा और शैली में अंतर आ जाता है। अनौपचारिक में अपनापन युक्त भाषा शैली होती है जब कि औपचारिक पत्रों में विषय का क्रमबद्ध उल्लेख होता है। इनमें पत्र की समाप्ति पर 'भवदीय' शब्द लिख कर प्रेषक के हस्ताक्षर और पूरा नाम व पता होता है।

आजकल दोनों प्रकार के पत्र टंकित ही भेजे जाते हैं। तथा कंप्यूटर की सुविधा के कारण पत्र का समापन भी बाई ओर ही होता है।

प्र.2. 'अच्छे पत्र' के गुणों पर प्रकाश डालिए।

उ. **<u>अच्छे पत्र की परिभाषा</u>** :– पत्र पाने वाला व्यक्ति यदि पत्र पढ़कर वही समझे जो लिखने वाला कहना चाहता है, तो उसे अच्छा पत्र माना जाएगा। एक अच्छे पत्र की भाषा स्पष्ट, सहज और प्रभावी होनी चाहिए ताकि पत्र पढ़ने वाला लिखी बातों को समझ कर उनका पालन कर सके। पत्रों में कम शब्दों का प्रयोग करते हुए जटिल, कठिन शब्दों तथा कहावतों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अच्छे पत्रों में निम्नलिखित गुण होने चाहिए।

1. संक्षिप्तता, 2. सरलता, 3. सहजता, 4. प्रभावशीलता।

1. <u>संक्षिप्तता</u> :– केवल अनिवार्य बातों का उल्लेख किया जाए। संक्षिप्तता का आधार पत्र के आकार का छोटा या बड़ा होना नहीं बल्कि उसके विवरण पर निर्भर करता है। बातों को नपे–तुले शब्दों में कहते हुए दोहराना नहीं चाहिए। पूछी गई बातों का उत्तर भी घुमाफिरा कर नहीं वरन् सीधा और स्पष्ट लिखना चाहिए।

2. <u>सरलता</u> :– सरल भाषा का प्रयोग हो। आसान और दैनिक जीवन में काम आने वाली भाषा का उपयोग किया जाए। छोटे–छोटे वाक्यों से वाक्य–क्रम का ध्यान रखते हुए छोटे अनुच्छेद

बनाएँ। वाक्यों की बातें विषय से संबंधित हों। बात बदलने पर अनुच्छेद बदलें। बड़े–बड़े कठिन क्लिष्ट और जटिल शब्दों के प्रयोग से बचें।

3. <u>सहजता</u> :– आपसी बातचीत में हम सहज और स्वाभाविक भाषा–शैली का प्रयोग करते हैं, उसी शैली का प्रयोग पत्र में भी होना चाहिए। पत्र पढ़ते समय यदि वार्तालाप का अहसास हो तो समझ लें कि यह भाषा सहज है। अपनेपन के अनुसार आप, तुम, मैं, हम, वे, हमारे आदि शब्दों का प्रयोग अच्छा होता है। अनौपचारिक पत्रों में संबोधन के बाद जी' का प्रयोग जैसे दादाजी, नानाजी, माताजी, जीजाजी, जैसे शब्द संबंधित व्यक्ति के प्रति निकटता तथा आत्मीयता की भावना पैदा करते हैं। शिष्ट और विनम्र शब्दों का प्रयोग भी पत्र में सहजता का गुण उत्पन्न करता है।

4. <u>प्रभावशीलता</u> :– पत्र की भाषा ऐसी हो जो पत्र प्राप्तकर्ता को प्रभावित कर सके। शब्दावली इतनी शक्तिशाली हो कि पढ़ने वाले के मन में एक चित्र सा उत्पन्न कर सके। मुहावरेदार भाषा पत्र को प्रभावशाली बनाती है। शब्दों का चुनाव पाठक के मन को स्पर्श कर सके तो पत्र पढ़ने में उसकी जिज्ञासा बनी रहेगी और वह प्रभावित भी होगा। औपचारिक पत्र में सीधी, स्पष्ट भाषा होनी चाहिए। घुमावदार, लच्छेदार एवं मुहावरे युक्त भाषा का प्रयोग न हो। अपनी बात की बिंदुवार क्रम में प्रस्तुति अधिक प्रभाव उत्पन्न करती है।

प्र.3. नशीले पदार्थों के व्यसन से ग्रस्त अपने मित्र को सेवन की बुराइयों से अवगत कराते हुए पत्र लिखिए।

उ.

जी – 101
अमूल्या एवेन्यू
हैदराबाद–28
01.04.2012

प्रिय प्रशांत,

नमस्ते,

आज मैं तुम्हें एक विशेष उद्देश्य से यह पत्र लिख रहा हूँ। दो दिन पहले मेरी भेंट तुम्हारी बहन प्रशांती से हुई थी। उसने मुझे तुम्हारी दिन–ब–दिन गिरती सेहत की जानकारी दी। प्रशांत मैं तुम्हारा अच्छा दोस्त होने के नाते तुमसे कहना चाहता हूँ कि हमें अपने जीवन को सकारात्मक ढंग से जीते हुए अपने परिवार, रिश्तेदारों और मित्रों का मान–सम्मान बढ़ाना चाहिए। जीवन में लिया गया एक गलत निर्णय हमारी प्रतिष्ठा को तहस–नहस कर देता है।
तुम अत्यंत आत्मविश्वासी और कर्मठ होने के बावजूद नशीले पदार्थों की आदत में कैसे पड़ गये? यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। एक मित्र होने के नाते मैं अधिकार पूर्वक तुम्हें इस बुराई से अवगत करना चाहता हूँ। पैसे की बर्बादी के साथ–साथ तुम्हारा स्वास्थ्य भी बिगड़ता जाएगा। हो सकता है कि तुम्हें अस्पताल में भरती करवाना पड़े। अपने छोटे भाई–बहनों का

ख़्याल रखते हुए उनके भविष्य से न खेलो और माता–पिता को सुख देने के बजाय दुःख के सागर में न धकेलो। आशा करता हूँ कि इस व्यसन को छोड़कर शीघ्रातिशीघ्र संपूर्ण रूप से सामान्य हो जाओगे और अपने भविष्य को उज्जवल बनाकर माता–पिता का मान–सम्मान बढ़ाओगे।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा अभिन्न मित्र
प्रणीत

प्र.4. यौन रोग ग्रस्त युवक के अनुभव से अपने अन्य मित्र करण को सचेत करते हुए पत्र लिखिए।

उ.

जी – 101
अमूल्या एवेन्यू
हैदराबाद–28

प्रिय करण,

नमस्ते,

आज मुझे यह पत्र लिखते हुए अत्यंत कष्ट हो रहा है क्योंकि मैं इस पत्र के माध्यम से दुर्भाग्यवश किशन की बीमारी से अवगत कराना चाहता हूँ। वह यौन रोग से ग्रस्त हो चुका है। पिछले महीने अपने चाचा के इलाज के लिए रक्त–दान करते समय अस्पताल के कर्मचारियों द्वारा संक्रमित सुई के प्रयोग के कारण वह इस जानलेवा बीमारी का शिकार हो गया। इसी संदर्भ में मैं तुम्हें सचेत करना चाहता हूँ कि इस भीषण बीमारी से कैसे बचा जा सकता है? जीवन बहुमूल्य है, वह हमें एक ही बार मिलता है। अतः हमें संभालकर कदम बढ़ाना चाहिए। अतः निम्नलिखित बातों का सदा ध्यान रखना अनिवार्य है।

1. रोगी को रक्त देने से पहले रक्त का परीक्षण अवश्य कराएँ या किसी विश्वस्त 'ब्लड बैंक' से ही रक्त ले।
2. अपने मित्रों और संबंधियों को रक्त दान के लिए प्रेरित करें। इससे दुर्बलता नहीं आती।
3. कीटाणु रहित सुईं और सिरिंज का ही प्रयोग करें।
4. लोगों के दबाव आकर अनुचित कार्य न करें।
5. अपने जीवनसाथी से विश्वासघात न करें।
6. एक से अधिक साथियों से यौन–संबंध न बनाएँ।
7. विवाह से पूर्व वैवाहिक संबंध न रखें।
8. एक ही सुई से कई लोगों के साथ बैठकर नशा भी न लें।

करण, मेरा यह पत्र तुम्हें कुछ अटपटा लग सकता है क्योंकि हम यौन समस्याओं या यौन–रोगों की चर्चा खुलेआम नहीं करते। सोचता हूँ कि हम ऐसे नाजुक विषयों पर खुलकर चर्चा करें और लोगों को इन नियमों से अवगत कराएँ।

किशन की हालत मैं देख नहीं सका। मैंने उसे गले लगाकर सांत्वना दी। उससे मीठे बोल कहकर उसके साथ खाना भी खाया। ताकि उसका मनोबल बढ़ सके।

आशा है तुम भी ऐसे विषयों से संबंधित जानकारी देकर लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास करोगे।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा अभिन्न मित्र

कैलाश

20. भाव–पल्लवन कैसे करें

20.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. भाव–पल्लवन से लेखन शक्ति का विकास होता है। यह किसी उक्ति, वाक्य, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि के अर्थ को पूरी तरह समझने में सहायता करता है। उसमें उक्ति या सूक्ति की विस्तार से चर्चा की जाती है, ताकि लेखक का आशय या मंतव्य पूरी तरह से स्पष्ट हो जाए। यह एक प्रकार का लघु निबंध है, किंतु इस पर निबंध के नियम पूरी तरह लागू नहीं होते।
2. भाव–पल्लवन व्याख्या नही है क्योंकि इसमें आलोचना और टीका–टिप्पणी नहीं होती। यह भावार्थ से भी अलग है क्योंकि इसमें केंद्रीय भाव को स्पष्ट करने के लिए अन्य सहयोगी भावों को भी लिखा जाता है। यह संक्षेपण का एक प्रकार से विलोम है।
3. भाव–पल्लवन की प्रक्रिया इस प्रकार है :
   - उक्ति, वाक्य या सूचित आदि को समझना।
   - उक्ति, वाक्य या सूचित आदि के मूल भाव को स्पष्ट करने वाले भावों को पहचानना।
   - इन भावों का क्रम के अनुसार विस्तार से वर्णन करना।
4. भाव–पल्लवन के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है :
   - विषय के मूल भाव को पहचान कर विचार बिंदुओं का क्रम निर्धारित करना
   - अनावश्यक बातों को न लिखना।
   - मूल भाव की आलोचना आदि न करना।
   - भाषा का सरल और बोधगम्य होना।
   - भाव–पल्लवन को दोबारा पढ़ना और संशोधन करना।

20.2. प्रश्न–उत्तर

4 अंक के प्रश्न

प्र.1. पल्लवन करते समय किन–किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

उ. पल्लवन करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

- मूल भाव पर विशेष ध्यान देना।
- मूल भाव का विस्तार करते हुए उसकी पुष्टि में यदि किसी उदाहरण या तथ्य की आवश्यकता पड़े तो उसे भी प्रस्तुत करना।
- सरल और बोधगम्य भाषा का प्रयोग।
- अनावश्यक या अप्रासंगिक विचार बिंदुओं से बचना।
- मूल भाव पर किसी की आलोचना या टिप्पणी न करना।
- अन्य पुरुष शैली का प्रयोग करना।

प्र.2. भाव–पल्लवन के विभिन्न चरण क्या हैं, स्पष्ट कीजिए।

उ. भाव–पल्लन से लेखन शक्ति का विकास होता है। भाव–पल्लवन की प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण होते हैं :

- किसी उक्ति, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि को समझना।
- उक्ति, सूक्ति आदि के मूल भाव को स्पष्ट करने वाले विचार बिंदुओं को लिखना।
- इन बिंदुओं को क्रमवार रखना।
- इन बिंदुओं का विस्तार करना और
- मूल भाव का प्रभावपूर्ण शैली में वर्णन करना।

5 अंक क प्रश्न

प्र.1. भाव–पल्लवन और भावार्थ में अंतर बताइए।

उ. भाव–पल्लवन और भावार्थ में काफ़ी अंतर है। भावार्थ में भाव–विस्तार की एक सीमा होती है, जबकि भाव–पल्लवन की सीमाएँ नहीं होती। भावार्थ में किसी भी उक्ति अथवा सूक्ति के केंद्रीय भाव को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें मूलभाव को व्यक्त करना होता है, उसे विस्तार देना नहीं होता। भाव–पल्लवन में सूत्र वाक्य सूक्ति का विवेचन तब तक किया जा सकता है, जब तक लेखक का मूल मंतव्य पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो जाता। उसे कई अनुच्छेदों में लिखा जा सकता है। भावार्थ में सूक्ति का मूल अर्थ देने की अपेक्षा की जाती है। भावार्थ में मूल भावों को लिया जाता है, जबकि भाव–पल्लवन में मूल और गौण दोनों भावों को दिया जाता है। इस प्रकार 'भावार्थ' सीमित शब्दों में केंद्रीय भाव को स्पष्ट करता है।

प्र.2. भाव–पल्लवन, संक्षेपण और निबंध लेखन के विषयों में मुख्य अंतर क्या होता है?

उ. भाव–पल्लवन एक प्रकार से संक्षेपण का विलोम है। संक्षेपण का अर्थ होता है – संक्षिप्त या छोटा रूप। इसमें विस्तृत विषय को संक्षिप्त रूप दिया जाता है। भाव–पल्लवन का अर्थ होता है – विस्तृत या बड़ा रूप। इसमें किसी उक्ति या विचार–सूत्र का सविस्तार विवेचन किया जाता है। संक्षेपण किसी बड़ी रचना के मूलभूत अर्थ या केंद्रीय भाव को पकड़ने की कोशिश करता है। इसके विपरीत भाव–पल्लवन मूल अर्थ या केंद्रीय भाव को सविस्तार समझाने का प्रयत्न करता है।

भाव–पल्लवन की जानकारी प्राप्त करने पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह तो एक छोटा निबंध है। वास्तव में भाव–पल्लवन एक लघु निबंध होता है किंतु इस पर निबंध के नियम लागू नहीं होते। निबंध के विषयों की सीमा नहीं होती जबकि भाव–पल्लवन के अंतर्गत सभी प्रकार के विषय नहीं आते। निबंध में उद्धरणों, दृष्टांतों, प्रसंगों आदि का बहुल प्रयोग हो सकता है, जबकि भाव–पल्लवन में बहुत कम। इस प्रकार भाव–पल्लवन को निबंध नहीं कहा जा सकता।

7 अंक के प्रश्न

प्र.1. भाव–पल्लवन और व्याख्या में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।

उ. भाव–पल्लवन में किसी उक्ति, सूक्ति, कहावत आदि में निहित भाव का विस्तार किया जाता है, किंतु इस विचार में छिपे हुए भाव को स्पष्ट करना हमारा मनुष्य उद्‌देश्य होता है न कि उस पर टीका–टिप्पणी या समीक्षा या आलोचना करना।

किसी उक्ति की व्याख्या करते समय उसमें निहित भाव को विस्तार से स्पष्ट किया जाता है, उसमें टीका–टिप्पणी या आलोचना करने की पूरी छूट होती है। इसमें भाव–पल्लवन की सीमाएँ नहीं होती। इसमें किसी उक्ति या सूत्र के पक्ष या विरोध में अपना मत प्रकट किया जा सकता है। उसके विभिन्न पक्षों पर उसके गुणावगुणों पर चर्चा करते हुए ऐसे निष्कर्ष पर भी पहुँच सकते हैं, जो इसमें निहित भाव के विपरीत भी हो सकता है।

इस प्रकार भाव–पल्लवन करते समय उक्तियों, सूक्तियों आदि में केंद्रीय भाव को स्पष्ट करने के लिए उसका विस्तार किया जाता है जब कि व्याख्या में विस्तार से विवेचन के साथ–साथ टीका–टिप्पणी या आलोचना भी की जाती है। व्याख्या में संदर्भों का उल्लेख भी किया जाता है और उदाहरण भी दिये जाते हैं, जबकि भाव–पल्लवन में यह छूट नहीं है।

प्र.2. भाव–पल्लवन किसे कहते हैं? इसका अभ्यास करना क्यों आवश्यक है?

उ. भाव–पल्लवन का अर्थ है – किसी भाव का विस्तार करना। इसमें किसी उक्ति, वाक्य, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि के अर्थ को विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार की आवश्यकता तभी होती है, जब मूल भाव संक्षिप्त, सघन या जटिल हो। भाषा के प्रयोग में कई बार ऐसी स्थितियाँ आती है, जब हमें किसी उक्ति में निहित भावों को स्पष्ट करना पड़ता है। इसी को भाव–पल्लवन कहते हैं।

भाषा व्यवहार में निपुण होने के लिए हमें भाव–पल्लवन का अभ्यास करना आवश्यक है, जिससे हम ऐसी अभिव्यक्तियों में निहित भाव का इस प्रकार विस्तार करें कि सुनने वाले या पढ़ने वाले व्यक्ति को अपनी बात समझा सकें। इसे विस्तारण, भाव–विस्तारण, पल्लवन आदि भी कहा जा सकता है।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'नर–नारी' एक गाड़ी के दो पहिए।

उ. भारत एक विकासशील देश है जहाँ स्त्री और पुरुष दोनों को समानता प्रदान की गई है। वर्तमान युग के प्रत्येक क्षेत्र में नर–नारी समानता के लिए विवाद के बावजूद परिणाम प्रत्यक्ष रूप में हमारे सामने है। देश चलाना हो या अंतरिक्ष यात्रा हो या फिर घर–गृहस्थी की मिसाल नर–नारी दोनों के योगदान के बिना ये कार्य संभव नहीं हैं।

जीवन का दूसरा नाम संघर्ष है। नर हो या नारी हर एक को अपने अधिकार प्राप्ति एवं कर्तव्य निर्वाह के लिए निरंतर संघर्ष करना आवश्यक है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, कदम–कदम

पर नर–नारी का अपना–अपना विशेष और अलग महत्व है। आज की परिस्थितियों के अनुसार यदि किसी परिवार में स्त्री का नौकरी करने घर के बाहर जाना तथा पुरुष का घर बैठे अपना काम करते हुए घर बार संभालना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। घर के बड़े–बूढ़े और अन्य बुजुर्ग भी इस परिस्थिति को सहर्ष स्वीकारते हैं। आजकल के कार्पोरेट जीवन में भी महिला सी. ई.ओ. के अधीनस्थ कई पुरुषों का समन्वयपूर्वक काम करना नर–नारी के महत्व को दर्शाता है। एक के रुकने पर दूसरा असहाय हो जाता है। अतः जीवन रूपी गाड़ी को चलाने के लिए नर–नारी रूपी दोनों पहियों का समान महत्व है, क्योंकि वे एक–दूसरे के लिए पूरक और उपयोगी हैं।

प्र.2. 'अधिकार नहीं कर्तव्य बड़ा है।'

उ. मानव जीवन में अधिकार और कर्तव्य दोनों का अत्यंत महत्व है। जीवन में कभी अधिकार और कर्तव्य को लेकर किसी संघर्ष से गुजरना पड़े तो साधारण तौर पर मनुष्य अधिकार प्राप्त होने के बावजूद कर्तव्य के आगे झुक जाता है। यह झुकाव मानवता की ओर वह इशारा है जिसके अंतर्गत मनुष्य त्याग या बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटता।

कर्तव्य और त्याग में गहरा संबंध है। सैनिक देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाते–निभाते अपने प्राण तक त्याग देता है। यद्यपि उस सैनिक को यह अधिकार दिया गया था कि चाहे तो वह लड़ाई का मैदान छोड़ सकता है। मातृभूमि का ऋण चुकाने के लिए वह सैनिक अपने अधिकार को भूल कर कर्तव्य पूरा करने के लिए जीवन का बलिदान देता है। कर्तव्य और अधिकार में गहरा संबंध होते हुए भी काफ़ी अंतर है। कर्तव्य के लिए अधिकार छोड़ा जा सकता है लेकिन अधिकार के लिए कर्तव्य नहीं भूला जा सकता, क्योंकि कर्तव्य पालन से व्यक्ति को आत्मिक सुख और शांति मिलती है। कभी–कभी जीवन में निःस्वार्थ बनकर कर्तव्यपरायणता छोड़ अधिकारपूर्वक कार्य करने की परिस्थितियों से भी गुरजना पड़ता है। किंतु लोक–कल्याण के हित में कर्तव्य ही अधिकार से बड़ा होता है।

प्र.3. 'मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे।'

उ. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। शास्त्रों के अनुसार कई योनियों में जन्म लेने के बाद मनुष्य मानव जीवन प्राप्त करता है, जिसे सबसे उत्तम माना गया है।

वर्तमान युग में परिस्थितियों से जूझते–जूझते मनुष्य अपनी उत्तमता खो रहा है। अपने स्वार्थ के लिए आज का मनुष्य कोई भी कार्य करने के लिए तत्पर है। भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, झूठ का सहारा लेना, चल–अचल संपति के लिए जान लेने पर उतारू होना आदि जघन्य कार्य प्रत्येक समाज में प्रचलित है। ऐसा कार्य करने वाला मनुष्य उस जंगली जानवर के समान है जो बर्बरता के अतिरिक्त कुछ और नहीं जानता। जंगली जानवरों में भावात्मकता न होने के कारण दहाड़ने या चीर–फाड़ करने में वह थोड़ा भी विचलित नहीं होता। आज का मनुष्य भी इन प्रवृत्तियों से ग्रस्त होने के कारण मनुष्यता से दूर हो चुका है। वह केवल अपने स्वार्थ की

पूर्ति को ही जीवन का उद्देश्य मानता है। वास्तव में वहीं मनुष्य मानव कहलाने योग्य है जो कर्तव्य परायणता की भावना रखते हुए दूसरों के लिए त्याग और बलिदान देता है। दूसरों के दुःखों को समझकर अपनी भागीदारी का प्रदर्शन करता है।

प्र.4. 'चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात'

उ. जैसे सृष्टि का क्रम है रात के बाद दिन और दिन के बाद रात का आना। ठीक उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में सुख–दुःख का क्रम बना हुआ है। जिस प्रकार रात और दिन एक साथ नहीं आते उसी प्रकार हमारे जीवन में सुख और दुःख भी एक साथ कभी नहीं आते। मनुष्य इस बात का अनुभव दिन–प्रतिदिन करता है। इतने अनंत अनुभव के बावजूद भी मनुष्य सुख के समय यह बात भूल जाता है कि सुख का काल पूरा होने पर दुःख का आना निश्चित है। अतः सुख के समय अधिक गर्व करना या इतराना नहीं चाहिए, क्योंकि यह सुख तो अल्पकालीन है जो अपना समय बिताकर हमें दुःखों से घिरा, छोड़कर चला जाता है। इसीलिए सुख उस चाँदनी के समान है जो चंद्रमा के घटने पर घटती जाती है और घटते– घटते अंधेरी रात का रूप धारण कर लेती है। जिस तरह चार दिन की चाँदनी पर इतराया नहीं जा सकता उसी प्रकार सुख की अस्थिरता पर घमंड नहीं किया जा सकता। सुख या दुःख की अवस्था में सामान्य रहना ही बुद्धिमानी है।

प्र.5. 'करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।'

उ. यह उक्ति अभ्यास के महत्व को दर्शाती है। निरंतर अभ्यास द्वारा किसी भी कर्म में दक्षता प्राप्त की जा सकती है।

साधारणतः यह देखा जाता है कि कोई भी सफल मनुष्य अभ्यास के कारण ही अपने कार्यों में उँचाइयों के चरम बिंदु पर पहुँचता है। छात्र निरंतर अभ्यास के फलस्वरूप उत्तीर्णता प्राप्त करते हैं। चाहे डाक्टर, वकील, अध्यापक, किसान, व्यापारी, इंजीनियर, मेकानिक, ड्राइवर, दर्जी, सुनार, बड़े से बड़े अधिकारी या पुजारी सभी अभ्यास करते–करते ही अपने व्यवसाय में निपुणता प्राप्त करते हैं। अभ्यास में इतनी शक्ति होती है कि मंदबुद्धि मनुष्य भी किये गये अभ्यास के क्षेत्र में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता चला जाता है। अभ्यास इतना शक्तिशाली होता है कि कोई भी मनुष्य स्वयं को सक्षम बना सकता है। कुँए से पानी सेंतने के अभ्यास के कारण जब कुँए की निर्जीव पत्थर से बनी दीवार पर रस्सी की रगड़ के निशान पड़ जाते हैं तब सजीव मनुष्य की बुद्धि का अपनी मंदता मिटाकर कुशाग्र बनना निश्चय है।

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. भाव–पल्लवन की प्रक्रिया की जानकारी दीजिए।

उ. भाव–पल्लवन की प्रक्रिया इस प्रकार होती है :

- सर्वप्रथम किसी दी गई मूल उक्ति, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि पर थोड़ी देर तक सोचें ताकि मूलभाव अच्छी तरह समझ में आ जाए।
- मूल भाव को स्पष्ट करने और प्रभावपूर्ण बनाने वाले अन्य भावों या विचार बिंदुओं को इकट्ठा करें।
- इनको संकेत के रूप में एक पृष्ठ पर लिख लें ताकि कोई विचार छूट न जाए।
- इसके बाद इन विचार–बिंदुओं को एक–एक करके क्रमानुसार लिखें। यदि संभव हो तो प्रत्येक भाव या विचार अलग–अलग अनुच्छेद में भी दे सकते हैं।
- मूल भाव का विस्तार करते समय उसकी पुष्टि में कोई उदाहरण या तथ्य देने की आवश्यकता पड़ती है, तो वह भी दिया जा सकता है।
- भाव–पल्लवन की भाषा सरल और सुबोध होनी चाहिए ताकि भाव अच्छी तरह स्पष्ट हो सके।
- जहाँ तक संभव हो, वाक्य छोटे और अलंकारपूर्ण भाषारहित हो।
- भाव–पल्लवन अन्य पुरुष शैली में लिखा जाना चाहिए।
- प्रत्येक बात को विस्तारपूर्वक लिखने का प्रयास करना चाहिए।
- इसमें किसी अनावश्यक या अप्रासंगिक बात का उल्लेख नहीं होना चाहिए। केवल वही बातें रखी जाएँ जो मूल भाव के लिए उचित और अपेक्षित हो।
- भाव–पल्लवन को लिख लेने के बाद इसको एक–दो बार अवश्य पढ़ना चाहिए, ताकि कोई विचार बिंदु या बात रह गई हो तो उसे जोड़ा जा सके और यदि उसमें कोई दोष हो तो दूर किया जा सके।

प्र.2. निम्नलिखित उक्तियों का भाव–पल्लवन कीजिए।

उ. 'सबे दिन जात न एक समान।'

इसका अर्थ है – मानवजीवन परिवर्तनशील है क्योंकि परिवर्तन सृष्टि का अटल नियम है। वर्तमान समय में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तेज़ी से परिवर्तन आते दिखाई देते हैं। यह समाज की परिवर्तनशील प्रकृति का प्रभाव है। आज हम विश्वीकरण की ओर बढ़ते जा रहे हैं अतः एक समाज /देश को सरलतापूर्वक प्रभावित कर रहा है। यह प्रकृति की एक सहज प्रक्रिया है।

उपरोक्त दर्शायी परिस्थितियों से साधारण मनुष्य भी अछूता नहीं रह सकता। जीवन के चलते मानव अपने दैनिक जीवन में निरंतर बदलाव का अनुभव करता है। इस उक्ति में

सुख–दुःख को परिवर्तन का आधार माना जा सकता है। जिसके अनुसार किसी भी मनुष्य के जीवन में सभी दिन एक समान नहीं होते। सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख का चक्र ही जीवन में परिवर्तन का कारण है। अथक परिश्रम द्वारा गरीबी पर काबू पाकर मनुष्य अपने जीवन के दुःखों (गरीबी) का अंत कर सकता है। किंतु इस सुख–दुःख के चक्र में मनुष्य को अति प्रसन्न या अति निराशावान न होकर आने वाले बदलाव को सहने के लिए स्वयं को संजोये रखना चाहिए क्योंकि जीवन के सभी दिन एक समान नहीं होते।

21. प्रतिवेदन, टिप्पण और प्रारूपण

21.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. सरकारी कार्यालयों में कामकाज निपटान की कई पद्धतियों में प्रतिवेदन, टिप्पण और प्रारूपण लेखन की विशेष पद्धतियाँ हैं।
2. प्रतिवेदन का सामान्य अर्थ है – किसी प्रकरण, घटना या स्थिति–विशेष की जानकारी (रिपोर्ट) प्रस्तुत करना।
3. प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का कार्य एक व्यक्ति भी कर सकता है और अनेक व्यक्तियों से बनी समिति भी।
4. प्रतिवदेन तैयार करते समय प्रतिवेदक जनहित को ध्यान में रखता है।
5. प्रामाणिकता, तथ्यात्मकता, निष्पक्षता और स्पष्ट–सरल भाषा, प्रतिवेदन की प्रमुख विशेषताएँ है।
6. प्रतिवेदन तैयार करते समय उसकी प्रक्रिया को ध्यान में रखना चाहिए।
7. कार्यालयों में संवाद टिप्पण के माध्यम से होता है।
8. बाहर से आए पत्रों या किसी भी समस्या के समाधान आदि पर निर्णय पर पहुँचने के लिए टिप्पण लिखा जाता है।
9. टिप्पण दो प्रकार का होता है – नेमी टिप्पण, अन्य नियमित टिप्पण।
10. टिप्पण लेखन के पाँच चरण होते है :
    - पत्र की विषयवस्तु
    - पत्र की माँग
    - माँग का आधार
    - सरकारी नियमों के अनुसार माँग को पूरा किया जा सकता है अथवा नहीं
    - माँग का औचित्य सहायक के सुझाव

    विषय महत्वपूर्ण होने पर अधिकारी अपने स्तर पर भी कोई टिप्पण शुरू कर सकता है।
11. टिप्पण की भाषा सरल और स्पष्ट होती है। अन्य पुरुष शैली का प्रयोग होता है।
12. प्रारूपण का अर्थ है किसी भी पत्र का कच्चा रूप तैयार करना।
13. अधिकारी द्वारा अनुमोदन के बाद प्रारूप ही पत्र बन जाता है। चूँकि प्रारूप पत्रों का पूर्व रूप है इसलिए उसमें पत्रों की सारी विशेषताएँ होती हैं।

21.1. प्रश्न–उत्तर

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. प्रतिवेदन क्या है?

उ. प्रतिवेदन का सामान्य अर्थ है – किसी प्रकरण, घटना या स्थिति – विशेष की क्रमिक जानकारी या रिपोर्ट प्रस्तुत करना। देश–विदेश में अनेक घटनाएँ होती रहती हैं जिनके बारे में विस्तार से जानने के लिए सभी उत्सुक रहते हैं। लेकिन उसके लिए तथ्यों की जाँच पड़ताल करनी पड़ती है जो किसी सरकारी या गैर सरकारी संस्था/एजेंसी द्वारा अथवा उसके द्वारा नियुक्त एक या एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा की जा सकती है। ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत विवरण को ही प्रतिवेदन कहा जाता है। जिस व्यक्ति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाता है, उसे 'प्रतिवेदक' कहते हैं।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. प्रतिवेदन के मुख्य तत्व क्या है?

उ. प्रतिवेदन के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं :–

1. **घटना या स्थिति विशेष** :– यह प्रतिवेदन का मुख्य तत्व है। जब किसी विवादित प्रश्न, ज्वलंत समस्या आदि पर कार्यवाही करनी हो तो प्रतिवेदन लिखा जाता है।
2. **मनोनीत प्रतिवेदन या गठित समिति की नियुक्ति** :– किसी घटना या स्थिति की संपूर्ण जानकारी के लिए किसी व्यक्ति को जिम्मेदारी सौंपी जाती है या एक समिति गठित करके मामले की सच्चाई तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है।
3. **सूक्ष्म निरीक्षण तथा जाँच पड़ताल** :– इसके माध्यम से ही समस्या की जड़ तक पहुँचना संभव होता है। समस्या के सभी पक्षों को उजागर करने के लिए यह आवश्यक है।
4. **प्रमाण तथा तथ्य** :– प्रतिवेदन की प्रामाणिकता दिये गये साक्ष्यों तथा तथ्यों पर निर्भर करती है।
5. **सुझाव तथा सिफारिशें** :– इनके माध्यम से ही प्रतिवेदक अथवा समिति अपने विचारों को अभिव्यक्त करती है।
6. **निश्चित अवधि** :– एक निश्चित अवधि में ही प्रतिवेदन को प्रस्तुत करना होता है क्योंकि कोई भी विषय सामयिक महत्व का होता है।

प्र.2. प्रतिवेदन की विशेषताएँ क्या है?

उ. प्रतिवदेन की अनेक विशेषताएँ होती हैं –

1. प्रतिवेदन में प्रामाणिकता और तथ्यात्मकता होती हैं।
2. प्रतिवेदन किसी एक विषय या घटना पर पूरी तरह केन्द्रित होता है।
3. प्रतिवेदन पूर्णतः निष्पक्ष तथा तटस्थ विवेचन पर आधारित होता है।
4. प्रतिवेदन की भाषा स्पष्ट, सरल, सहज और प्रभावी होती है।
5. प्रतिवेदन एक व्यक्ति द्वारा भी लिखा जा सकता है और समिति के द्वारा भी।

प्र.3 टिप्पण और टिप्पणी में क्या अंतर है?

उ. 'टिप्पण' अथवा 'टिप्पणी' अंग्रेज़ी शब्द नोटिंग का पर्याय है। 'टिप्पण' शब्द का सामान्य अर्थ किसी मामले में राय या सम्मति देना होता है। लेकिन कार्यालयी हिंदी में इसका अर्थ बाहर से आने वाले पत्रों या प्रशासनिक मामलों पर कार्यवाही करने के उद्देश्य से फाइल पर टिप्पण लिखना होता है। विभिन्न कार्यालयों में कर्मचारी और अधिकारी टिप्पण के माध्यम से ही आपस में संवाद करते हैं। सामान्यतः 'टिप्पणी' में सिकी विषय पर अपने विचारों को संक्षिप्त रूप में व्यक्त किया जाता है जबकि 'टिप्पण' विशेष रूप से सरकारी कार्यालयों में अधिकारियों–कर्मचारियों के आपस में अपनी बातों को संप्रेषित करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है और इसे हरे रंग की 'नोटशीट' पर ही लिखा जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'टिप्पण' और 'टिप्पणी' एक जैसे दिखते हैं पर फिर भी दोनों में अंतर है।

प्र.4. टिप्पण लेखन के प्रकारों को प्रवाह चित्र के माध्यम से दर्शाइए।

उ.

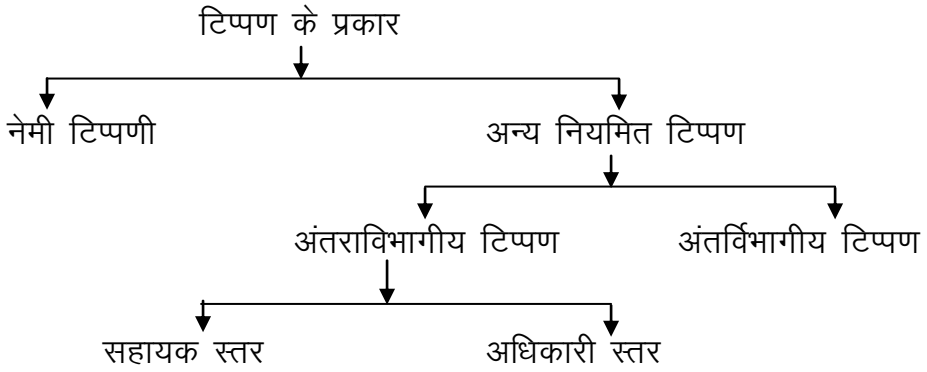

प्र.5. प्रारूपण किसे कहते हैं? इसकी प्रमुख पाँच विशेषताएँ बताइए।
(या) प्रारूपण लेखन में किन बातों को ध्यान रखना चाहिए।

उ. 'प्रारूपण' का तात्पर्य है – किसी भी पत्र के उत्तर का एक कच्चा रूप तैयार करना अर्थात् यदि किसी कार्यालय में कोई पत्र प्राप्त होता है तो उत्तर देने के लिए पत्र का एक मसौदा अर्थात् कच्चा रूप तैयार किया जाता है। दूसरे शब्दों में जब किसी कार्यालय में कोई पत्र सहायक या अधिकारी द्वारा प्रस्तुत किया जाता है तो उस पर उच्च अधिकारी का अनुमोदन लिया जाता है। अनुमोदन के पूर्व तैयार पत्र को प्रारूपण कहते हैं और इस प्रक्रिया को प्रारूपण तैयार करना कहा जाता है।

प्रारूपण की विशेषताएँ / प्रारूपण लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें।

1. प्रारूप तैयार करते समय पत्राचार के विभिन्न रूपों की जानकारी आवश्यक है।
2. प्रारूप पूर्ण और पूर्णतः विषय पर आधारित होना चाहिए।
3. प्रारूप तैयार करते समय विचारों को क्रमबद्ध ढंग से संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।
4. प्रारूप में शुद्धता, तथ्यात्मकता और सटीकता होनी चाहिए।
5. प्रारूप की भाषा पक्षपात से मुक्त, शिष्ट, स्पष्ट, सरल और सहज होनी चाहिए।

22. रामधारी सिंह 'दिनकर'

22.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. कवि ने 'परशुराम का उपदेश' कविता द्वारा देशवासियों में ओज और वीरता का भाव भरा है।
2. इस कविता का मूलभाव है – अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध आवाज़ उठाना मानव का धर्म है। अत्याचार और अन्याय सहना कायरों का काम है। मानव को प्रकृति से अनेक नैसर्गिक शक्तियों प्राप्त हुई हैं, जिनकी पहचान हो जाने पर उसकी भुजाओं में अत्यधिक बल आ जाता है कि एक–एक वीर सैकड़ों को परास्त कर पाता है। अब समय आ गया है कि प्रत्येक भारतवासी अपनी शक्ति को पहचाने और एक जुट होकर शत्रु पर टूट पड़े। इसलिए कवि देशवासियों से कहता है – 'बाहों की विभा संभालो।''
3. कविता में स्थान–स्थान पर अलंकारों, लाक्षणिक प्रयोगों और प्रतीकों के प्रयोग से कवि ने काव्य–सौदर्य को बखूबी उभारा है।

22.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में दीजिए।

(i) बहु विकल्प प्रश्न

प्र.1. 'हलचल' प्रतीक है – **(क)**

क. भावनाओं और क्रियाओं का　　ख. तेज़ बारिश का

ग. भूकंप का　　घ. पानी में पत्थर फेंकने का

प्र.2. मनुष्य में दाहकता तब उभरती है **(ख)**

क. जब बहुत गरमी पड़ती है　　ख. जब वह क्रोधित हो जाता है

ग. जब आग लग जाती है　　घ. जब वह दुःखी होता है

प्र.3. 'जो सत्य राख में समे' काव्य पंक्तियों में 'राख' प्रतीक है – **(ग)**

क. लकड़ी के बाद शेष वस्तु का　　ख. झूठ का

ग. जलकर भस्म होने का　　घ. पराजय का

प्र.4. स्वतंत्र रहना मनुष्य का _____ गुण है **(क)**

क. भीतरी　　ख. अर्जित　　ग. बाहरी　　घ. क्षणिक

प्र.5. जगत में वह जाति स्वतंत्र कभी नहीं हो सकती जो – **(ख)**

क. अन्याय का विरोध करती है और दूसरों के आगे नहीं झुकती।

ख. झुककर अन्याय के कोड़े सहती जाती है और कुछ नहीं बोलती।

ग. बिना झुके कोडे सहती जाती है पर अपनी आन को बचाए रखती है।

घ. अन्याय सहते हुए आन को बचाने की कोशिश करती है।

प्र.6. वीरों में उमंग तब उठती है जब वे – **(ख)**

क. आँधियों को आता देखते हैं। ख. शत्रु–सेना को अपनी ओर आते देखते हैं।

ग. रक्त की बजाए आँसू बहाते हैं। घ. दुश्मन को पराजित होता देखते हैं।

प्र.7. कवि के अनुसार स्वर में पावक होना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि इससे – **(ग)**

क. स्वर तेज हो जाता है। ख. स्वर जलने लगता है।

ग. स्वर में ओज आ जाता है। घ. स्वर में कर्कशता आ जाती है।

प्र.8. मस्तक पर रक्त रूपी चंदन उन्हीं को शोभित होता है, जो **(क)**

क. वीरता पूर्वक युद्ध करते हैं। ख. भैरव के पूजक है।

ग. शक्ति के उपासक हैं। घ. युद्ध में पराजित होते हैं।

प्र.9. 'वैराग्य छोड़ बाहों की विभा सँभालो' पंक्ति में कवि किसे संबोधित कर रहा है। **(ग)**

क. देशवासियों को ख. योगियों को ग. कर्मवीरों को घ. दुश्मनों को

प्र.10. 'है सकी जहाँ भी धार' प्रतीक है : **(ख)**

क. पानी की धारा का ख. मार्ग में आने वाली बाधाओं का

ग. नदी की धार के बीच में आई चट्टान का

घ. रास्ते में पड़ने वाले तालाब का

प्र.11. 'मरण के मुख पर चरण धरो रे' पंक्ति के लिए निम्नलिखित मुहावरों में जो सबसे उचित है, **(ग)**

क. ओखली में सिर देना ख. आ बैल मुझे मार

ग. जान हथेली पर रखना घ. निर्बल के बल राम

4 अंक के प्रश्न

निम्नलिखित पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए

1. सिखलायेगा वह, ऋत एक ही अनल है,
जिंदगी नहीं वह, जहाँ नहीं हलचल है।
जिनमें दाहकता नहीं, न तो गर्जन है,
सुख की तरंग का जहाँ अंध वर्णन है,
जो सत्य राख में सने, रुक्ष, रुठे हैं
छोड़ों उन को, वे सही नहीं, झूठे हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित 'परशुराम के उपदेश' नामक कविता से ली गयी है। भारत पर चीन के आक्रमण के पश्चात् कवि ने देशवासियों को संबोधित करते हुए इस कविता की रचना की है। विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से कवि देशवासियों में उमंग और उत्साह भरते हुए वीरता का भाव जगाना चाहता है।

व्याख्या :– कवि कहता है कि मानव में एक विशेष प्रकार की अग्नि है, जो शक्ति के रूप में छिपी पड़ी है। वही उसके जीवन का सत्य है। कवि उसी सत्य को खोजने के लिए मनुष्य को प्रेरित करता है। सत्य वहीं है जहाँ जीवन में हलचल है। कवि के अनुसार ऐसी हलचल के बिना कोई ज़िंदगी नहीं। इसी प्रकार वह जीवन भी व्यर्थ है जिसमें विरोधी परिस्थितियाँ, विचारों की टकराहट, जलन न हो। लोगों ने झूठ रूपी राख से सत्य रूपी अग्निशक्ति को ढक दिया है। भारत–चीनी भाई–भाई इस नारे की आड़ में चीन हमारे देश पर घात कर रहा है। उन पर विश्वास मत करो, वे झूठे हैं। ऐ देशवासियो! तुम सत्य को पहचानो और अपने जीवन की दिशा को बदलो।

विशेषता :– 'सत्य राख में सने' रूपक अलंकार है। खड़ीबोली हिंदी का प्रयोग है।

2. वैराग्य छोड़ बाहों की विभा संभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल–शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी के सदृश्य जियो रे!

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित 'परशुराम के उपदेश' नामक कविता से ली गयी हैं। कवि वैराग्य को छोड़कर वीर बनने का उपदेश देते हैं।

व्याख्या :– कवि देशवासियों से कहता है – तुम वैराग्य छोड़ो, अपनी भुजाओं की शक्ति को पहचानो अपना मार्ग खोजो, दुर्गम सीमाओं को पार करो और अपना लक्ष्य प्राप्त करो। ऐ देशवासियों! योगी नहीं, वरन् विजयी के समान जीना सीखो।

विशेषता :– अंतिम पंक्ति में उपमा अलंकार का प्रयोग है। खडीबोली हिंदी का प्रयोग है।

3. छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये।
दो बार नहीं यमराज कण्ठ धरता है,
मरता है जो, एक ही बार मरता है।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित 'परशुराम के उपदेश' नामक कविता से ली गयी हैं। कवि वीरतापूर्वक मरने किंतु अन्याय के सामने कभी नहीं झुकने की सलाह देते हैं।

व्याख्या :– कवि देशवासियों को संबोधित करते हुए कहता है कि व्यक्ति को अपनी शान, मान और आन नहीं छोड़नी चाहिए। आकाश क्यों न फट पड़े अन्याय की बात मत मानो। यमराज

एक बार ही गर्दन पकड़ कर ले जाते हैं, तो अतः एक बार ही मरना है तो वीरतापूर्वक मृत्यु का वरण करो।

विशेषता :– आकाश फट पड़ना (व्योम फट जाए) मुहावरे का प्रयोग है। भाषा–खड़ीबोली हिंदी, संस्कृत शब्दों का ज्यादा प्रयोग है।

4. स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि–घात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे!
जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे!

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित 'परशुराम के उपदेश' नामक कविता से ली गयी। कवि मानव की मौलिक प्रवृत्ति, स्वातंत्र्य के बारे में समझाते हैं।

व्याख्या :– सभी मानव स्वतंत्र रहना चाहते हैं। यह उनकी मौलिक प्रवृत्ति है। संसार में वही जाति स्वतंत्र रहती है, जिसमें स्वाभिमान है, जो बिना झुके मुसीबतों की चोटे सह लेती है। ऐ देशवासियो! तुम वीरता छोड़कर दूसरों का पैर मत पकड़ो। कठिनाइयाँ सहते हुए अपनी आन बचाए रखो।

विशेषता :– संस्कृत निष्ट हिंदी का प्रयोग है – उदा : अशनि, स्वाधीन, वीरत्व, स्वातंत्र्य

5. आधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती है,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती है,
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।
पकड़ो अयाल, अन्धड़ पर उछल चढ़ो रे।
किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे।

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित 'परशुराम के उपदेश' नामक कविता से ली गयी हैं। कवि शत्रु की गर्दन पकड़कर शत्रुसेना पर टूट पड़ने का आग्रह करते हैं।

व्याख्या :– कवि कहता है कि वह देश जहाँ के लोगों में कठिनाइयों के आने पर उत्साह न जागे, जहाँ छातियाँ संगीनों के वारों से डर जाएँ, जहाँ के नागरिक खून बहाने के बदले आँसू बहाएँ, वे कभी स्वतंत्र नहीं रह सकते। अतः देशवासियो, तुम शत्रु की गर्दन पकड़कर शत्रुसेना पर टूट पड़ो। इस क्रम में घायल हो या मृत्यु प्राप्त करो फिर भी परवाह न करो।

विशेषता :– प्रतीकों का प्रयोग है। जैसे आँधियाँ – आँधी की भाँति विशाल शत्रु सेना 'अन्धड़' – आँधी रूपी शत्रु का प्रतीक है।

6. स्वर में पावक यदि नहीं, वृथा वन्दन है,
वीरता नहीं, तो सभी विनय क्रन्दन है,
भ्रामरी उसी का करती अभिनन्दन हैं।
दानवी रक्त से सभी पाप धुलते हैं,
ऊँची मनुष्यता के पथ भी खुलते हैं।

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित 'परशुराम के उपदेश' नामक कविता से ली गयी हैं। इसमें कवि वीरता के गुणों का वर्णन करते हैं।

व्याख्या :– कवि कहते हैं यदि वीर की वाणी में ओज नहीं तो उसे वीर कहना शोभा नहीं देता। मनुष्य में विनम्रता के साथ–साथ वीरता अनिवार्य है। नहीं तो उसकी वाणी रूदन की तरह लगेगी। वीर व्यक्ति वही सुंदर है जिसके मस्तक पर शत्रु–प्रहार के चिह्न, रक्त–रूपी चंदन हो। अन्यायी शत्रु का संहार करना, खून बहाना, पुण्य का कार्य है उसके रक्त से पाप धुलेंगे। इसी कार्य से आदर्श समाज का विकास हो एकेगा।

विशेषता :– 'रक्त–चंदन' रुपक अलंकार है, संस्कृत निष्ट खड़ीबोली हिंदी का प्रयोग है।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्र.1. योगी और विजयी की पाँच–पाँच विशेषताएँ बताइए।

उ. योगी की विशेषताएँ : योग करना या ध्यान में लीन रहना, निर्मोही रहना, असांसारिक रहना, अहिंसावादी रहना, दयालु एवं कोमल भावना रखना। विजयी की विशेषताएँ : दृढ़ निश्चयी, निर्भीक, वीर, उत्साही, परिश्रमी रहना।

प्र.2. दानवी–रक्त से पाप धुलने की कल्पना कवि ने क्यों की है?

उ. अनाचारी, अन्यायी व्यक्ति को कवि ने दानव की संज्ञा दी। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन काल में पाप और अपराध कर्म से पूरे वातावरण को दूषित कर देता है। ऐसे व्यक्ति की हत्या से जो खून बहेगा, उसी से उसके द्वारा किए गए पाप धुलेंगे।

प्र.3. कवि देशवासियों को योगी के स्थान पर विजयी बनने का संदेश क्यों दे रहा हैं?

उ. कवि का विचार है कि योगी का अहिंसा का मार्ग हमें योग और वैराग्य की ओर ले जाता है। भारत पर चीन ने आक्रमण किया है, इसलिए देशवासी यहाँ अपने वैराग्य छोड़कर अपनी भुजाओं की शक्ति को पहचाने, वीर एवं विजयी बने।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. परशुराम का उपदेश कविता में व्यक्त देश प्रेम और वीरता का वर्णन कीजिए।

उ. **कवि परिचय** : 'परशुराम का उपदेश कविता' के कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 1908 ई. में बिहार राज्य के मुँगेर जिले के सिमरिया घाट ग्राम में हुआ। आपकी लगभग 50

कृतियाँ प्रकाशित है। उनमें कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी और उर्वशी प्रमुख है। आपकी गद्य रचनाओं में 'संस्कृति के चार अध्याय प्रमुख है। आपका देहावसान सन् 1974 में हुआ।

विषयवस्तु : भारत पर चीन के आक्रमण के पश्चात् कवि ने देशवासियों को संबोधित करते हुए इस कविता की रचना की है। कवि कहते है – तुम वैराग्य छोगे, अपनी भुजाओं की शक्ति को पहचानो अपना मार्ग खोजो, योगी नहीं, अपितु विजयी के समान जीना सीखो। व्यक्ति को अपनी शान, मान और आन नहीं छोड़नी चाहिए। उन्होंने अन्याय और अनीति के आगे कभी नहीं झुकने के लिए कहा है। उनका कहना है कि जीवन में मरना है तो शान से वीरता पूर्वक मृत्यु का वरण करो। ऐ देशवासियों। तुम वीरता छोडकर दूसरों के पैर मत पकड़ो। कठिनाइयाँ सहते हुए अपनी आन बचाए रखो।

जहाँ के लोगों में कठिनाइयों के आने पर उत्साह न जगे, जहाँ के नागरिक आँसू बहाए वे कभी स्वतंत्र नहीं रह सकते। अतः तुम शत्रु की गर्दन पकड़कर शत्रुसेना पर टूट पड़ो। इस क्रम में तुम घायल हो या मृत्यु प्राप्त करो फिर भी परवाह न करो। कवि वीरता के गुणों का वर्णन करते हुए कहते है, यदि वीर की वाणी में ओज नहीं तो उसे वीर कहना शोभा नहीं देता। मनुष्य में विनम्रता के साथ–साथ वीरता अनिवार्य है। नहीं तो उसकी वाणी रूदन की तरह लगेगी। वीर व्यक्ति वही सुंदर है, जिसके मस्तक पर शत्रु–प्रहार के चिह्न, रक्त–रूपी चंदन हो। अन्यायी शत्रु का संहार करना पुण्य का कार्य है उसके रक्त से पाप धुलेंगे और आदर्श समाज का निर्माण हो सकेगा।

विशेषताएँ :

1. रूपक, उपमा अलंकारों का प्रयोग है।
2. संस्कृत प्रधान हिंदी का प्रयोग है।
3. कविता में पूर्णतया देशप्रेम और वीरता का वर्णन है।

23. गजानन माधव मुक्तिबोध

23.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. 'मुझे कदम–कदम पर' कविता में बताया गया है कि चौराहे मिलना बहुत अच्छा है। ये रास्ते में संकट बनकर नहीं, बल्कि विकल्प बनकर हमारे सामने आते हैं यानी हमारे समक्ष जितने रास्ते होंगे, उतने ही विकल्प होंगे और हम उनमें से जो भी विकल्प चुनेंगे वह अपने आप में अनेक अन्य विकल्प लिए हुए होंगा। अतः जीवन के लिए किसी भी अनुभव को व्यर्थ नही समझना चाहिए। सभी का अपना महत्व होता है।
2. आज के रचनाकार की समस्या विषयों की कमी नहीं है। विषय तो सड़क पर, दफ्तरों में या घर पर भी उपलब्ध हो सकते हैं। बल्कि विषय तो अनेकानेक हैं पर उनका चुनाव करना अपने आप में एक गंभीर और चुनौती भरा कार्य है।
3. उस कविता में कवि का दृष्टिकोण व्यवहारवादी है।
4. कविता में कई स्थानों पर पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग है। अपनी बात अस्पष्ट रूप से कहने के लिए कवि ने प्रतीकों का प्रयोग किया है।

23.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

बहु विकल्प प्रश्न

प्र.1. कविताएँ मुस्कराकर लाग डाँट करती हैं, पंक्ति का अर्थ है कविताएँ – **(घ)**

क. छेड़खानी करती हैं
ख. मुस्कराकर खिल्ली उड़ाती है
ग. पीछे–पीछे लग जाती है।
घ. न लिखे जाने का उलाहना देती है

प्र.2. 'मुझे कदम–कदम पर' कविता में 'चौराहा' शब्द प्रतीक है – **(ग)**

क. चार रास्तों का
ख. बाज़ार के बीचों–बीच भटकने का
ग. विकल्पों की अधिकता का
घ. कुछ समझ में न आने का

प्र.3. अनेक राहे देखकर कवि क्या करना चाहता है –

उ. सभी राहों से होकर गुजरना

प्र.4. कविताएँ मुस्कराकर प्यार भरी बातें किससे क्यों करना चाहती है?

उ कवि से, मुखरित होने के लिए

प्र.5. 'प्रत्येक छाती में एक अधीर आत्मा का निवास है।' ऐसा कवि क्यों मानता है?

उ जिससे बात कीजिए वही अनेक दुख भरी दास्तान सुनाने लगता है।

प्र.6. कविताएँ मुस्कराकर लाग–डाँट करती है।

प्यार की बात करती हैं।

क्विता की उपर्युक्त पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

उ. मानवीकरण

4 अंक के प्रश्न

लघु उत्तरात्मक प्रश्न :

(i) संदर्भ सहित व्याख्या :

1. मुझे कदम–कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहें फैलाए।
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटतीं
व मैं उन सब पर से गुज़रना चाहता हूँ,
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने अपने .....
सब सच्चे लगते हैं,
अजीब–सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ,
जाने क्या मिल जाए।

संदर्भ : – मुझे कदम–कदम पर शीर्षक कविता 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' नामक कविता – संग्रह से ली गई है। इसके रचनाकार श्री गजानन माधव मुक्तिबोध हैं। इन पंक्तियों में कवि रचनाकार की कठिनाईयों को हमारे सामने रखते हैं।

व्याख्या :– कवि जब भी साहित्य का सृजन करते हैं उनके सामने विषयों का विकल्प रहता है। कवि चिंतन प्रक्रिया प्रारंभ करता है तो उसे सौ राहें निकलती नज़र आती है। कवि उन सभी राहों से गुज़रना चाहता है, उन सभी के अनुभव प्राप्त करना चाहता है।

विशेषता :– प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग है। यहाँ 'चौराहा' विकल्पों का प्रतीक है।

2. मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर–एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है।
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में

महाकाव्य पीड़ा है
पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ,
इस तरह खुद को ही दिए–दिए फिरता हूँ,
अजीब है ज़िंदगी।
बेवकूफ बनने के खातिर ही
सब तरफ अपने को लिए–लिए फिरता हूँ,

संदर्भ :– 'मुझे कदम–कदम पर' शीर्षक कविता 'चाँद का मुँह टेढा है' नामक कविता–संग्रह से ली गई है। इसके रचनाकार श्री गजानन माधव मुक्तिबोध हैं। कवि स्वयं की बेवकूफी की बात कहता है।

व्याख्या :– कवि कहता है कि उसे इस बात का भी भ्रम होता है कि सड़क पर पड़ा हुआ साधारण–सा दिखने वाला पत्थर भी कहीं हीरा तो नहीं अर्थात् मूल्यवान तो नहीं। प्रत्येक प्राणी के वक्षस्थल में एक अधीर आत्मा विद्यमान है। हर मुस्कुराते चेहरे में प्रेम की निर्मल धारा है। यह भी भ्रम होता है कि हर व्यक्ति के अंतर्मन में बहुत पीड़ा है। कवि कहते है सभी लोग मुझे बेवकूफ समझकर ठगते हैं, पर मुझे ठगे जाने में कोई परेशानी नहीं है और उसमें अत्यधिक खुशी है।

विशेषता :– अपनी बात पर बल देने के लिए कहीं–कहीं शब्दों का पुनरुक्ति की गयी है – दिए–दिए, लिए–लिए, जो पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

3. कहानियाँ लेकर और
मुझको कुछ देकर ये चौराहे फैलते
जहाँ ज़रा खड़े होकर
बाते कुछ करता हूँ
उपन्यास मिल जाते।

संदर्भ :– मुझे कदम–कदम पर शीर्षक कविता चाँद का मुँह टेढा है नामक कविता संग्रह से ली गई है। इसके रचनाकार श्री गजानन माधव मुक्तिबोध है। कवि जीवन के अनुभव को उपन्यास की तरह विस्तृत होते जाने बनने की बात करते है।

व्याख्या :– समाज के सभी व्यक्तियों के अनुभवों को अपने साथ कहानियों के रूप में संजोकर जब कवि आगे बढ़ता है, तो इतनी सामाग्री एकत्रित हो जाती है जिससे एक उपन्यास की रचना की जा सके।

विशेषता :– लय और प्रवाह मुक्त छंद मुक्त शैली का प्रयोग है।

4. और मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि

कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है।

संदर्भ :– 'मुझे कदम–कदम पर' शीर्षक कविता 'चाँद का मुँह टेढा है' नामक कविता संग्रह से ली गई है। इसके रचनाकार श्री गजानन माधव मुक्तिाबेध है। कवि जीवन अनुभव या रचना–विषयों की अधिकता की बात करते है।

व्याख्या :– आज रचनाकार के पास विषयों का अभाव नहीं है। विषयों की संख्या बहुत अधिक है, परंतु समस्या केवल सही और उपयुक्त चुनाव की है। सही विषय का चुनाव करने का काम रचनाकार के लिए बहुत कठिन कार्य है।

विशेषता :– बोल–चाल की सरल भाषा का प्रयोग है।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्र.1. कवि की दृष्टि में आज के लेखक की परेशानी क्या है?

उ. कवि की दृष्टि में आज के लेखक के पास विषयों का अभाव नहीं है। बल्कि विषयों की संख्या बहुत अधिक है, परंतु समस्या केवल सही और उपयुक्त चुनाव की है। सही विषय का चुनाव करने का काम रचनाकार के लिए बहुत कठिन कार्य है।

प्र.2. 'मुझे कदम–कदम पर' कविता की भाषा पर उदाहरण सहित टिप्पणी लिखिए।

उ. 1. कविता में बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिए, 'मुझे
कदम–कदम पर
चौराहे मिलते हैं बाँहें फैलाए।'

2. एक ही शब्द का दो–दो बार प्रयोग करके अपनी बात पर बल देने का प्रयत्न हुआ है। भाषा की दृष्टि से यह पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार हैं।

जैसे : सौ–सौ, रोज़–रोज़, देख–देख, लिए–लिए

3. प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग है। जैसे – चौराहा विकल्पों का प्रतीक है। 'पत्थर' आम मनुष्य और चमकता हीरा। विशिष्ट अनुभव का प्रतीक है।

4. लय और प्रवाह युक्त छंद मुक्त शैली का प्रयोग है।

5. उर्दू शब्दों का अधिक प्रयोग है। जैसे – राहें, गुजरना, तजुर्बे, ज़िंदगी, खातिर। वही तत्सम शब्दों का भी प्रयोग है। जैसे – सुस्मित, विमल सदानीरा, वाणी, प्रसन्नचित अश्रुपूर्ण आदि।

प्र.3. कवि ने चौराहे को अच्छा क्यों माना है?

उ. कवि के अनुसार 'चौराहे' लिखने के विकल्प है ये विकल्प नित्य–प्रतिदिन कवि को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यदि कवि एक विकल्प पर चिंतन आरंभ करता है, तो अन्य अनगिनत

विकल्प उसके समक्ष प्रकट होने लगते हैं। यह साहित्य रचने के लिए शुभ संकेत है इस लिए कवि चौराहे को अच्छा मानते हैं।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'मुझे कदम–कदम पर' कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।

(या)

'मुझे कदम–कदम पर' कविता का सारांश लिखिए।

उ. **कवि परिचय** : 'मुझे कदम–कदम पर' कविता के कवि श्री गजानन माधव मुक्तिबोध नयी कविता के विशिष्ट कवि है। मुक्तिबोध का जन्म ग्वालियर ज़िले में सन् 1917 में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। मूलतः मराठी भाषी होते हुए भी प्रयोगवाद और नई कविता के कवियों में आप प्रमुख और विशिष्ट कवि है। अपकी कविताएँ पहली बार 'तार सप्तक' में प्रकाशित हुई।

'चाँद का मुँह टेढा है' भूरी–भूरी खाक धूल, 'एक साहित्यिक की डायरी', 'कामायनी : एक पुनर्विचार' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ है।

केंद्रीय भाव/सारांश : आज रचनाकार के पास विषयों का अभाव नहीं है उसमें उपयुक्त विषय चयन को लेकर पूरी कविता चलती है।

कवि जब साहित्य सृजन करते हैं तब उनके सामने विषयों का विकल्प रहता है। कवि चिंतन प्रक्रिया प्रारंभ करते ही सौ–सौ राहें नज़र आती हैं। कवि उन सभी राहों से गुज़रना चाहता है, उन सभी के अनुभव प्राप्त करना चाहता है। कवि को दुनिया देखकर इस बात का भी भ्रम होता है कि सड़क पर पड़ा हुआ साधारण–सा दिखने वाला पत्थर कहीं हीरा तो नहीं यानी सड़क पर साधारण सा व्यक्ति कहीं महत्वपूर्ण तो नहीं। कवि मानते है कि प्रत्येक व्यक्ति के वक्षस्थल में एक अधीर आत्मा विद्यमान है। हर मुस्कुराते चेहरे में प्रेम की निर्मल धारा है। यह भी भ्रम होता है कि हर व्यक्ति के अंतर्मन में बहुत पीड़ा है, साथ खुशी के अनुभव विद्यमान है, उन्हें लिखने बैठे तो रमायण या महाभारत जैसे महाकाव्य की रचना हो सकती है। समाज के सभी व्यक्तियों के इन अनुभवों को अपने साथ कहानियों के रूप में संजोकर जब कवि आगे बढ़ता है। तो इतनी सामग्री एकत्रित हो जाती है जिससे एक उपन्यास की रचना की जा सकती है।

अंत में कवि कहते है – आज रचनाकार को लिखने के लिए विषयों का अभाव नहीं है। विषयों की संख्या बहुत अधिक है, परंतु समस्या केवल सही और उपयुक्त चुनाव की है। सही विषय का चुनाव करने का काम रचनाकार के लिए बहुत कठिन कार्य है।

24. राजेंद्र उपाध्याय

24.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. 'कठपुतली' कविता में कवि ने बढ़ती हुई पराधीनता की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त की है।
2. पराधीनता मनुष्य को, विशेष रूप से युवा पीढ़ी को दिशाहीन बनाती है।
3. छोटी–छोटी सुविधाओं तथा खुशियों के लिए मनुष्य अपनी स्वतंत्रता दूसरों को सौंप देता है, जो गलत है।
4. अपने अस्तित्व और स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के लिए परिश्रम और संघर्ष को अपनाना चाहिए। महान व्यक्तित्व स्वतंत्रता, संघर्ष और परिश्रम के आधार पर जीवन के नए मार्ग तैयार करते हैं। यही सार्थक जीवन है।
5. आज़ादी का दिखाया न करके सच्ची आज़ादी का महत्व समझना चाहिए।
6. प्रकृति ने हमें ज्ञान तथा विवेक के स्रोत इसलिए दिए है कि हम सही–गलत रास्तों का चुनाव स्वयं कर सकें, अपने निर्णय स्वयं ले सकें, विचारों में दृढ़ हो सकें और आत्मनिर्भर बन सकें।
7. 'कठपुतली' कविता की भाषा आम बोलचाल की है। इसमें प्रतीकात्मकता तथा लाक्षणिकता है।
8. इस कविता में कवि ने व्यंग्य–शैली का उपयोग किया है।

24.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

(i) बहु विकल्प प्रश्न

प्र.1. हम जानते हुए भी कठपुतली बने रहते हैं, क्योंकि – (क)

क. इसमें सुविधा मानते हैं
ख. स्वतंत्रता हमें अच्छी नहीं लगती
ग. यह हमारा स्वभाव है
घ. कठपुतली की तरह हम जड़ हो चुके हैं

प्र.2. 'उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है' – किसके बारे में कहा गया है? (ख)

क. कठपुतलियों के बारे में
ख. आज़ादी का नारा लगाने वालों के बारे में
ग. कठपुतली बनाने वालों के बारे में
घ. कठपुतली का खेल दिखाने वालों के बारे में

प्र.3. किन लोगों को अपनी डगर नहीं बनानी पड़ती? (ग)

क. स्वतंत्र विचारों के लोगों को
ख. आज़ादी का नाश लगाने वालों को
ग. सुविधाजीवी लोगों को
घ. हर आदमी और हर औरत को

प्र.4. 'अरे! हम तो कठपुतली थे' – यह किस समय पता चलता है? **(ग)**

क. युवावस्था में ख. वृद्धावस्था में ग. मरते समय घ. वर्षों बाद

प्र.5. कठपुतली कविता की भाषा – **(ख)**

क. संस्कृतनिष्ठ है ख. सामान्य बोलचाल की है

ग. अरबी–फारसी शब्दों से युक्त है घ. कठिन, जटिल और उलझी हुई है

प्र.6. लाक्षणिकता में बात को **(क)**

क. संकेत रूप में कहा जाता है ख. सीधे कह दिया जाता है

ग. जटिल शब्दों में कहा जाता है घ. आसान शब्दों में कहा जाता है

प्र.7. 'हमारे तो आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे है। पंक्ति में निम्नलिखित में से भाषा का कौन–सा गुण है? **(घ)**

क. अभिधात्मकता ख. मुहावरों का प्रयोग

ग. प्रतीकात्मकता घ. लाक्षणिकता

प्र.8. 'कठपुतली' किसका प्रतीक है?

उ. पराधीन व्यक्तित्व का

प्र.9. 'हम कठपुतली है' कविता की पंक्ति में 'हम' से कवि का तात्पर्य है?

उ. हम सभी

प्र.10. दूसरे के हाथों में अपनी डोर देने का क्या अर्थ है?

उ. दूसरे के नियंत्रण में होना

प्र.11. अपनी डगर खुद बनाने के लिए किस बात की आवश्यकता है?

उ. संघर्ष और परिश्रम की

4 अंक के प्रश्न

संदर्भ सहित व्याख्या

1. हम कठपुतली हैं
   पर हम नहीं जानते कि
   हम कठपुतली है
   हर आदमी एक कठपुतली है
   हर औरत एक कठपुतली है।
   हम जानते हैं कि
   हम कठपुतली हैं
   फिर भी हम कठपुतली बने रहते हैं

क्योंकि कठपुतली बने रहने में सुविधा है
किसी दूसरे के हाथों में अपनी डोर देकर हम
खुश रहते हैं
क्योंकि फिर हमें अपनी डगर नहीं बनानी पड़ती।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'राजेंद्र उपाध्याय' के द्वारा रचित 'कठपुतली' नामक कविता से ली गई हैं। कवि यहाँ मनुष्य की पराधीनता के बारे में समझाते है।

व्याख्या :– कवि कहते है – हर मनुष्य चाहे आदमी हो या औरत, कठपुतली बनकर ज़िदगी जी रहे है। हम सब दूसरों के इशारों पर नाच रहे हैं। क्योंकि कठपुतली बने रहने में एक सुविधा है, हमें सोचने, स्वयं निर्णय लेने की ज़रूरत नहीं रहती, इसी कारण अपने अस्तित्व और महत्व को भूलकर दूसरों के हाथों में अपनी डोर देकर उनके नियंत्रण में रह रहे है।

विशेषता :– बढ़ती हुई पराधीनता को कठपुतली के प्रतीक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

2. हम कठपुतली हैं
और हमारे पास आए हर आदमी को हम कठपुतली बनाना चाहते हैं
वो भी इसी में अपनी भलाई मानता है
हर आदमी
एक दूसरे के हाथों में
अपनी डोर देकर आज़ाद है
आज़ादी के नारे लगाने वालों को देखो –
उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है।

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ 'राजेन्द्र उपाध्याय' के द्वारा रचित 'कठपुतली' नामक कविता से ली गई हैं। कवि इन पंक्तियों में पराधीन बनने की प्रक्रिया को समझाते है।

व्याख्या :– कवि कहता है कि – कठपुतली बने हुए व्यक्ति के संपर्क में जो भी आता है उसे भी वह कठपुतली बनाना चाहता है। दूसरी ओर जिस आदमी को कठपुतली बनाया जाता है वह भी इसी में अपनी भलाई मानता है, क्योंकि कठपुतली बनकर आसानी से सुविधाएँ और बने–बनाए रास्ते प्राप्त हो जाते हैं, अतः श्रम और संघर्ष करने की जरूरत नहीं रहेगी। यहाँ तक की आज़ादी का दिखावा करते हुए नारे लगाने वाले भी स्वयं स्वतंत्र नहीं हैं। वे भी दूसरों के इशारों पर नाचने वाली कठपुतली ही होते हैं।

विशेषता :– विरोधाभास अलंकार का प्रयोग है, अपनी डोर देकर आज़ाद है।

3. जो कहते है – कठपुतली के इस खेल में
कठपुतली नहीं बनेंगे
वे चुपके से कठपुतली बना दिए जाते हैं।
वे ही सबसे पहले अपनी डोर किसी और को थमा देते हैं।

नामालूम तरीके से
कठपुतली बने हुए हम जीते रहते हैं बरस–दर–बरस
और मरते वक्त पाते हैं कि 'अरे! हम तो कठपुतली थे।'

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ 'राजेंद्र उपाध्याय' के द्वारा रचित 'कठपुतली' नामक कविता से ली गई हैं। स्वयं को कठपुतली नहीं मनने वालों की असलियत समझाते हुये कवि कहता है –

व्याख्या :– मनुष्य पराधीन रह कर भी स्वयं को पराधीन नहीं मानता है। उसे स्वयं को नहीं मालूम वह कब पराधीन बन गया है। ऐसे ही समय बीत जाता है और जब मृत्यु हमारे निकट आती है तब वह जान जाता है कि वह दूसरों के हाथ में कठपुतली ही तो थे।

विशेषता :– उर्दू शब्दों का प्रयोग है। ना मालूम, बरस–दर–बरस

4. कोई और कहीं से हमें चला रहा है
कोई और कहीं से हमें जो कह रहा है
वो हम कह–कर रहे हैं
ऐसे हम आज़ाद हैं।
एक कठपुतली
हज़ारों कठपुतली तैयार करती है।
कठपुतली के तो केवल हाथ–पैर ही बँधे होते हैं।
हमारे तो आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे हैं।

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियाँ 'राजेंद्र उपाध्याय' के द्वारा रचित 'कठपुतली' नामक कविता से ली गई हैं। कवि पराधीन मनुष्य की स्थिति समझाते हुए कहता है –

व्याख्या :– कवि वास्तविक कठपुतली और कठपुतली बने मनुष्य के बीच अंतर करता है कि मनुष्य रूपी कठपुतली, वास्तविक कठपुतली से भी ज्यादा पराधीन है, क्योंकि खेल दिखाने के लिए कठपुतली के केवल हाथ–पैर ही बाँधे जाते हैं, जबकि मनुष्य रूप कठपुतली के आँख, कान, नाक मुँह सब बाँधे हुए होते हैं।

विशेषता :– लाक्षणिकता का प्रयोग है। कठपुतली के लक्षण मनुष्य पर आरोपित किये गये है।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्र.1. 'कठपुतली' कविता की भाषागत विशेषताएँ लिखिए।

उ. 1. साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग है।

2. प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग है।

उदा : 'कठपुतली' पराधीन मनुष्य का प्रतीक है। और डगर, डोर, आज़ाद, भलाई शब्द भी प्रतीक शब्द है।

3. लाक्षणिक भाषा का प्रयोग है। जिसमें संकेत मात्र किया जाता है। 'कठपुतली' के लक्षण मानव पर आरोपित किये गये है।

4. इस कविता में कवि ने व्यंग्य–शैली का भी उपयोग किया है। 'आजादी' शब्द का प्रयोग व्यंग में हुआ है।

5. 'अपनी डोर देकर आज़ाद' में विरोधाभास अलंकार का प्रयोग है।

6. साधारण बोलचाल की भाषा में उर्दू शब्दों का भी प्रयोग है –

उदा : नामालूम, बरस–दर–बरस

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. कठपुतली कविता का सारांश लिखिए।

या

कठपुतली कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।

उ. **कवि परिचय** : कठपुतली कविता के कवि राजेंद्र उपाध्याय का जन्म 20 जून 1958 को सैलाना जिल रतलाम मध्य प्रदेश में हुआ। उनकी उच्च शिक्षा हिमाचल प्रदेश और कोलकत्ता में हुई। उनके पाँच कविता संग्रह है जो –

1. सिर्फ पेड़ ही नहीं कटते हैं।
2. खिड़की के टूटे हुए शीशे में
3. लोग जानते हैं
4. मोबाइल पर ईश्वर
5. पानी के कई नाम

आप कहानी, आलोचना, भेंटवार्ता, डायरी आदि में भी लेखन–कार्य किए है। अपकी रचनाए कई भाषाओं में अनुदित है।

सारांश / केंद्रीय भाव : कवि के अनुसार हर मनुष्य चाहे आदमी या औरत कठपुतली बनकर ज़िदगी जी रहे हैं। हम सब दूसरों के इशारों पर नाच रहे हैं। क्योंकि कठपुतली बने रहने में एक सुविधा है, हमें सोचने, स्वयं निर्णय लेने की ज़रूरत नहीं, इसी कारण अपने अस्तित्व और महत्व को भूलकर दूसरों के हाथों में अपनी डोर दे कर उनके नियंत्रण में रह रहे हैं।

कठपुतली बने हुए व्यक्ति के संपर्क में जो कोई भी आता है उसे वह कठपुतली बनाना चाहता है। दूसरी ओर जिस आदमी को कठपुतली बनाया जाता है वह भी इसी में अपनी भलाई मानता है, क्योंकि कठपुतली बनकर आसानी से सुविधाएँ और बने–बनाए रास्ते प्राप्त हो जाते है, अतः श्रम और संघर्ष न करने की आज़ादी मिलेगी। यहाँ तक की आज़ादी का दिखावा करते हुए नारे लगाने वाले भी स्वयं स्वतंत्र नहीं हैं। वे भी दूसरों के इशारों पर नाचने वाली कठपुतली ही होते हैं –

मनुष्य पराधीन रहकर भी स्वयं को पराधीन नहीं मानता है। उसे स्वयं को नहीं मालूम वह कब पराधीन बन गया है। ऐसे समय बीत जाता है, और जब मृत्यु हमारे निकट आती है तब वह जान जाता है कि वह दूसरों के हाथ में कठपुतली ही था।

कवि वास्तविक कठपुतली और कठपुतली बने मनुष्य के बीच के अंतर को स्पष्ट करता है कि मनुष्य रूपी कठपुतली, वास्तविक कठपुतली से भी ज्यादा पराधीन है, क्योंकि खेल दिखाने के लिए कठपुतली के केवल हाथ–पैर ही बाँधे जाते हैं, जबकि मनुष्य रूपी कठपुतली के आँख, कान, नाक, मुँह, सब बाँधे होते है वह पूरी तरह से पराधीन है।

25. हिंदी कविता की विकास यात्रा

25.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

हिंदी साहित्य के इतिहास को चार खंड़ों में बाँटकर पढ़ते है।

1. आदिकाल (वीरगाथा काल) 1000 ई. से 1350 ई.
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) 1350 ई. से 1650 ई.
3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल या श्रृंगार काल) 1650 ई. से 1850 ई.
4. आधुनिक का (इस काल में हिदी में गद्य में भी लिखा जाने लगा इसलिए इसे गद्यकाल भी कह देते हैं) 1850 ई. से।

आदिकाल में सिद्धों, नाथों, जैनियों ने अपने–अपने धार्मिक विश्वासों के प्रचार के लिए काव्य रचे। क्षत्रिय राजाओं के दरबारी कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में वीरकाव्य लिखे, जो मुख्यतः 'रासो' ग्रंथों के नाम से जाने जाते हैं। खुसरों और मैथिली के कवि विद्यापति भी इसी काल में हुए।

पूर्व मध्यकाल मे ंनिर्गुण और सगुण भक्ति की कविताएँ लिखी गईं। कुछ निर्गुण कवियों ने ज्ञान के सहारे निर्गुण ब्रह्म का उपदेश दिया। ऐसे कवियों को निर्गुण ज्ञानाश्रयी कवि या संत–साहित्य के रचयिता कहते हैं। ये कवि हें – कबीर, नानक, रैदास आदि। सूफी कवियों (इसलाम के एकेश्वरवाद के साथ वेदांत के ब्रह्मज्ञान और लोक–संस्कृति को मिलाकर प्रचलित लोक कथाओं के आधार पर प्रेमकथाएँ लिखी और प्रेम के सहारे निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग बताया। इन्हें प्रेममार्गी या प्रेमाश्रयी कवि कहते हैं। ऐसे कवियों में मुख्य हैं कुतुबन, मंझन, मलिक मुहम्मद जायसी। सगुण भक्त कवियों में से कुछ ने कृष्ण भक्ति का आधार ग्रहण किया, कुछ ने राम भक्ति का। कृष्णभक्ति धारा के प्रसिद्ध कवि हैं – सूरदास, नंददाल आदि। रामभक्तिधारा के सर्वप्रमुख कवि हैं – 'रामचरितमानस' के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास।

भक्तिकाल के बाद के काल को रीतिकाल या श्रृंगारकाल कहते हैं। राजाओं के दरबारों में रहनेवाले कवि अपने राजाओं को प्रसन्न करने के लिए श्रृंगारिक कविताएँ लिख रहे थे। कुछ कवियों ने अपने पांडित्य प्रदर्शन के लिए लक्षण–ग्रंथ भी रचे। इन्हें रीतिबद्ध कवि कहते हैं, जैसे पद्माकर। कुछ कवियों ने लक्षण–ग्रंथ तो नहीं रचे किंतु उनका हर दोहा किसी न किसी लक्षण का उदाहरण है। ऐसे कवियों को रीतिसिद्ध कहा गया, जैसे बिहारीलाल। कुछ कवि ऐसे भी है जिन्होंने रीतियों का अनुसरण नही किया। इन्हें रीतिमुक्त कवि कहा गया, जैसे आलम, बोधा घनानंद। भूषण ने वीर–रसात्मक कविता लिखे तो गिरिधर तथा वृंद ने नीतिपरक काव्य रचा।

मुगलों को अपदस्थ कर जब अंग्रेजों ने भारत का शासन–सूत्र सँभाल लिया और उनका शोषण–चक्र शुरू हुआ तो देश में नई राजनीतिक–समाजिक–सांस्कृतिक चेतना जगी और इस पुनर्जागरण के स्वर हिंदी कविता में भी सुनाई पड़ने लगे। इस काल को आधुनिक काल कहा गया।

चूँकि छापेखाने वगैरह आ जाने, शिक्षा की नई प्रणाली शुरू होने और ज्ञान–विज्ञान के नए विषयों से हमारा परिचय बढ़ता जा रहा था अतएवं आधुनिक काल में हिंदी में गद्य–लेखन भी होने लगा। इसीलिए आधुनिक काल को गद्य काल भी कहा गया है। आधुनिक काल का प्रारंभ 1850 ई. से होता है। आधुनिक काल के पहेल अवधी, ब्रजभाषा आदि में काव्य रचना होती थी। आधुनिक काल में खड़ी बोली का प्रयोग होने लगा और परंपरागत विषयों और काव्य–शैलियों से हटकर नवीनता की झलक दिखलाई पड़ने लगी। इस काल की कविताओं को निम्नलिखित खंड़ों में बाँटकर पढ़ते हैं।

- भारतेंदु युग (देशभक्ति, समाज–सुधार का प्रमुख स्वर)
- द्विवेदी युग (मानवतावाद, आदर्श, प्रकृति–चित्रण की कविता। 'हरिऔध' गुप्त जी आदि कवि)
- छायावाद (प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी) वैयक्तिकता, सौंदर्य और प्रेम का आंतरिक पक्ष, रहस्यवाद, मानवतावाद और भाषा–शैली तथा छंद में युगांतर)
- राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य (नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर आदि कवि)
- छायावादोत्तर कवि तथा प्रगतिवाद (बच्चन, अंचल, सुमन, नागार्जुन, केदार, आदि। मार्क्सवाद से प्रेरित कविता)
- प्रयोगवाद तथा नई कविता
- आज की कविता

अज्ञेय द्वारा संपादित 'तारसप्तक' से प्रयोगवाद का प्रारंभ, उसका उत्तर चरण नई कविता आज की कविता किसी वाद में बँधी नहीं। साधारण से साधारण विषय पर कविता–लेखन की प्रवृत्ति। व्यंग्य स्वर आदि प्रमुख कवि धूमिल, रघुवीर सहाय आदि।

25.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

वस्तुनिष्ट प्रश्न

प्र.1. बौद्ध धर्म से कौन सी शाखा से उत्पन्न हुआ। (1)

1. सिद्ध 2. जैन 3. संत 4. सूफी

प्र.2. 'पहेलियाँ' के रचनाकार कौन हैं। (4)

1. रौदास 2. विद्यापति 3. सेनापति 4. अमीर खुसरों

प्र.3. विद्यापति की भाषा क्या हैं? (1)

1. मैथिली 2. ब्रज 3. राजस्थानी 4. अवधी

प्र.4. भक्तिकाल का समय कब से कब तक माना जाता है। (2)

1. 1000 ई. से 1350 ई. 2. 1350 ई. से 1650 ई.
3. 1350 ई. से 1900 ई. 4. 1650 ई. से 1850 ई

प्र.5. हिंदी का स्वर्णयुग किस काल को कहा गया? (3)

1. आदिकाल 2. रीतिकाल 3. भक्तिकाल 4. आधुनिककाल

प्र.6. सूफी काव्य की भाषा क्या है? (1)

1. अवधी 2. खड़ीबोली 3. अपभ्रंश 4. प्राकृत

प्र.7. सूफीयों के अनुसार 'आत्मा–परमात्मा' क्या है? (1)

1. प्रेमी औ प्रेमिका 2. भगवान और भक्त 3. पति और पत्नी 4. गुरु और शिष्य

प्र.8. सूफी साहित्य के प्रसिद्ध कवि कौन है? (4)

1. कबीर 2. नूर महम्मद 3. तुलसीदास 4. मुल्ला दास

प्र.9. राम भक्ति काव्य के प्रमुख कवि कौन है? (2)

1. विद्यापति 2. तुलसीदास 3. कृष्णदास 4. परमानंद दास

प्र.10. 'अष्ट छाप' की स्थापना किसने की? (3)

1. वल्लभाचार्य 2. रामानंद 3. विट्ठलनाथ 4. रामानुज

प्र.11. 1650 ई. से 1850 ई. तक कौन सी काल था? (2)

1. भक्तिकाल 2. रीतिकाल 3. आदिकाल 4. आधुनिक काल

प्र.12. रीतिकाल का काव्य विषय क्या रहा? (3)

1. भक्ति 2. वीरत्व 3. शृंगार 4. वैराग्य

प्र.13. घनानंद किस भावना के कवि थे? (4)

1. वीर भावना 2. प्रकृति भावना 3. सौंदर्य भावना 4. प्रेम भावना

प्र.14. भारतेंदु युग के काव्य की भाषा क्या थी? (2)

1. अवधी 2. ब्रज 3. खड़ीबोली 4. अपभ्रंश

प्र.15. 'सरस्वती' पत्रिका किस युग की प्रमुख पत्रिका रही? (2)

1. भारतेंदु युग 2. द्विवेदी युग 3. छायावादी युग 4. प्रगतिवाद युग

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. द्विवेदी युगीन काव्य के विषय तथा भाषा–शैली की दृष्टि से मूल्यांकन कीजिए?

उ. लेखक, पत्रिका संपादक एवं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर जिसे 'द्विवेदी युग' कहा गया है उस युग के काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित है –

(1) समाज–सुधार :– आर्यसमाज तथा अन्य सुधारवादियों के विचारों–आंदोलनों से प्रभावित होकर इस युग के कवियों ने अपनी रचनाओं में बाल–विवाह, दहेज प्रथा, छुआछूत,

स्त्री–अशिक्षा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया तथा विधवा–विवाह, नारी–शिक्षा, वेश्या–उद्धार आदि का समर्थन किया।

(2) सामान्य जन का चित्रण :– इस युग के साहित्य में किसान–मजदूर, अछूत, साधारण स्त्री, विधवा आदि का चित्रण किया गया। अर्थात् सामान्य जन काव्य का विषय बना।

(3) मानवतावाद :– इस युग के साहित्य में दीन–दलितों की सेवा, मानव–प्रेम आदि को सच्ची ईश्वरभक्ति माना गया।

(4) नीति और आदर्श :– इस समय रचनाओं का लक्ष्य केवल मनोरंजन करना न होकर पाठकों को आदर्श पर चलने की प्रेरणा देने वाला है।

(5) प्रकृति–वर्णन :– इस समय ग्रामीण परिवेश का अधिकांश चित्रण इतिवृत्तात्मक रूप में हुआ।

(6) काव्य–रूप :– इस युग में कथा–काव्यों की प्रधानता रही। छोटे–छोटे विषयों पर मुक्तक और कुछ गीत भी लिखे गये।

(7) भाषा–शैली :– इस युग में द्विवेदी जी के प्रयत्नों से कविताएँ भी खड़ीबोली में लिखी जाने लगी। द्विवेदी युग की कविताएँ प्रायः इतिवृत्तात्मक हैं। मैथिलीशरण गुप्त जैसे प्रमुख कवियों ने खड़ीबोली का काव्य–भाषा के रूप में निरंतर प्रयोग करते हुए कविता को भी निखारा गया।

इस तरह से द्विवेदी युग में काव्य लेखन पूर्णतः खड़ीबोली में होने लगा और कविता धीरे–धीरे इतिवृत्तिात्मक की कैद से भी मुक्त हुई और विविध छंदों का प्रयोग भी किया गया।

प्र.2. भक्तिकाल की कविता की विशेषताएँ बतलाइए।

उ. भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है। हिंदी साहित्य के इतिहास में लगभग 1350 ई. से 1650 ई. तक का समय भक्तिकाल कहलाता है। इस काल की कविता की निम्न विशेषताएँ हैं –

(1) ईश्वर में विश्वास :– भक्तिकाल के सभी कवियों ने अपनी कविताओं में ईश्वर के प्रति दृढ़ विश्वास व्यक्त किया है। इस काल की निर्गुण धारा में ज्ञानमार्गी कवि ईश्वर को निराकार रूप में पूजते है तो सूफी काव्य के कवियों ने अव्यक्त सत्ता के रूप में प्रजा को ही प्रधानता दी है। सगुण भक्त कवि राम और कृष्ण के रूप में ईश्वर की आराधाना की है।

(2) नाम की महत्ता :– भक्तिकाल के कवि परमात्मा से बढ़कर उनके नाम को ही अधिक मानते हैं। उन्हें राम, कृष्ण, ईश्वर, ब्रह्मा आदि नामों से कीर्तन, भजन, जप आदि क्रियाओं से प्रसन्न करने का प्रयत्न करते हैं।

(3) काव्य रूप :– भक्तिकाल के साहित्य में हमें काव्य के दो रूप मिलते हैं। प्रेममार्गी तथा रामभक्ति शाखा कवियों ने प्रबंध रूप को अपनाया तथा ज्ञानमार्गी (संत) तथा कृष्ण भक्ति शाखा कवियों ने मुक्तक शैली को अपनाया।

(4) गुरू की महिमा :– भक्तिकाल की सभी प्रमुख धाराओं में गुरु की महिमा को समान रूप से महत्व दिया गया है।

(5) अहंकार का त्याग :– भक्तिकाल के प्रायः सभी कवियों में नम्रता, दैन्य एवं अहंकार त्याग की भावना है।

(6) बाह्याडंबरों का खंडन :– भक्तिकाल के सभी कवि भक्त एवं समाज सुधारक भी थे। समाज के गिरते स्तर को उठाने में इन कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने धर्म व समाज के बाह्याडंबरों का खुल कर विरोध किया।

(7) भाषा :– भक्तिकाल में तीन भाषाओं का प्रयोग मिलता है। सूफी कवियों ने तथा रामभक्ति शाखा के अधिकांश कवियों ने अवधी भाषा का प्रयोग किया जबकि कृष्ण भक्ति शाखा के कवियों ने ब्रजभाषा, संतकाव्य या ज्ञानमार्गी के संत कवियों ने सधुक्कडी भाषा का प्रयोग किया।

भाषा		कवि	रचना
सधुक्कडी	–	कबीर	बीजक
अवधी	–	तुलसीदास	रामचरितमान
	–	जायसी	पद्मावत
ब्रज	–	सूरदास	सूरसागर
	–	तुलसीदास	विनयपत्रिका

प्र.3. भक्तिकाल की विविध धाराओं का परिचय देते हुए प्रत्येक धारा के दो–दो कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

उ. हिंदी साहित्य के इतिहास में 1350 ई. से 1650 ई. तक का समय भक्तिकाल कहलाता है। भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है। हिंदी भक्ति काव्य की दो प्रमुख धाराएँ है। (1) निर्गुण काव्य धारा, (2) सगुण काव्य धारा।

निर्गुण भक्ति काव्य धारा दो रूपों में विकसित हुई – ज्ञानमार्गी तथा प्रेममार्गी।

सगुण भक्ति काव्य धारा दो रूपों विकसित हुई – राम भक्ति और कृष्णभक्ति

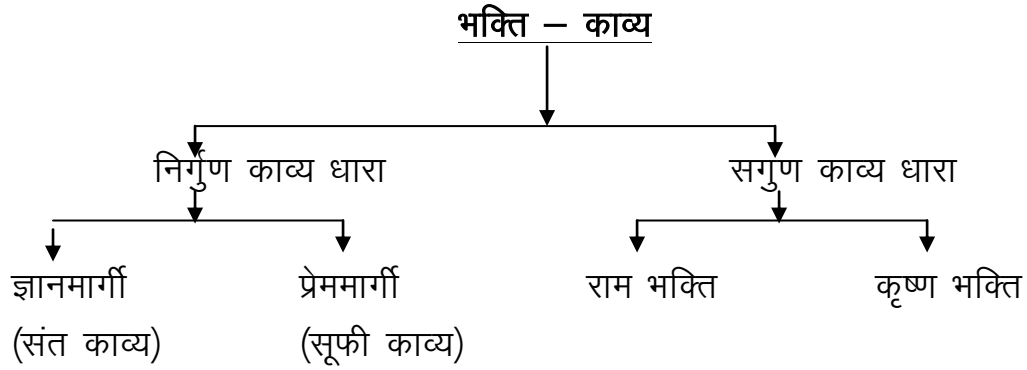

प्रत्येक शाखा के प्रमुख कवि और रचनाएँ

	कवि	**रचनाएँ**
ज्ञानमार्गी शाखा	कबीर	बीजक
सुंदरदास	सुंदर विलास	
प्रेममार्गी शाखा	मलिक मुहम्मद जायसी	पदमावत
कुतुबन	मृगावती	
रामभक्ति शाखा	तुलसीदास	रामचरित मानस, विनय पत्रिका
अग्रदास	अष्टायाम	
कृष्ण भक्ति शाखा	सूरदास	सूरसागर
परमानंददास	परमानंद सागर	

प्र.4. नयी कविता की विशेषताएँ बताइए।

उ. नई कविता विषय–वस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से पुरानी परंपरा से अलग और विशिष्ट है।

(1) नवीनता :– नई कविता में नयापन है। विषय–वस्तु, भाव सभी दृष्टियों से वह 'परम्परा से अलग' की कविता है। कविताओं का विषय नए रहने के कारण ही अज्ञेय ने इन्हें 'नई कविता' का नाम दिया।

(2) बौद्धिकता :– परंपरागत कविता में जहाँ भावना की प्रधानता है, वही नई कविता में बौद्धिकता की है। नये कवि की कविताएँ हृदयांधारित न रहकर बुद्धि पर आधारित है।

(3) अतिशय वैयक्तिकता :– नयी कविता की एक प्रमुख प्रवृत्ति है – 'अतिशय वैयक्तिता' नए कवियों ने अपने व्यक्तिगत जीवन के सुख–दुःख को काव्य का विषय बनाकर रचनाएँ की है।

(4) क्षणवादिता :– नया कवि 'क्षणवादी' जीवन दर्शन को अंगीकार करता है। उसे 'कल' पर विश्वास नहीं, भविष्य का भरोसा नहीं इसलिए वह वर्तमान को ही सब कुछ समझकर उसे पूरी तरह भोगते रहता है। अतः वह हर क्षण को पूर्णतः भोगने का आकांक्षी है।

(5) भोगवाद एवं वासना :– नई कविता में भोग और वासना के विषयों का वर्णन अधिक रहा। कुछ नए कवियों ने कहीं–कहीं तो कविता के नाम पर 'अश्लील' टिप्पणियों का वर्णन किया है, जो सभ्य समाज में पढ़ी जाने योग्य भी नहीं है।

(6) यथार्थवादिता :– नए कवि का दृष्टिकोण यथार्थवादी है। जीवन को उसके वास्तविक रूप में प्रस्तुत करना नए कवि का उद्‌देश्य रहा है। नई कविता की विषय–वस्तु सीधे–सादे सरल शब्दों में सहज अभिव्यक्ति करते हुए इन कवियों ने अपने यथार्थवादी काव्य–संसार की रचना की।

(7) आधुनिक युग बोध :– नई कविता के कवियों ने आधुनिक मानव के जीवन में विद्यमान यातना, यथार्थता और निराशा को अपने काव्य का विषय बनाया है। इस कविता में ब्रह्म की

सत्ता के स्थान पर मानव की सत्ता की स्थापना की है। अंधविश्वासों तथा रूढ़ियों का खंडन भी किया है। सामान्य मानव जीवन विधान का वर्णन भी किया गया है।

(8) प्रणयानुभूति :– नई कविता में प्रणय–भावना का वर्णन भी अधिक किया गया है। प्रेम को वे यौनाकर्षण ही मानते हैं, जो शरीर के स्तर पर जन्म लेता है।

(9) लोक संस्कृति :– नया कवि लोक से जुड़ा हुआ है। लोक जीवन की अनुभूति, सौंदर्य बोध, प्रकृति का वर्णन नई कविता में अधिक मिलते हैं।

(10) भाषा शैली :– नई कविता में शब्दों के प्रयोग की दृष्टि से 'लोकभाषा' का प्रयोग किया गया है। जो भाषा के नएपन एवं ताजगी का परिचायक है।

(11) शिल्प विधान :– नई कविता का शिल्प भी परंपरागत काव्य से भिन्न है। कवियों ने नए उपमान, नए प्रतीक और नए बिंबों की अभिव्यक्ति की है।

प्र.5. आदिकाल में लिखी गई विभिन्न प्रकार की कविताओं का परिचय दीजिए।

उ. आदिकाल में विविध प्रकार की काव्य रचनाएँ हुईं। जो इस प्रकार हैं।

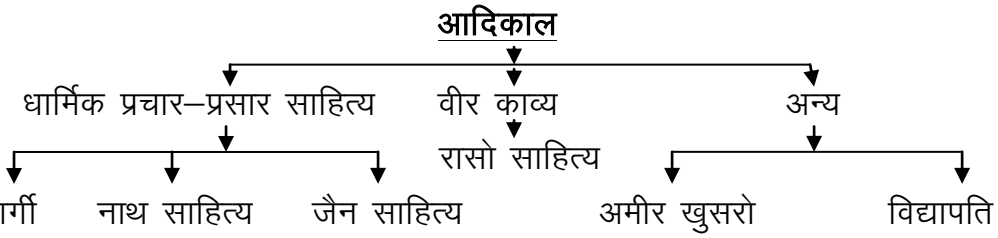

(1) सिद्ध साहित्य :– बौद्ध–धर्म के वज्रयान की एक शाखा के विद्वान सिद्ध कहलाए। सिद्धों की संख्या चौरासी है। उन्होंने धार्मिक साहित्य की रचना की। कुछ कवि और उनकी रचनाएँ –
सरहपा – दोहाकोश, शरप्पा – चर्यापद

(2) नाथ–साहित्य :– सिद्धों की वाममार्गी शाखा ही नाथ पंथी है। मत्स्येन्द्रनाथ तथा गोरखनाथ उसके जन्मदाता है। नाथों की संख्या नौ है। उनकी रचनाएँ धर्म प्रधानहै। जैसे – गोरखनाथ – गोरखबानी

(3) जैन–साहित्य :– जैन–साहित्य का सर्वाधिक लोकप्रिय रूप 'रास' ग्रंथ है। इनमें उपदेशात्मकता है। मुख्यतः इस साहित्य में जैन–तीर्थंकारों के जीवनचरित्र तथा वैष्णव–अवतारों की कथाएँ हैं। जैसे

शालिभद्र सूरी	–	भरतेश्वर – बाहुबली रास
आसगु	–	चन्दनबाला रास
नेमिनाथ	–	नेमिनाथ रास

रासो साहित्य :– आदिकाल के दरबारी कवि अपने आश्रयदाता राजाओं की वीरगाथाओं का वर्णन करते हुए जिस काव्य की रचना की उसे रासो साहित्य कहा गया है। यह रासो – राजस्थानी के रासक शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ कथा या गाथा है।

खुमान रासो – दलपति विजय
पृथ्वी राज रासो – चन्दबरदायी
बीसल देव रासो – नरपति नल्ह

अन्य रचनाएँ :– सं. 1340 के आसपास अमीर खुसरो फारसी के बहुत अच्छे कवि थे। सरल भाषा में इनकी मुकरियाँ और पहेलियाँ बहुत प्रसिद्ध है।

सं. 1460 के आसपास विद्यापति अपभ्रंश के महान कवि हैं। ये मैथिली भी जनते थे। मैथिली में लिखी गई 'पदावली' के कारण ये मैथिली कोकिला कहलाए। कीर्तिलता और कीर्तिपताका उनके प्रमुख ग्रंथ है।

प्र.6. रीतिकाल के विशेषताएँ लिखिए

उ. इस समय के दरबारों के कवि अपने आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के लिए प्रेम और शृंगार का चित्रण करने के साथ–साथ अलंकार, नायिका भेद, छंद, रस आदि के शास्त्रीय विवेचन संबंधी ग्रंथ, मुक्तकों की रचनाएँ करने लगे। काव्य की इस शास्त्रीय प्रकृति को 'रीति' कहा जाता है। इस काल का समय सन् 1650 से सन् 1850 तक है। इस काल की रचनाओं में शृंगारिता अधिक होने के कारण इसे 'शृंगार काल' भी कहा गया, रीतिकालीन काव्य की प्रमुख विशेषताएँ/प्रवृत्तियाँ निम्न प्रकार हैं –

(1) शृंगारिकता :– शृंगारिकता रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्ति है। कृष्णभक्ति, प्रेममार्गी कवियों से प्रेरित होकर इस काल के कवियों ने दरबारी वातावरण में रसिकता व शृंगार का चित्रण करने लगे।

(2) अलंकारिता :– रीतिकालीन कवि अपनी कविता में चमत्कार–प्रदर्शन के लिए अलंकारों का प्रयोग करने लगे।

(3) भक्ति और नीति :– भक्तिकाल के परवर्ती होने के कारण भक्ति, दरबारी कवि होने के कारण नीति और उपदेश प्रधान रचनाएँ भी इस काल के कवियों ने की है।

(4) काव्य–रूप :– इस काल के कवि प्रायः मुक्तक काव्यों की रचना की। जिसमें दोहा, कवित्त, सवैया जैसे छंदों का प्रयोग किया गया।

(5) ब्रजभाषा :– इस काल की भाषा, मधुरता और कोमलता की भाषा ब्रजभाषा है।

(6) लक्षण–ग्रंथों का निर्माण :– इस काल के दरबारी कवि अपना आचार्यत्व सिद्ध करने के लिए लक्षण ग्रंथों की भी रचना की थी।

(7) वीर रस की कविता :– इस युग के कुछ कवियों ने वीर रस की कविताएँ लिखी। जैसे भूषण, सूदन आदि।

(8) प्रकृति–चित्रण :– रीतिकाल के कवियों ने प्रकृति का अत्यंत मनोहरी चित्रण किया। संयोग एवं वियोग शृंगार दोनों में भी प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान है।

(9) नारी चित्रण :– रीतिकाल के कवियों ने नारी को भोग–विलास की सामग्री के रूप में चित्रित किया। जिसमें उसका नख, शिख पर्यन्त वर्णन दिखाई देता है।

(10) नायिका भेद वर्णन :– संस्कृत काव्यशास्त्र की तर्ज पर इन्होंने नायिकाओं के भेद–प्रभेद का भी खूब वर्णन किया है, जैसे – स्वकीया, परकीया, सामान्या, मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा आदि।

प्र.7. छायावादी काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ. आधुनिक हिंदी कविता का स्वर्णयुग 'छायावाद' का समय सन् 1918 से सन् 1938 तक माना जाता है। कुछ लोगों का मानना है कि यह अंग्रेजों के रोमांटिसिज़्म और मिस्टिसिज्म से उत्पन्न हुआ है, और कुछ लोग द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता से मुक्ति पाने में 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म' के विद्रोह के रूप में उत्पन्न हुआ।

छायावाद की निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ/विशेषताएँ हैं –

(1) वैयक्तिकता :– छायावादी कवियों ने काव्य की विषय–वस्तु अपने व्यक्तिगत जीवन से ही खोजने का प्रयास किया। परिणामतः छायावादी कविता बहिर्मुखी न होकर अंतर्मुखी हो गयी।

(2) सौंदर्य चित्रण :– छायावादी कवि मूलतः प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं, उनकी सौंदर्य भावना सूक्ष्म एवं उदात्त है। सौंदर्य चित्रण में उनकी वृत्ति बाह्य वर्णन पर न होकर आंतरिक गुणों पर चली।

(3) रहस्यवाद :– छायावादी कवियों ने प्रकृति में चेतना का आरोप किया है। उन्हें कण–कण में अनंत सत्ता की उपस्थिति प्रतीत होती है। उस परम सत्ता से वियोग की वेदना को रहस्यवाद कहा जाता है।

(4) राष्ट्रीय भावना :– छायावादी काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर भी दिखाई देते हैं। प्रसाद, माखनलाल चतुर्वेदी आदि की रचनाओं में राष्ट्रीय भावना की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।

(5) मानवतावाद :– छायावादी काव्य में विश्व–प्रेम की भावना मिलती है तथा जाति–धर्म जैसी संकीर्णताओं से ऊपर उठने का स्वर भी सुनाई देता है।

(6) भाषा–शैली :– छायावादी काव्य विषय–वस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से नवीन है। लाक्षणिक भाषा का प्रयोग, प्रतीकात्मक शैली, नवीन अलंकार विधान के कारण इस काव्य में शिल्पगत नवीनता दिखाई पड़ती है।

(7) मुक्त छंद :– छायावादी कवि परंपरागत छंदों के यथारूप प्रयोग, उनमें बदलाव करके मुक्त छंद का भी प्रयोग किया है।

26. क्रोध

26.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. क्रोध मनुष्य के हृदय में स्थित वह भाव है जो दूसरे द्वारा सताए जाने पर या इच्छा के अनुकूल काम न करने पर या अपने–पराए की भावना उत्पन्न होने पर स्वतः ही पैदा होता है।
2. क्रोध की आवश्यकता लोकहित के लिए भी होती है। ऐसी स्थिति में अक्सर वह साहित्य का रूप ले लेता है।
3. क्रोध कभी–कभी घातक भी सिद्ध होता है। इससे बनते काम बिगड़ जाते हैं, क्रोध करने से मानसिक शांति भंग हो जाती है, ऐसे समय मानसिक संतुलन बनाए रखना अति आवश्यक ही जाता है। किसी भी प्रकार से क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।
4. क्रोध जब किसी कारणवश प्रकट नहीं हो पाता तो वैर का रूप ले लेता है। शुक्ल जी ने इसे अचार या मुरब्बा कहा है। इस प्रकार के क्रोध भाव का संचयन बच्चों तथा जानवरों में नहीं होता, अतः उनमें वैर–भाव नहीं होता।
5. संपूर्ण निबंध में तत्समनिष्ठ शैली और प्रवाहपूर्ण मुहावरों का सार्थक प्रयोग हुआ है।
6. पारिभाषिक और सूक्तिमय वाक्यावलि का प्रयोग, जैसे – 'क्रोध शांति भंग करने वाला मनोविकार है।' वैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। दंड कोप का ही एक विधान है। मैं तुम्हें धूल में मिला दूँगा।
7. शब्द–रचना मुख्यतः दो प्रकार से होती है – पहली उपसर्ग जोड़कर और दूसरी प्रत्यय जोड़कर, जैसे – अनजान, नासमझ (उपसर्ग), पानदान, समझदार (प्रत्यय)।

26.2. प्रश्न–उत्तर

4 अंक के प्रश्न

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए

1. **सामाजिक जीवन में क्रोध की ज़रूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिरनिवृत्ति का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट के नित्य दो चार प्रहार सहता है। यदि उसमें क्रोध का विकास नहीं हुआ है तो वह केवल आह–ऊह करेगा, जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं।**

   संदर्भ :प्रस्तुत गद्यांश चिंतामणि निबंध संकलन के 'क्रोध' निबंध का अंश है। इसके निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्लजी है। उन्होंने इस निबंध में क्रोध की उत्पत्ति, उसके कारण, प्रकार, लाभ और उसकी हानियों का वर्णन किया है। उनका चित्रण अत्यंत मनोवैज्ञानिक है। इस गद्यांश में उन्होंने क्रोध को अत्याचार के विरोध का स्वर माना है। शुक्लजी की भाषा अत्यंत प्रभावशाली है। उनकी शब्दावली संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी सरल एवं सुबोध है।

व्याख्या : प्रस्तुत गद्यांश में उन्होंने बताया है कि क्रोध व्यक्ति के आत्मसम्मान के लिए अत्यावश्यक है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में भले एवं बुरे दोनों तरह के लोग रहते हैं। तरह–तरह की परिस्थितियों का सामना करने के लिए क्रोध की ज़रूरत पड़ती ही रहती है। हमें अपने जीवन में दुष्ट लोगों से कष्ट मिलते ही रहते हैं। उनका निवारण हम क्रोध के बिना नहीं कर सकते। अन्याय के प्रतिकार के लिए कभी–कभी क्रोध अनिवार्य है। यदि कोई दुष्ट हम पर अत्याचार कर रहा है और हम उसका प्रतिकार न कर सकें, तो वह हमें कायर समझेगा। उसका अत्याचार बढ़ता जायेगा। ऐसे समय में क्रोध ही सही उपाय है। क्योंकि अन्याय सहते जाना अन्याय का प्रतिकार नहीं माना जा सकता। अर्थात् ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि क्रोध का उद्देश्य सदैव बुरा ही रहता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजों के अत्याचार के विरोध में स्वतंत्रता संग्राम एक प्रकर के क्रोध का परिणाम था।

2. **क्रोध सब मनोविकारों में फुर्तीला है, इसी से अवसर पड़ने पर यह और मनोविकारों का भी साथ देकर उसकी तुष्टि का साधक होता है। कभी वह दया के साथ कूदता है, कभी घृणा के।**

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश चिंतामणि निबंध संकलन के क्रोध निबंध का अंश है। इसके निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्लजी है। उन्होंने इस निबंध में क्रोध की उत्पत्ति, उसके कारण, प्रकार, लाभ और उसकी हानियों का वर्णन किया है। उनका चित्रण अत्यंत मनोवैज्ञानिक है। इस गद्यांश में उन्होंने क्रोध के अन्य मनोविकारों में बदलते स्वरूप को दिखाया है। शुक्लजी की भाषा अत्यंत प्रभावशाली है। उनकी शब्दावली संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी सरल एवं सुबोध है।

व्याख्या : शुक्लजी कहते हें कि क्रोध सब मनोविकारों में फुर्तीला है। यह कभी दया के साथ जुड़ता है तो कभी घृणा के साथ। मान लीजिए कोई अत्याचारी किसी महिला के साथ गलत व्यवहार कर रहा है। उस समय हमारे हृदय में उस औरत के प्रति दया उभरती है। साथ ही साथ उस अत्याचारी के प्रति क्रोध और घृणा भी। यहाँ यदि हम क्रोध न करें तो हमारी दया व घृणा बेकार है। यदि आप क्रोध करके भी उस औरत को बचा लें, तो लोग आपको क्रोधी नहीं कहेंगे। वे आपको अत्यंत दयालु कहेंगे। अतः क्रोध अनेक बार सकारात्मक परिणाम भी देता है।

3. **जिस क्रोध के त्याग का उपदेश दिया जाता है। वह पहले प्रकार के दुःख से उत्पन्न क्रोध है। दूसरे के दुःख पर उत्पन्न क्रोध बुराई की हद के बाहर समझा जाता है। क्रोधोत्तेजक दुःख जितना ही अपने संपर्क से दूर होगा, उतना ही लोक में क्रोध का स्वरूप सुंदर व मनोहर दिखाई देगा।**

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश चिंतामणि निबंध संकलन के क्रोध निबंध का अंश है। इसके निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्लजी हैं। उन्होंने इस निबंध में क्रोध की उत्पत्ति, उसके कारण, प्रकार, लाभ और उसकी हानियों का वर्णन किया है। उनका चित्रण अत्यंत मनोवैज्ञानिक है। इस गद्यांश में उन्होंने क्रोध के उस स्वरूप के बारे में बताया है जो दूसरों के दुःख को देखकर उत्पन्न होता

है। शुक्लजी इस प्रकार के क्रोध को अत्यंत सुंदर मानते हैं। उनकी भाषा अत्यंत प्रभावशाली है। उनकी शब्दावली संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी सरल एवं सुबोध है।

व्याख्या : शुक्लजी कहते हैं कि दूसरों के प्रति त्याग के कारण भी हम क्रोध करते हैं। दूसरों के दुःख पर उत्पन्न क्रोध बुराई नहीं माना जाता। यदि हम दूसरों के दुःख को दूर करने के लिए क्रोध करेंगे जो वह अत्यंत सुंदर व मनोहर माना जायेगा। मान लीजिए कोई अत्याचारी किसी महिला के साथ गलत व्यवहार कर रहा है। उस समय हमारे हृदय में उस औरत के प्रति दया उभरती है। हम उस अत्याचारी पर क्रोध करें तो वह बढ़िया माना जायेगा। उस क्रोध को हम बुरा नहीं मान सकते। इस प्रकार के क्रोध से हमारे यश में वृद्धि होगी। ऐसा क्रोध शुक्लजी के अनुसार अत्यंत सुंदर एवं मनोहर है।

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. क्रोध की आवश्यकता क्यों है?

उ. क्रोध दुःख के चेतन कारण के साक्षात्कार या अनुमान से उत्पन्न होता है। सामाजिक जीवन में क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिरनिवृत्ति का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट के नित्य दो–चार प्रहार सहता है। यदि उसमें क्रोध का विकास नहीं हुआ है तो वह केवल आह–ऊह करेगा, जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं होता और उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में समय लगेगा। क्रोध करने वाले के मन में सदा भावी कष्ट से बचने का उद्देश्य रहा करता है। प्रतिकार और स्वरक्षा के लिए भी क्रोध किया जाता है। हमें अपने जीवन में दूसरों से कष्ट मिलते ही रहते हैं। उनका निवारण हम क्रोध के बिना नहीं कर सकते। अन्याय के प्रतिकार के लिए कभी–कभी क्रोध अनिवार्य है। सामान्यतः बच्चों को सीख देते समय भी लोग क्रोध करते हैं। अर्थात् ऐसा नहीं कहा जा सकता कि क्रोध का उद्देश्य सदैव बुरा ही रहता है। क्रोध की भावना ही हमें अनेक कार्यों के लिए प्रेरित करती है। किसी पर क्रोध हमारे कार्यों को दिशा देता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजों के विरोध में स्वतंत्रता संग्रमा एक प्रकार के क्रोध का परिणाम था।

प्र.2. क्रोध करने से क्या हानि हो सकती है?

उ. क्रोध के कारण व्यक्ति अपना विवेक खो देता है। क्रोध में की गयी प्रतिक्रिया के समय वे नहीं सोचते कि उनके काम का परिणाम क्या होगा? क्रोध में व्यक्ति किसी की हानि करता है, किसी को बर्बाद कर देता है, किसी को जान से भी मार देता है। बाद में उसी पश्चात्ताप में जीवन भर दुःखी रहता है। कभी–कभी लोग अपने घरवालों से ही लड़ लेते हैं। क्रोध में अपना सिर पटक देते हैं। लेकिन अपना सिर फोड़ने के पीछे भी उनका उद्देश्य दूसरों को दुःख पहुँचाना ही होता है, स्वयं को नहीं। वह दूसरों पर क्रोध करते समय यह भी विचार नहीं करता कि वह कार्य उसने जान–बूझकर किया है या नहीं। क्रोध में कोई हमें दुःख पहुँचाता है। कभी हम

किसी को दुःख पहुँचाते हैं। लेकिन दोनों ही ओर किसी न किसी की हानि होती है। क्रोध के कारण बने काम भी बिगड़ जाते हैं।

प्र.3. शुक्ल जी ने क्रोध को अंधा क्यों कहा है?

उ. क्रोध के कारण व्यक्ति अपना विवेक खो देता है। इसलिए शुक्ल जी ने क्रोध को अंधा कहा है। क्रोधित व्यक्ति को परिणाम का ध्यान नहीं रहता। वह स्वयं पर काबू नहीं रख पाता। जब तक उसे परिणाम व स्थिति का ज्ञान होता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। क्रोध में व्यक्ति किसी की हानि करता है, किसी को बर्बाद कर देता है, किसी को जान से भी मार देता है। बाद में उसी पश्चात्ताप में जीवन भर दुःखी रहता है। कभी–कभी लोग अपने घरवालों से ही लड़ लेते हैं। क्रोध में अपना सिर पटक देते हैं। लेकिन अपना सिर फोड़ने के पीछे भी उनका उद्‌देश्य दूसरों को दुःख पहुँचाना ही होता है, स्वयं को नहीं। क्रोध के कारण बने काम भी बिगड़ जाते हैं।

प्र.4. क्रोध वैर में कैसे बदल जाता है?

उ. कई बार हम क्रोध का जवाब नहीं देते। इसका कारण कुछ भी हो सकता है। सामने वाला हमसे अधिक बलशाली हो सकता है। हम जानते है कि हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अतः उसके प्रति क्रोध अपने मन में ही दबा लेते हैं। परिणामतः वही क्रोध वैर में बदल जाता है। इसीलिए लेखक ने वैर को क्रोध का अचार या मुरब्बा कहा है।

प्र.5. बच्चों और पशुओं में वैर क्यों नहीं होता?

उ. बच्चे कोई भी बात जल्दी भुला देते हैं। पशुओं में तो स्मृति शक्ति ही कम होती है। क्रोध वैर के रूप में तभी बदलता है, जब कोई अपने क्रोध की प्रतिक्रिया न दे। जैसे आपको कोई थप्पड़ मारे और आप उसे न मारें। यदि वह थप्पड़ आपको याद रहेगा तो वह धीरे–धीरे वैर के रूप में बदलेगा। लेकिन बच्चें व पशु इन बातों को सहज लेते हैं। यही कारण है कि बच्चों और पशुओं में वैर नहीं होता।

प्र.6. राजकोप और लोककोप में क्या अंतर है?

उ. दंड कोप का ही एक विधान है। राजदंड राजकोप है, और लोककोप धर्मकोप है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि हम किसी अत्याचारी का अत्याचार सीमा से अधिक सहते रहें। उसके विरोध में उसे दंड न दें, तो यह हमारी कायरता का प्रतीक होगा। भगवान श्रीराम यदि रावण को दंड दिये बिना क्षमा कर देते। तो यह उनकी कायरता ही मानी जाती। अतः अनेक बार राज–काज सुचारू रूप से चलने हेतु राजकोप किया जाता है। भ्रष्ट लोगों को कठोर दंड देना पड़ता है। कई बार एक आम आदमी को धर्म अथवा लोक की रक्षा हेतु क्रोध करना पड़ता है। यह धर्मकोप कहलाता है। यही लोककोप कहलाता है।

प्र.7. चिड़चिड़ाहट विनोद की सामग्री कैसे हो सकती है?

उ. चिड़चिड़ाहट क्रोध का एक हल्का सा रूप है। यह केवल शब्दों तक ही सीमित रहती है। इसका कारण भी वैसा उग्र नहीं होता। कभी–कभी मन ठीक न रहने या किसी काम के पूर्ण न होने पर भी चिड़चिड़ाहट स्वाभाविक है। शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्तियों को चिड़चिड़ाहट अधिक होती है। यह मानसिक दुर्बल, रोगियों व बुड्ढ़ों में अधिक पायी जाती है। इनका चहेरा हमेशा चिढ़ा ही रहता है। परिणामतः ये लोग जिधर निकलते हैं, लोग इन्हें चिढ़ाते हैं। इस प्रकार चिड़चिड़ाहट विनोद की सामग्री बन जाती है। बच्चे लोगों को अलग–अलग नाम देकर चिढ़ाने लगते हैं।

प्र.8. अमर्ष को क्रोध का असहाय रूप क्यों माना जाता है?

उ. मुख्यतः दूसरों पर क्रोध बढ़ने के क्रमशः तीन कारण होते हैं :–

1. हमें किसी की बात बुरी लगी हो।
2. वह बात बुरी लगने के कारण सहन न होती हो।
3. सहन न होने की स्थिति में वह दुःखयुक्त क्रोध व्यक्ति के अंदर जमा हो जाता हो तो।

क्रमशः इन तीनों स्थितियों के बाद जो क्रोध की अवस्था होती है उसे अमर्ष कहते हैं। यह अमर्ष वस्तुतः दुःख या द्वेष है। यह विपक्षी या शत्रु का कोई बुरा न कर सकने के कारण पैदा होता है। इससे व्यक्ति की सहनशीलता धीरे–धीरे समाप्त होती जाती है। यह क्रोध की प्रतिक्रिया करने में असहाय होने के कारण उत्पन्न होती है। इसलिए अमर्ष को क्रोध का असहाय रूप मानाजाता है।

27. आखिरी चट्टान

पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. कन्याकुमारी के समीप समुद्र में स्थित विवेकानंद चट्टान बड़ी भव्य है।
2. बंगाल की खाड़ी, हिन्द महासागर और अरब सागर के संगम–स्थल पर सागर का असीन विस्तार है।
3. अरब सागर के तट पर स्थित सैडहिल से हजारों लोग पश्चिमी क्षितिज में सूर्यास्त का मनमोहक दृश्य देखते हैं।
4. सूर्यास्त के समय सागर–तट की रेत और सागर–जल अनेक रंग–रूप बदलता है।
5. लेखक को पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में सूर्यास्त देखने की इच्छा थी, इस कारण उसे रेत में चलने और चट्टानों पर चढ़ने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ा। अंततः लेखक अपने प्रयत्न की सार्थकता पर संतुष्ट हुआ।
6. 'सागर–तट से अपने होटल में लौटते समय लेखक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।
7. रात में समुद्र में सिर्फ काली छायाओं की लकीरें मात्र दिखाई देती है।
8. कन्याकुमारी में सूर्योदय का दृश्य भी बड़ा आकर्षक होता है।
9. यात्रा–साहित्य के मुख्य तत्व–निजता, स्थानीयता, तथ्यात्मकता और चित्रात्मकता है। यात्रा–साहित्य के तत्वों पर यह रचना खरी उतरी है। इस पाठ की भाषा–शैली सरल, रोचक, प्रवाहमान और आत्मीयतापूर्ण है।
10. मेहन राकेश हिंदी कहानी, एकांकी और नाटक साहित्य लिखने के कारण प्रसिद्ध हैं। लेकिन वे यात्रा–साहित्य के भी सिद्धहस्त लेखक हैं।
11. शब्दों का निर्माण कई प्रकार से होता है – मूल शब्द से पहले शब्दांश जोड़कर (उपसर्ग), मूल शब्द के बाद शब्दांश जोड़कर (प्रत्यय), दो शब्दों के बीच विभक्ति का लोप (समास), दो शब्दों में आए वर्णों के मिलने पर किसी प्रकार के रूपांतरण से (संधि)।

27.2. प्रश्न–उत्तर

4 अंक के प्रश्न

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

1 **अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया ऐसे जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो और मैंने, सिर्फ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो।**

संदर्भ : यह गद्यांश 'मोहन राकेश' द्वारा लिखित यात्रा वृत्तांत 'आखिरी चट्टान' से लिया गया है।

प्रसंग : लेखक सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए किसी ऊँचे स्थान की तलाश में थे, जहाँ से वे पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार देख सके। अंत में उन्हें ऐसा टीला मिल गया जहाँ से वे सूर्यास्त को पूरे विस्तार में देख सकते थे।

व्याख्या : लेखक ऐसे स्थान की तलाश में थे जहाँ से वे डूबते हुए सूर्य का नज़ारा पूरे विस्तार से देख सके। अनेक रेतीले टीले पार करके अंत में वह एक ऐसे ऊँचे टीले पर पहुँच गये। चूँकि लेखक ने इस टीले को खोजने और उस पर चढ़ने का बहुत अधिक प्रयत्न किया था, इसी कारण इस टीले पर चढ़ने से उन्हें वैसा ही सुख और संतोष मिला जैसा तेनजिंग और हिलेरी को पहली बार हिमालय की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने से मिला होगा। लेखक को अनुभव हुआ कि यह रेत का टीला भी एवरेस्ट से कम ऊँचा नहीं है और केवल उसी ने इस पर चढ़ने में पहली बार सफलता प्राप्त की है।

विशेष : लेखक द्वारा टीला मिल जाने की संतुष्टि को एवरेस्ट विजय के समान दर्शाना सराहनीय है। इस कथन में मनोविज्ञान का यह सिद्धांत निहित है कि आदमी को अपनी खोज, अपने प्रयास और अपनी सफलता पर जो प्रसन्नता होती है, वह अन्य किसी परिस्थिति में नहीं होती।

2 **'बड़ी–बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी–सी चट्टान।'**

संदर्भ : यह गद्यांश 'मोहन राकेश' द्वारा लिखित यात्रा वृत्तांत 'आखिरी चट्टान' से लिया गया है।

प्रसंग : इस गद्यांश में लेखक कन्याकुमारी मंदिर के सामने समुद्र में स्थित जिस चट्टान पर खड़ा है उसकी बाई ओर बंगाल की खाड़ी है, सामने हिन्द महासागर और दाईं ओर अरब सागर। सागर के इस विस्तार को देखकर लेखक ठगा–सा रह गया।

व्याख्या : सागर में स्थित एक ऊँची चट्टान पर लेखक खड़ा है। उसके बाएँ–दाएँ और सामने दूर–दूर तक समुद्र है। लेखक ने जब पूरे मनोयोग से यह दृश्य देखा तो उसे अपने अस्तित्व का एहसास भी नहीं रहा। वह निश्चेष्ट, निष्प्राण–सा हो गया। उस दृश्य को देखकर लेखक इतना हक्का–बक्का रह गया कि स्वयं भी एक प्राणवान व्यक्ति न रहकर एक अप्राण–दृश्य–सा ही बन गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उन बड़ी–बड़ी चट्टानों के बीच वह भी एक छोटी–सी चट्टान हो। अर्थात लेखक संज्ञाहीन, किंकर्तव्य– विमूढ, ठगा–सा सागर के विस्तार को देखता रह गया।

विशेष : यात्रा–वृत्तांत में लेखक की शैली विशेष होती है। वह सामान्य शब्दों का प्रयोग करते हुए भी अपने कथन में काव्यात्मकता उत्पन्न कर देता है। लेखक के इस कथन में भी सुंदरता आ गई है – 'उस दृश्य के बीच में' जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा बड़ी–बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी सी चट्टान के समान; लेखक का स्वयं को चट्टानों के बीच एक

प्राणहीन चट्टान–सा अनुभव करना ही यह सिद्ध करता है कि समुद्र की विशालता को देखकर लेखक कितना अवाक और गद्‌गद् हो गया।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50 शब्दों में लिखिए।

प्र.1. पश्चिमी क्षितिज में अस्त होते हुए सूर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उ. पश्चिमी क्षितिज में सूर्य धीरे–धीरे नीचे जा रहा था। यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ यह दृश्य देखने के लिए आयी थीं। सूर्य पानी की सतह के पास पहुँच गया था।

सूर्य की सुनहली किरणों ने पीली रेत को एक नया–सा रंग दे दिया था। उस रंग में रेत इस तरह चमक रही थी जैसे अभी–अभी उसका निर्माण करके उसे वहाँ उड़ेला गया हो।

सूर्य का गोला पानी की सतह से छूते ही ऐसा प्रतीत हुआ मानो पानी पर दूर तक सोना–ही–सोना घुल गया है। पर वह रंग इतनी जल्दी–जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था। सूर्य इतनी जल्दी–जल्दी नीचे की ओर जा रहा था जैसे कोई शक्ति उसे पिघले हुए लावे में लुप्त होने के लिए विवशकर रही थी। थोड़ी देर पहले पानी पर जो पीला प्रकाश फैला हुआ था, देखते ही देखते वह एकदम लाल नजर आने लगा। सूर्य की किरणों ने पानी को इतना लाल बना दिया था, मानो दूर–दूर तक लहू बह रहा हो।

प्र.2. यात्रा–वृत्तांत के मुख्य तत्व क्या–क्या हैं। इन तत्वों के आधार पर 'आखिरी चट्टान' पाठ की समीक्षा कीजिए।

उ. यात्रा–वृत्तांत के मुख्य तत्व हैं – निजता, स्थानीयता, तथ्यात्मकता तथा चित्रात्मक भाषा का प्रयोग।

समीक्षा :– यात्रा साहित्य में लेखक अपने अनुभवों का वर्णन करता है, जिसके माध्यम से हम लेखक के निजी जीवन के बारे में अनेक महत्वपूर्ण बातें जानने में समर्थ हो जाते है। लेखक यात्रा के दौरान प्राकृतिक दृश्यों में स्वयं को पूरी तरह समा लेता है, वह चेतनाहीन–सा उन्हें देखता रहता है।

इस रचना के निम्नलिखित अंश को पढ़कर हमें ज्ञात होता है कि लेखक कोई भी काम अधूरे मन से नहीं करता, वह कष्ट–कठिनाई से घबराता नहीं – 'जल्दी–जल्दी चलते हुए मैंने एक के बाद एक टीले पार किए। टाँगे थक रहीं थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था।'

निजता के साथ–साथ आत्मीयता अर्थात पूरी तरह रम जाना, का भी भाव जुड़ा है। 'आखिरी चट्टान' रचना में भी लेखक का मन समुद्र तट की रेत में रम गया था। जैसे – 'मन था कि किसी तरह हर रंग की थोड़ी–थोड़ी रेत अपने पास रख लूँ। पर उसका कोई उपाय नहीं था, यह सोचकर कि फिर किसी दिन आकर उस रेत को बटोरूंगा, मैं उदास मन से वहाँ से आगे चल दिया।'

स्थानीयता :– इसका अर्थ है कि यात्रा–वर्णन के लिए लेखक एक स्थान विशेष को अपना विषय चुनता है। यात्रा के दौरान विभिन्न स्थान, प्राकृतिक सौंदर्य, रीति–रिवाज आदि लेखक के मन पर अमिट छाप अंकित कर देते हैं। अतः लेखक जब इन सबके बारे में लिखने बैठता है तो उन विशेषताओं को अवश्य प्रकट करता है जो उस स्थान विशेष से जुड़ी है। 'आखिरी–चट्टान' पाठ में भी लेखक ने कन्याकुमारी में स्थित विवेकानंद चट्टान का प्रभावशाली वर्णन किया है। साथ ही कन्याकुमारी के मंदिर, सैंडहिल, सैंडहिल के पीछे पश्चिमी क्षितिज, सागर–तट के नारियलों के झुरमुट, अनेक रंगों की रेत, सागर की लहरों का मोहक वर्णन किया है।

तथ्यात्कमता :– यात्रा वृत्तांत में लेखक जिस स्थान, व्यक्ति या अन्य वस्तुओं का वर्णन करता है, पाठकों को उनके बारे में तथ्यात्मक जानकारी भी देता है। इससे पाठक यात्रा किए बिना भी तमाम तथ्यों से परिचित हो जाता है। इसीलिए तथ्यात्मकता को स्थानीयता का पूरक गुण भी माना जाता है। 'आखिरी चट्टान' पाठ में भी लेखक ने अनेक तथ्यात्मक विवरण दिये हैं। जैसे :– 'इसी प्रकार सैंडहिल पर बहुत से लोग थे। आठ–दस नवयुवतियाँ, छह–सात नवयुवक, दो–तीन गाँधी टोपी वाले व्यक्ति। वे शायद सूर्यास्त देख रहे थे। गवर्नमेंट गेस्ट हाउस के बैरे उन्हें सूर्यास्त के समय की कॉफी पिला रहे थे। उन लोगों के वहाँ होने से सैंडहिल बहुत रंगीन हो उठी थी।'

चित्रात्मक सरल भाषा :– यात्रा–वर्णन करते समय लेखक सरल, रोचक और चित्रात्मक भाषा का प्रयोग करता है। इससे जहाँ वर्णन में रोचकता आती है, वहीं पाठक भी उस विवरण को मनोयोग से पढ़ता है। 'आखिरी चट्टान' की भाषा भी आम बोल चाल की भाषा है। उदा :– 'रात। केप होटल का लॉन। अँधेरे में हिन्द महासागर को काटती हुई स्याह लकीरें – एक पौधे की टहनियाँ, नीचे आदमी। दक्षिण पूर्व के क्षितिज में एक जहाज की मद्धिम–सी रोशनी।'

यात्रा–वर्णन करते समय लेखक कई विदेशी शब्दों का प्रयोग भी करता है। 'आखिरी–चट्टान' पाठ में भी लेखक ने उर्दू, अंग्रेजी आदि शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे :– केप होटल, बाथ टैंक, खयाल, एहसास आदि।

इसी प्रकार सामान्य बोलचाल के शब्दों का प्रयोग भी किया गया है। जैसे :– टोलियाँ, टीला, झुरमुट आदि। इन सामान्य बोलचाल के शब्दों के प्रयोग से वर्णन में स्वाभाविकता, रोचकता और चित्रात्मकता आ गई है। अतः हम कह सकते हैं कि 'आखिरी–चट्टान' रचना में यात्रा–वृत्तांत के सभी आवश्यक तत्वों का समावेश हो गया है।

28. जिजीविषा की विजय

28.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. मन में समाहित 'जीवन की लालसा' मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है।
2. अपंगता जीवन की गतिशीलता में बाधक नहीं हो सकती, डॉ. रघुवंश इसके साक्षात उदाहरण हैं।
3. डॉ. रघुवंश के जीवन जीने का ढंग यह सिद्ध करता है कि अपंग लोगों को दया व सहानुभूति के स्थान पर अपनत्व और सहयोग चाहिए।
4. मन की सुदृढ़ता और संकल्प शक्ति ही व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आधार है, डॉ. रघुवंश इसी संकल्प–शक्ति के कारण निरंतर लिखते रहे और सफलता की ऊँचाइयों को छूते रहे। डॉ. रघुवंश में आत्मविश्वास कूट–कूट कर भरा हुआ है।
5. डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व उनकी जिजीविषा शक्ति और कार्यक्षमता की चरम परिणति में योजकता, अर्थ की शुचिता, आत्मबल, कर्तव्य निष्ठा, क्षमता के गुण समाहित हैं।
6. गद्य साहित्य की नवीन विधाओं में संस्मरण एक जीवंत और रोचक विधा है।
7. संस्मरण की विशेषतएँ हैं – आत्मीयता, स्मरणभाव, सत्यता, लेखक की निजी दृष्टि की प्रधानता, तटस्थ दृष्टि, परिचित व्यक्ति का अपने दृष्टिकोण से विश्लेषण। संस्मरण की प्रमुख विशेषताओं के आधार पर यह रचना खरी उतरती है। संस्मरण की भाषा–शैली सरल, रोचक, भावात्मक, प्रवाहमान तथा आत्मीयतापूर्ण है।
8. डॉ. रघुवंश की प्रमुख कृति है – मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन। इसके द्वारा उनका विचारक रूप प्रखर होकर निखरा।
9. उन्हें 'भारत भारती सम्मान' बिड़ला ट्रस्ट द्वारा 'शंकर पुरस्कार', 'श्री भगवान दास पुरस्कार' से समय–समय पर सम्मानित किया गया।

28.2. प्रश्न–उत्तर

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. संस्मरण की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उ. 1. संस्मरण गद्य साहित्य की नवीन विधाओं में समाहित है।
2. संस्मरण में स्वाभाविकता, सरलता व रोचकता के साथ–साथ वर्णनात्मक शैली भी होती है।
3. सत्यता, तटस्थता और आत्मीयता अच्छे संस्मरण की विशेषता होती है।
4. संस्मरण परिचित व्यक्ति के जीवन से जुड़ी सत्य घटनाओं की अभिव्यक्ति होता है।

प्र.2. मन क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उ. वैज्ञानिकों के अनुसार मस्तिष्क की तरंगों को कोई चेतना, कोई चिति, कोई संज्ञान की संज्ञा देता है, कल्पना करना, अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाओं का

संपादन मस्तिष्क करता है, जिनके समुच्चय का नाम 'मन' है। मन को विद्वानों वे तीन मंजिला भवन – नववल्कल, वत्सल, सर्पिल माना। यह मन ही तो है, जिसमें चाह है, लक्ष्य है वहीं उसमें पवित्रता, कोमलता व प्रियता होती है।

प्र.3. लेखक ने डॉ. रघुवंश को 'कर्मयोगी' क्यों कहा है?

उ. डॉ. रघुवंश एक मजबूत मन और दृढ़ संकल्प शक्ति सम्पन्न व्यक्ति है। संकल्प शक्ति ही मन को जागरित करती है और व्यक्ति के जीवन में नया प्राण फूँकती है, और जीवन को अर्थ देती है। इस संकल्प शक्ति के कारण ही वे निरंतर लिखते रहे। उनका व्यक्तित्व सदैव सौम्य रहा। मैं किसी से कम नहीं हूँ, यह भाव प्रारंभ से ही उनमें विद्यमान रहा। शारीरिक दृष्टि से छोटा नहीं, अप्रत्याशित बाधा होते हुए भी मन कर्म में निरंतर रत रहा और नव–नव प्रकाश विकीर्ण होता रहा। इसीलिए लेखक ने उन्हें सच्चे अर्थों में 'कर्मयोगी' कहा।

प्र.4. डॉ. रघुवंश को देखकर लेखक के दंग रह जाने का कारण स्पष्ट कीजिए।

उ. लेखक की डॉ. रघुवंश से सर्व प्रथम भेंट भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में 1954 में हुई। राम निवास बाग के भव्य हॉल में अधिवेशन संपन्न हो रहा था। लेखक तो देखते ही दंग रहे गये कि एक व्यक्ति पैर से निरंतर तेजी से लिखता जा रहा था। जब वहाँ विद्यमान अन्य विद्वानों से उनका परिचय प्राप्त हुआ कि यह तो डॉ. रघुवंश है, जिनके विषय में वे विद्यार्थी जीवन से सुनते आ रहे थे। किंतु लेखक को यह नहीं मालूम था कि लेखन कार्य में इतना सक्रिय विद्वान दोनों हाथों से लाचार है।

प्र.5. 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन' में डॉ. रघुवंश द्वारा व्याख्यायित मुख्य विचारों को प्रकट कीजिए।

उ. 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन' कृति द्वारा डॉ. रघुवंश का प्रखर विचारक रूप निखर कर आया। लेखक की तटस्थ दृष्टि ही डॉ. रघुवंश द्वारा रचित इस जीवनी 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन' की उस दृष्टि को उभारती है जिसमें हिंसा, प्रतिशोध और स्वार्थ के अंधकार में घिरा वर्तमान विश्व का वातावरण ईसा की दया, करुणा और क्षमा को भारतीय परंपरा से जोड़ कर देखता है। ईसा का जीवन और दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा से मेल खाती है।

प्र.6. 'डॉ. रघुवंश का बाह्य और आंतरिक रूप तो स्वच्छ था ही, अर्थ संबंधी शुचिता भी उनके व्यक्तित्व में देखने को मिलती है', इसका एक उदाहरण दीजिए।

उ. डॉ. रघुवंश का बाह्य और आंतरकि रूप तो स्वच्छ था ही, अर्थ संबंधी मामलों में भी स्वच्छ है – किस युक्ति से वे रिक्शे में बैठने से पूर्व उस चालक की देय राशि निकालकर रख लेते हैं, यह विस्मयकारी है जिससे उनको साथ ले जाने वाले व्यक्ति अपने पास से रुपये न दे दें। अर्थ की शुचिता के वे ज्वलंत उदाहरण थे।

प्र.7. संस्मरण क्या है?

उ. अपनी यादों के आधार पर किसी को याद करना, उसका स्मरण करना ही संस्मरण कहलाता है। आत्मीयता से जुड़े उस व्यक्तित्व को और उससे जुड़ी विशिष्ट घटनाओं को जब हम घटनाक्रम में बाँधकर उसे आकर्षक संस्मरण चरित्र के रूप में उजागर करते हैं तो साहित्य में वह विधा संस्मरण कहलाती है। संस्मरण गद्य साहित्य की नवीन विधा है।

प्र.8. 'जिजीविषा की विजय' इस संस्मरण के लेखक का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उ. 'जिजीविषा की विजय' के लेखक प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी से सेवा निवृत्त हुए। वहाँ वे 'हिंदी तथा प्रादेशिक भाषाएँ' विभाग के विभागाध्यक्ष थे। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ अखिल भारतीय प्रशासनिक कोश, भारतीय भाषाएँ आदि 35 से अधिक प्रकाशित पुस्तकें हैं। उन्हें 'सील आफ आनर' साहित्य वाचस्पति, नातालि पुरस्कार और महामना मदन मोहन मालवीय सम्मान से अलंकृत भी किया गया।

प्र.9. डॉ. रघुवंश की कृतियों के नाम बताइए।

उ. डॉ. रघुवंश की कृतियों के नाम हैं – तंतुजाल, अर्थहीन, छायालय (कथा साहित्य), हरिघाटी (यात्रा संस्मरण), मानव पुत्र ईसा (जीवन), नाट्यकला, साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य आदि। केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में जो विशिष्ट व्याख्यान माला के अंतर्गत भाषण दिए, उनको संस्थान ने ही 'समसामायिक हिंदी कविता और आलोचना' शीर्षक से प्रकाशित किया है।

प्र.10. 'जिजीविषा की विजय' इस संस्मरण से शुद्ध साहित्यिक भाषा का एक उदाहरण मूल पाठ से छाँट कर लिखिए।

उ. 'जिजीविषा की विजय' इस संस्करण की भाषा सरल और साहित्यिक है। जैसे – 'मस्तिष्क की तरंगों को कोई चेतना, कोई चिति, कोई संज्ञान की संज्ञा देता है, कल्पना करना, अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाओं का संपादन मस्तिष्क करता है, जिनके समुच्चय का नाम 'मन' है।

प्र.11. पारिभाषिक शब्द क्या है? मूल पाठ से पारिभाषिक शब्दावली चुनकर लिखिए।

उ. विशिष्ट क्षेत्र में विशिष्ट संदर्भ में निश्चित संकल्पनाओं को खोलने वाले शब्द ही पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं। यहाँ 'मन' की बात विस्तार से हुई है तो तत्संबंधी पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग दर्शनीय है : 'मन को विद्वानों ने तीन मंजिला भवन – नववल्कल, वत्सल और सर्पिल माना।

प्र.12. डॉ. रघुवंश के लेखन कार्य पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उ. डॉ. रघुवंश तेजी से अपने पैरों से लेखन कार्य करते थे। क्योंकि वे दोनों हाथों से लाचार थे। 1954 में हिंदी परिषद के जयपुर अधिवेशन की पूरी कार्यवाही की निरंतर रिपोर्टिंग डॉ. रघुवंश ही बड़ी तेज़ी से अपने पैरों से ही की रहे थी। साधारणतः परीक्षा में ऐसे बालकों को लेखक देने

का प्रावधान है, पर डॉ. रघुवंश ने अपनी सूझबूझ से ऐसी पद्धति विकसित कर ली थी, जो प्रायः देखने को नहीं मिलती है।

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. डॉ. रघुवंश को किन–किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

उ. डॉ. रघुवंश की कृति 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन' यह जीवनी विधा में लिखी गयी पुस्तक हमारे समाज के लिए परम उपयोगी है जिस पर धर्म–दर्शन के लिए 1985 का श्री भगवानदास पुरस्कार उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा डॉ. रघुवंश को दिया गया। बिड़ला ट्रस्ट द्वारा 'शंकर पुरस्कार' प्रदान किया गया। 1994 में उन्हें उत्तर प्रदेश शासन का प्रतिष्ठित 'भारत भारती पुरस्कार' प्रदान किया गया।

प्र.2. डॉ. रघुवंश की विद्रोही और जुझारू प्रकृति को अपने शब्दों में लिखिए।

उ. डॉ. रघुवंश पूरे आत्मविश्वास के साथ कार्य करते थे। उनकी योग्यता उनके कार्यों से प्रकट होती है। 'हिंदी साहित्य कोश' के संपादक मंडल, उस परियोजना का संयोजकत्व भी डॉ. रघुवंश ने कुशलता से किया। किसी भी परियोजना का विकास कर उसे ऊँचाई तक पहुँचाना उनका स्वभाव बन गया। रोचकता, आत्मविश्वास, आत्मबल, कर्तव्यनिष्ठा आदि गुणों का संबल लेकर वे निरंतर आगे बढ़े। प्रारंभ से ही वे विद्रोही व जुझारू प्रकृति के रहे। लोहिया जी की विचारधारा से वे प्रभावित रहे। देश में आपात काल की घोषणा के बाद उन्होंने कारगार से जो पत्राचार किया, वह पत्र–विधा की अभूतपूर्व कृति बन गयी और बाद में 'जेल और स्वतंत्रता' शीर्षक से प्रभावित हुई। इस प्रकार डॉ. रघुवंश 'मन जिसका मजबूत' के जीते–जागते उदाहरण है।

7 अंक के प्रश्न

प्र.1. निम्नलिखित अंश की व्याख्या कीजिए।

उ. शारीरिक दृष्टि से छोटा नहीं, अप्रत्याशित बाधा होते हुए भी मन कर्म में निरंतर रत रहा और नव–नव प्रकाश विकर्ण होता रहा।

संदर्भ :– यह गद्यांश प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया द्वाना रचित 'जिजीविषा की विजय' नामक संस्मरण से लिया गया है।

प्रसंग :– इस गद्यांश में लेखक ने डॉ. रघुवंश के व्यकितत्व की विशेषताओं को उजागर किया है।

व्याख्या :– डॉ. रघुवंश का व्यक्तित्व सौम्य था। व्यक्ति की यह वृत्ति ही प्रसन्नता का रूप लेती है। मैं किसी से कम नहीं हूँ, यह भाव प्रारंभ से ही उनमें विद्यमान रहा था। इसी कारण वे सच्चे अर्थों में 'कर्मयोगी' रहे। शारीरिक दृष्टि से छोटा नहीं, अप्रत्याशित बाधा होते हुए भी मन

कर्म में निरंतर रह रहा और नव–नव प्रकाश निकीर्ण होता रहा। डॉ. रघुवंश ने अपने जीवन में इच्छाशक्ति से निरंतर लेखन कार्य किया।

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. निम्नलिखित अंश की व्याख्या कीजिए।

मस्तिष्क की तरंगों को कोई चेतना, कोई चिति, कोई संज्ञा की संज्ञा देता है, कल्पना करना, अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाओं का संपादन मस्तिष्क करता है, जिनके समुच्चय का नाम 'मन' है।

उ. **संदर्भ** :– यह गद्यांश प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया द्वारा रचित 'जिजीविषा की विजय' नामक संस्मरण से लिया गया है।

प्रसंग :– लेखक की डॉ. रघुवंश से सर्वप्रथम हुई भेंट में उनकी अपंगता का ज्ञान हुआ और साथ ही उनके जिंदादिल, कर्मठ व्यक्तित्व का साक्षात्कार हुआ। तब से वं सोचने लगे कि आखिर वह कौन–सा तत्व है जो डॉ. रघुवंश को विपरीत परिस्थितियों में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। अंत में उन्होंने यह मत बनाया कि निश्चित रूप से डॉ. रघुवंश के मन में दृढ़ निश्चयी भाव था। प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक 'मन' की व्याख्या करते हुए डॉ. रघुवंश के दृढ़ व्यक्तित्व को उजागर किया है।

व्याख्या :– इस अनुच्छेद में लेखक ने 'मन क्या है।' इस विषय पर हुई अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि मन और मस्तिष्क में अंतर है। मस्तिष्क में अनगिनत चेतना की तरंग उठती रहती है, कोई उसे चेतना, कोई चिति, कोई संज्ञान की संज्ञा देता है। कल्पना करना, अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाएँ मस्तिष्क करता है – इन समुच्चय का नाम ही 'मन' है। डॉ. रघुवंश ने अपनी अपंगता को जीवन के किसी कार्य में बाधक नहीं बनने दिया। उन्होंने निश्चित रूप से मन की गहराई में दृढ़ संकल्प कर लिया था कि जीवन में सफल होना ही है चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ आड़े क्यों न आए। जिसका मन मजबूत होता है, उसका कोई कुछ भी नहीं बिगड़ सकता।

प्र.2. संस्मरण विधा की विशेषताओं के आधार पर 'जिजीविषा की विजय' की समीक्षा कीजिए।

उ. 'जिजीविषा की विजय' इस संस्मरण में संस्मरण विधा की वे सभी विशेषताएँ है जो एक अच्छे संस्मरण में होनी चाहिए। लेखक डॉ. रघुवंश के नाम से अपने विद्यार्थी जवीन से परिचित थे। किंतु उनकी पहली भेंट भारतीय हिंदी परिषद के जयपुर अधिवेश में हुई। डॉ. रघुवंश को एक पैर से निरंतर तेज़ी से लिखते देखकर लेखक ढंग रह गये। डॉ. रघुवंश दोनों हाथों से लाचार हैं – यह बात लेखक को उसी समय पता चली। लेखक डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। साधारणतया अपंग बालकों को परीक्षा में लेखक देने की सुविधा होती है परंतु डॉ. रघुवंश अकेले निरंतर रिर्पोटिंग का काम कर रहे थे। वास्तव में उन्होंने अपनी सूझ–बूझ से लेखन की इस पद्धति को विकसित कर लिया था। उनका मन विपरीत स्थितियों में उन्हें आगे बढ़ने की

प्रेरणा देता था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की एम.ए. की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर सभी को चकित कर दिया। और उन्होंने संकल्प व्यक्त किया कि वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापन के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं स्वीकार करेंगे। चयन समिति और विश्वविद्यालय की कार्य समिति ने चर्चा कर उन्हें हिंदी विभाग में प्राध्यापक के रूप में स्वीकार किया।

संस्मरण में स्मृति के आधार पर हम जिस प्रभाव पूर्ण व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति देते हैं, उसके जीवन से जुड़ी हुई जिन घटनाओं का उल्लेख करते हैं, उसमें सच्चाई का होना अत्यंत आवश्यक है। घटनाओं के साथ–साथ उस विशिष्ट व्यक्ति का चरित्र भी उभर कर सामने आता है। लेखक ने प्रत्येक घटना के साथ–साथ डॉ. रघुवंश के चरित्र को खोला है। हमें घटनाक्रम के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व दोनों का परिचय प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए डॉ. रघुवंश हाथों से अपंग होते हुए भी वे कार्यक्षम, तत्पर, सूझ–बूझ तथा कर्मठ प्रवृत्ति के थे। उनकी संकल्पशक्ति, सौम्य व्यक्तित्व, कर्मयोगी प्रवृत्ति, आत्मविश्वास पूर्ण काम करने की क्षमता, आगे बढ़ने की योग्यता, विद्रोही और जुझारू प्रकृति विभिन्न रूपों में दिखायी देती है।

लेखक की तटस्थ दृष्टि डॉ. रघुवंश के 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन' उस दृष्टि को उभारती है। ईसा का जीवन और दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा से मेल खाते हैं।

प्रस्तुत संस्मरण स्वाभाविक, सरलता, रोचकता के साथ–साथ वर्णनात्मक शैली में है। जिसमें कौतुहल और रूचि दोनों का समावेश है। बहुत ही अच्छे ढंग से मन का विश्लेषण किया है। भावात्मक, वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक शैली के संयोजन से यह संस्मरण बहुत ही प्रभावपूर्ण बन पाया है। अतः हम कह सकते है कि, 'जिजीविषा की विजय' संस्मरण में वे सभी विशेषताएँ है जो एक अच्छे संस्मरण में होनी चाहिए।

प्र.3. डॉ. रघुवंश संकल्प शक्ति के कारण निरंतर लिखते रहे और सफलता की ऊँचाई को छूते रहे। डॉ. रघुवंश में आत्मविश्वास कूट–कूट कर भरा हुआ है। _____ सिद्ध कीजिए।

उ. जिजीविषा और संकल्पशक्ति से जुड़े साहित्यकार और विचारक डॉ. रघुवंश का व्यक्तित्व सौम्य था। व्यक्ति की वृत्ति ही प्रसन्नता का रूप लेती है।

'मैं किसी से कम नहीं हूँ।' यह भाव प्रारंभ से ही उनमें विद्यमान रहा। यह विद्वान दोनों हाथों से लाचार है। फिर भी वे आत्मविश्वासपूर्वक सूझबूझ से पैरों से लिखने की पद्धति विकसित कर ली थी। वे विपरीत परिस्थितियों मे भीं आगे ही बढ़ते गये। अतीद्रिय अनुभवों के केंद्र, मन में ही उन्होंने पक्का विचार बना लिया होगा। उन्होंने जो लेखन कार्य किया, वह बहुत से उन विद्वानों से भी संभव नहीं हो सका जिन्होंने मजबूत हाथ लेकर जन्म लिया। यह मन ही है, जिसमें चाह है, लक्ष्य है, वहीं उसमें पवित्रता, कोमलता व प्रियता है। उनका नव–उत्साह से भरा मन हमेशा लेखन कार्य, सेवा कार्य में रमता है। हर प्रकार की स्वच्छता की भावना उनके स्वभाव का अभिन्न अंग रही है। वे अर्थ की शुचिता के वे ज्वलंत उदाहरण है।

यह सब कुछ संभव हो पाने के पीछे उनका मजबूत मन तो है ही, साथ ही वह संकल्प शक्ति भी है, जो उन्होंने स्वतः ही धारण कर ली थी क्योंकि मन ही तो संकल्पमय होकर सक्रिय हो उठता है। संकल्प ही से व्यक्ति की प्रतिष्ठा है।

डॉ. रघुवंश ने जीवन में जो सर्जना की, वह सब कुछ इसी संकल्प के कारण है क्योंकि सर्जनात्मक चैतन्य ही तो संकल्प हे। संकल्प ही तो चेतना का वह गुण है, जिसमें मन की दृढ़ता, इच्छा, विचार, चिंतन, विमर्श विद्यमान रहते हैं। गुण के रूप में संकल्प ही मन का लक्षण है। मनुष्य मात्र इस संकल्प से ही संचालित होता है। इसी संकल्प शक्ति के कारण ही डॉ. रघुवंश निरंतर लिखते रहे।

वे आत्मविश्वासपूर्वक कार्य करते रहे। उनकी योग्यता उनके कार्यों से प्रकट होती है। योजकता, आत्मविश्वास, आत्मबल, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि गुणों का संबल लेकर वह निरंतर आगे बढ़ते ही गये।

प्र.4. 'जिजीविषा की विजय' पाठ से उन दो अंशों का चयन कीजिए, जब लेखक की डॉ. रघुवंश से भेंट हुई।

उ. 'जिजीविषा की विजय' के दो अंश जब लेखक डॉ. रघुवंश से मिले थे। 'जिजीविषा की विजय' पाठ के लेखक की सर्वप्रथम भेंट हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में 1954 में हुई। राम निवास बाग के भव्य हॉल में अधिवेशन संपन्न हो रहा था। लेखक तो देखते ही दंग रह गये कि एक व्यक्ति पैर से निरंतर तेज़ी से लिखता जा रहा है। जब वहाँ विद्यमान अन्य विद्वानों से उनका परिचय प्राप्त हुआ तो ज्ञात हुआ कि यह तो डॉ. रघुवंश है। लेखन कार्य में इतना सक्रिय विद्वान दोनों हाथों से लाचार है। इस अधिवेशन में बहुत से सक्षम लेखकों के होते हुए भी पूरी कार्यवाही की निरंतर रिपोर्टिंग डॉ. रघुवंश ही बड़ी तेज़ी से अपने पैरों से ही कर रहे थे।

डॉ. रघुवंश को अधिक निकट से देखने का दूसरा अवसर एवं सौभाग्य लेखक को 1963 में मिला। इस बार भारतीय हिंदी परिषद् का अखिल भारतीय अधिवेशन अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय था। इसका उद्घाटन महादेवी वर्मा जी ने किया। परिषद् के विविध क्रियाकलापों से जुड़े होने के कारण डॉ. रघुवंश पर विशेष उत्तरदायित्व था और लेखक विश्वविद्यालय में कार्यरत थे। इस बार लेखक उनकी कार्यपद्धति से अधिक अवगत हुआ।

29. निबंध कैसे लिखें

29.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. निबंध को लेखन का एक ऐसा रूप कहा जा सकता है, जिसमें भावों या विचारों को क्रमानुसार और श्रृंखलाबद्ध रूप से व्यक्त किया जाता है।
2. निबंध की भाषा विषय के अनुरूप रखी जाती है। उसमें कसावट तथा प्रभाव का होना आवश्यक है।
3. निबंध लेखन से पूर्व विभिन्न स्रोतों से सामग्री का चुनाव किया जाता है। संकलित सामग्री को विषय के अनुरूप एक खाके में रखना ही रूपरेखा कहलाती है। ये दो प्रकार की होती है – विस्तृत और संक्षिप्त रूपरेखा।
4. निबंध के तीन अंग होते हैं –

   प्रस्तावना : संक्षिप्त, रोचक तथा विषय–वस्तु को स्पष्ट करने वाली होती है।

   मुख्य अंश : इस में निबंध की विषयवस्तु का विस्तृत विवेचन किया जाता है।

   उपसंहार : निबंध का अंत उपसंहार से होता है, जिसमें लेखक का निष्कर्ष या मंतव्य प्रकट होता है।
5. निबंध मूलतः चार प्रकार के होते हैं –
   - **वर्णनात्मक निबंध** : वर्णन और विवरण से युक्त होता है।
   - **विचारात्मक निबंध :** इन के विषय मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, राजनीतिक अथवा दार्शनिक चिंतन से संबंधित होते हैं।
   - **भावात्मक निबंध :** विभिन्न भावों पर लिखे जाते हैं, जैसे 'क्रोध, घृणा, श्रद्धा आदि।
   - **साहित्यामक या आलोचनात्मक निबंध :** इस में किसी साहित्यकार, विधा व साहित्यिक प्रवृत्ति का विवेचन होता है।
6. निबंध की भाषा–शैली विषय के अनुरूप परिवर्तित होती है, जैसे किसी भावात्मक निबंध की भाषा–शैली भावपूर्ण, आलंकारिक और सरल होगी जबकि किसी वैज्ञानिक निबंध की भाषा तथ्य–परक और सपाट होगी।

29.2. प्रश्न–उत्तर

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. निबन्ध की भाषा कैसी होनी चाहिए?

उ. निबन्ध की भाषा सरल, स्पष्ट, व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध, प्रभावपूर्ण एवं विषयानुकूल होनी चाहिए। निबन्ध लेखन में अच्छी भाषा–शैली का बड़ा महत्व है। सामान्यतः एक अच्छे निबन्ध की भाषा सरल अर्थात आम बोलचाल के निकट होनी चाहिए। पुस्तकीय भाषा का प्रयोग निबन्ध में नहीं होना चाहिए। विचारों के अनुरूप भाषा होने से निबन्ध का प्रभाव बढ़ जाता है।

प्र.2. निबन्ध क्या हैं? उसके बारे में आप क्या जानते हो?

उ. 'निबंध' शब्द 'बन्ध' शब्द में 'नि' उपसर्ग लगने से बना है। 'बन्ध' का अर्थ है – बांधना, 'नि' जोड़ने से इसका अर्थ होता है – अच्छी प्रकार या भली प्रकार बांधना। 'निबन्ध' में भावों और विचारों को एक व्यवस्थित क्रम में लिखा जाता है यह गद्य साहित्य की एक विधा है।

प्र.3. 'निबन्ध' कैसे लिखा जाता है?

उ. हमें जिस विषय पर निबन्ध लिखना होता है, सबसे पहले हमें उसके महत्व को समझना चाहिए। इसी को निबन्ध की प्रस्तावना या भूमिका भी कहा जाता है। उसके बाद हमें उस विषय से सम्बन्धित विचारों को एकत्र करना, क्रमबद्ध करना, उसके सम्बन्ध में उदाहरण व तथ्य जुटाना आदि कार्य करने चाहिए। इसके बाद हमें इन सभी विचारों को क्रमबद्ध रूप में लिखना चाहिए। ध्यान रहे कि लिखने की भाषा जितनी प्रभावशाली होगी, निबन्ध को उतना ही उत्तम माना जायेगा।

प्र.4. निबन्ध लिखने से पूर्व हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उ. निबन्ध लिखने हेतु जो प्रश्न दिए जाते हैं प्रायः उनमें कई विकल्प होते हैं। जैसे हमें तीन विषय दिये गये हो, और उनमें से किसी एक विषय को चुनना हो, तो हमें विषय चुनने में असमंजस का सामना करना पड़ता है। पहली बात तो यह है कि हमें उस विषय का चयन करना चाहिए, जिसकी हमें अच्छी जानकारी हो।

विषय के चुनाव के बाद हमें निबन्ध की रूपरेखा का निर्माण करना होता है। यह निबन्ध के प्रभाव, स्पष्टता एवं विषय–वस्तु की क्रमबद्धता के लिए बहुत जरूरी है।

निबन्ध के प्रस्तुतीकरण में विचारों एवं भावों की क्रमबद्धता अत्यावश्यक है। इसके अभाव में स्पष्ट अभिव्यक्ति असंभव है। तर्क का समावेश भी इसके भीतर जरूरी है। अतः निबन्ध लिखने से पूर्व हमें इस तत्व पर विचार कर लेना चाहिए। साथ–ही–साथ निबन्ध का मौलिक होना बहुत आवश्यक है। वह किताबी भाषा में नहीं होना चाहिए। अतः निबन्ध की मौलिकता के सन्दर्भ में भी लिखने से पूर्व विचार कर लिया जाय तो उत्तम ही होगा।

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'निबन्ध' क्या है? अच्छे निबंध में कौन–कौन से गुण होने चाहिए?

अथवा

'निबन्ध' की परिभाषा देते हुये, अच्छे निबंध की विशेषताएँ बतलाइए?

उ. 'निबन्ध' शब्द 'नि+बन्ध' से बना है, जिसका अर्थ है – अच्छी तरह से बँधा हुआ। अर्थात् निबन्ध में भावों और विचारों को एक व्यवस्थित क्रम में लिखा जाता है। जब किसी विषय या घटना को सही क्रम देकर एक से अधिक अनुच्छेदों में लिखा जाता है, तब वह निबन्ध कहलाता है। यह बड़े से बड़े और छोटे से छोटे विषय पर भी लिखा जा सकता है।

अच्छे निबन्ध की विशेषताएँ

1. कसावट
2. प्रभावशाली भाषा तथा
3. विषयानुकूलता

कसावट :– अच्छे निबन्ध में विचार और भाषा, दोनों में ही कसावट का गुण होना आवश्यक है। निबन्ध लिखते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि, उस में व्यक्त किए गए विचार या भाव एक निश्चित क्रम में हों और आपस में जुड़े हुए हो। आप अपनी बात को तर्क पूर्ण ढंग से लिखे, जिसे पढ़ने के बाद पाठक किसी निष्कर्ष पर पहुँच सके।

प्रभावशाली भाषा :– शब्द का वाक्य में, वाक्य का अनुच्छेद में उचित तथा क्रमबद्ध प्रयोग होने से भाषा में प्रभाव उत्पन्न होता है। अच्छे निबन्ध में शब्द, वाक्य तथा अनुच्छेद एक विशेष क्रम में गुँथे हुए होने चाहिए। अर्थात् निबन्ध की भाषा सरल, स्पष्ट, शुद्ध एवं प्रभावशाली होनी चाहिए।

विषयानुकूलता :– निबन्ध की भाषा विषय तथा विचारों के अनुरूप होनी चाहिए। उदाहरण के लिए सरल तथा सरस विषय पर लिखे गए निबन्ध की भाषा भी सरल, मुहावरेदार तथा आम बोलचाल के निकट की होनी चाहिए। अच्छे निबन्ध की भाषा विषयानुकूल होनी चाहिए। विचारों की मौलिकता और क्रमबद्धता भी अच्छे निबन्ध की विशेषता होती है।

प्र.2. निबन्ध के अंगों के नाम लिखिए तथा प्रत्येक का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

अथवा

निबन्ध के कितने अंग होते हैं? उनके बारे में संक्षिप्त में लिखिए।

उ. निबन्ध के मुख्यतः तीन अंग होते हैं –

(1) भूमिका या प्रस्तावना
(2) मुख्य अंश या विषयवस्तु का विवेचन तथा
(3) उपसंहार

प्रस्तावना :– निबन्ध के प्रारंभ में उसकी प्रस्तावना या भूमिका लिखी जाती है। निबन्ध की प्रस्तावना रोचक तथा विषयवस्तु को स्पष्ट करनेवाली होनी चाहिए। यह संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली होनी चाहिए।

मुख्य अंश :– प्रस्तावना के बाद निबन्ध का महत्वपूर्ण भाग मुख्य अंश होता हैं। यहाँ विषय–वस्तु का विस्तृत विवेचन किया जाता है। आवश्यकता होने पर विषय–वस्तु को कुछ और उपभागों में भी बाँटा जा सकता है। निबन्ध लेखन में अच्छी भाषा–शैली होनी चाहिए। विषय के अनुरूप सरल, स्पष्ट, शुद्ध तथा प्रभावशाली भाषा होनी चाहिए।

उपसंहार :– उपसंहार निबन्ध के निचोड़ एवं निष्कर्ष को कहा जाता है। जिस प्रकार निबन्ध की रोचकता हेतु भूमिका का महत्व है, उसी प्रकार पाठक पर प्रभाव छोड़ने हेतु उपसंहार का भी अत्यधिक महत्व है। उपसंहार संक्षिप्त, सुसंगठित, स्पष्ट और शुद्ध होना चाहिए।

प्र.3. 'वायुयान' शीर्षक निबन्ध की एक विस्तृत रूपरेखा बनाइए।

उ. वायुयान निबन्ध की रूपरेखा

(क) प्रस्तावना

(ख) मुख्य अंश

1. वायुयान का आविष्कार 2. वायुयान की बनावट
3. वायुयान से लाभ 4. वायुयान से हानि

(ग) उपसंहार

(क) प्रस्तावना :– 'वायुयान' शब्द 'वायु + यान' से बना है, जिसका अर्थ है – हवाई जहाज। पक्षियों को देखकर मनुष्य की उड़ान की कल्पना, परियों की कहानी, पुष्पक विमान आदि की कल्पना से इस भावना को बल मिला है।

(ख) मुख्य अंश :– प्रस्तावना के बाद निबन्ध का महत्वपूर्ण भाग मुख्य अंश होता है। यहाँ विषय–वस्तु का विस्तृत विवेचन किया जाता है। निबन्ध से सम्बन्धित सामग्री को तीन–चार अनुच्छेदों में इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि उसके सभी पहलुओं पर प्रकाश पड़ सके।

वायुयान का आविष्कार :– 18वीं शताब्दी में हाइड्रोजन के गुब्बारे की उड़ान का चलन प्रारंभ, जर्मनी में 1897 ई. में प्रथम वायुयान की कल्पना, अमेरिका के राबर्ट ब्रदर्स द्वारा वायुयान का आविष्कार।

वायुयान की बनावट :– इसका शरीर, आगे एल्यूमीनियम का इंजन, जहाज़ के दोनों ओर पंखे, प्रोपेलन द्वारा वायुयान में गति, पहिए की सहायता से उड़ाना तथा उतारना संभव।

वायुयान से लाभ :– वायुयान के द्वारा अनेक लाभ हैं। वायुयान से हम कम समय में सुदूर प्रान्तों को आसानी से पहुँच सकते हैं। विभिन्न देशों में एकता तथा मेल–मिलाप बढ़ाने में वायुयान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सारे विश्व को एक परिवार की तरह मेल–मिलाप कराने में वायुयान का योगदान है।

वायुयान से हानि :– वायुयान से यात्रा करने हेतु बहुत खर्च होता है। अतः सभी लोग वायुयान से सफर नहीं कर सकते। केवल सम्पन्न लोग ही इसके द्वारा यात्रा कर सकते हैं। इस का उपयोग धनी लोग ही करते हें। वायुयान के केन्द्र बड़े–बड़े शहरों में ही होते है। आमजनता इसका उपयोग नहीं करती। छोटी बड़ी दुर्घटनाओं से जन–धन को होने वाली हानि की आशंका सदैव बनी रहती है।

(ग) **<u>उपसंहार</u>** :– वायुयान का उपयोग बढ़ रहा है, विभिन्न देशों तथा संस्कृतियों में एकता तथा मेल–मिलाप बढ़ाने में वायुयान की महत्वपूर्ण भूमिका होना। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का स्वप्न साकार करने में वायुयान का महत्वपूर्ण योगदान है।

प्र.4. निबन्ध कितने प्रकार के होते हैं? सोदाहरण परिचय दीजिए।

अथवा

विषय वस्तु के विवेचना की दृष्टि से निबन्ध के प्रकार बताते हुए उनके बारे में संक्षिप्त में लिखिए।

उ. विषय वस्तु के विवेचन की दृष्टि से निबन्ध चार प्रकार के माने जा सकते हैं। ये हैं – 1. वर्णनात्मक निबन्ध, 2. विचारात्मक निबन्ध, 3. भावात्मक निबन्ध तथा 4. साहित्यिक या आलोचनात्मक निबन्ध।

<u>वर्णनात्मक निबन्ध</u> :– जिनमें किसी वस्तु, घटना, प्रदेश, त्यौहार आदि का वर्णन किया जाता है, वे वर्णनात्मक निबन्ध कहलाते हैं। ऐसे निबन्धों में अधिक सूचनाएँ होती हैं। दूसरे निबन्धों की अपेक्षा इसे लिखना सरल होता है। इनमें घटनाओं का क्रम में रखना अधिक महत्वपूर्ण होता है। जैसे दीवाली, गणतंत्र दिवस, ओलंपिक खेल आदि।

<u>विचारात्मक निबन्ध</u> :– जिन निबन्धों को लिखने के लिए सोचने–विचारने या अधिक चिंतन की आवश्यकता पड़ता है, वे विचारात्मक निबन्धों के अन्तर्गत आते हैं। ये निबन्ध बुद्धि प्रधान होते हैं। इनमें प्रायः किसी व्यक्तिगत, सामाजिक या राजनीतिक समस्या पर विचार प्रकट किये गये होते हैं। इन निबन्धों की शैली गंभीर होती है। उदाहरण स्वरूप भारत में जनसंख्या वृद्धि की समस्या, आतंकवाद की समस्या, दहेज प्रथा आदि।

<u>भावात्मक निबन्ध</u> :– भावना प्रधान विषयों पर लिखे गए निबन्ध भावात्मक निबन्ध कहलाते हैं, जैसे – वसंतोत्सव, चाँदनी रात, फूल की आत्मकथा, मेरे सपनों का भारत आदि। इस प्रकार के निबन्धों में भावना की प्रधानता होती है। यहाँ लेखक का व्यक्तित्व झलकता है। इन निबन्धों की भाषा कोमल शब्दों से युक्त सरस तथा काव्यात्मक होती है।

<u>साहित्यिक या आलोचनात्मक निबन्ध</u> :– किसी साहित्यकार, साहित्यिक विधा या साहित्यिक प्रवृत्ति पर लिखा गया निबन्ध साहित्यिक या आलोचनात्मक निबन्ध कहलाता है। जैसे – मुशी प्रेमचंद, तुलसीदास, छायावाद, कबीर की काव्य साधना, हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग आदि।

आलोचनात्मक निबन्ध लिखने से पहले आवश्यक है कि विषय से सम्बन्धित सामग्री का विस्तृत अध्ययन कर लिया जाए। उदाहरण के लिए किसी साहित्यकार के विषय में लिखने से पूर्व उसकी जीवनी तथा रचनाओं के साथ ही उस पर लिखी हुई समालोचना भी पढ़ लेनी चाहिए।

ऐसे निबन्ध शोध पत्र के रूप में अधिक लिखे जाते हैं। अतः उच्च कक्षाओं में इनकी आवश्यकता अधिक होती है।

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए।

(1) गणतंत्र दिवस (वर्णनात्मक निबन्ध)

(2) पुस्तकालय

(3) पर्यावरण प्रदूषण (विचारात्मक निबन्ध)

(1) गणतंत्र दिवस (26 जनवरी)

रूपरेखा :–

1. प्रस्तावना
2. 26 जनवरी का महत्व
3. संविधान लागू होना
4. गणतंत्र दिवस पर आयोजन
5. गणतंत्र दिवस का महत्व
6. उपसंहार

प्रस्तावना :– किसी भी देश में उसके धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय त्यौहारों का विशेष महत्व होता है। ये देश की संस्कृति, परंपरा, एकता तथा आत्म विश्वास के प्रतीक होते हैं। हमारे राष्ट्रीय पर्वों में स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस मुख्य हैं। 15 अगस्त, सन् 1947 को हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी अतः वह दिन हमारे लिये बहुत महत्वपूर्ण है। 26 जनवरी को हमारा भारत पूर्ण प्रभुसत्ता–सम्पन्न गणराज्य घोषित हुआ। अतः 26 जनवरी को हम प्रति वर्ष बड़ी धूमधाम से गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं।

26 जनवरी का महत्व :– हमारे देश में स्वतंत्रता संग्राम 1857 से चला रहा था। कांग्रेस के गठन के बाद इसके दो रूप हो गए। एक ओर सत्याग्रह और आन्दोलन चल रहे थे, दूसरी ओर क्रांतिकारी अंग्रेजों के पैर उखाड़ने में लगे थे। इसी क्रम में 26 जनवरी 1929 को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास हुआ कि पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करना ही हमारा ध्येय है। 26 जनवरी, 1930 में रविवार के दिन सारे भारत में 'राष्ट्र–ध्वज' हाथ में लेकर जुलूस निकाले गए, सभाएँ की गयी और यह प्रतिज्ञा की गयी कि जब तक पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती, आन्दोलन चलता रहेगा।

संविधान लागू होना :– स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश के विद्वानों ने अपना संविधान बनाया। उसके बाद यह निर्णय हुआ कि संविधान को 26 जनवरी, 1950 के दिन लागू किया जाय। उसी दिन संविधान के लागू होने के साथ ही भारत सम्पूर्ण प्रभु सत्ता–संपन्न गणतंत्र घोषित हुआ। शासन व्यवस्था पूर्ण रूप से देशवासियों के हाथ में आ गयी। संसदीय प्रणाली

लागू होने के कारण यह दिन हमारे लिए विशिष्ट पूर्ण ऐतिहासिक महत्व का हो गया। इसी दिन को हम गणतंत्र दिवस कहते हैं।

गणतंत्र दिवस पर आयोजन :– गणतंत्र दिवस हमारे लिये विशेष महतवपूर्ण है। प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को भारत की राजधानी दिल्ली, राज्य के मुख्यालय, जिला, तहसील, सरकारी और गैर सरकारी संस्थान तथा शिक्षा संस्थाओं में गणतंत्र दिवस का पर्व बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। चारों ओर हर्ष और उल्लास का वातावरण रहता है। दिल्ली में इंडिया गेट पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। विशेष आकर्षण तो 26 जनवरी की परेड़ का है, जिसमें लगभग सभी राज्यों व प्रदेशों की नाना प्रकार की झांकियाँ, सेना की तीनों अंगों – जल, थल तथा वायु सेना की टुकड़ियाँ मार्च करती हुई राष्ट्रपति को सलामी देती है।

सायंकाल में राष्ट्रपति भवन, संसद भवन तथा अन्य सरकारी तथा गैर सरकारी भवनों पर रोशनी की जाती है। रात में कवि सम्मेलन, मुशायरा तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। राज्य की सभी राजधानियों, नगर, कस्बों तथा विद्यालयों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्र गान होता है। कई प्रकार के कार्यक्रम 26 जनवरी पर आयोजित किए जाते है। इस प्रकार यह राष्ट्रीय पर्व सारे देश में बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है।

गणतंत्र दिवस का महत्व :– आजादी सरलता से प्राप्त नहीं हुई। उसके लिए हमने लम्बा संघर्ष किया है। लाखों ने जेल यातनायें सही, सैकड़ों ने काले पानी की सजा भोगी, हजारों ने बलिदान दिया, देश के अनेकों सपूत फाँसी पर झूलें, तब यह दिन देखने को मिला। 26 जनवरी को हमने सन् 1930 में जो प्रतिज्ञा की थी, वह स्वप्न पूरा हुआ। अतः यह दिन हमारे जीवन का महत्वपूर्ण दिन है।

उपसंहार :– राष्ट्रीय पर्व हमें अपने विगत की याद दिलाता है। भविष्य में अपने राष्ट्र को समुन्नत करने की प्रेरणा देता है। हम उन अमर शहीदों को श्रद्धा से नमन करते हैं, जिन्होंने देश को आजादी दिलाने के लिए अपना तन–मन–धन, सब कुछ अर्पित कर दिया। हमें इस पावन पर्व के उपलक्ष्य में देश की एकता तथा अखंडता की रक्षा के लिए शपथ लेना चाहिए।

(2) पुस्तकालय

रूपरेखा

1. प्रस्तावना
2. पुस्तकालय के प्रकार
3. पुस्तकालय का विकास
4. पुस्तकालय की उपयोगिता
5. पुस्तकों का संरक्षण तथा
6. उपसंहार

प्रस्तावना :– 'पुस्तकालय' दो शब्दों से मिलकर बना है – पुस्तक+आलय=पुस्तकालय। आलय शब्द समूह या घर–वाचक है। अतः पुस्तकालय का अर्थ होता है – पुस्तकों का घर अर्थात् जहाँ विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का भण्डार हो और जिनका अध्ययन सुगमता से किया जा सके। उसे ही पुस्तकालय कहते हैं।

पुस्तकालय के प्रकार :– मुख्यतः पुस्तकालय चार प्रकार के होते हैं –

1. व्यक्तिगत पुस्तकालय, 2. सार्वजनिक पुस्तकालय, 3. शिक्षा–संस्थाओं के पुस्तकालय और 4. चलते–फिरते व संचार पुस्तकालय।

पुस्तकों में रुचि रखनेवाले स्वयं तरह–तरह की पुस्तकें खरीदकर व्यक्तिगत पुस्तकालय का निर्माण करते हैं। सार्वजनिक पुस्तकालयों में कोई भी व्यक्ति सदस्य बनकर पुस्तकों को पढ़ने के लिए घर ले जा सकता है। शिक्षा–संस्थाएँ अपने छात्रों के लिए विशेष पुस्तकालयों का निर्माण करती हैं। चलते–फिरते पुस्तकालय घूम–घूमकर पुस्तकों का आदान–प्रदान करते हैं।

पुस्तकालय का विकास :– पुस्तकालय का प्रचलन हमारे यहाँ अति प्राचीन काल से है। तक्षशिला और नालन्दा विश्वविद्यालय में बृहद् पुस्तकालय थे, जिनमें ज्ञान प्राप्त करने हेतु चीन, जापान, तिब्बत, लंका आदि देशों के व्यक्ति आया करते थे।

आज हमारे देश में कई प्रतिष्ठित पुस्तकालय हैं, जिनमें दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, नागरी प्रचारिणी सभा पुस्तकालय, स्टेट लाइब्रेरी, विशिष्ट महत्व रखते हैं।

पुस्तकालय की उपयोगिता :– पुस्तकालय का उपयोग कई प्रकार से होता है। ज्ञान–प्राप्ति का पुस्तकालय सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। विद्यार्थी, शोधार्थी और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिए पुस्तकालय एक वरदान है। प्रति वर्ष नये पुस्तकों का संग्रह करना पुस्तकालय के महत्व को बढ़ाता है।

पुस्तकालय के द्वारा समय का सदुपयोग होता है। मनोरंजन होता है। व्यक्ति का मानसिक व आत्मिक विकास होता है। प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के निर्माण में प्रस्तकालय पर्याप्त सहायक सिद्ध होते हैं।

पुस्तकों का संरक्षण :– किसी श्रेष्ठ तत्व या पदार्थ से लाभ उठाना हमारे व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। हम भी पुस्तकालय से लाभ तभी पा सकते हैं, जब हम सज्जन बनकर वहाँ जायें। पुस्तकों को फाड़ना, उन पर निशान लागना, उन्हें चुराना उचित कार्य नहीं। हमें पुस्तकों को अपना मित्र, गुरु और पूज्य मानना चाहिए। अर्थात् हमारा आचरण उत्तम होना चाहिए।

उपसंहार पुस्तकालय हमारे जीवन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण और उपयोगी है, उनके प्रति हमें पूज्य भाव रखना चाहिए। वहाँ विद्या की देवी माँ सरस्वती रहती है। इसमें बैठकर अपना ज्ञान बढ़ाना हमारा कर्तव्य है।

(3) पर्यावरण प्रदूषण

रूपरेखा :–

1. पर्यावरण का अर्थ
2. पर्यावरण का महत्व
3. प्रदूषित पर्यावरण
4. पर्यावरण प्रदूषित होने के कारण
5. प्रदूषण रोकने के उपाय
6. उपसंहार

पर्यावरण का अर्थ :– पर्यावरण शब्द संस्कृत के 'आवरण' शब्द से पूर्व 'परि' उपसर्ग लगाने से बना है। परि+आवरण=पर्यावरण। पर्यावरण शब्द का अर्थ हमें चारों ओर से घेरने वाले तत्वों अर्थात मिट्टी, पानी, हवा और आकाश इन सब का सम्मिलित रूप ही पर्यावरण कहलाता है।

पर्यावरण का महत्व :– हमारा जीवन हमारे पर्यावरण के कारण ही सुरक्षित है। हमें साँस लेने के लिए शुद्ध वायु, पीने के लिए शुद्ध जल और घूमने–फिरने के लिए स्वच्छ धरती व आकाश चाहिए। मिट्टी अर्थात् भूमि शुद्ध होगी तो उससे उगनेवाली फसले, दाले, साग–सब्जियाँ और फल भी शुद्ध हो सकेंगे। मनुष्य ही नहीं जानवरों का जीवन भी अच्छे पर्यावरण पर ही आधारित है।

प्रदूषित पर्यावरण :– ज्यों–ज्यों विज्ञान उन्नति कर रहा है और कल– कारखाने लग रहे हैं, त्यों–त्यों हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। आज हम जो जल पी रहे हैं, वह प्रदूषित है, जिस हवा में साँस ले रहे हैं, वह प्रदूषित है और जिस धरती की मिट्टी में हमारे अन्न, दाले, साग–सब्जियाँ और फल उत्पन्न होते हैं, वह भी दूषित है। आकाश में अनेक प्रकार की गैसें छोड़ी जाती है, अतः वह भी प्रदूषित हो गया। कैन्सर, दमा, त्वचा के रोग निमोनिया, रक्त चाप जैसे रोग दूषित पर्यावरण की ही देन है। अतः इन्हें दूर करने के लिए, प्रदूषित पर्यावरण को शुद्ध करना होगा।

पर्यावरण प्रदूषित होने के कारण :– जिन कारणों से हमारा पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है उनका विवरण इस प्रकार हैं –

(1) जल प्रदूषण के कारण :– आज सभी बड़े नगरों का मल और गंदा पानी नदियों में बहाया जा रहा है। उन्हीं नदियों का पानी पीने और सिंचाई के काम में लिया जाता है। नदियों में लोग नहाते और कपड़े भी धोते हैं। नदियों में कारखानों में प्रयुक्त होनेवाले रसायनों का बचा हुआ विषैला अंश भी जल में ही मिलता है। इनसे जल प्रदूषित होता है।

(2) वायु प्रदूषण के कारण :– देश की आबादी बढ़ रही है। आजकल विकास के नाम पर वृक्षों को काट कर वनों को खत्म किया जा रहा है। इससे प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ रहा है। कल–कारखाने और मोटर– वाहनों से जो धुंआ निकलता है उससे भी वायु प्रदूषण हो रहा है।

(3) भूमि प्रदूषण के कारण :– जो गंदा पानी नालों और नदियों में जाता है, उसका अधिकांश भाग मिट्टी सोख लेती है, इससे वह प्रदूषित हो जाती है। भाँति–भाँति का सड़ता हुआ कूड़ा भी मिट्टी को प्रदूषित करता है। आजकल प्लास्टिक का प्रयोग बहुत होने लगा है। यह गलत नहीं और मिट्टी में मिलकर उसका प्रदूषण बढ़ाता रहता है। धरती के भीतर अणु अस्त्रों के परीक्षण किये जाते हैं। वे भी भूमि को दूषित बनाते हैं।

(4) ध्वनि प्रदूषण के कारण :– आजकल भिन्न–भिन्न ध्वनियों से वातावरण दूषित हो रहा है। आकाश में उड़नेवाले वायुयान और रॉकेट, धरती पर चलने वाली रेले, मोटरे और कारें ध्वनि द्वारा वातावरण को दूषित कर रही है। ध्वनि प्रदूषण से मानसिक ह्रास, कानों की श्रवण शक्ति कम हो जाती है। सिर दर्द तथा मनुष्य समय से पूर्व ही बूढ़ा हो जाता है। इसकी रोक थाम अधिक वृक्ष लगाकर ध्वनि प्रतिरोधक यंत्रों के द्वारा कम किया जा सकता है।

प्रदूषण रोकने के उपाय :– नदियों में मिलने वाले गंदे नालों और कारखानों से निकलने वाले विषैले रसायनों को रोककर नदियों का पानी शुद्ध बनाया जा सकता है।

अधिक वृक्ष लगाकर वायु को शुद्ध बनाया जा सकता है। सभी प्रकार के घातक परीक्षणों और अणु अस्त्रों के प्रयोग पर रोक लगा देनी चाहिए।

धरती हमारी माता है इसी का जल हम पीते हैं और इसी से उपजें अन्न को खाते हैं। इस पर गिरनेवाले दूषित पदार्थों को रोककर इसे प्रदूषण से बचाया जा सकता है।

उपसंहार :– पर्यावरण और प्रदूषण की समस्या आज तीव्र रूप धारण कर रही हैं। उसके निवारण के लिए हमें प्रयत्न करना चाहिए। पर्यावरण से हमारे जीवन और स्वास्थ्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः हम सब का उत्तरदायित्व है कि प्रदूषण से उत्पन्न होने वाली हानियों को दूर करें और उनसे बचने के उपायों को अपनाएँ। इनके दूरगामी कुप्रभावों, दुष्परिणामों के प्रति सतर्क रहें।

'जो समय से जागते हैं, वे पाते हैं।
जो सोते हैं, वे सब कुछ खोते हैं।

30. तालिका, आरेख निर्माण .... आदि

30.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. अध्ययन सामग्री को हम शब्दों के अतिरिक्त अन्य कई प्रकार से भी समझते हैं – तालिका, आरेख, पाई चार्ट, प्रवाह चार्ट, वृक्ष आरेख, बार ग्राफ, मानचित्र आदि।
2. विभिन्न प्रकार के प्रस्तुतीकरण से अध्ययन सामग्री अधिक प्रभावी और अधिक समय तक स्मृतिपटल पर बनी रहने वाली होती है।
3. तालिका विषय के अनुरूप सरल, कठिन या कनिठतम हो सकती है।
4. पाई चार्ट बनाते समय आँकड़ों को प्रतिशत में बदलना आवश्यक होता है। पाई चार्ट का पूरा एक गोला 100 प्रतिशत को दर्शाता है।
5. वृक्ष आरेख में वृक्ष के समान कई शाखाएँ और प्रशाखाएँ निकलती हैं जो सामग्री को अधिक स्पष्ट बनाती हैं।
6. अध्ययन सामग्री में जब कहीं किसी प्रक्रिया को अभिनय करना होता है वहाँ अक्सर प्रवाह होता है। जहाँ एक कार्य संपन्न होने पर दूसरा कार्य प्रारंभ होता है ऐसी स्थिति में सामग्री को प्रवाह चार्ट द्वारा दर्शाया जाता है।
7. प्रस्तुति का एक माध्यम वैन चित्र भी हैं जिसमें वृत्तों का प्रयोग कर तथ्यों को दर्शाया जाता है।
8. आँकड़ों वाली सामग्री की प्रस्तुति ग्राफ चित्र तथा बार चित्र द्वारा भी की जाती है।

30.2. प्रश्न–उत्तर

1 अंक के प्रश्न

प्र.1. एक हिंदी विद्यालय में छठवीं कक्षा में 20 विद्यार्थी हैं, कक्षा सातवीं में 25, कक्षा आठवीं में 15, कक्षा नौवीं में 20 तथा कक्षा दसवीं में 20 विद्यार्थी हैं। इसे एक तालिका द्वारा समझाइए। (कुल कक्षाओं और विद्यार्थियों की संख्या भी लिखिए।

उ.

कक्षा	छठवीं	सातवीं	आठवीं	नौंवीं	दसवीं	कुल = 05
विद्यार्थी	20	25	15	20	20	कुल = 100

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. निम्नलिखित सूचनाओं को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उपयुक्त प्रस्तुति का चुनाव कर व्यवस्थित कीजिए।

एक परिवार में कुल पाँच भाई–बहन हैं – सुशीला, सरला, सुनील, सुभाष और सुकुमार। सुशीला सुभाष और सुकुमार की शादी – देवेंद्र, टीना और मोना से हुई है, सरला और सुनील

अभी अविवाहित हैं। सुकुमार के अभी–अभी बेटा हुआ है और टीना के पाँच वर्ष की बच्ची हैं जिसका नाम है – पल्लवी और उसके भाइयों का नाम सक्षम और समर्थ है। सुशीला और देवेंद्र के दो बेटियाँ हैं – नीरजा और सुषमा।

उ. उपरोक्त सामग्री को वृक्ष आरेख के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है, जो इस प्रकार हैं –

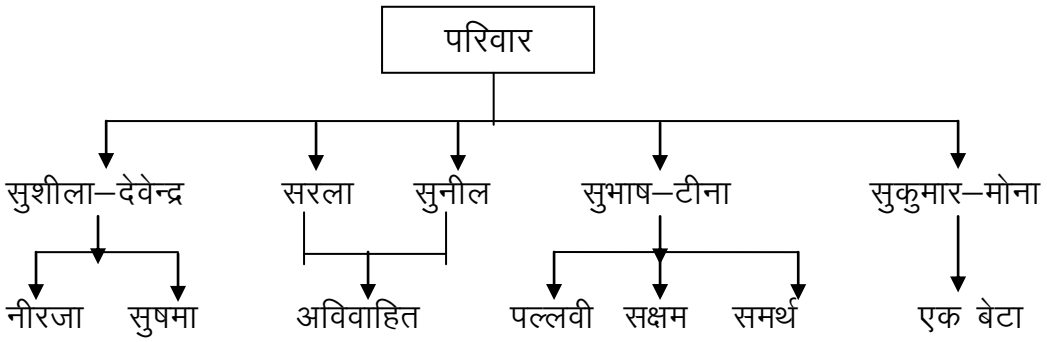

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. तालिका, आरेख द्वारा विषय प्रस्तुतीकरण के महत्व को दर्शाइए।

उ. उपयुक्त शब्दों, चित्रों और संकेतों आदि के प्रयोग से तथा तालिका और आरेख के द्वारा हम अपनी बात दूसरों तक ठीक–ठीक पहुँचा सकते हैं। दृश्य अगर सामने हो तो चित्र अधिक प्रभावी बन जाते हैं। दुनिया भर के आँकड़ों को केवल विवरण के रूप में रख दिया जायेगा तो वह अत्यन्त बोझिल और उलझाने वाला हो जायेगा। यदि इन्हीं आँकड़ों के विवरण को तालिका, आरेख, चार्ट आदि के सहारे समझाया जाय तो बात अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली हो जाती है।

प्र.2. वैन आरेख या वैन डायग्राम किसे कहते हैं? (3 अंक)

उ. वृत्तीय आरेख में एक अन्य प्रकार का आरेख भी आता है, जिसे वैन आरेख या वैन डायग्राम भी कहते हैं। इसके द्वारा भी विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्रदर्शित की जाती है।

उदाहरण के लिए आप कहना चाहते हैं कि केला, सेब, अनार और अंगूर सभी फल है। इस सूचना को आप निम्नलिखित वैन डायग्राम द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं।

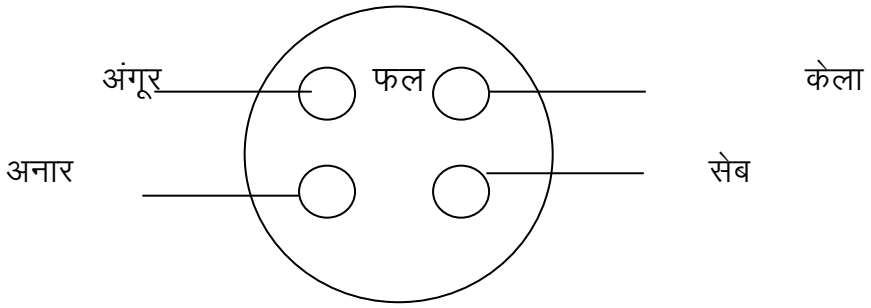

प्र.3. 'पाई चार्ट' किसे कहते है? इसकी क्या उपयोगिता है?

उ. 'पाई चार्ट' को ही वृत्त चार्ट कहते हैं। वितरण संबंधी सूचनाएँ देने में यह चार्ट अत्यन्त उपयोगी होता है। शोध और अध्ययन के परिणाम भी इसमें सुगमता से प्रदर्शित किये जा सकते हैं और ऐसी ही अन्य सूचनाएँ भी।

इसे समझाने के लिए एक उदाहरण लेते हैं। मान लीजिए किसी विद्यालय में 1000 विद्यार्थी हैं। जिसमें 600 विज्ञान पढ़ते हैं, 200 कला और 200 कॉमर्स पढ़ते हैं।

इसे पाई चार्ट के माध्यम से पढ़ सकते हैं। ऐसे चार्ट बनाने के लिए आँकड़ों को पहले प्रतिशत में बदलना होता है। एक पूरा वृत्त 100 प्रतिशत को दर्शाता है।

प्रतिशत निकालने का सूत्र :–

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{वह संख्या जिसका प्रतिशत ज्ञात करना है।}}{\text{कुल योग}} \times 100$$

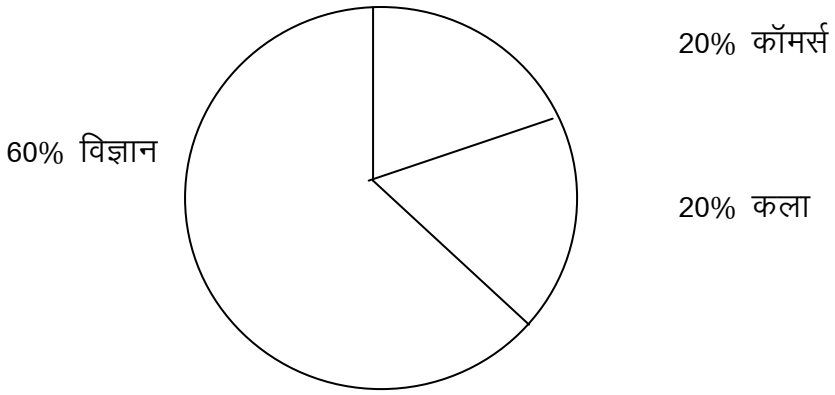

प्र.4. निम्नलिखित सूचनाओं को ध्यानपूर्वक पढ़िए –

फलों के बाग लगाये जाते हैं। उनकी सुरक्षा व्यवस्था की जाती है। पके हुये फलों को तोड़कर एक साफ–सुथरे स्थान पर इकट्ठा किया जाता है। उक्त सूचनाओं को एक फ्लो–चार्ट या प्रवाह चार्ट द्वारा प्रदर्शित कीजिए। (3 अंक)

उ.

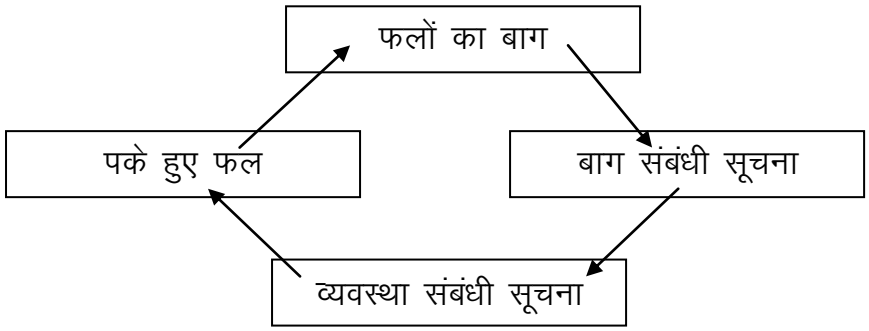

प्र.5. 'वृक्ष आरेख' के बारे में आप क्या जानते हो? हिन्दी के विकास में विभिन्न कालों की जानकारी वृक्ष आरेख के द्वारा बतलाइए। (5 अंक)

उ. सामग्री को प्रस्तुत करने का एक अन्य तरीका है – वृक्ष आलेख। इस प्रकार की प्रस्तुति में वृक्ष के समान शाखाओं में प्रशाखाएँ निकलती चली जाती है। प्रारंभ में वृक्ष आरेख का प्रयोग आपसी सामाजिक पारिवारकि रिश्तों को समझने–समझाने के लिए किया जाता था, (जैसे : रघुवश वृक्ष) परन्तु बाद में आवश्यकतानुसार इसका अन्य सामग्री के प्रस्तुतिकरण में खुलकर प्रयोग होने लगा। यह भी विषयों को स्पष्ट रूप में समझने का एक आसान तरीका है। जैसे – हिंदी भाषा का विकास –

हिन्दी भाषा का विकास

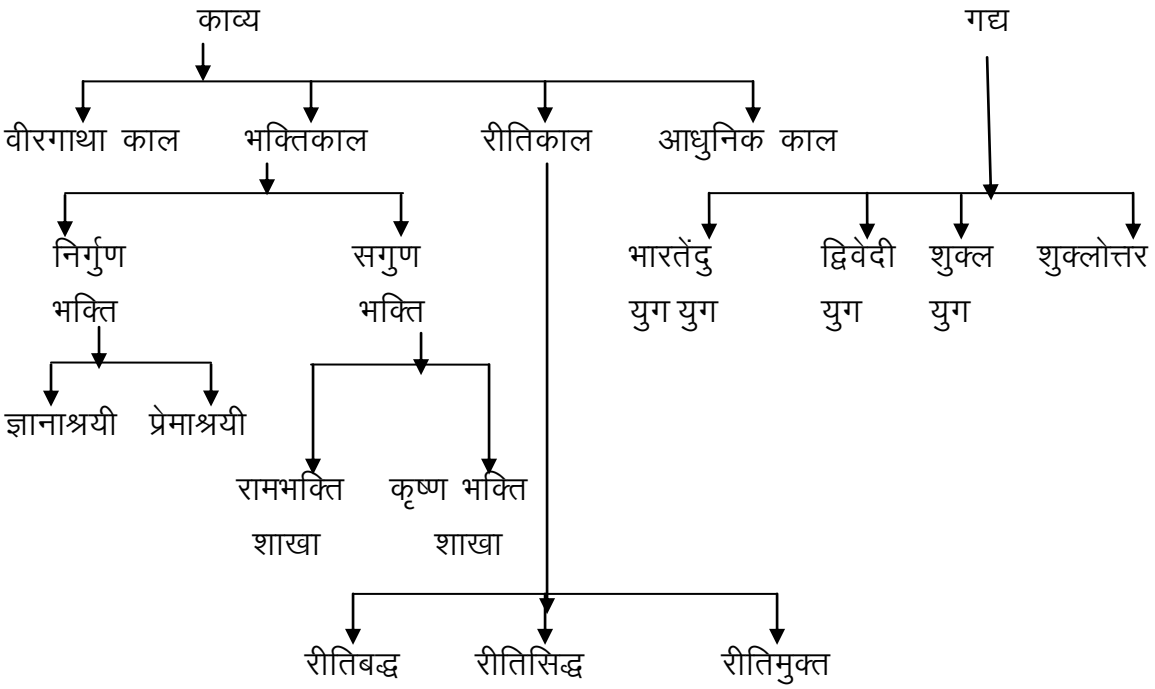

प्र.6. मानचित्रों की उपयोगिता के बारे में लिखिए।

उ. मानचित्रों की सहायता से हमें कई जानकारियाँ मिलती हैं। आपने देखा होगा कि मानचित्र को कई रंगों से दर्शाते हैं। मानचित्र में यह दिखलाया जाता है कि देश में वर्ष भर में कितनी वर्षा होती है और उसका वितरण कैसा होता है। अर्थात् किस भाग में कितनी वर्षा होती है। मानचित्र में नीचे दाँई ओर आपको एक पट्टी दिखायी जाती है। इस पट्टी में यह संकेत दिया जाता है कि किस प्रकार की रेखाओं, बिन्दुओं या रंगों से क्या दिखाया जाता है। इसके अलावा जल स्रोतों, खनिजों, हवाओं आदि की जानकारी भी मिलती है।

प्र.7. 'प्रवाह चार्ट' किसे कहते हैं? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उ. प्रवाह चार्ट को अंग्रेजी में फ्लो–चार्ट कहते हैं। इस चार्ट में वैसी सूचनाएँ प्रस्तुत की जाती है, जिन में प्रवाह हो। यानी कि एक दूसरे से जुड़ी हुई हो। प्रक्रिया को प्रवाह चार्ट द्वारा दर्शाया जा सकता है।

उदाहरण के लिए आपकी उँगली में कोई काँटा चुभ जाए तो आप तत्काल झटके से उसे हटा लेते हैं। इस घटना के बाद कई क्रियाएँ एक के बाद एक कार्य करती हैं। जैसे –

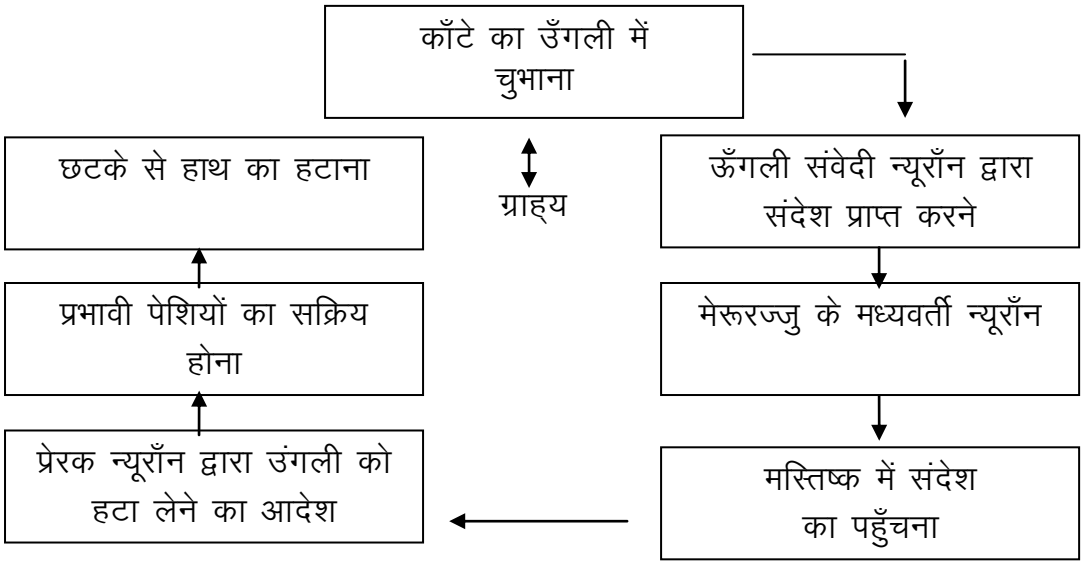

इसे प्रतिवर्त क्रिया (रिफ्लेक्स ऐक्शन) कहा जाता है।

प्र.8. निम्नलिखित तालिका के आधार पर भारत के अलग–अलग राज्यों की जनसंख्या को बार चित्र या दंड चित्र के माध्यम से प्रदर्शित कीजिए।

तालिका

क्रम	राज्य	जन संख्या
1	आन्ध्र प्रदेश	14,27,18,015
2	मध्यप्रदेश	10,89,14,265
3	महाराष्ट्र	17,58,15,814
4	कर्नाटक	9,78,27,763
5	बिहार	8,29,98,509
6	राजस्थान	5,65,07,188
7	गुजरात	5,06,71,017

उ. ग्राफ डायग्राम

प्र.9. रोगों के फैलने की विधियों को दर्शाते हुये एक प्रवाह चार्ट (FLOW CHAT) बनाइए।

उ. रोगों के फैलने की विधियाँ कई हैं। इसे निम्न प्रवाह चार्ट के द्वारा दर्शाया जाता है।

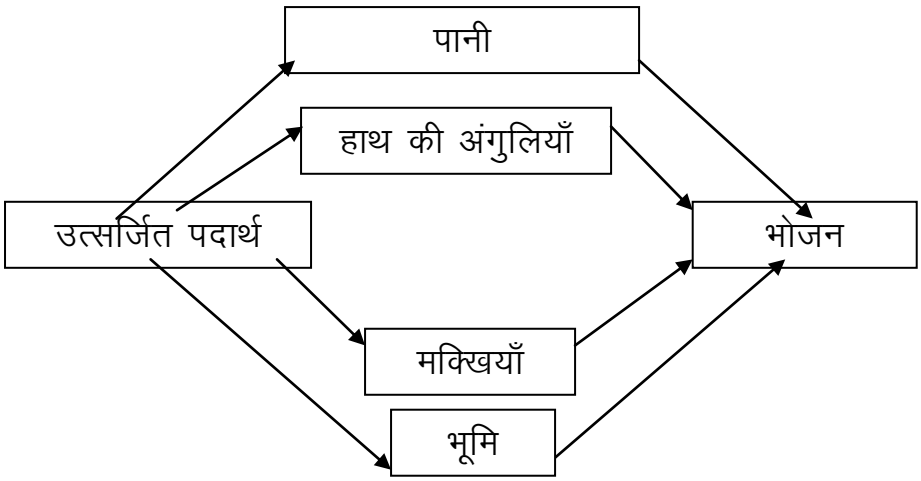

7 अंक के प्रश्न

प्र.1. सूचनाओं को प्रभावी ढंग से किनके माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है? संक्षिप्त में लिखिए।

उ. सूचनाओं को प्रभावी ढंग से लिखने के माध्यम निम्नलिखित हैं –

(1) तालिका और आरेख आदि के द्वारा :– आँकड़ों के विवरण कम शब्दों में देकर तालिका, आरेख, चार्ट आदि के सहारे उन्हें समझाएँ तो बात आईने की तरह स्पष्ट हो जायेगी।

(2) पाई चार्ट या वृत्त चार्ट :– पाई चार्ट को ही वृत्त चार्ट कहते हैं। वितरण संबंधी सूचनाएँ देने में यह चार्ट अत्यन्त उपयोगी होता है। शोध और अध्ययन के परिणाम भी इसमें सुगमता से प्रदर्शित किये जा सकते हैं और ऐसी ही अन्य सूचनाएँ भी।

(3) वृक्ष आरेख :– सामग्री को प्रस्तुत करने का एक अन्य तरीका है वृक्ष आलेख। इस प्रकार की प्रस्तुति में वृक्ष के साथ शखाओं से प्रशाखाएँ निकलती चली जाती है। जिससे सामग्री को अधिक स्पष्ट समझाया जाता है।

(4) प्रवाह चार्ट :– प्रवाह चार्ट को अंग्रेजी में 'फ्लो–चार्ट' कहते हैं। इस चार्ट में वैसी सूचनाएँ प्रस्तुत की जाती है, जिनमें प्रवाह हो। जहाँ एक कार्य संपन्न होने पर दूसरा कार्य प्रारंभ होता है ऐसी स्थिति में सामग्री को प्रवाह चार्ट द्वारा दर्शाया जाता है।

(5) स्तंभ चित्र :– स्तंभ चित्र या बार चार्ट भी एक प्रकार की तालिका ही है। तालिकाओं के विभिन्न रूपों में या तरीकों में संबंध होता है।

(6) मानचित्र द्वारा :– मानचित्र संकेतों के माध्यम से भाषा का काम करते हैं। मानचित्र में कुछ चीजों को समझने के लिए शब्दों की आवश्यकता होती है, कुछ को समझने के लिए संकेतों की आवश्यकता होती है।

31. परियोजना कैसे लिखें

31.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. परियोजना किसी समस्या के निदान अथवा किसी विषय की समुचित जानकारी देने के उद्देश्य से तैयार की जाती है।
2. परियोजना तथ्यों पर आधारित होती है। इसमें भावनाओं की कोई गुंजाइश नहीं होती।
3. परियोजना तैयार करने से पहले विषय की पूरी जानकारी, उससे संबंधित तथ्यों, चित्रों, आँकड़ों, ग्राफिक, विज्ञापन आदि का संग्रह करना आवश्यक होता है।
4. परियोजना मोटे तौर पर दो प्रकार की तैयार की जाती है – एक कार्य परियोजना और दूसरी शैक्षिक परियोजना।
5. समस्या मूलक परियोजना में आप सलाह दे सकते हैं, जबकि किसी विषय की जानकारी देने वाली परियोजना में अपने सुझाव देना आवश्यक नहीं होता। शैक्षिक परियोजनाएँ खेल–खेल में बहुत–सी नई–नई बातें सीखने का अवसर प्रदान करती हैं।

31.2. प्रश्न–उत्तर

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'परियोजना' किसे कहते हैं?

उ. परियोजना का शाब्दिक अर्थ होता है – किसी भी विचार को व्यवस्थित रूप में स्थिर करना या प्रस्तुत करना। इसके लिए अंग्रेजी में शब्द है 'प्रोजेक्ट'। प्रोजेक्ट का एक अर्थ होता है, प्रकाशित करना। यानी इसके शाब्दिक अर्थों का सहारा लेते हुए कहें तो, परियोजना किसी समस्या के निदान या किसी विषय के तथ्यों को प्रकाशित करने के लिए तैयार की गई एक पूर्ण विचार योजना होती हैं।

प्र.2. परियोजना में अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की गुँजाइश नहीं होती, क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उ. परियोजना में दिए गए विषय से सम्बन्धित तथ्यों को आधार बनाकर ही लिखा जा सकता है। तथ्यों को सही–सही और प्रमाण के साथ प्रस्तुत करना अनिवार्य होता है। यदि अपनी भावनाओं को व्यक्त करेंगे तो विषय से भटकने की संभावना होगी। इसीलिए यदि आप अपनी भावनाओं को परियोजना में व्यक्त करना चाहते हैं तो उसका प्रमाण प्रस्तुत करना होगा। इसीलिए परियोजना में अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की गुँजाइश नहीं होती।

प्र.3. 'परियोजना शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है।' स्पष्ट कीजिए।

उ. परियोजना पाठ्य–पुस्तक से प्राप्त जानकारियों के अतिरिक्त देश–विदेश की बहुत सी जानकारियाँ प्रदान करती है। यह आपको तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है। इससे आपमें नये–नये तथ्यों के प्रति जिज्ञासा और उन पर चिन्तन

करके विचार प्रकट करने के कौशल का विकास होता है। इससे एकाग्रता का विकास होता है। लेखन संबंधी नयी–नयी शैलियों का विकास होता है। आप में चिन्तन करने तथा किसी पूर्व घटना से वर्तमान घटना को जोड़कर देखने की शक्ति का विकास होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि – 'परियाजना शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है।'

प्र.4. शिक्षण में परियोजना की क्या उपयोगिता है?

उ. किसी विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जानेवाली परियोजनाएँ शैक्षिक परियोजना कहलाती है। परियोजना शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। यह खेल–खेल में बहुत सारी बातें सीखने का अवसर प्रदान करती है। अर्थात पाठ से संबंधित अन्य जानकारी चित्रों, तथ्यों को प्राप्त करना और उन पर विचार अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है। इसके द्वारा शिक्षण अधिक रुचिपूर्ण बन जाता है।

प्र.5. परियोजना की क्या–क्या विशेषताएँ होती है?

उ. परियोजना किसी समस्या के निदान या किसी विषय की व्यवस्थित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती है। शैक्षिक परियोजना खेल–खेल में बहुत सारी बातें सीखने का अवसर प्रदान करती है। यह मुख्यतः तथ्यों पर आधारित होती है। परियोजना में अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की बहुत कम गुँजाइश होती है। परियोजना तैयार करने के लिए विषय के चुनाव में पूरी छूट होती है और इसे तैयार करने के लिए पर्याप्त समय मिलता है।

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. परियोजना तैयार करते समय किन बातों पर ध्यान रखना आवश्यक है?

उ. जिस विषय की परियोजना लिखना चाहते हैं, उससे सम्बन्धित अधिकाधिक सामग्री को जुटाना चाहिए। समय–समय पर अखबारों में प्रकाशित विषय सम्बन्धी सामग्री को जुटा लेना चाहिए। खेल–खेल में बच्चों से ये सब करवाकर उनको समझाना चाहिए।

बच्चे परियोजनाएँ तैयार करते समय सम्बन्धित तथ्यों को जुटाते हुये, नयी–नयी बातों से परिचित होते जाएंगे। समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जानेवाली परियोजनाओं में सम्बन्धित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है। उस समस्या के लिए सुझाव भी दिए जाते हैं। परियोजनाएँ प्रायः सरकारी अथवा गैर सरकारी संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य योजना तैयार करते समय बनायी जाती हैं। इससे उस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने में आसानी हो जाती है।

उदाहरणार्थ आज की नारी का समाज में योगदान पर सामग्री जुटाना है तो, कुछ प्रसिद्ध महिलाओं के चित्र इकट्ठा करना होगा, उन्हें क्रम में रखकर उनके सामाजिक योगदान पर क्रम से लिखते चलना चाहिए। इस तरह परियोजना बना सकते हैं।

प्र.2. 'परियोजना' किसे कहते हैं? उसका महत्व समझाइए।

उ. विचारों को लिखकर कार्य रूप में प्रस्तुत करना ही परियोजना कहलाता है। परियोजना किसी समस्या के निदान या किसी विषय के तथ्यों को प्रकाशित करने के लिए तैयार की गयी, एक पूर्ण विचार योजना होती है।

परियोजना का महत्व :– आप अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर नए विषयों के ज्ञान की ओर उन्मुख होने में परियोजना सहायक होती है। आपके अन्दर नए–नए विषयों के प्रति चिन्तन करने की प्रवृत्ति का विकास होता है। खेल–खेल में बहुत–सी नई बातें सीखने तथा नये–नये तथ्यों को संग्रहित करने का अभ्यास होता है।

परियोजना के द्वारा अपना अर्जित भाषा–ज्ञान समृद्ध तथा व्यावहारिक रूप ग्रहण करता है। आप में किसी समस्या के मूल कारण तक पहुँचने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

परियोजना के द्वारा पाठ्य सामग्री के अलावा अन्य पुस्तकों को पढ़ने की रुचि विकसित होती है। किसी समस्या के निदान के लिए संभावित समाधान खोज निकालने की क्षमता का विकास होता है। खोजी प्रवृत्ति का विकास होता है तथा सामग्री जुटाने, उसे व्यवस्थित करने तथा उसे विश्लेषित करने की क्षमता का विकास होता है।

प्र.3. किसी समस्या प्रधान परियोजना का उदाहरण देते हुए परियोजना बनाने की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए।

उ किसी समस्या के निदान के लिये तैयार की जाने वाली परियोजना समस्या प्रधान परियोजना होती है।

देश में पेय जल समस्या एक समस्या प्रधान परियोजना है। परियोजना बनाने की प्रक्रिया निम्न लिखित प्रकार से होती है।

(1) विषय को पूरी तरह समझना।

(2) दिए गए विषय से सम्बन्धित आँकड़ों को जुटाना।

(3) समस्या से संबंधित समाचार, चित्र, रेखाचित्र और ग्राफ आदि को प्राप्त करना।

(4) आँकड़े, चित्र, रेखाचित्र, ग्राफिक, विज्ञापन आदि आपने कहाँ से प्राप्त किए हैं, उसके स्रोत का उल्लेख।

(5) परियोजना तैयार करने से पहले एक अच्छी सी भूमिका लिखे और उसी के आधार पर परियोजना तैयार करें।

(6) विश्लेषण करते समय सटीकता को बनाये रखें और भावनाओं को उसमें ध्यान न दें।

(7) किसी से सुनी हुई बात को प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत न करें। किसी सही स्रोत से उसकी पुष्टि करने के बाद ही उसका उल्लेख करें।

इस प्रकार उपर्युक्त प्रक्रियाओं के पालन द्वारा परियोजना को तैयार किया जा सकता है।

प्र.4. समस्या प्रधान विषय और शुद्ध ज्ञानवर्धक विषयों पर तैयार की जानेवाली परियोजनाओं में अन्तर क्या है?

उ कोई समस्या प्रधान विषय हो, तो उसकी जानकारी के लिए लोगों से मिलना, रिपोर्ट लिखना, उस विषय से सम्बन्धित समाचार पत्रों में आये तथ्यों को इकट्ठा करना अन्य विषयों की जानकारी जुटा लेना तथा समस्या की गहराई को समझना चाहिए। समस्या का समाधान किस प्रकार से, किस ढंग से किया जाए उसे समझना। उस समस्या सम्बन्धित विषयों के चित्र, फोटो, कथ्य–कथन, रिकार्डेड विषय, वार्तालाप आदि सामग्री को जुटा लेना।

यदि ज्ञानवर्धक तथ्य की जानकारी के लिए गाँव में महिलाओं की स्थिति की जानकारी के लिए आस–पास के महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करना चाहिए। वहाँ की हालत क्या है? महिलाओं का रहन–सहन कैसा है? वह समाज के विकास, कार्यकलापों में योगदान दे सकती है कि नहीं? उसमें वह क्षमता है या नहीं। उन महिलाओं के विचार जानने पर पता चलेगा कि वह महिला क्या सोचती है? उसका विचार क्या है? गाँव की महिलाओं के विचारों से औसत महिलाओं का मानसिक स्तर हमें मालूम हो जाता है।

इनकी जानकारी लेने के बाद महिलाओं की संख्या कितनी हैं? कितनी महिलाएँ समाज–विकास में हाथ बँटाने में तैयार है? कितनी महिलाएँ साक्षर हैं? कितनी महिलाएँ स्वावलंबी हैं। यह हम आँकड़ों में, चित्रों में, अखबार के सहारे जान सकते हैं। बाकी लोगों को समझा सकते हैं। जिस विषय का विवरण लेना चाहते हैं। ब्यौरा समझना चाहते हैं वह योजना के द्वारा ही संभव होता है। वह योजना भी विस्तृत रूप से होनी चाहिए।

संजोये हुए आँकड़ें, चित्र, समाचार पत्र आदि के द्वारा उनका विषद रूप मालूम हो जाता है।

प्र.5. परियोजना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उ. परियोजना का अर्थ होता है – किसी भी विचार को व्यवस्थित रूप में स्थिर करना या प्रस्तुत करना। शाब्दिक अर्थ में परियोजना किसी समस्या के निदान या किसी विषय के तथ्यों को प्रकाशित करने के लिए तैयार की गयी, एक पूर्ण विचार योजना होती है। परियोजना कई प्रकार से तैयार की जा सकती है। परियोजना को दो भागों में बाँट सकते हैं।

(1) एक तो वे परियोजनाएँ हैं जो समस्या के निदान के लिए तैयार की जाती है। ये परियोजनाएँ समस्याओं के निदान पर प्रकाश डालती हैं और उसके समाधान के लिए सुझाव भी देती है।

(2) दूसरे प्रकार की परियोजना को शैक्षिक परियोजना भी कहा जाता है। ये परियोजनाएँ किसी विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती है। शैक्षिक परियोजनाओं को दो भागों में बाँटा जा सकता है। (1) पाठ से सम्बन्धित परियोजनाएँ (2) शुद्ध ज्ञान से सम्बन्धित परियोजनाएँ।

पाठ से सम्बन्धित परियोजनाएँ पाठ्य पुस्तक में दिए गए पाठों पर आधारित होती है। इसमें पाठ से संबन्धित विषयें पर परियोजनाएँ तैयार करनी पड़ती है। जैसे – यदि देशभक्ति

की कविता दी गयी हो तो आपको परियोजना कार्य के अन्तर्गत पाँच और देशभक्ति की कविताएँ एकत्रित करनी होगी।

शुद्ध ज्ञान से सम्बन्धित परियोजनाओं को तैयार करते समय पाठ से सम्बन्धित जानकारियाँ अपने आप मिलती है। इन परियोजनाओं का उद्देश्य एक प्रकार से पढ़े हुए पाठ से प्राप्त जानकारियों के प्रति आपको जागरूक बनाना तथा आपके अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करना होता है।

प्र.6. ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार द्वारा आयोजित योजनाएँ क्यों नहीं सफल हो पाती है? इस विषय पर परियोजना का निर्माण कीजिए।

उ. भारत मूलतः गाँवों का देश है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या अभी भी गाँवों में ही निवास करती है। 75% लोग गाँवों में रहते हैं। गांधी जी का कहना है कि यदि भारत को समझना हो तो, गाँवों को ही देखना चाहिए।

हमारा देश विकासशील है। अभी भी विकसित हो रहा है। देश की आजादी के बाद विकास के क्रम में छोटे–बड़े कस्बों में व्यापार, उद्योग एवं यातायात के साधनों की वृद्धि होने के कारण नगरों का रूपधारण करना प्रारंभ कर दिया, परन्तु सरकार द्वारा आयोजित योजनाएँ गाँवों में क्यों सफल नहीं हो पाती? इसका मूल कारण अशिक्षा ही है। अशिक्षा के द्वारा ही हमारा समुचित विकास नहीं हो रहा है।

सरकार द्वारा आर्थिक विकास और निर्धनता को दूर करने हेतु कई योजनाएँ आयोजित की जाती है। परंतु योजनाएँ सफल न होकर विफल हो इसके मूलतः दो कारण दिखाई देते हैं। एक अशिक्षा और दूसरा भ्रष्टाचार। ये दोनों अधिकतर गाँवों में ही है। अतः हमें प्रत्येक ग्रामीण युवती–युवकों को सुशिक्षित करना चाहिए।

शिक्षा का प्रचार व प्रसार करना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से ही हमारे अपने परिवार का, गाँव का, शहर व देश का विकास संभव है। यदि हमें अपने देश को समुचित ढंग से विकसित करना हो तो, सरकार द्वारा आयोजित योजनाओं को अपनाना चाहिए। आर्थिक सुधारों का अधिकतम लाभ ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को प्राप्त होना चाहिए। तभी देश का कल्याण होगा।

प्र.7. परियोजना लेखन के द्वारा आपने क्या सीखा?

उ. परियोजना किसी समस्या के निदान अथवा किसी विषय की समुचित जानकारी देने के उद्देश्य से तैयार की जाती है। परियोजना तथ्यों पर आधारित होती है। इस में भावनाओं की कोई गुंजाइश नहीं होती। परियोजना तैयार करने से पहले विषय की पूरी जानकारी, उससे सम्बन्धित तथ्यों, चित्रों, आँकड़ों, ग्राफिक, विज्ञापन आदि का संग्रह करना आवश्यक होता है।

परियोजना मोटे तौर पर दो प्रकार की होती है – एक कार्य परियोजना और दूसरी शैक्षिक परियोजना। समस्या मूलक परियोजना में आप सलाह दे सकते हैं, जब कि किसी विषय की जानकारी देनेवाली परियोजना में अपने सुझाव देना आवश्यक नहीं होता। शैक्षिक परियोजनाएँ खेल–खेल में बहुत सी नई–नई बातें सीखने का अवसर प्रदान करती है।

32. विराटा की पद्मिनी

32.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

उपन्यास और उसकी पाठ सामग्री पढ़ने के बाद आप जान गए हैं कि –

1. 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास में इतिहास, कल्पना और लोकतत्व का उद्भुत समन्वय है।
2. कथानक में एक ओर साधारण पृष्ठभूमि के पात्रों के अद्भुत शौर्य, देश–प्रेम, लगन और बलिदान जैसे गुणों का चित्रण है, वहीं सामती परिवेश में होने वाले षड्यंत्रों, स्वार्थसिद्धि, छल, भोग–विलास, अत्याचार आदि को भी चित्रित किया गया है।
3. 'विराटा की पद्मिनी' उदात्त प्रेम की कथा है, जिसका अंत आत्मोसर्ग में होता है।
4. उपन्यास के पात्र मुख्यतः दो प्रकार के हैं – एक वे जो राज परिवारों से जुड़े है और दुर्गुणों के प्रतीक हैं। दूसरे वे जिनमें बुंदेलखंड की मिट्टी की महक है। वे सरलता, वीरता, त्याग, देशभक्ति और प्रेम के प्रतीक है।
5. 'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड की प्रकृति, लोक–गीत, लोक–भाषा का समर्थ चित्रांकन हुआ है। इनसे उपन्यास की रोचकता बढ़ गई है।
6. उपन्यास की भाषा परिनिष्ठित हिंदी है, उसमें लोक–भाषा का भी प्रयोग है। भाषा में कहीं–कहीं शिथिलता भी पाई जाती है और कहीं–कहीं भाषा जटिल और दुबोंध हो गई है। उदाहरण के लिए *'एल्लो हमरे से टिटकरी करन आए। दर्शन खों नहीं आए नई आए, इतै को काम के लावें आए इत्ती दूर से?'*
7. विराटा की पद्मिनी के संवाद बड़े सरस और रोचक है। उनमें पात्रानुकूलता और परिस्थिति की माँग झलकती है। दरबारियों के संवादों में चाटुकारिता, छल, कपट और मरने–मारने की शब्दावली है। कुंजर सिंह और कुमुद के संवादी से उनका दिव्यप्रेम झलकता है। पात्र अपने सामाजिक स्तर के अनुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं।
8. उपन्यास में कुछ विशेष मार्मिक स्थल हैं। कुमुद की नारी भावनाएँ सहज विकसित होकर उदात्त स्थिति तक पहुँचती हैं और अंततः आत्मोसर्ग से परिचित होती हैं। अलीमर्दान पद्मिनी को अपनी रानी बनाने के लिए आक्रमण करता है। सबदल सिंह के सुझाव पर सभी जौहर व्रत का निर्णय लेते हैं और वीरगति को प्राप्त होते हैं।

32.2. प्रश्न–उत्तर

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'विराटा की पद्मिनी' का केंद्रीय पात्र कौन है? उसकी चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ. विराटा की पद्मिनी का केंद्रीय पात्र दाँगी कन्या कुमुद है। जिसे विराटा की पद्मिनी कहा गया है। कुमुद की कहानी कुछ कुछ 'चितौड की पद्मिनी' के समान है।

कुमुद एक साधारण दाँगी (बुंदेलखंड की एक जाति) किसान नरपति सिंह की पुत्री है। वह जन्म से ही अतीव सुंदर है। किशोरावस्था में पहुँचते–पहुँचते उसके सौंदर्य और तेज की ख्याति चारों ओर फैल जाती है। चंपा के समान गोरी, सुगंधमय तथा कमल के समान कोमल स्त्री को पद्मिनी कहते है। कुमुद भी 'पद्मिनी' नाम से विख्यात हो जाती है। कुमुद का पिता नरपति सिंह भी अपना लाभ देखकर कुमुद को दुर्गा के अवतार में प्रचलित करता है। कुमुद नित्य दुर्गा की पूजा करती है और दर्शनार्थियों को प्रसाद देती है। यह माना जाने लगा कि उसके आशीर्वाद से लोगों की मनोकामनाएँ फलीभूत होती है। इस प्रकार कुमुद पर देवत्व आरोपित हो जाता है यद्यपि वह स्वयं को मानवी ही मानती है।

दलीप नगर का राजकुमार कुंजरसिंह उसके दर्शनों के लिए पालर दुर्गामंदिर में आता है। कुमुद को देखकर कुंजरसिंह के मन में प्रेम का बीज अंकुरित होता है, जिससे कुसुम भी अछूती नहीं रहती। दलीप नगर के विलासी राजा, अपने पिता नायक सिंह तथा कालपी के फौजदार अलीमर्दान से कुमुद को बचाने के लिए वह स्वयं को न्योछावर कर देने का संकल्प करता है। गढ़ का पतन होने पर कुंजरसिंह मारा जाता है और कुमुद बेतवा नदी में छलाँग लगाकर अपने प्राणों का विसर्जन करती है। इस प्रकार वह अपने विराटा की पदामिनी नाम को सार्थक करती है। कुमुद का चरित्र दिव्य प्रेम और बलिदान की एक मधुर रागिनी है।

प्र.2. 'विराटा की पद्मिनी' की संवाद योजना पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।

उ. 'विराटा की पद्मिनी' में जहाँ भी कथा प्रस्तुति की दृश्यात्मक प्रविधि काम में लायी गयी है, वहाँ पात्रों का वार्तालाप सहज रूप में आ गया है। उपन्यास का आरंभ ही एक दृश्य योजना से होता है जिसमें दलीप नगर के अध पागल राजा और उसके दरबारियों का वार्तालाप सामने आता है। यद्यपि इस वार्तालाप में सहजता और पैनापन अधिक नहीं है, पर इससे राजा के सनकीपन, दरबारियों की खुशामदी वृत्ति, केवल मरने मारने की भाषा बोलनेवाले सेनानायक का अक्खड़पन और स्वामिभक्ति का भाव अच्छी तरह व्यक्त हो जाता है। पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने, कथा को आगे बढ़ाने और भावी घटनाओं के प्रति जिज्ञासा पैदा करने में उपन्यास के संवाद पर्याप्त सक्षम हैं। कुंजरसिंह और कुमुद के गूढ़ व्यंजना से भरे संवादों से उनका दिव्य प्रेम अपनी अध्यात्मिक ऊँचाई पर पहुँच जाता है। कुंजरसिंह और मुसावली के किसान बालक के बीच के संवाद की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि कुंजर सिंह सरल परिनिष्ठित हिंदी

बोलता है। जब कि किसान बालक शुद्ध बुंदेलखंडी में बात करता है। उदाहरण प्रस्तुत है – चरवाहा बोला 'दाऊजू, अबै दर्शन नई भए का?' कुंजरसिंह ने प्रश्न किया 'किसके दर्शन भाई?'

'एल्लो! हमई से टिटकरी करन आए। दर्शन खो नई आए, इतै तो कायके लानै आए इत्ती दूर से? संसार–भर के राजरावनित्त आउत रहत।' – इस वार्तालाप से किसान बालक की सरलता, भोले स्वभाव और अतिथि के प्रति उसके सहज प्रेम की प्रीति की झलक मिलती है।

प्र.3. कालपी के नवाब अलीमर्दान की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता क्या है?

उ. कालपी के नवाब अलीमर्दान कालपी के आसपास के हिंदु राज्यों पर नज़र रखता है और उन्हें डराता धमकाता रहता है। उसके पास एक बड़ी सेना है और रणनीति का ज्ञान भी उसे अच्छा मिला है। पालर में उसकी सेना की टुकड़ी को दलीप नगर की सेना की टुकड़ी ने पराजित किया। पर अलीमर्दान ने दलीप के राजा को कड़ी शर्तों का पालन न करने पर युद्ध की धमकी देकर पत्र भेजा था। राजा नायक सिंह की छोटी रानी ने राजा के प्रतिविद्रोह किया तब वह उसके राखीबंद भाई होने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है। दुर्गा का अवतार समझी जाने वाली कुमुद को अपनी रानी बनाने का निश्चय भी करता है।

अलीमर्दान के चरित्र की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वह हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं पर चोट नहीं पहुँचाता। कुमुद को अपनी रानी बनाने का निश्चय भी वह तब करता है जब उसे समझाया जाता है कि वह दुर्गा का अवतार नहीं है। जब कुमुद बेतवा नदी में प्राण विसर्जन करती है तब अलीमर्दान भी उसके प्रति श्रद्धा भाव से भर जाता है।

अलीमर्दान को धार्मिक सहिष्णुता, मानवीय सहानुभूति, संवेदनशीलता आदि से संपन्न मुसलमान शासक के रूप में चित्रित किया है।

प्र.4. 'विराटा की पद्मिनी' की भाषा शैली टिप्पणी कीजिए।

उ. 'विराटा की पद्मिनी' में परिनिष्ठित हिंदी का ही प्रयोग हुआ है। पर उसके बीच बुंदेली के शब्दों का समावेश कर उसे जीवंत बना दिया है। शुद्ध बुंदेली में वार्तालाप का सुंदर उदाहरण मुसावली के किसान और कुंजरसिंह के वार्तालाप में दिखाई पड़ता है।

उपन्यास की भाषा–शैली को ध्वनिमूलक, अर्थमूलक आदि शैलीय उपकरणों की सहायता से व्यंजक और मधुर बनाने का सफल प्रयास किया है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि सादृश्य प्रधान अलंकारों तथा मौलिक उपमानों की सहायता से उन्होंने अपनी भाषा–शैली को नवीनता और व्यंजनता प्रदान की है। वर्मा जी की भाषा–शैली की एक उल्लेखनीय विशेषता है, आंचलिक शब्दों का प्रयोग। परिनिष्ठित तत्सम–तद्भव शब्दों के बीच–बीच में उन्होंने बुंदेलखंडी शब्दों का ऐसा सुघड़ प्रयोग किया है जो भाषा में अद्भुत सहजता और सजीवता ला देते हैं। उदाहरण के लिए पाही, झाँगा, टीका, साँकल, गुहार, बोदापन, झाँझ, दह, टौरिया, भरका, घूमरी जैसे शब्द और 'कच्चा गटक जाना' और 'राजा करे सो न्याय', 'फँसा पड़े सो दाँव' जैसे ठेठ

मुहावरे और कहावतें भाषा की बोधगम्यता को कायम रखते हुए वर्मा जी की भाषा–शैली को ताजगी से भर देती है।

प्र.5. 'विराटा की पद्मिनी' के देवी सिंह पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए।

उ. देवी सिंह एक वीर बुंदेला किसान है। वह दुल्हे के वेश में बारात लेकर विवाह करने के लिए जा रहा है। अपनी भावी पत्नी के द्वार पर पहुँचते ही वह देखता है कि राजा की जान खतरे में है। यह देखकर वह दूल्हे के वेश में मुसलमान सैनिकों पर टूट पड़ता है। राजा की प्राण–रक्षा में सफल हो जाता है। पर वह घायल होकर बेहोश हो जाता है और सैनिक उसे उठाकर राजा के साथ ही दलीप नगर ले आते है। उस समय से वह राजा का अत्यंत प्रिय पात्र बन जाता है। राजा के विश्वासपात्र दरबारी जनार्दन शर्मा के प्रयत्न से उसे ही दलीप नगर के राज सिंहासन का उत्तराधिकारी बना दिया जाता है। राजा के मृत्यु के पश्चात देवी सिंह दलीप नगर का राजा बनता है। इस पर राजा नायक सिंह का दासी पुत्र कुंजर सिंह और छोटी रानी विद्रोह करते हैं।

राजा के रूप में देवी सिंह अपनी योग्यता का विश्वसनीय परिचय देता है। वह कुंजर सिंह और रानियों का सम्मान करता है। दरबारियों और छोटे सामंतों को भी वह यथासंभव अनुकूल बनाए रखता है। किंतु जब कुंजर सिंह और छोटी रानी विद्रोह कर सिंहगढ़ पर अधिकार कर लेते हैं तो देवीसिंह अपने कर्तव्य में भी नहीं चूकता। देवी सिंह एक सच्चरित्र, धर्मपरायण और संवेदनशील राजा है। थोड़े ही दिनों में वह राजधर्म के सभी गुणों से संपन्न और राजनीति में माहिर हो जाता है। उसके युद्ध और शांति विषयक सारे निर्णय तर्क संगत तथा समयानुकूल होते हैं। वह राज्य के आंतरिक विद्रोह को दबाने प्रयत्न करता है और साथ–साथ धर्म रक्षा के लिए कालपी के फौज़दार अलीमर्दान से भी लोहा लेता है।

देवी सिंह के हाथों कुंजर सिंह मारा जाता है और कुमुद अपने प्राण त्याग देती है, तब उसे अतीव दुःख होता है। कुमुद के आत्म–बलिदान स्थल पर वह एक स्मारक बनाने का आदेश देता है। इस प्रकार देवीसिंह का चरित्र एक वीर, रणकुशल, धर्मपरायण, राजनीति में दक्ष, अपने कर्तव्य के प्रति सजग और सहृदय राजा के रूप में सामने आता है।

प्र.6. 'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड अंचल अपनी सजीवता में विद्यमान है। कथन की पुष्टि कीजिए।

उ. 'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड का आंचलिक परिवेश पूरी सजीवता के साथ प्रस्तुत हुआ है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र यमुना, बेतवा, पहूज, सिंधु, चंबल, कुमारी आदि पर्वतीय नदियों, छोटी–छोटी पहाडियों, टीलों, घनघोर जंगलों, झीलों और भरकों से भरा हुआ है। इन नदियों, पहाडियों के बीच बसे बुंदेलों और दाँगी सामंतों के गढ़ मानो प्रकृति की गोद में सुरक्षित शिशुओं की तरह हैं। 'विराटा की पद्मिनी' में बुदेलखंड के प्राकृतिक सौंदर्य का यथार्थ और सजीव वर्णन मिलता है। इस सौंदर्य में कोमलता के साथ–साथ भयानकता का भी अद्भुत

समावेश है। उदाहरण द्रष्टव्य है – पंचनद जिसे पंचनदा भी कहते है बुंदेलखंड का एक विशेष स्थान है। बालू, पानी और हरियाली का यह संगम वैभव, भय और सौंदर्य के विचित्र मिश्रण की रचना करता है।

वर्माजी ने बुंदेलखंड के प्राकृतिक परिवेश के अंकन के साथ–साथ बुंदेलखंड की शौर्य–परंपरा, संस्कृति, धार्मिक विश्वास, रहन–सहन, रीति–रिवाज, लोक–गीत और कथा, आम आदमी की स्थिति तथा भाषा का विश्वसनीय और सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। बुंदेलखंड सदा से वीर भूमि के रूप में प्रसिद्ध रहा है। दलीप नगर का राजा देवी सिंह भी अलीमर्दान से वीरतापूर्वक युद्ध करता है। यहाँ तक की दूल्हा वेश में बुंदेला किसान भी अपने राजा की रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगा देता है।

धर्म के प्रति दृढ़ आस्था और देवी–देवता में विश्वास बुंदेलखंड की संस्कृति का प्रमुख अंग है, जो इस उपन्यास में कुमुद को दुर्गा का अवतार मानने के प्रसंग से प्रस्तुत किया गया है।

इस उपन्यास में बुंदेलखंड के गाँवों में रहने वाले साधारण किसानों का भी अंकन किया गया है। जो जी–तोड़ परिश्रम करते है, सामंतों को लगान देते हैं। जहाँ तक लोक–कथा के उपयोग की बात है, इस उपन्यास का आधार ही लोक विश्वास और दुर्गा की अवतार मानी जाने वाली पद्मिनी के बलिदान की कथा है।

प्र.7. 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर कुंजरसिंह की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ. कुंजरसिंह दलीप नगर का राजकुमार है, पर दासी–पुत्र होने के कारण वह सिंहासन का उत्तराधिकारी नहीं है। जब देवीसिंह राजसिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया जाता है तो कुंजर सिंह की राजगद्दी पाने की क्षीण आशा भी समाप्त हो जाती है। इस बीच कुमुद से उसका प्रेम हो गया और वह अपने कामुक पिता तथा कालपी के फौजदार अलीमर्दान से उसकी रक्षा करने का संकल्प कर चुका है। देवी सिंह के राजसिंहासन पर आसीन हो जाने पर वह विद्रोह कर देता है और सिंहगढ़ नामक दुर्ग पर कब्जा करके वहाँ भावी युद्ध के लिए सैन्य संगठन करना आरंभ कर देता है। दलीप नगर की छोटी रानी भी भाग कर सिंहगढ़ के दुर्ग में आ जाती है पर वह कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान की सहायता से स्वयं राजसिंहासन पर कब्जा करना चाहती है। कुंजरसिंह इसे पसंद नहीं करता, क्योंकि वह देशभक्त है और अपने स्वार्थ के लिए विदेशियों की सहायता लेना उचित नहीं समझता।

कुंजर सिंह सिंहगढ़ को अधिक दिनों तक अपने कब्जे में नहीं रख पाता। देवी सिंह से उसकी हार होती है और उसे सिंहगढ़ छोड़ना पड़ता है। सिंहगढ़ से वह विराटा के गढ़ में पहुँचता है। वहाँ उसे कुमुद मिलती है। इस बार कुंजर सिंह कुमुद के प्रति अपने प्रेम को छिपाता नहीं और उसकी रक्षा के लिए अपने प्राणतक न्योछावर कर देने का आश्वासन देता है।

विराटा पर अलीमर्दान और देवीसिंह एक साथ आक्रमण करते हैं। कुंजर सिंह इस युद्ध में अद्भुत वीरता और रण–कौशल का परिचय देता है। पर वह विराटा गढ़ का पतन रोक नहीं

पाता। गढ़ के राजा और अन्य सैनिकों के साथ कुंजर सिंह भी केसारिया बाना धारण करके जौहर–व्रत का संकल्प कर मंदिर से कुमुद को लेकर बाहर निकलता है। बाहर निकलते ही उसका देवीसिंह से सामना होता है। जिससे लड़ते हुए वह वीरगति को प्राप्त होता है।

कुंजर सिंह एक वीर योद्धा, स्वाभिमानी, देशभक्त और सच्चे प्रेमी के रूप में सामने आता है। देश और प्रेम के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देना, प्राणों की भी बलि चढ़ा देना उसके चरित्र की प्रमुख पहचान है। दासी पुत्र होने का कलंक उसके चरित्र की उदात्तता में चंद्रमा के कलंक के समान उपेक्षणीय बन जाता है।

प्र.8. 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास में इतिहास और लोकतत्व का समन्वय है, इस कथन का विवेचन कीजिए।

उ. 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास में वर्मा जी ने बुंदेलखंड के छोटे–छोटे हिंदू राज्यों – दलीप नगर, बड़ नगर, विराटा, रामनगर, भांडेर और कालपी से संबंधित प्रमुख कथाओं का उल्लेख किया है। कालपी के अतिरिक्त शेष हिंदू राज्यों का तो विवरण भी इतिहास की पुस्तकों में नहीं मिलता पर इन राज्यों के गढ़ और किले आज भी भग्नावशेष रूप में बुंदेलखंड में विद्यमान हैं। इनके संबंध में बुंदेलखंड के लोगों में अनेक लोककथाएँ और किंबदंतियाँ भी प्रचलित है। पुराने दस्तावेजों में इनके कुछ विवरण मिल जाते है। इन्हीं में से एक लोक–कथा एक दाँगी कन्या की है। जो पालर गाँव में पैदा हुई थी और पंद्रह–सोलह वर्ष की अवस्था तक पहुँचते–पहुँचते दुर्गा के अवतार के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थी। लोककथा के अनुसार वह अभूतपूर्व सुंदरी और तेजस्वी कन्या थी। विराटा के दुर्गामंदिर में वह दुर्गा के समान ही पूजी जाती थी। पर कालपी का शासक उसके सौंदर्य पर रीझ कर उसे अपनी रानी बनाना चाहता था। इस उद्देश्य से उसने विराटा के गढ़ पर आक्रमण किया। विराटा के वीरों ने जौहर व्रत धारण कर युद्ध किया और सभी वीरगति को प्राप्त हुए। पर कालपी का मुसलमान शासक पद्मिनी को प्राप्त करने में असफल रहा, क्योंकि उसने बेतवा नदी में कूद कर अपने प्राणों का विसर्जन किया।

इस लोककथा के आधार बनाकर वर्मा जी ने अपने उपन्यास के कथा संसार का निर्माण किया है। अपनी कल्पना से उन्होंने इस दाँगी कन्या के रूप, जनता के उसके प्रति असीम श्रद्धा, उसके प्रेम और बलिदान की मार्मिक कथा प्रस्तुत की है। इस कथा में राज्य के आंतरिक षड्यंत्रों, छोटे–छोटे हिंदू राज्यों के आपसी वैमनस्य और कालपी के फौज़दार अलीमर्दान से उनके युद्ध का वर्णन करके कथा को और भी रोचक तथा सार्थक बना दिया है। वर्मा जी ने उस काल के ऐतिहासिक परिदृश्य को प्रस्तुत किया है और लोककथाओं, किंवदंतियों तथा कल्पना का भी सहारा लिया है। इससे स्पष्ट है कि, 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास में इतिहास, कल्पना और लोकतत्व का अद्भुत समन्वय है।

33. तीन लघुकथाएँ

33.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. लघुकथा नवीन साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। इनका प्रकाशन अकसर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में होता रहता है।
2. लघुकथा कहानी की तुलना में बहुत छोटी है, छोटी होने के कारण सरलता और तीव्रता से पढ़ी जाती है।
3. यह एक बहुत ही रोचक विधा है, लघुकथा में कोई–न–कोई व्यंग्य निहित होता है।
4. उसमें नैतिक मूल्य प्रधान होता है जिससे कोई–न–कोई सीख मिलती है। इसकी भाषा तीखी और चुटीली होती है।
5. व्यक्ति को अपना व्यवसाय तो पसंद होता ही है साथ ही दूसरे के कार्य को सम्मान देना भी उसका कर्तव्य बनता है। यही सभ्य मानव के गुण हैं।
6. दूसरी लघुकथा में कथाकार ने आज के बढ़ते भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य पैदा कर वास्तविक स्थिति को उभारा है।
7. तीसरी लघुकथा 'सड़क का आदमी' बताती है कि हमें दूसरे व्यक्ति के व्यवसाय की, उसके काम में आने वाले औजारों की, उसकी भाषा आदि की, सभी की इज्ज़त करनी चाहिए, उसे भरपूर सम्मान देना चाहिए।

33.2. प्रश्न–उत्तर

3 अंक के प्रश्न

प्र.1. "तो यह गीत भी मेरी जिंदगी है।" वाक्य कहने से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उ. इस वाक्य का आशय यह है कि सभी को अपना कार्य बहुत प्यारा होता है चाहे वह कवि हो या लोहार। सभी को अपने कार्य करने के माध्यम भी बहुत प्यारे होते हैं चाहे वह औजार हो या गीत। कोई भी उनमें बेतरतीबी नहीं देख सकता। साथ ही दूसरे के कार्य को सम्मान देना भी उसका कर्तव्य बनता है।

प्र.2. तीसरी लघुकथा में राघव सरकार को दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति क्यों कहा गया है?

उ. राघव सरकार को पैदल चलने की आदत थी। जेठ की तपती दुपहरी में भी बिना छतरी के वे चल रहे थे। पैरों में जूते जरूर थे, लेकिन उनकी कीलें इस तरह निकली हुई थीं कि दोनों पैरों में जख्म हो गये थे। उनके मुखमंडल पर इस परेशानी की कोई झलक नहीं थी और उनके कदम तेजी से निश्चिंत बढ़ रहे थे। इसलिए उन्हें दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति कहा गया है।

प्र.3. तीसरी लघुकथा में राघव सरकार के मित्रों की उनके बारे में क्या राय है?

उ. तीसरी लघुकथा में राघव सरकार के मित्रों की राय थी कि वे किसी का अनुग्रह या किसी की दया उन्होंने कभी चाही हो, ऐसा आज तक नहीं सुना गया। वे किसी पर कभी आश्रित नहीं हुए, खुद सबका भला करने की भरसक कोशिश करते हैं। अपने सिर को सदा ऊँचा उठाए रखना ही उनकी जिंदगी का एकमात्र सिद्धांत है।

प्र.4. बादल बार–बार क्यों सोच रहा था, ''बरसूँ या नहीं।''

उ. आजकल भ्रष्टाचार के युग में आदमी कुछ भी कर सकता है। भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। ज़रा सा बादल बरसेगा और आदमी उसे नकली बाढ़ का रूप तुरंत कागजों पर दिखा कर अपना लाभ कमा लेगा। यही सोचकर बादल बार–बार विचार कर रहा है कि बरसे या न बरसे।

प्र.5. राघव सरकार रिक्शे पर क्यों नहीं बैठना चाहते थे?

उ. राघव सरकार बहुत पढ़े–लिखे, सिद्धांतवादी, दृढ़ संकल्पवाले व्यक्ति थे। वे मानते थे कि कोई अमानुष ही होगा, जो दूसरे से अपना बोझ खिंचवा सकता है। वे अपने जीवन में कभी भी पालकी या रिक्शे पर नहीं चढ़े। वह इसे पशुता मानते थे। इसलिए राघव सरकार रिक्शे पर नहीं बैठना चाहते थे।

प्र.6. लघुकथा क्या है?

उ. लघुकथा का अर्थ है ''छोटी कहानी''। लघुकथा में पात्रों की संख्या सीमित होती है। यह प्रायः एक ही घटना पर आधारित होती है। इसकी भाषा सरल होती है। लघुकथा में कोई–न–कोई व्यंग्य निहित होता है। इससे कोई–न–कोई सीख मिलती है। इनमें नैतिक–मूल्य प्रधान होता है। इसका निष्कर्ष शिक्षाप्रद होता है। अतः लघुकथा नवीन साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय व रोचक विधा है। इनका प्रकाशन अकसर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में होता रहता है।

5 अंक के प्रश्न

प्र.1. लोहार ने क्यों कहा कि, ''ये औजार ही तो मेरी संपत्ति है।''

उ. सुब्रह्मण्य भारती की 'कवि और लोहार' इस लघुकथा में योरोप के एक प्रसिद्ध कवि ने अपने गाने की आवाज एक लोहार से सुनी। लोहार उस कविता के शब्दों को तोड़–मरोड़ कर मनमाने ढंग से गा रहा था। अपनी कविता को इस तरह सुनकर कवि क्रोधित हुए। उन्होंने लोहार के तरतीब से रखे हुए औजारों को तितर–बितर कर दिया। यह देखकर गुस्से में लोहार ने पूछा – मेरे औजारों को बिखेर कर मेरा काम क्यों बिगाड़ रहे हो। कवि ने कहा – तुम्हारे सारे औजार दुकान में ही है न? तुम्हारा क्या बिगड़ गया।

लोहार ने कहा ये औजार तो मेरी संपत्ति है। यही मेरी जिंदगी है।

प्र.2. पहली कथा के अंत में लोहार ने लज्जा से सिर क्यों झुका लिया?

उ. कवि की कविता को लोहार मनमाने ढंग से, तोड़–मरोड़कर, ऊँची आवाज़ में गा रहा था। कवि ने गुस्से में आकर लोहार की दुकान में तरतीब से रखे हुए औजारों को तितर–बितर कर दिया। लोहार क्रोधित हुआ और उसने कहा कि, ये औजार मेरी संपत्ति है। मेरी जिंदगी हैं। इन पर इतना गुस्सा क्यों? कवि ने कहा – ''अभी जो गीत तुम गा रहे थे। वह मेरा ही लिखा हुआ है। मेरे गीत को तुम तोड़–मरोड़कर क्यों गा रहे थे। यह गीत मेरी जिंदगी है। मेरी कविता पर इतना गुस्सा क्यों?' लोहार को बात समझ में आ गयी। हर व्यक्ति को अपना व्यवसाय तो पसंद होती ही है साथ ही दूसरे के कार्य को सम्मान देना भी उसका कर्तव्य बनता है। इसलिए लोहार ने लज्जा से सिर झुका लिया।

प्र.3. ''क्या नहीं कर सकता'' लघुकथा के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उ. इबोहलसिंह कांग्जम की लघुकथा ''क्या नहीं कर सकता'' का शीर्षक कथा की सारी बातों को पूरी तरह खोल देता है यदि इसमें 'आदमी' लगा होता। आजकल भ्रष्टाचार के युग में आदमी कुछ भी कर सकता है। यही सोच कर बादल बार–बार विचार कर रहा है कि बरसे या न बरसे। हवा उसकी मदद करने पहुँचती है। परंतु बादल उसे भी निरूत्तर कर देता है। भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। ज़रा सा बादल बरसेगा और आदमी उसे नकली बाढ़ का रूप, तुरंत कागज़ों पर दिखाकर अपना लाभ कमा लेगा। कथाकार इबोहलसिंह कांग्जम ने आज के बढ़ते भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य कर वास्तविक स्थिति को उभारा है।

7 अंक के प्रश्न

प्र.1. ''तो मेरा गीत भी मेरी जिंदगी है।'' – संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

उ. यह पंक्ति ''कवि और लोहार' इस लघुकथा से ली गई हैं। इसके लेखक 'सुब्रह्मण्यम् भारती' है। यह डॉ. बलराम द्वारा संपादित विश्व लघुकथा कोश के दूसरे खंड से चयनित की गयी हैं।

जब एक लोहार की दुकान से योरोप के एक प्रसिद्ध कवि को अपने गीत की धुन सुनायीं दी। लोहार कविता के शब्दों को तोड़–मरोड़ कर मनमाने ढंग से ऊँची आवाज में गाता जा रहा था। कवि तुरंत दुकान के भीतर चला गया। उसने लोहार के तरतीब से रखे हुए औजारों को तितर–बितर कर दिया।

लोहार गुस्से में बोला – तुम मेरे औजारों को तितर–बितर कर मेरा काम क्यों बिगाड़ रहे हो?

तब कवि ने कहा – तुम्हारे सारे औजार अभी तो दुकान में ही है न? तुम्हारा क्या बिगड़ गया?

ये औजार ही तो मेरी संपत्ति है। यही मेरी जिंदगी है। इन पर इतना गुस्सा क्यों?

तब कवि उपर्युक्त वाक्य कहता है। अभी–कभी तुम जो गीत गा रहे थे, वह मेरा ही लिखा हुआ है। मेरे गीत को तुम तोड़–मरोड़ कर क्यों गा रहे थे। उस पर तुम्हें इतना गुस्सा क्यों?

10 अंक के प्रश्न

प्र.1. लघुकथा की प्रमुख तीन विशेषताएँ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ. लघुकथा नवीन साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। इनका प्रकाशन अकसर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में होता रहता है। लघुकथा, कहानी की तुलना में बहुत छोटी होती है। छोटी होने के कारण कम समय में सरलता से पढ़ी जा सकती है।

लघुकथा की प्रमुख तीन विशेषताएँ :–

- लघुकथा एक बहुत ही रोचक विधा है, लघुकथा में कोई–न–कोई व्यंग्य निहित होता है। ''इबोहलसिंह कांग्जम'' की ''क्या नहीं कर सकता'' लघुकथा में भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है। आज कल भ्रष्टाचार के युग में आदमी कुछ भी कर सकता है। यह सोचकर बादल बार–बार विचार कर रहा है कि बरसे या न बरसे। जरा सा बादल बरसेगा और आदमी तुरंत कागजों पर उसे नकली बाढ़ का रूप दिखाकर अपना लाभ कमा लेगी।
- लघुकथा में नैतिक–मूल्य, प्रधान होता है। इससे कोई–न–कोई सीख मिलती है। सुब्रह्मण्यम् भारती की 'कवि और लोहार' लघुकथा में यह स्पष्ट किया गया है कि व्यवसाय बड़ा या छोटा नहीं होता। प्रत्येक व्यवसाय का अपना–अपना महत्व होता है, कोई किसी का स्थान नहीं ले सकता। व्यक्ति को अपना व्यवसाय तो पसंद होता ही है साथ ही दूसरे के कार्य को सम्मान देना भी उसका कर्तव्य बनता है। यही सभ्य मानव के गुण है।
- अपने व्यवसाय के अतिरिक्त दूसरों के व्यवसाय को पूरा सम्मान देना ही सभ्यता है। बनफूल की 'सड़क का आदमी' लघुकथा में बतलाया गया है कि दूसरे व्यक्ति के व्यवसाय की, उसके काम में आने वाले औजारों की, उसकी भाषा की इज्जत करनी चाहिए। उसे पूरा सम्मान देना चाहिए – इसी बात को एक घटना के द्वारा स्पष्ट किया गया है। माना कि राघव सरकार बहुत पढ़े–लिखे, सिद्धांतवादी, आदर्शवादी, दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति हैं पर वह यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि एक रिश्क्शेवाले के अपने आदर्श और सिद्धांत नहीं हो सकते। छोटा काम करनेवाला, दिखने में कृशकाय, निरीह व्यक्ति बिल्कुल वैसा ही करे जैसा कि सरकार राघव चाहते हैं।

रिक्शा चलानेवाले का भी अपना सम्मान है जिसे उसने बना कर रखा है। जब राघव सरकार ने रिक्शे पर चढ़ने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि वे मानते हैं कि रिक्शे पर चढ़ना पाप है। यहाँ राघव सरकार ने दूसरे के व्यवसाय को, उसकी रोजी–रोटी कमाने के माध्यम को तिरस्कृत किया, उसका अपमान किया जिसका उत्तर रिक्शेवाले ने यह कहकर दिया कि हम किसी से भीख नहीं माँगते। गरीब व्यक्ति का भी आत्मसम्मान होता है और वह उसकी रक्षा भी सकता है।

प्र.2. 'सड़क का आदमी' इस लघुकथा पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उ. 'सड़क का आदमी' लघुकथा बांग्ला भाषा के सुप्रसिद्ध लेखक बनफूल द्वारा रचित है। इस कथा में लेखक यह स्पष्ट एवं सिर्थ करना चाहता है कि कोई भी व्यवसाय छोटा या बड़ा नहीं होता। अतः दसरों के व्यवसाय को भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। इसी बात को एक घटना के द्वारा खोला गया है। राघव सरकार पढ़े–लिखे सिद्धांतवादी, आदर्शवादी व दृढ़संकल्प व्यक्ति है। वे यह मानते हैं कि रिक्शा में बैठना पशुता हैं। वे जेठ की धूप में पैदल जा रहे थे। एक रिक्शेवाले ने घंटी बजाते हुए उनसे रिक्शे पर सवार होने के लिए कहा। राघव सरकार को लगा कि शायद इस गरीब का अन्न जुटाने का यही साधन है। दोनों के बीच में संवाद होते रहे। राघव सरकार चलते ही रहे। उनके गंतव्य स्थान पर राघव सरकार ने रिक्शेवाले को पैसे दिये। रिक्शेवाले ने पूछा – आप रिक्शे पर चढ़े ही नहीं। तब राघव सरकार ने कहा रिक्शे पर चढ़ना पाप है। रिक्शेवाले के चेहरे पर घृणा के भाव उभर आये। अपना पसीना पोंछते हुए उसने कहा – हम किसी से भीख नहीं लेते।

राघव सरकार सिद्धांतवादी थे। पर वे यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि रिक्शेवाले के अपने आदर्श और सिद्धांत नहीं हो सकते। रिक्शा चलाने वाले का भी अपना सम्मान होता है जिसे उसने बना कर रखा है। राघव सरकार ने कहा रिक्शे पर चढ़ना पाप है। यहाँ राघव सरकार ने दूसरे के व्यवसाय को, उसकी रोजी–रोटी कमाने के माध्यम को तिरस्कृत किया, उसका अपमान किया जिसका उत्तर रिक्शेवाले ने यह कहकर दिया कि हम किसी से भीख नहीं माँगते। गरीब का भी आत्मसम्मान होता है और वह उसकी रक्षा करता है।

प्र.3. निम्नलिखित लघु कथा को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

लघुकथा : 'महाराज! एक साधारण किसान ने राज्य की एक ऊँटनी को मार डाला।' ऊँटों के रक्षक ने निवेदन किया।

जोधपूर के नरेश यशवंत सिंह ने भौडों पर बल पड़ गया। 'अपराधी को मेरे सामने लाया जाये।' महाराज का आदेश हुआ।

अपराधी बंदी बनाकर लाया गया।

महाराज ने डाँटकर पूछा, 'तुमने राज्य की ऊँटनी को मार डालने की हिम्मत कैसे की?'

'महाराज! अपरध क्षमा हो, इस अपराध को करने वाला मेरा बारह वर्ष का अबोध बालक है।'

अपनी गलती को अपने बेटे के सर मँढ रहे हो? तुम कैसे पिता हो? महाराज के चेहरे पर अविश्वास के अनेक रंग तैर गये। उन्होंने उस लड़के को हाज़िर करने का आदेश दिया।

लड़का हाज़िर किया गया। उसके चेहरे पर भय का कहीं नामोनिशान नहीं था।

महाराज ने पूछा – बालक तुमने ऊँटनी मारी? क्यों?

बालक निर्भीकता से बोला हम किसान हैं। आपके रक्षक अपने ऊँटों को लेकर हमारे खेतों के बीच से गुजर रहे थे। जब एक ऊँट ने मेरे खेत में मुँह डाला। उसे देखकर दूसरे ऊँट भी आगे बढ़े। तो मैंने झपट कर एक ऊँटनी की गर्दन काट डाली।

'तुम्हारी कहानी तो अच्छी है। लेकिन तुम्हारी तलवार ऊँटनी की गर्दन तक पहुँचे कैसे?' – महाराज बोले। राजपूत बालक कभी झूठ नहीं बोलता। और राजस्थान का बेटा और ऊँट न देखे। वाक्य पूरा करते–करते उसने एक असाधारण ऊँचे ऊँट को जाते देखा।

उसने तलवार के लिए इधर–उधर निगाह – दौडाई, तलवार कहीं न पाकर फूर्ति से उसने महाराज के कमरबंद से म्यान में लटकती तलवार खींच ली और एक ही छलाँग और एक ही वार के झटकें में ऊँट का सिर जमीन पर लोटता नज़र आया।

खून से भरी तलवार महाराजा के चरणों पर रखते हुए बालक ने कहा, 'महाराज! अब आपको विश्वास हो गया होगा।

प्र.1 : महाराज यशवंत सिंह की भौंहो पर बल क्यों पड़ा?

प्र.2 : अपराधी ने राजा के प्रश्न का क्या उत्तर दिया?

प्र.3 : महाराज ने बालक से पूछा, तुमने ऊँटनी मारी? क्यों? इसका उत्तर बालक क्या दिया

प्र.4 : अपनी बात की सचाई साबित करने के लिए बालक ने क्या किया?

प्र.5 : 'राजपूत बालक झूठ नहीं बोलता' यह बात किस संदर्भ में कहीं गयी है?

प्र.6 : इस कथा का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर : 1. एक साधारण किसान ने अपने ऊँटनी को मार डाला यह बात सुनकर महाराज यशवंत सिंह के भौहों पर बल पड़ा।

2. अपराधी ने राजा को उत्तर दिया – महाराज! अपराध क्षमा हो, इस अपराध क्षमा हो, इस अपराध को करने वाला मेरा बारह वर्ष का अबोध बालक है।

3. बालक ने निर्भीकता से उत्तर दिया – हम किसान हैं। आपके रक्षक अपने ऊँटों को लेकर हमारे खेतों के बीच से गुज़र रहे थे। एक ऊँटनी ने खेतों में मुँह डाला, उसे देखकर दूसरे ऊँट भी आगे बढ़े। इसलिए मैंने ऊँटनी की गर्दन काट डाली।

4. अपनी सचाई को साबित करने के लिए बालक ने महाराज के सामने एक असाधारण ऊँट की गर्दन महाराजा के कमरबंद म्यान में लटकती तलवार से एक ही छलाँग और एक ही वार में काट डाली।

5. महाराज को विश्वास नहीं हो रहा था कि, इतना छोटा–सा बालक ऊँचे ऊँट की गर्दन काट डालें। इस कारण वह बालक कहता है – राजपूत बालक झूठ नहीं बोलता।

6. इस कथा का शीर्षक हैं – सत्यवादी राजपूत बालक की वीरता

खण्ड – 5क

34. सूचना प्रौद्योगिकी : स्वरूप और महत्व

34.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

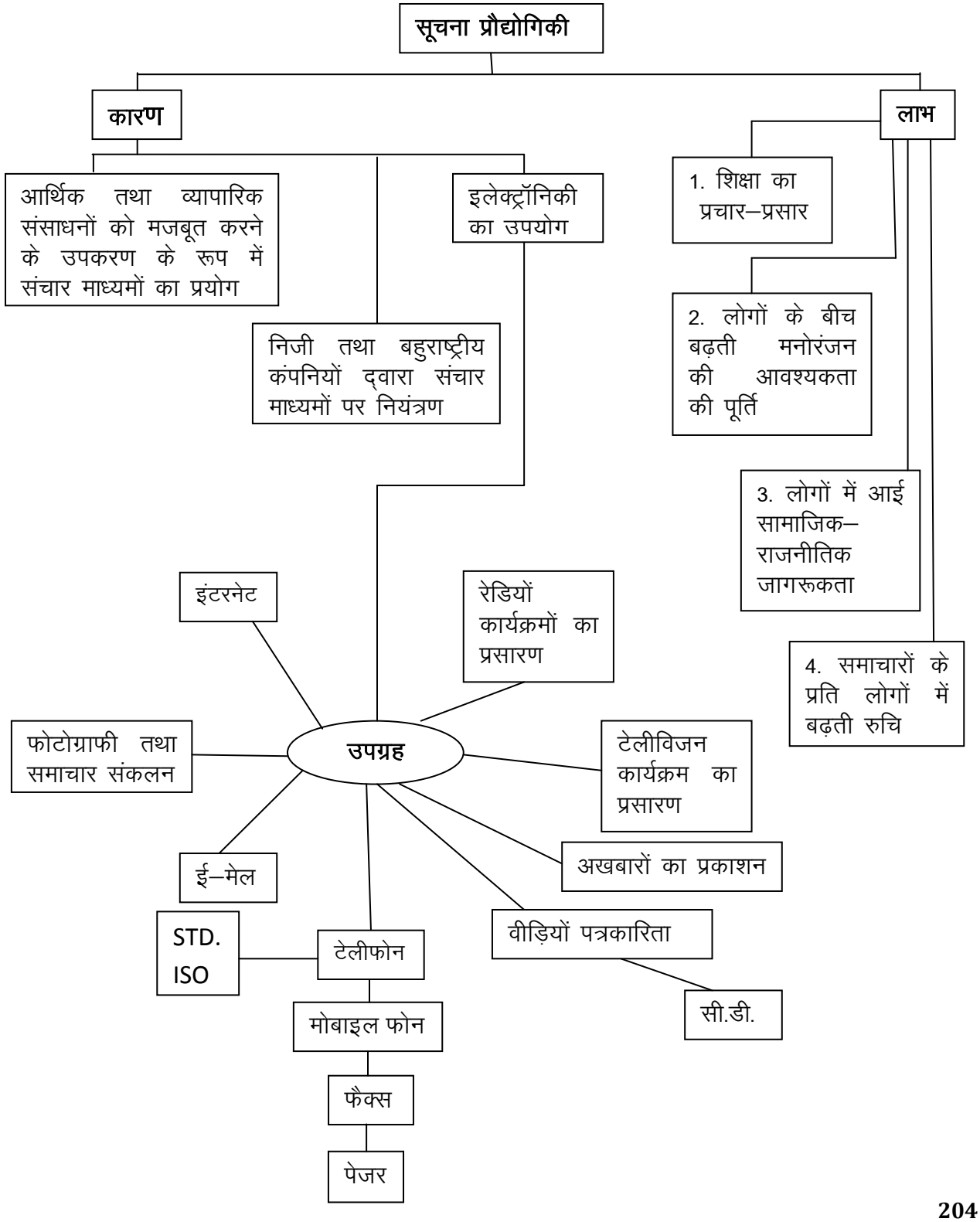

34.2. प्रश्न–उत्तर

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. संचार क्रांति के मुख्य कारणों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उ. आज से तीस साल पहले तक संचार माध्यम जन साधारण को आसानी से उपलब्ध नहीं थे। दूरदर्शन तो लोगों के कौतूहल का विषय बना हुआ था, किन्तु आज राजनीति, साहित्य, कला, संगीत, कृषि, खेल, शेयर बाज़ार ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है, जो संचार माध्यमों की दृष्टि से अछूता रह गया हो। सारे देश में डिश एंटीनाओं का जाल सा बिछ गया है। 90% देश की आबादी रेडियो और दूरदर्शन का लाभ उठा रही है। संचार के क्षेत्र में आई इस क्रांति के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं –

1. **व्यापार** :– दुनिया के विकासशील देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने तथा उत्पादन की खपत और गुणवत्ता को प्रचारित–प्रसारित करने की आवश्यकता महसूस की। इसके लिए उन्होंने रेडियो, दूरदर्शन और समाचार–पत्रों को चुना। इनके माध्यम से अपने उत्पाद विज्ञापनों के द्वारा लोगों तक पहुँचाने का मार्ग ढूँढ़ निकाला। भारत सरकार ने तो रेडिया तथा दूरदर्शन पर अनेक व्यावसायिक चैनल भी शुरू कर दिये हैं। इस कारण संचार माध्यम में एक क्रंति उत्पन्न हो गई।

2. **निजी कंपनियों की आपसी होड़** :– आज संचार के क्षेत्र में निजी कंपनियों का प्रवेश बहुत तेज़ी से हुआ है। हमारी सरकार ने भी प्रेस–दूरदर्शन और रेडियो को स्वतंत्रता प्रदान कर दी है, जिसके फलस्वरूप संचार क्षेत्र में एक क्रांति उत्पन्न हो गई है। दूरदर्शन पर अनेक ऐसे चैनल हैं (सोनी, जी, स्टार प्लस आदि) जो निजी कंपनियों द्वारा चलाये जा रहे हैं। ये कंपनियाँ अधिक से अधिक विज्ञापन प्राप्त करने तथा लाभ कमाने के लिए अच्छे–अच्छे कार्यक्रम तैयार करती हैं। अच्छे कार्यक्रम बनाने की आपसी होड़ के कारण ही ये कंपनियाँ संचार के क्षेत्र में नये–नये शोध और अनुसंधान करती रहती है।

3. **इलेक्ट्रानिक का उपयोग** :– पहले खबर जुटाने तथा संबंधित संचार माध्यम तक पहुँचाने में बहुत समय लग जाता था किंतु अब सेल्यूलर फोन, पेजर, फैक्स, ई–मेल, कंप्यूटर आदि के आविष्कार के कारण पलक झपकते ही समाचार का संकलन–संपादन और प्रसारण हो जाता है। ये सारी बातें संचार क्षेत्र में आई क्रांति की द्योतक है।

प्र.2. सूचना प्रौद्योगिकी या संचार क्रांति के लाभों का विश्लेषण कीजिए।

उ. सूचना प्रौद्योगिकी या संचार क्रांति के अनेक लाभ है, जो निम्न लिखित हैं–

1. **शिक्षा का प्रचार–प्रसार** :– सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से शिक्षा के प्रचार–प्रसार में बहुत सहायता मिली है। दूर–दराज के गाँवो में, जहाँ शिक्षा का स्तर बहुत कम था, वहाँ के लोगों में शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न करने तथा लोगों में व्याप्त अंधविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए दूरदर्शन और रेडियो का सहारा लिया गया। रेडियो और दूरदर्शन पर

सरकारी और निजी कंपनियाँ ऐसे कार्यक्रमों का प्रसारण करती है, जो लोगों में शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न करते हैं और उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

2. **लोगों के बीच बढ़ती मनोरंजन की आवश्यकता की पूर्ति** :– निरंतर बढ़ती व्यस्तता और काम के बोझ से दबे व्यक्ति के लिए कुछ मनोरंजन होना अति आवश्यक है। व्यक्ति के मनोरंजन की इस आवश्यकता को संचार माध्यमों ने बहुत हद तक पूरा किया है। साहित्य, संगीत, नाटक, कला, फिल्में, धारावाहिक, खेल, विज्ञापन आदि विभिन्न मनोरंजन के साधन संचार माध्यमों जैसे रेडियो, दूरदर्शन, कंप्यूटर आदि के द्वारा मनुष्य को उपलब्ध करवाये जा रहे हैं।

3. **लोगों में आई सामाजिक – राजनीतिक जागरूकता** :– संचार माध्यमों के द्वारा लोगों में सामाजिक – राजनीतिक जागरूकता आई है। लोग एक दूसरे के आचार–विचार, खान–पान, भाषा से परिचित हो रहे हैं। उनमें अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजगता उत्पन्न हुई हैं। वे देश–विदेश की राजनीति में रुचि ले रहे हैं। 24 घंटे चलने वाले समाचार–चैनलों ने नागरिकों में सामाजिक–राजनीतिक चेतना जागृत कर दी है।

4. **समाचारों के प्रति लोगों में बढ़ती रुचि** :– संचार माध्यमों से लोगों में समाचारों के प्रति रुचि उत्पन्न हुई है। केवल एक क्षेत्र से नहीं बल्कि जीवन के हर क्षेत्र से संबंधित समाचार आकर्षक रूप से प्रसारित किये जा रहे हैं। खेल, राजनीति, शेयर बाज़ार, कृषि, फिल्म, अपराध–जगत आदि सभी से संबंधित समाचारों का प्रसारण हो रहा है जिसका मनुष्य पूरा–पूरा लाभ उठा रहा है। 'आज तक', 'स्टार न्यूज', 'जी न्यूज', 'एन.डी.टी.वी.' आदि अनेक समाचार चैनल है जिनके द्वारा देश की जनता लाभान्वित हो रही है।

इस प्रकार हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि संचार क्रांति से हमें अनेक लाभ हैं।

प्र.3. प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया में कंप्यूटर के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उ. आज के युग में कंप्यूटर का आविष्कार एक वरदान साबित हुआ है। कंप्यूटर दुनिया के जटिल कार्यों को चुटकी बजाते ही आसान कर देता है। इसका उपयोग किसी भी क्षेत्र में किया जा सकता है। प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया में कंप्यूटर बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

1. **प्रिंट मीडिया में कंप्यूटर का योगदान** :– पहले समाचारों की कंपोजिंग लेटर कंपोटिंग के द्वारा की जाती थी, जिसमें बहुत समय लगता था। अब कंप्यूटर के द्वारा यह काम बहुत आसान हो गया है। अब समाचारों के ढेर में से कंप्यूटर आसानी से समाचारों को छाँट लेता है, उन्हें पेस्ट कर देता है, ज़रूरत के मुताबिक चित्रों को व्यवस्थित कर देता है, समाचारों को कंपोज कर देता है, गलतियाँ होने पर संकेत दे देता है, जिससे फ्रूफ रीडर की ज़रूरत ही नहीं पड़ती है। कंप्यूटर के इसी योगदान के कारण दिन भर में अखबारों के कई–कई संस्करण छापे और वितरित किये जा सकते हैं।

2. **इलेक्ट्रानिक मीडिया में कंप्यूटर का योगदान** :– इलेक्ट्रानिक मीडिया में भी प्रिंट मीडिया की तरह समाचारों के संपादन में अनेक कठिनाइयाँ आती थी। फोटोग्राफर द्वारा घटना की चित्र शृंखला को संपादित करना बहुत कठिन था। कंप्यूटर ने चित्रों के संपादन को बहुत आसान कर दिया है।

एडीटिंग, डबिंग और फोटोग्राफी में भी कंप्यूटर नई–नई तरकीबें अपनाता है। कंप्यूटर 'वीडिया डिस्प्ले इकाइयाँ' नियंत्रित करता है जिससे समाचारों का वर्गीकरण, संपादन और वितरण आसानी से हो जाता है। पत्रकारों के लिए कंप्यूटर अपने साथ रखना भी बहुत आसान हो गया है क्योंकि ऐसे कंप्यूटर बनने लगे हैं जो वज़न में हल्के और आकार में छोटे होते हैं। बच्चों को दिखायी जाने वाली कार्टून फिल्मों तथा धारावाहिकों की फोटोग्राफी और डबिंग कंप्यूटर के माध्यम से आकर्षक और आसान ढंग से की जा सकती है। इनमें श्रवण कार्यक्रमों और फिल्मों का संपादन भी आसानी से किया जा सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया में कंप्यूटर वरदान सिद्ध हुआ है।

प्र.4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

1 : **उपग्रह** :– एक प्रकार का धुरी यंत्र, जिसकी सहायता से अत्याधुनिक इलेक्ट्रानिक संचार उपकरणों को संचालित किया जाता है।

2 : **पेजर** :– माचिस की डिब्बी के आकार का एक उपकरण होता है, जिस पर संदेश लिखित रूप से निर्धारित ध्वनि क्षेत्र के भीतर कहीं भी किसी भी समय चलते–फिरते प्राप्त किये जा सकते हैं।

3 : **सेल्युलर फोन** :– उपग्रह से संचालित वायरलेस यंत्र है जो बातचीत करने के लिए और संदेश आदि भेजने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

4 : **फैक्स** :– किसी लिखित संदेश को लिखित रूप में ही प्राप्त करने का अनूठा उपकरण, जिस पर कहीं से भी भेजे गये लिखे हुए कागज की फोटोकॉपी निकल सकती है।

5 : **टेलीप्रिंटर** :– दूर–दराज के इलाकों से तेज़ी के साथ समाचार भेजने की टाइपराइटर जैसी एक मशीन।

6 : **ओ.बी.वैन** :– समाचार केन्द से बाहर किसी भी स्थान से सीधे प्रसारण में सहायक चलता–फिरता प्रसारण (ब्राडकास्टिंग) केन्द्र।

7 : **कंपैक्ट डिस्क** :– तश्तरी की तरह गोल ऑप्टीकल धातु से बना उपकरण जिस पर लेजर किरणों द्वारा संदेश भरे अथवा देखे–सुने जाते हैं।

8 : **ई–मेल** :– इंटरनेट के द्वारा संचालित महत्वपूर्ण व्यवस्था जिस के माध्यम से संदेश/संवाद विद्युतगति से दुनिया के किसी भी कोने में पहुँचाये जा सकते हैं।

9 : **धारावाहिक** :– ऐसे कार्यक्रम, जो सप्ताह के नियत दिन, नियत समय पर एक ही शीर्षक से प्रसारित किये जाते हैं।

10: **वीडियो पत्रकारिता** :– प्रिंट मीडिया की तरह, इलेक्ट्रानिक मीडिया में उपलब्ध अनेक विषयों से जुड़े ऑडियो और वीडियो कैसेट।

11: **चौथा खंभा** :– (स्तंभ) प्रेस को चौथा खंभा (स्तंभ) माना जाता है क्योंकि यह भी विधानपालिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के समान महत्वपूर्ण है।

35. संचार माध्यम और उनके प्रकार

35.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. संचार माध्यमों के जरिए देश–विदेश की विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी सूचनाएँ और जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।
2. ये न सिर्फ समाचारों का सशक्त माध्यम होते हैं बल्कि लोगों को जागरूक बनाने का भी काम करते हैं इसीलिए इन्हें लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है।
3. ये मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं – मुद्रित, श्रव्य और दृश्य–श्रव्य।
4. मुद्रित माध्यमों के अंतर्गत अखबार और पत्रिकाएँ आती हैं।
5. रेडियो और टेपरिकोर्डर श्रव्य माध्यम है।
6. टेलीविजन दृश्य–श्रव्य माध्यम है।
7. इंटरनेट मुद्रित, श्रव्य और दृश्य–श्रव्य माध्यम का मिला–जुला रूप है।
8. अखबारों में हर दिन नए समाचार होते हैं इसलिए इनकी आयु एक दिन की होती है जबकि पत्रिकाएँ सावधिक होती हैं और इनमें मुख्य रूप से समाचारों के विश्लेषण छपते हैं इसलिए इनकी आयु अखबारों की अपेक्षा अधिक होती है।
9. श्रव्य और दृश्य–श्रव्य माध्यमों की सूचनाएँ–कार्यक्रमों का प्रसारण निश्चित अवधि में होता है इसलिए इनके प्रसारण का लाभ उठाने के लिए उस समय का ध्यान रखना आवश्यक होता है।
10. अखबारों–पत्रिकाओं की सूचनाओं–समाचारों को काट कर सहेज कर रखा जा सकता है जबकि रेडियो या टेलीविजन के कार्यक्रमों को ऐसा कर पाना कठिन है।
11. मोबाइल और इंटरनेट सूचनाओं के त्वरित आदान–प्रदान और संकलन के मामले में सबसे तेज संचार माध्यम है।

35.2. प्रश्न–उत्तर

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. इंटरनेट की उपयोगिता पर प्रकाश डालिया (या)
इंटरनेट से होने वाले लाभों के बारे में लिखिए।

उ. इंटरनेट का अर्थ है – कंप्यूटरों का जाल है। जब कई कंप्यूटरों को सर्वर के ज़रिए जोड़ दिया जाता है तो वे एक जैसे वातावरण में काम करने लगते हैं। इंटरनेट पर हम कोई भी साइट लॉग ऑन करके सूचनाएँ प्राप्त कर लेते हैं। इंटरनेट से कई लाभ हैं–

1. यह एक प्रकार की समृद्ध लाइब्रेरी है, जिस पर किसी भी विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

2. इंटरनेट के जरिए संदेश पलक झपकते ही दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँचाये जा सकते हैं।
3. इसके जरिए लोगों से बातचीत की जा सकती है, उनके चित्र प्राप्त किये जा सकते हैं, अनुसंधान किये जा सकते हैं।
4. इंटरनेट के जरिए खरीददारी कर सकते हैं, नये मित्र बना सकते हैं।
5. दुनिया के किसी भी कोने में बैठा हुआ एक व्यापारी दूसरे व्यापारी के साथ सौदा तय कर सकता है। एक दूसरे के साथ विचार–विमर्श कर सकता है। किसी भी उत्पाद की जानकारी प्राप्त कर सकता है और अपने उत्पादन की जानकारी दे सकता है।
6. नौकरी, रोज़गार और शिक्षा से संबंधित अवसरों की जानकारियाँ हासिल कर सकते हैं।
7. यह एक त्वरित और बहुत उपयोगी संचार माध्यम है, जिसके जरिए किसी महत्वपूर्ण फाइल को एक विभाग से दूसरे विभाग को कार्यवाही हेतु पल भर में भिजवाया जा सकता है।

प्र.2. 'एजूसेट' कीक्या उपयोगिता है?

उ. टैलीविजन एक ऐसा दृश्य–श्रव्य माध्यम है जिस पर न केवल कार्यक्रमों को सुना जा सकता है बल्कि घटनाओं के चित्र देखे जा सकते हैं और उनसे संबंधित प्रमुख सूचनाओं को पढ़ा भी जा सकता है। टेलीविजन पर देखे गये कार्यक्रम अधिक समय तक हमारे मस्तिष्क पर अंकित रहते हैं। इसीलिए सरकार ने विद्यार्थियों और अध्यापकों की सुविधा हेतु 'एजूसेट' नामक उपग्रह को अंतरिक्ष में स्थापित किया है जिसकी सहायता से विद्यार्थी, शोधार्थी तथा दूरदर्शन पर अनेक पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम सहसंबंधी अनेक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों के प्रसारण से विद्यार्थियों और अध्यापकों को बहुत आसानी हो गई है। 'एजूसेट' की सहायता से विद्यार्थी अपने विषय के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है, चर्चा में भाग ले सकता है और शोध कार्य कर सकता है। सबसे बड़ी बात यह है कि पाठ्यक्रम के विषय को आकर्षक चित्रों के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है जिससे विषय विद्यार्थी के मस्तिष्क पर अंकित हो जाता है। विद्यार्थी को विषय उबाऊ न लगकर रोचक लगने लगता है। दूसरे अध्यापकों को भी विषय संबंधित मार्गदर्शन प्राप्त हो जाता है।

एजूसेट उपग्रह से संचालित टेलीविजन के ज्ञानवर्धक कार्यक्रम, हमें शिक्षा के साथ–साथ मनोरंजन भी प्रदान करते हैं।

प्र.3. संचार माध्यम का महत्व बताते हुए इसके उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

उ. किसी भी विचार, सूचना या भाव को दूसरों तक पहुँचाना ही संचार या कम्युनिकेशन कहलाता है। मानव सभ्यता के विकास में संचार माध्यमों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही है। प्राचीन समय में लोग पत्र लिखकर एक दूसरे का हाल चाल मालूम करते थे। राजा के संदेशवाहक सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते थे, कबूतरों द्वारा भी संदेश भेजा जाता था

किन्तु संचार माध्यमों के कारण फैक्स और ई–मेल के जरिए पलक झपकते ही सूचनाओं का आदान–प्रदान हो जाता है, जिसमें समय की भी बचत होती है।

संचार माध्यमों द्वारा दुनिया में घटने वाली घटनाओं की जानकारी पलभर में प्राप्त हो जाती है। खेल, शिक्षा, राजनीति से संबंधित सभी जानकारियाँ हम कुछ ही क्षणों में प्राप्त कर सकते हैं।

संचार माध्यमों द्वारा सूचनाओं की कंपोजिंग और एडीटिंग में भी सुविधा हो गई है।

उद्देश्य

संचार माध्यमों के मोटे तौर पर तीन उद्देश्य माने जाते हैं –

1. सूचना पहुँचाना, 2. मनोरंजन, 3. शिक्षा

स्ंचार माध्यमों द्वारा राजनीति, खेल, शिक्षा, कृषि, बाजार भाव, शेयर, अपराध, मौसम सभी क्षेत्रों से संबंधित सूचनाएँ प्रकाशित–प्रसारित की जाती है।

व्यक्ति के उबाऊपन और नीरसता को दूर करने के लिए अनेक मनोरंजक कहानियाँ और धारावाकि प्रकाशित–प्रसारित किये जाते हैं।

जनसंख्या नियंत्रण, एड्स के प्रति जागरूकता, पर्यावरण प्रदूषण, जल संचयन तथा शिक्षा क्षेत्र से संबंधित अनेक सूचनाओं का प्रकाशन और प्रसारण किया जाता है।

प्र.4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

1 : **दृश्य–श्रव्य** :– जो कार्यक्रम देखा और सुना जा सके, जैसे–फिल्म या दूरदर्शन के प्रोग्राम।

2 : **श्रव्य–माध्यम** :– श्रव्य का अर्थ है – सुनना। श्रव्य माध्यमों के जरिए सूचनाओं का प्रसारण किया जाता है, जिन्हें सिर्फ सुना जा सकता है। रेडियो एक श्रव्य माध्यम है।

3 : **संवाददाता** :– वह व्यक्ति जो प्रायः शहर से बाहर के समाचार संकलित करके उनका वृत्तांत प्रकाशन/प्रसारण के लिए समाचार पत्र/समाचार चैनलों को भेजता रहता है।

4 : **परिशिष्ट** :– समाचार पत्र के औसत आकार में विशेष उद्देश्य से जोड़े गये पृष्ठों को परिशिष्ट कहा जाता है। जैसे – दैनिक पत्रों में 'रविवारीय परिशिष्ट'

5 : **दैनिक** :– रोज़ाना प्रकाशित होने वाला समाचार–पत्र।

6 : **साप्ताहिक** :– सप्ताह में एक बार प्रकाशित होने वाला पत्र या पत्रिका।

7 : **पाक्षिक** :– पंद्रह दिन में एक बार प्रकाशित होने वाला पत्र या पत्रिका।

8 : **मासिक** :– महीने में एक बार प्रकाशित होनेवाली पत्रिका या पत्र।

9 : **त्रैमासिक** :– हर तीन में एक बार प्रकाशित होने वाला पत्र या पत्रिका।

10 : **मुद्रित माध्यम** :– देश और दुनिया के सभी क्षेत्रों की खबरों को प्रकाशित या मुद्रित करने वाले माध्यम। उदाहरण :– अखबार, पत्र–पत्रिकाएँ।

36. संचार की प्रक्रिया

36.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. जन साधारण की रुचि और जिज्ञासा से जुड़ी किसी भी घटना को समाचार की श्रेणी में रखा जा सकता है।
2. समाचारों के चुनाव में जनता की रुचि और जिज्ञासा का ध्यान रखते हुए उनके महत्व के आधार पर उन्हें प्रकाशित या प्रसारित किया जाता है।
3. समाचारों के संकलन में आधुनिक तकनीकों जैसे मोबाइल फोन, कंप्यूटर और ओबी वैन आदि के आ जाने से काफ़ी तेजी आई है।
4. समाचारों के संकलन में संवाददाता, समाचार एजेसियों, नागरिक संगठनों और सरकारी विभागों की तरफ से जारी विज्ञप्तियों को आधार बनाया जाता है।
5. संचार माध्यमों में समाचार एकत्र करने के अनेक स्रोत हैं, जिनमें संवाददाता, संवाददाता सम्मेलन, समाचार एजेंसियाँ, सूचना कार्यालय तथा संसद और विधानमंडल प्रमुख हैं।
6. समाचार ब्यूरो प्रायः विभिन्न महत्वपूर्ण शहरों और प्रदेशों की राजधानियों में अपने कार्यालय स्थापित करते हैं, जहाँ उनके संवाददाता नियुक्त होते हैं।
7. समाचार एजेंसियाँ भी अपने संवाददाताओं के माध्यम से समाचारों का संकलन करती और समाचार माध्यमों को बेचती हैं।
8. समाचारों के चयन और संपादन में समाचार संपादक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वह संवाददाता की भेजी खबर की भाषा और तथ्यों का संपादन, संशोधन कर उसके शीर्षक लगाता है और उसके महत्व के अनुरूप स्थान देता है।
9. कंप्यूटर और अखबार छापने वाली आधुनिक मशीनों के आ जाने से जहाँ अखबारों के प्रकाशन में आसानी हुई है वहीं ओबी वैन के प्रचलन से टेलीविजन चैनलों को खबरों के तुरंत प्रसारण में काफी सुविधा हुई है।

36.2. प्रश्न–उत्तर

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. 'समाचार' का अर्थ स्पष्ट कीजिए। आपके अनुसार किस तरह की घटना को समाचार का दर्जा दिया जा सकता है, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उ. **समाचार का अर्थ** :– कोई भी घटना, जिसके बारे में जानने की सहज जिज्ञासा उत्पन्न होती है, समाचार कहलाती है। संचार की व्यावहारिक तथा तकनीकी भाषा में इसे संचार, संवाद या न्यूज़ कहते हैं।

नयापन समाचारों का आधारभूत गुण है। बहुत सी घटनाएँ हमारे आसपास सहज रूप से घटती रहती हैं। वे सब समाचार नहीं होती हैं। किन्तु जब उनमें कोई विशेष बात जुड़ जाती है तो वे समाचार बन जाती है।

विशेष रूप से सरकारी विभागों में लिये जाने वाले फैसले, बाज़ार भाव, शेयरों की कीमतों में उतार–चढ़ाव आदि समाचार का रूप ले लेते हैं। इसके विपरीत आपके आसपास की हर घटना समाचार नहीं बन सकती है। उदाहरण के लिए यदि किसी कुत्ते ने किसी व्यक्ति को काट लिया है तो वह समाचार नहीं बन सकती क्योंकि ऐसी घटनाएँ समाज में अक्सर होती रहती है। यदि वह व्यक्ति मर जाए तो ऐसी घटना समाचार बन जाती है क्योंकि यह घटना सभी के मन में सहज ही जिज्ञासा पैदा कर देती है।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि हर वह घटना या विचार जो लोगों की सामान्य जिज्ञासा का विषय बनते हैं या जिनका संबंध समाज की अधिकांश जनता से जुड़ा होता है, उन्हें समाचारों का दर्जा दिया जा सकता है।

प्र.2. आधुनिक तकनीकों के आ जाने से समाचारों के प्रसारण या प्रकाशन में किस तरह की सुविधाएँ हुई हैं। किसी एक तकनीक का उदाहरण देकर स्पष्टीकरण कीजिए।

उ. पहले समाचारों को जुटाने के बाद उन्हें कंपोज करने फिर स्थान के अनुसार काट–छाँट और जोड़कर पेज तैयार करने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती थी। आधुनिक तकनीकों के आ जाने से समाचारों के प्रकाशन और प्रसारण में काफी सुविधा हो गई है। अब समाचारों को जुटाने के बाद कंप्यूटर पर ही कंपोज किया जाता है और आसानी से पेज बनाये जाते हैं। कंप्यूटर पर बनाये गये ये पेज काफी आकर्षक होते हैं, जिन पर बड़ी ही सफाई के साथ समाचारों की छपाई होती हैं। यही नहीं कंप्यूटर गलत शब्दों को अपने आप रेखांकित करता चलता है, जिससे तत्काल सुधार हो जाता है। इससे प्रूफ पढ़ने का झंझट भी खत्म हो गया। पेज मेकर द्वारा खबरों को काटना, छोटा या बड़ा करना, फोटो जोड़ना आदि बहुत आसान हो गया है।

अखबार छापने वाली मशीनें कंप्यूटर पर तैयार पेज को जस का तस छाप देती हैं। ये मशीनें घंटे भर में हज़ारों अखबार छापकर उन्हें सुव्यवस्थित ढ़ंग से काट और मोड़ कर तैयार करती है और साथ ही गिनती करके बंडल तैयार करती चलती है। इस प्रकार लाखों प्रतियाँ छपने और हज़ारों संस्करणों के प्रकाशन में मशीनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

यही नहीं कंप्यूटर आधारित तकनीक और उपग्रह माध्यम से सूचना केन्द्रों से जुड़ जाने से समाचारों का त्वरित प्रसारण संभव हो गया है। उदाहरण के तौर पर हम घर बैठे दिल्ली में उसी समय घटित होने वाली घटना का सीधा प्रसारण हमारे दूरदर्शन पर देख सकते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आधुनिक तकनीकों के कारण समाचारों के प्रकाशन और प्रसारण में काफी सुविधा हो गई है।

प्र.3. समाचार प्राप्त करने के मुख्य स्रोतों का उल्लेख करते हुए समाचार एजेंसियों के बारे में संक्षेप में लिखिए।

उ. अखबार में प्रकाशित होने वाले और टी.वी. पर प्रसारित होने वाले समाचार विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किये जाते हैं। समाचार प्राप्त करने के स्रोत निम्नलिखित हैं –

1. संवाददाता, 2. संवाददाता सम्मेलन, 3. समाचार ब्यूरो, 4. समाचार एजेंसियाँ, 5. मोबाइल, 6. इंटरनेट, 7. ओ.बी. वैन आदि।

उपर्युक्त स्रोतों में समाचार एजेंसियाँ भी समाचार जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये एजेंसियाँ समाचार माध्यमों को समाचार बेचने का काम करती है। ये समाचार जुटाने का काम संवाददाताओं के सहयोग से करती हैं। ये समाचार बेचती हैं इसीलिए विभिन्न क्षेत्रों के समाचार पूरे तथ्यों और पूर्ण ब्यौरे के साथ जुटाने की कोशिश करती हैं। इनकी खबरों में विश्वसनीयता होती है। ये एजेंसियाँ समाचार माध्यमों के लिए फोटो और फ़ीचर भी तैयार करती हैं।

भारत में प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पी.टी.आई) और यूनाइटेड न्यूज़ ऑफ इंडिया (यू.एन.आई.) प्रमुख समाचार एजेंसियाँ हैं। पी.टी.आई. की हिंदी एजेंसी का नाम भाषा और यू. एन.आई की हिंदी एजेंसी का नाम 'यूनीवार्ता' है।

लगभग सभी समाचार माध्यम, अपने समाचार संसाधनों के अलावा समाचार एजेंसियों की मदद पर आश्रित होते हैं।

प्र.4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

1 : **स्ट्रिंगर** :– अंशकालीक संवाददाता। इन्हें प्रकाशित सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक दिया जाता है।

2 : **संस्करण** :– समाचार पत्र या पत्रिका की एक बार में छापी गई संपूर्ण प्रतियाँ।

3 : **पत्रकार दीर्घा या प्रेस गैलरी** :– संसद, विधान सभा आदि का वह स्थान, जो पत्रकारों के बैठने के लिए आराक्षित/सुरक्षित रहता है।

4 : **विदेशी प्रसारण संगठन (बी.बी.सी.)** :– यह लंदन की रेडियो प्रसारण की संस्था है, जिसके समाचार विश्व के लगभग सभी देशों में सुने जाते हैं।

5 : **समाचार एजेंसी** :– वह संस्था जो नियमित भुगतान के बदले समाचार पत्रों को समाचार उपलब्ध कराती है

6 : **समाचार ब्यूरो** :– यह समाचार संकलन केन्द्र की तरह काम करता है। समाचारों को जुटाने के लिए यह संवाददाताओं की मदद लेता है।

7 : **संवाददाता सम्मेलन** :– आम तौर पर किसी विशेष अवसर पर अपनी तरफ से कोई बात बताने के लिए संवाददाता सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं जिनमें पत्रकार, फोटोग्राफर, दूरदर्शन व वीडियो कार्यक्रम बनाने वाली संस्थाओं की कैमरा टीमें शामिल होती हैं।

8 : **<u>प्रेस–विज्ञप्ति</u>** :– सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में समाचार पत्रों को प्रकाशनार्थ जारी किये गये लिखित वक्तव्य।

9 : **<u>एंटीना</u>** :– उपग्रह और प्रसारण केन्द्र के मध्य कड़ी के रूप में कार्य करने वाला साधन। यह उपग्रह से प्राप्त संदेशों को प्रसारण केन्द्र तक पहुँचाता है।

10 : **<u>उप–संपादक</u>** :– संपादक की सहायता के लिए नियुक्त व्यक्ति, जो समाचार अथवा रचनाओं के चयन–संपादन का आरंभिक कार्य संपन्न करता है।

11 : **<u>संपादक</u>** :– अखबार में छपने वाली खबरों का चयन और नियंत्रण करने वाला व्यक्ति। छपने वाली हर खबर के लिए यह उत्तरदायी होता है।

37. संचार माध्यमों के प्रमुख अवयव

37.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

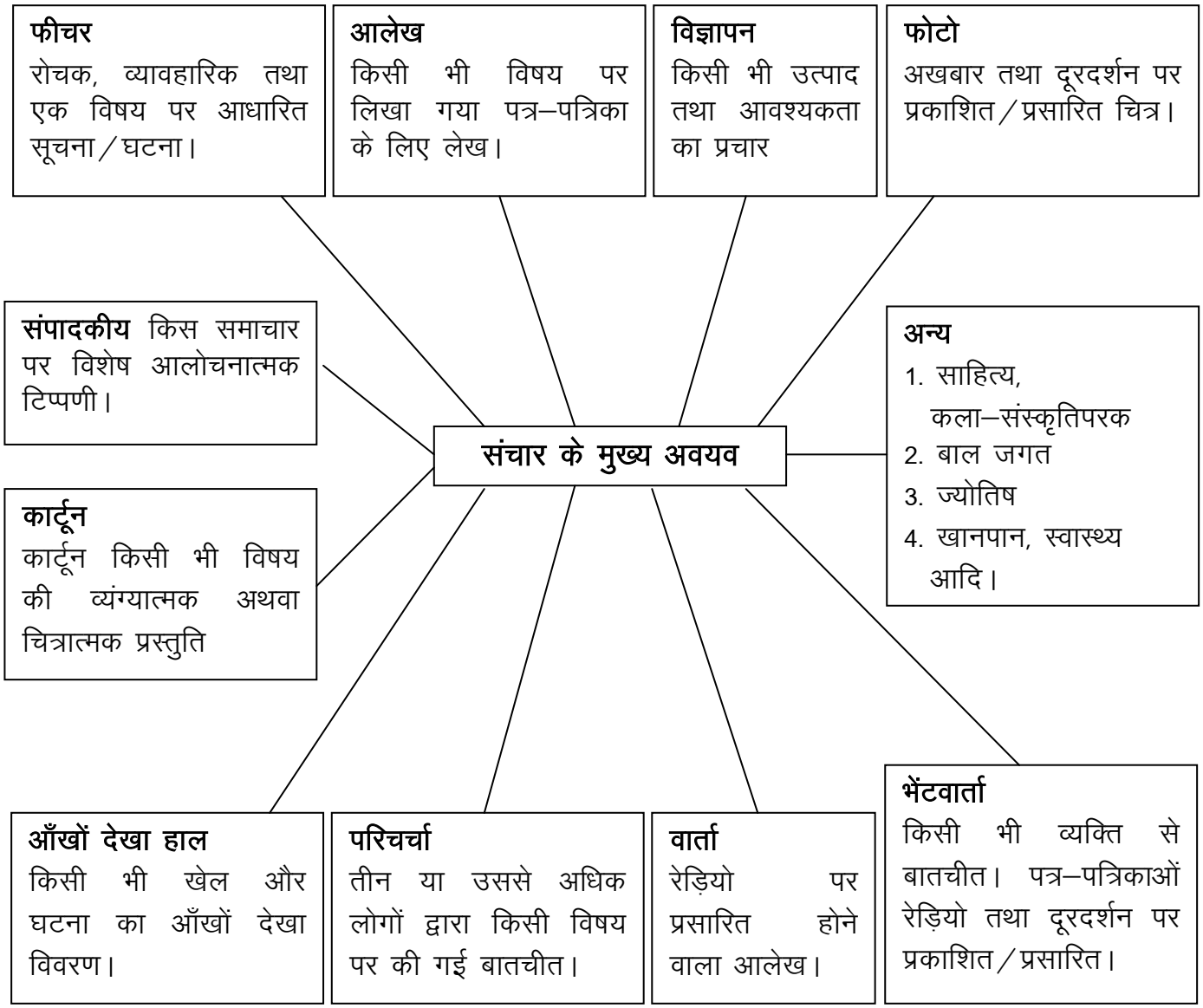

37.2. प्रश्न–उत्तर

प्र.1. संचार माध्यमों के प्रमुख अवयवों का उल्लेख करते हुए विज्ञापनों की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

उ. संचार माध्यमों के प्रमुख अवयव निम्नलिखित हैं –

1. विज्ञापन 2. फोटो 3. कार्टून 4. भेंटवार्ता
5. वार्ता 6. परिचर्चा 7. आलेख 8. फ़ीचर
9. धारावाहिक और 10. आँखों देखा हाल।

उपर्यक्त अवयवों में सबसे प्रचलित मनोरंजक रोचक अवयव है – विज्ञापन। विज्ञापन उपभोक्ताओं के बीच वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने का साधन है। साथ ही यह संचार माध्यमों की आय का प्रमुख स्रोत है। यदि अखबारों में विज्ञापन प्रकाशित न हों तो हमें वर्तमान में जो अखबार 2 रु. में मिलता है, उसकी कीमत 10 रु. हो जायेगी। विज्ञापनों की दरें किसी अखबार की प्रसार संख्या और पाठकों की संख्या के हिसाब से तय की जाती है। दूरदर्शन और रेडियो पर भी कार्यक्रम के पहले बीच में और बाद में अनेक विज्ञापन प्रसारित होते हैं।

सिनेमा स्लाइडर इश्तेहार, होर्डिंग द्वारा बसों, ट्रकों, दीवारों पर, प्रदर्शनियों और मेलों में बड़ी–बड़ी कंपनियाँ अपने उत्पादों का प्रदर्शन विज्ञापन द्वारा करती है। ये विज्ञापन बड़े ही रोचक, आकर्षक और लुभावने होते हैं। इनमें प्रयुक्त भाषा मुहावरेदार और लयात्मक होती है। इन विज्ञापनों के द्वारा बड़ी–बड़ी कंपनियों को अपने उत्पादों की बिक्री में बड़ी सुविधा मिल जाती है।

सरकारी विभाग या स्वयंसेवी संस्थाएँ भी लोकहित में अनेक विज्ञापनों का प्रकाशन–प्रसारण अखबार, रेडियो और दूरदर्शन द्वारा करती है। लोकहित में जारी विज्ञापनों में राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सद्भाव, परिवार नियोजन, रोगों से बचाव, नशीले पदार्थों से परहेज, साक्षरता अभियान आदि प्रमुख है।

विज्ञापन समाज के सभी वर्गों के बच्चों, युवाओं और वृद्धों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

प्र.2. भेंटवार्ता और वार्ता में क्या अंतर होता है? दोनों के बारे में विस्तार से समझाइए।

उ. भेंटवार्ता और वार्ता दोनों ही समाचार माध्यमों के प्रमुख अवयव है। सुनने में एक जैसे लगने पर भी दोनों में बहुत अंतर है। इनके अंतर को स्पष्ट करने के लिए दोनों की जानकारी होना आवश्यक है। भेंटवार्ता और वार्ता के बीच निम्नलिखित अंतर हैं –

1. किसी घटना, विषय या समस्या से जुड़े एक या अधिक लोगों से कोई संवाददाता या पत्रकार एकांत में सवाल–जवाब करके कुछ जानकारी प्राप्त करता है तो उसे भेंटवार्ता कहते हैं। जब कोई जानकार व्यक्ति निर्धारित समय में दिये गये विषय के विभिन्न पहलुओं पर सरल और सुबोध भाषा में प्रकाश डालता है तो उसे वार्ता कहते हैं। अर्थात् भेंटवार्ता में अनेक व्यक्तियों की भागीदारी होती है जबकि वार्ता में अकेला व्यक्ति ही भाग लेता है।
2. भेंटवार्ताएँ किसी खास समाचार अथवा घटना के बारे में होती हैं। वार्ताएँ किसी सम सामयिक विषय से संबंधित होती है।
3. भेंटवार्ताएँ आमतौर पर रिकार्ड कर ली जाती हैं और उनका संपादन करके आवश्यकता के अनुरूप उनके पूर्ण या आंशिक रूप को प्रकाशित किया जाता है। वार्ता अक्सर सीधे प्रसारित की जाती है। कभी–कभी इसे भी रिकार्ड किया जाता है।

4. वार्ता की अवधि 5 से 10 मिनट तक रहती है जबकि भेंटवार्ता की अवधि इससे अधिक ही होती है।
5. भेंटवार्ता में जहाँ इंटरव्यू लेनेवाले की विनम्रता, विवेकशीलता, मृदुभाषिता, धीरज और संयम महत्वपूर्ण हैं वहीं वार्ता में विषय की स्पष्टता, सरलता और प्रस्तुतीकरण महत्वपूर्ण होता है।
6. आकाशवाणी के 'समाचार दर्शन', 'न्यूजरील' जैसे कार्यक्रम भेंटवार्ताओं पर आधारित है। समाचार प्रभाग की 'सामयिकी' वार्ता से संबंधित कार्यक्रम है।

इस प्रकार भेंटवार्ता और वार्ता में अनेक अंतर होते हैं।

प्र.3. फ़ीचर किसे कहते हैं और इसे कैसे प्रस्तुत किया जाता है?

उ. जिसमें समाचार के व्यापक प्रभाव का दर्शन और मूल्यांकन होता है उसे फ़ीचर कहते हैं। इसमें एक शब्दचित्र खींचा जाता है। फ़ीचर एक विशेष सत्य पर आधारित होता है जो पाठक अथवा दर्शक की जिज्ञासा, सहानुभूति, हर्ष, दुःख आदि संवेदनाओं को उत्प्रेशित करने में सहायक होता है। यह मनोरंजन और सूचना प्रधान होता है। फ़ीचर भी सामान्य बात को भी बड़े ही मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। फ़ीचर अनेक विषयों पर लिखा जा सकता है। जैसे :– सूचना का अधिकार, बागवानी, लिंगभेद, धैर्यशीलता, शौर्य–बहादुरी की कथाएँ आदि।

फ़ीचर में शीर्षक का अपना विशेष महत्व होता है। यह सदा आकर्षक औद दिल को छूने वाला होना चाहिए। फ़ीचर अखबार में प्रकाशित किया जा सकता है, रेडियो पर सुना जा सकता है और दूरदर्शन पर देखा जा सकता है।

प्र.4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

1. **आँखों देखा हाल** :– रेडियो या दूरदर्शन पर किसी समारोह, खेल आदि का सीधा प्रसारण।
2. **कार्टून अथवा हास्यपट्टी** :– पत्र–पत्रिकाओं में नियमित रूप से छपने वाली सचित्र हास्य–व्यंग्य कथाएँ / (या) किसी चित्र द्वारा अथवा कम शब्दों के प्रयोग से राजनीतिक तथा सामाजिक मुद्दे पर व्यंग्यात्मक चोट।
3. **कैप्शन** :– चित्रों के साथ दिया गया शीर्षक / नक्शे, रेखाचित्र आदि में इस्तेमाल किये गये संकेतों को समझाने वाली तालिका या सूची।
4. **संपादकीय** :– ऐसे लेख जो समाचार पत्र अथवा पत्रिका के संपादक या संपादक मंडल द्वारा तैयार किये जाते हैं। ये सामयिक समस्याओं और घटनाओं पर लिखे जाते हैं और पत्र अथवा पत्रिका में नियत स्थान पर प्रायः छपते हैं।
5. **आलेख** :– अखबार या पत्रिका में प्रकाशित होने वाली वार्ता को आलेख कहते हैं। आलेख प्रायः गंभीर विषयों पर लिखे जाते हैं।
6. **फीचर** :– फ़ीचर किसी एक विशेष सत्य पर आधारित छोटा लेख होता है। इसमें किसी समाचार के व्यापक प्रभाव का दर्शन और मूल्यांकन होता है। इसमें शब्दचित्र भी खींचा जाता है।

7. **भेंटवार्ता** :– किसी घटना, विषय या समस्या से जुड़े एक या अधिक लोगों से संवाददाता या पत्रकार द्वारा सवाल–जवाब के रूप में की गई बातचीत को भेंटवार्ता कहते हैं।
8. **विज्ञापन** :– यह उपभोक्ताओं के बीच वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने और संचार माध्यमों की आय का प्रमुख साधन है।

38. संचार माध्यम की भाषा

38.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. भाषा संचार माध्यमों का प्राण है।
2. समाचारपत्रों की भाषा रेडियो और दूरदर्शन की भाषा से भिन्न होती है।
3. समाचारपत्रों की भाषा में शब्द और वाक्य रचना सरल और सीधी होती है, जिससे वह उस जन–समूह तक पहुँच सके, जहाँ कम पढ़े–लिखे मजदूर और विश्वविद्यालय के शिक्षक तथा विद्वान रहते हैं।
4. रेड़ियो और दूरदर्शन की भाषा आम बोलचाल की भाषा होती है, जिसे अनपढ़, साक्षर और पढ़े–लिखे विद्वान व्यक्ति भी सुनते और देखते हैं।
5. संचार माध्यमों में जटिल और बोझिल भाषा के प्रयोग से बचा जाता है।
6. दूरदर्शन में भाषा प्रयोग अपेक्षाकृत कम होता है, क्योंकि उसमें चित्रों और दृश्यों का प्रयोग अधिक किया जाता है।
7. अनुवाद से संचार माध्यमों की भाषा दुरूह और बोझिल हो जाती है। इससे बचने के लिए लक्ष्य भाषा में उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो सरलता से खप जाएँ और भाषा में रवानी पैदा करें।
8. समाचारवाचक में मधुर आवाज, प्रभावी वाचन, और समाचार संपादन का गुण होना आवश्यक है। लाखों–करोड़ों श्रोताओं और दर्शकों तक अपनी बात को सही–सही अर्थों में पहुँचाना समाचार वाचक का बहुत बड़ा दायित्व है।

38.2. प्रश्न–उत्तर

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. समाचार पत्रों में प्रयोग की जाने वाली वर्तनी में एकरूपता के अभाव होने के क्या कारण है? इसे किस प्रकार सुरक्षित रखा जा सकता है?

उ. भाषा संचार का मुख्य साधन है। बिना भाषा के संचार निर्जीव होता है, विशेषकर समाचार पत्र। समाचार पत्रों की भाषा पर दृष्टि डालने पर, जो विशेष बात हम अनुभव करते हैं वह है वर्तनी में एकरूपता का अभाव। यह दोष हिंदी के लगभग सभी समाचार पत्रों में पाया जाता है। इसके मुख्य कारण निम्न हैं –

1. हिंदी भाषी क्षेत्रों में अलग–अलग स्थानों में हिंदी के अलग–अलग रूप पाये जाते हैं।
2. हिंदी भाषी क्षेत्रों में अनेक बोलियाँ हैं, जिनमें अनेक असमानताएँ हैं।
3. अधिकांश हिंदी भाषी पढ़ने–लिखने में तो हिंदी के मानक रूप का प्रयोग करते हैं किंतु परिवार के सदस्यों, सगे–संबंधियों और मित्रों में स्थानीय बोली में बात करते हैं।

4. हिंदी के अनेक शब्दों की वर्तनी के विषय में एकरूपता कायम नहीं हो सकी है।
5. वर्तनी की अशुद्धी या एकरूपता न होने का एक और मूल कारण यह भी है कि हिंदी समाचार पत्रों को बहुत कुछ सामग्री अंग्रेज़ी में प्राप्त होती है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है किंतु अंग्रेजी के संबंध में यह तथ्य लागु नहीं होता।
6. हिंदी समाचार पत्रों की वर्तनी में एकरूपता लाने के लिए शासकीय संस्थाओं को प्रयास करना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे ऐसे मानक शब्द बनायें जिनका रूप हर प्रदेश में एक ही हों।

बोलचाल में प्रयुक्त शब्दों के लिए भी स्वीकृत वर्तनी का ही प्रयोग करें। इसके लिए समाचार पत्रों को चाहिए कि वे अपने स्तर पर काम करें और वर्तनी दोष की समस्या को दूर करने का हर संभव प्रयत्न करें।

प्र.2. अनुवाद में संदर्भ का क्या महत्व है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उ. समाचार पत्र, रेडियो और दूरदर्शन प्रभावशाली संचार माध्यम है। इनमें प्रकाशित और प्रसारित समाचार और कार्यक्रमों की भाषा का अपना प्रभाव होता है। कभी–कभी दूसरी भाषा से प्राप्त समाचारों और कार्यक्रमों का अनुवाद हिंदी में किया जाता है। अनुवाद करते समय अनेक बातों को ध्यान रखना होता है। शाब्दिक अनुवाद से भाषा कृत्रिम बन जाती है। इसकी स्वाभाविकता समाप्त हो जाती है। इसलिए वाक्य रचना के सिद्धांत और स्वरूप तथा संदर्भों के अनुसार अनुवाद करना चाहिए। संदर्भ का ध्यान न रखने से भाषा का स्वरूप बिगड़ जाता है और शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं। सबसे ध्यान देने योग्य बात यह है कि संदर्भ की अनदेखी से अनुवादित भाषा गलत हो जाती है।

उदाहरण के लिए 'Address' शब्द के दो अर्थ है – (1) भाषण, (2) पता। आपको ध्यान रखना होगा कि किस संदर्भ में उसका पर्याय भाषण लिखना है और किस संदर्भ में पता। एक वाक्य है The President announced this is in his address to the House. – दूसरा वाक्य है – Please give your house address. पहले वाक्य में यदि आप address के लिए पता और दूसरे वाक्य में address के लिए भाषण शब्द का प्रयोग करेंगे तो आपका अनुवाद गलत हो जायेगा। यहाँ पर आपको संदर्भ के अनुसार पहले वाक्य में 'भाषण' और दूसरे वाक्य में 'पता' शब्द का प्रयोग करना है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुवाद में संदर्भ का अपना विशेष महत्व होता है।

प्र.3. रेडियो और दूरदर्शन की भाषा की समानता और अंतर को स्पष्ट कीजिए।

उ. रेडियो और दूरदर्शन दोनों ही सशक्त संचार माध्यम है। इन पर जो कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं उनकी भाषा का बड़ा महत्व होता है। रेडियो और दूरदर्शन में प्रयुक्त भावाओं में अनेक समानताएँ होती हैं। जैसे :–

1. रेडियो और दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों को निरक्षर तथा पढ़े–लिखे लोग समान रूप से देखते हैं इसीलिए इनमें प्रयुक्त वाक्य क्लिष्ट और जटिल न होकर सरल, सीधे और कर्णप्रिय होते हैं।

2. दोनों की भाषा में लयात्मकता, सहजता और सुबोधता होती है।

3. वाक्यों का वाचन करते समय अवरोध पैदा करने वाले शब्दों के स्थान पर प्रचलित सरल पर्यायवाची शब्द प्रयोग किये जाते हैं।

4. रेडियो और दूरदर्शन दोनों के कार्यक्रमों में प्रयुक्त भाषा परिस्थितियों के अनुसार रोचक और मुहावरेदार होती हैं।

5. दोनों में आवश्यकतानुसार अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग किया जाता हैं।

अंतर :–

एक ओर जहाँ रेडियो और दूरदर्शन की भाषा में समानता दिखाई देती वहीं दूसरी ओर इसमें कई अंतर भी होते हैं। जैसे :–

1. रेडियो के कार्यक्रमों में भाषा का प्रयोग अधिक होता है जबकि दूरदर्शन के कार्यक्रमों में भाषा का प्रयोग कम और चित्रों तथा दृश्यों का प्रयोग अधिक होता है।

2. रेडियो पर श्रोता केवल भाषा के माध्यम से भाव ग्रहण करते हैं जबकि दूरदर्शन पर भाषा के साथ–साथ चित्र और चेहरे के हावभाव से भी अर्थ ग्रहण किया जाता है।

3. किसी भी कार्यक्रम का आँखों देखा हाल बताने के लिए रेडियो पर उसका पूरा विवरण देना पड़ता है जबकि दूरदर्शन पर केवल दृश्यमूलक शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार रेडियो और दूरदर्शन की भाषा में कई समानताएँ हैं और कई अंतर भी हैं।

प्र.4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

1. **वृत्तचित्र** :– प्रायः किसी विषय या घटना पर बनाई गई छोटी फिल्म, जो कल्पित कहानी पर आधारित न होकर अपने विषय को रोचक ढंग और यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती हैं।
2. **समाचार–वाचक** :– रेडियो अथवा दूरदर्शन पर समाचार पढ़ने वाले व्यक्ति को समाचार वाचक कहते हैं।
3. **साक्षात्कार** :– व्यक्ति विशेष को आमंत्रित करके उससे किसी विषय पर प्रश्न पूछना तथा उसके विचार जानना।
4. **सामयिकी** :– ताज़ी घटनाओं के महत्व पर प्रकाश डालने वाला कार्यक्रम
5. **पत्रकार** :– वह व्यक्ति जिसने पत्रकारिता को पेशे के तौर पर अपना लिया है।

खण्ड – 5ख
34. वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक विकास

34.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. आँखों देखी, प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त सत्य जानकारी विज्ञान है।
2. विज्ञान में किसी भी स्थिति को प्रयोग द्वारा सत्य सिद्ध किया जा सकता है।
3. जीवन में सत्य तक पहुँचने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण आवश्यक है, किसी बात को जाँच परख कर, तर्क की कसौटी पर कस कर स्वीकार करना ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।
4. यदि कोई तथ्य सच पर आधारित है तो उसे स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए। इससे स्थिति में सुधार आता है। दृष्टिकोण लचीला रखना जीवन में सफलता देता है।
5. प्रत्यक्ष दृष्टि का आधार विज्ञान है और अदृश्य तथा परोक्ष का आधार अंधविश्वास।
6. अंधविश्वासी व्यक्ति बिना सोचे–समझे शीघ्र ही दूसरों की बातों पर विश्वास कर लेते हैं और जाने–अनजाने अपना अहित करवा बैठते हैं।
7. समाज के कुछ व्यक्ति अथवा राजनेता अपनी तुच्छ स्वार्थ–सिद्धि के लिए भी कभी–कभी अंधविश्वास फैलाते हैं और आम जनता को बेवकूफ बनाते हैं।
8. वैज्ञानिक दृष्टि अथवा तर्क के सहारे टोने–टोटके, चमत्कार, जादू, झाड़–फूँक आदि लोक प्रचलित अंधविश्वासों से बचा जा सकता है।
9. कुछ लोक प्रचलित विश्वासों के पीछे भी विज्ञान छिपा होता है जिसे क्यों, कब, कैसे आदि प्रश्न करके समझा जा सकता है।

34.2. प्रश्न–उत्तर

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. लोक जीवन में वैज्ञानिक दृष्टि का क्या महत्व है? उदाहरण सहित पुष्ट कीजिए।

उ. जब किसी बात अथवा घटना के कारणों की जाँच प्रयोग आधारित तथ्यों पर वैज्ञानिक तरीके से की जाए तब वह वैज्ञानिक दृष्टि कहलाती है।

हमारे देश के अनेक लोग आज भी अंधविश्वासों में लिप्त है। बीमारियों के इलाज के लिए वे आज भी टोने–टोटके, झाड़–फूँक और भभूत आदि में विश्वास करते हैं। अपनी समस्याओं के समाधान के लिए वे ढोंगी और चमत्कारी बाबाओं के आश्रमों में जाते हैं। अंधविश्वास के चक्कर में परिवार के मुखिया की, उपयुक्त चिकित्सा के अभाव में मृत्यु हो जाती है और उसका परिवार आर्थिक तंगी में जीवनयापन करने के लिए मजबूर हो जाता है।

अनेक ढोंगी भोले–भाले लोगों के धन या आभूषणों को दुगुना करने का लालच देकर उनसे धन और आभूषण ही लूटकर चले जाते हैं।

यदि लोगों में वैज्ञानिक दृष्टि विकसित हो जाए, वे तर्क के आधार पर सही निर्णय लेने लगें और वे यह जान जाएँ कि प्रत्येक कार्य के पीछे कोई–न–कोई कारण छिपा होता है जिसे उन्हें पहचानना है, तो वे अंधविश्वासों और टोने–टोटकों से छुटकारा पा सकते हैं, अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं।

प्र.2. किन्हीं दो अंधविश्वासों को लिखते हुए उनमें छिपे वैज्ञानिक तथ्यों को बताइए।

उ. दो अंधविश्वास निम्नलिखित हैं।

	अंधविश्वास	छिपे वैज्ञानिक तथ्य
1	दायाँ अथवा बायाँ अंग फड़कना और उनका शुभ–अशुभ होना।	1 इस प्रकार की सामान्य शारीरिक क्रियाएँ प्रायः शरीर के संतुलन के बनाए रखने के लिए स्वतः ही होती है, जैसे भूख अथवा प्यास का लगना। ठीक इसी प्रकार शरीर का कोई भी अंग, किसी भी समय फड़क सकता है और संतुलन बनाने के लिए इस प्रकार की क्रिया करता है।
2	रात में विशिष्ट पेड़ों के नीचे सोने से अमंगल होने की आशंका	2 दरअसल, रात के समय किसी भी पेड़ के नीचे सोने से अमंगल ही होगा, क्योंकि रात में पेड़ प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया बंद कर देते हैं जिसके फलस्वरूप ऑक्सीजन का निकलना भी बंद हो जाता है। साथ ही श्वसन की प्रक्रिया भी चालू रहती है जिसमें वे वातावरण से ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं और कार्बन डाइ ऑक्सीजन छोड़ते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है।

पुस्तक में से कोई भी दो अंधविश्वास व उनमें छिपे वैज्ञानिक तथ्य लिखे जा सकते हैं।

प्र.3. साँप के द्वारा काटे गये व्यक्ति को इलाज के लिए आप तंत्र–मंत्र से इलाज करने वाले के पास ले जाएँगे या अस्पताल में डाक्टर के पास? अपने निर्णय के पक्ष में उचित तर्क दीजिए।

उ. विषैले साँप के काटने पर यदि शरीर में विष फैलने लगा है, तो विष का प्रभाव दूर करने वाली औषधि द्वारा ही इलाज संभव है।

भारत में पाए जाने वाले लगभग 300 प्रकार के साँपों में से कुछ विषैले होते हैं। पशुओं पर प्रयोग करके सिद्ध किया जा चुका है कि विषैले साँप का काटा हुआ व्यक्ति तंत्र–मंत्र या झाड़–फूँक के द्वारा नहीं बल्कि चिकित्सा द्वारा ही ठीक किया जा सकता है।

सामान्यतः ढोंगी लोग विषहीन सर्प द्वारा काटे गए व्यक्ति के ही सफल इलाज का दावा करते हैं और ठीक करने का श्रेय ले जाते हैं। वे उसका इलाज कर लाभ और आर्थिक प्रसिद्धि पाते हैं तथा उसका प्रचार–प्रसार भी करते हैं। इसीलिए मैं साँप के द्वारा काटे गये व्यक्ति को इलाज के लिए अस्पताल ही ले जाऊँगा/जाऊँगी।

प्र.4. यात्रा के लिए चलते समय किसी के छींकने पर आप अपनी यात्रा स्थापित क्यों नहीं करेंगे? वैज्ञानिक दृष्टि के आधार पर उत्तर दीजिए।

उ. यात्रा के लिए चलते समय किसी के छींकने पर मैं अपनी यात्रा स्थगित नहीं करूँगा/करूँगी क्योंकि – छींक आने के कई कारण हो सकते हैं, जैसे –

- साँस–क्रिया को नियमित और सुचारू ढंग से व्यवस्थित करने के लिए।
- नज़ला अथवा जुकाम संबंधी समस्या से ग्रसित व्यक्ति अकसर छीकते हैं। इसका अनिष्ट से कोई संबंध नहीं है।
- ये क्रियाएँ शरीर की आवश्यकता के अनुसार कभी भी हो सकती हैं। इनके लिए किसी यात्रा पर अथवा किसी प्रयोजन के लिए आना–जाना कोई अर्थ नहीं रखता। पर हाँ! यदि व्यक्ति को ठंड लगने के कारण छींक आई है और ताप/बुखार होने की आशंका है तो ऐसी स्थिति में वाकई घर पर ही रुक जाना चाहिए क्योंकि अस्वस्थ होने पर यात्रा सुखद कैसे हो सकती है।

अर्थ स्पष्ट कीजिए :–

1. **अंधविश्वास** :– किसी बात को जाँचे–परखे बिना स्वीकार करना अंधविश्वास है। अंधविश्वास अदृश्य तथा परोक्ष का आधार है।
2. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण** :– किसी बात को जाँच–परखकर और तर्क की कसौटी पर कसने के बाद स्वीकार करना ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।
3. **टॉमस एल्वा एडीसन** :– इन्होंने बिजली और ग्रामोफोन का आविष्कार किया।
4. **कार्बन मोनो आक्साइड** :– मुँह से निकलने वाली कार्बन डाइ आक्साइड जलते दीपक की कार्बन गैस के साथ मिलकर कार्बन मोनो आक्साइड गैस बनाती है। यह एक ज़हरीली गैस है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है।

प्र.5. खगोल विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारत की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए इस क्षेत्र के प्रमुख वैज्ञानिकों के नाम बताइए।

उ. यह विज्ञान भारत में ही विकसित हुआ। भारतीय खगोल विज्ञान का उद्‌भव वेदों से माना जाता है। वैदिककालीन भारतीय अपने यज्ञ तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठान ग्रहों की स्थिति के अनुसार शुभ लग्न देखकर किया करते थे। शुभ लग्न जानने के लिए उन्होंने खगोल विज्ञान का विकास किया था।

महाभारत में चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण की चर्चा है। इस काल के लोगों को ज्ञात था कि ग्रहण केवल अमावस्या और पूर्णिमा को ही लग सकते हैं।

आर्यभट्ट ने बताया कि पृथ्वीगोल है। उन्होंने पृथ्वी के आकार, गति और परिधि का अनुमान भी लगाया था।

वराहमिहिर प्रथम खगोल शास्त्री थे जिन्होंने कहा कि कोई ऐसी शक्ति है जो वस्तुओं को धरातल से बाँधे रखती है। इसी शक्ति को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं।

ब्रह्मगुप्त खगोल विज्ञान संबंधी गणनाओं में बीजगणित का प्रयोग करने वाले भारत के सबसे पहले गणितज्ञ थे।

खगोल विज्ञान में भास्काराचार्य का विशिष्ट योगदान है। भास्कराचार्य अपनी 'तात्कालिक गति' की अवधारणा के लिए प्रसिद्ध है। इससे खगोल वैज्ञानिकों को ग्रहों की गति का सही ज्ञान प्राप्त करने में मदद मिलती है। इन्होंने आइजक न्यूटन से 500 वर्ष पूर्व गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत का प्रतिपादन किया था।

35. भारतीय विज्ञान

35.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. भारत में प्राचीन काल से ही एक समृद्ध वैज्ञानिक परंपरा रही है। चाहे वह भवन निर्माण का क्षेत्र हो चाहे खगोल विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, धातु विज्ञान अथवा रत्न विज्ञान का। हर क्षेत्र में भारत में प्राचीन काल से ही विज्ञान का प्रयोग होता रहा है और दुनिया के सामने प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक परंपरा एक प्रेरणा के स्रोत के रूप में मौजूद रही है।
2. आधुनिक काल में सी.एस.आई.आर. की स्थापना और उसके अंतर्गत राष्ट्रीय रसायन प्रयोगशाला, राष्ट्रीय भौतिकी, प्रयोगशाला, धात्विक प्रयोगशाला जैसी विभिन्न वैज्ञानिक संस्थाओं की स्थापना की गई, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय वैज्ञानिकों को अनुसंधान में काफी सरलता हो गई।
3. आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों में सी, वी, रमण, मेघनाद साहा, शांतिस्वरूप भटनागर, जगदीश चंद्र बोस, प्रफुल्लचंद्र राय, होमी जहांगीर भाभा तथा हरगोविंद खुराना के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।
4. आधुनिक युग में भारत में मौलिक अनुसंधानों के साथ–साथ मिश्रित वैज्ञानिक परंपरा का भी विकास तेजी से हुआ, जिसमें कंप्यूटर मोटरकार, रक्षा उपकरण, कृषि उपकरण, चिकित्सा उपकरण आदि प्रमुख हैं।
5. आज भारत कृषि, रक्षा–विज्ञान, रसायन, भौतिकी, इलेक्ट्रोंनिक, चिकित्सा, सूचना आदि क्षेत्रों में वैज्ञानिक उपकरणों के बल पर आत्मनिर्भर हो चुका है।

35.2. प्रश्न–उत्तर

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. किन्हीं चार आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों के नाम बताइए तथा उनकी खोजों का उल्लेख कीजिए।

उ. आधुनिक भारत में विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में नए–नए प्रयोग लगातार होते रहे। कुछ भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन हुआ। प्रमुख वैज्ञानिकों में जगदीश चंद्र बोस, सी.वी. रमण, होमी जहाँगीर भाभा, शांतिस्वरूप भटनाकर, हरगोविंद खुराना आदि के नाम प्रसिद्ध है।

जगदीश चंद्र बोस ने लघु रेडियो तरंगों का निर्माण किया। पौधों में जीवन के लक्षणों की खोज उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं।

सी.वी. रमण ने प्रकाश किरणों की गुणधर्मिता तथा आकाश और समुद्र की रंगों की व्याख्या पर विशेष शोध किया। अपने शोध के लिए उन्हें 1930 में नोबेल पुरस्कार भी मिला।

एस. रामानुजम असाधारण प्रतिभावान गणितज्ञ थे। गणितीय सिद्धांतों के क्षेत्र में उनके अनुसंधान के कारण उन्हें बहुत यश और ख्याति मिली। इसी विद्वत–शृंखला में एक प्रसिद्ध वनस्पति और भूगर्भ शास्त्री बीरबल साहनी थे।

प्र.2. भारतीय गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त द्वारा बनाए गए शून्य को प्रयोग में लाने के नियम लिखिए।

उ. ब्रह्मगुप्त पहले भारतीय गणितज्ञ थे जिन्होंने शून्य को प्रयोग में लाने के नियम बनाए। इनके अनुसार –

1. शून्य को किसी संख्या से घटाने या उसमें जोड़ने पर उस संख्या पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
2. शून्य से किसी संख्या का गुणनफल भी शून्य होता है।
3. किसी संख्या को शून्य से विभाजित करने पर उसका परिणाम शून्य होता है।
4. उन्होंने यह गलत कहा कि किसी संख्या को शून्य से विभाजित करे तो परिणाम शून्य होता है क्योंकि आज हम जानते हैं कि यह अनंत की संख्या होती है।

प्र.3. चरक संहिता और सुश्रुत संहिता क्या है?

उ. चरक संहिता को औषधीय शास्त्र में आयुर्वेद पद्धति का आधार माना जाता है। इसके रचयिता महर्षि चरक हैं। 'चरक संहिता' में तत्कालीन प्रशिक्षित चिकित्सकों और चिकित्सालयों का भी विवरण मिलता है। चरक पहले चिकित्सक थे, जिन्होंने चयापचय, पाचन और शरीर–प्रतिरक्षा के बारे में बताया है। 'चरक संहिता' में शरीर विज्ञान, निदान शास्त्र और भ्रूण विज्ञान के विषय में जानकारी मिलती है।

सुश्रुता संहिता :– यह ग्रंथ भारतीय शल्य चिकित्सा पद्धति का विश्वविख्यात ग्रंथ है। इसके रचयिता 'सुश्रुत' हैं। इसमें सुश्रुत ने अपने से पहले के शल्य चिकित्सकों के ज्ञान और अनुभवों को संकलित कर एक व्यवस्थित रूप दिया है। इसमें उन्होंने लिखा है कि – चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थी मृत शरीर के विच्छेदन से अपने कार्य में कुशल बनते हैं। सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा के लिए 101 उपकरणों की सूची भी दी है। सुश्रुत संहिता में नाक कान और ओंठ की प्लास्टिक सर्जरी का पूरा विवरण दिया गया है।

अर्थ स्पष्ट कीजिए

1. **लौह स्तंभ** :– लौह स्तंभ दिल्ली में कुतुबमीनार के परिसर में स्थित है, जो चौथी सदी में स्थापित किया गया था। इसकी विशेषता यह है कि 1700 वर्ष बाद भी इसमें कहीं भी जंग नहीं लगी है।
2. **आनुवांशिकता** :– जनक या माता–पिता से संतति में लक्षणों का पहुँचना।
3. **आर्यभट्ट** :– आर्यभट्ट ने पृथ्वी की गोल आकृति और इसके अपनी धुरी पर घूमने की पुष्टि की थी।

4. **वेदांग ज्योतिष** :– वेदांग ज्योतिष वैदिककालीन खगोल विज्ञान का एकमात्र ग्रंथ है। इसकी रचना 'लगध' नामक ऋषि ने ईसा से लगभग 100 वर्ष पूर्व की थी।
5. **वराहमिहिर** :– वराहमिहिर विज्ञान के इतिहास में प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने कहा कि कोई ऐसी शक्ति है जो वस्तुओं को धरातल से बाँधे रखती हैं। 'पंचसिद्धांतिका' और 'सूर्य सिद्धांत' इनकी पुस्तकें हैं।
6. **ब्रह्मगुप्त** :– ब्रह्मगुप्त खगोल विज्ञान संबंधी गणनाओं में बीजगणित का प्रयोग करने वाले भारत के सबसे पहले महान गणितज्ञ थे। 'ब्रह्मगुप्त सिद्धांत' इनका प्रमुख ग्रंथ है।
7. **भास्कराचार्य** :– खगोलविद् के रूप में भास्कराचार्य अपनी 'तात्कालिक गति' की अवधारणा के लिए प्रसिद्ध है। इन्होंने 'सिद्धांत शिरोमणि' और 'करण कुतुहल' नामक दो ग्रंथों की रचना की थी।
8. **बीजगणित** :– बीजगणित के क्षेत्र में भारतीयों ने दक्षता प्राप्त की थी। इस क्षेत्र में सबसे बड़ी उपलब्धि है अनिवार्य वर्ग समीकरण का हल प्रस्तुत करना।
9. **चरक संहिता** :– इसके रचयिता 'महर्षि चरक' है। 'चरक संहिता' में तत्कालीन प्रशिक्षित चिकित्सकों और चिकित्सालयों का विवरण मिलता है। यह 'काय चिकित्सा' का प्रथम ग्रंथ है।
10. **सुश्रुत संहिता** :– यह शल्य चिकित्सा पद्धति का विश्वविख्यात ग्रंथ है। इसमें सुश्रुत ने अपने से पहले के शल्य चिकित्सकों के ज्ञान और अनुभवों को संकलित कर एक व्यवस्थित रूप दिया है।
11. **हास्ते–आयुर्वेद** :– इसमें हाथियों की शरीर रचना तथा उनके रोगों का विवरण, उनके रोगों की शल्य क्रिया और औषधियों द्वारा चिकित्सा, देखभाल और आहार का विवरण मिलता है।
12. **नागार्जुन** :– नागार्जुन ने रसायन विज्ञान पर 'रस–रत्नाकर' नामक ग्रंथ लिखा है। इस ग्रंथ में पारे के यौगिक बनाने के प्रयोग दिए गए है।
13. **क्षेत्रफल** :– किसी वृत्त के अंतर्गत अथवा किन्हीं रेखाओं के अंतर्गत तल अथवा पृष्ठ का परिणाम
14. **परिधि** :– किसी वृत्त की परिसीमा – वृतरेखा।
15. **जगदीश चन्द्र बोस** :– लघु रेडियो तरंगों का निर्माण किया। पौधों में जीवन के लक्षणों की खोज उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

36. जनसंख्या–वृद्धि और विज्ञान

36.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. भारत में सबसे अधिक जनसंख्या–वृद्धि होती है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है।
2. विकसित देशों की अपेक्षा विकासशील देशों में जनसंख्या–वृद्धि की औसत दर अधिक है।
3. बेहतर चिकित्सा सुविधा, अंधविश्वास, अशिक्षा, कम उम्र में विवाह तथा लड़के की चाह में लड़कियों पैदा करते जाने के कारण हमारे देश की जनसंख्या बढ़ती जा रही है।
4. जनसंख्या–वृद्धि के कारण पारितंत्रीय समस्या, पर्यावरण प्रदूषण, ओजोन परत में छेद की आशंका, ब्रह्मांडीय तापमान का बढ़ना, कृषि योग्य भूमि की कमी, पीने के पानी तथा सिचाई के पानी की कमी, प्राकृतिक दोहन, स्वास्थ्य संबंधी समस्या, गरीबी, बेकारी तथा अपराधीकरण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं।
5. जनसंख्य नियंत्रण के लिए गर्भ निरोधक उपायों की जानकारी, जनसंख्या शिक्षा, महिला शिक्षा, यौन शिक्षा तथा संचार माध्यमों द्वारा प्रचार–प्रसार किया जाता है।
6. जनसंख्या नियंत्रण इसलिए जरूरी है कि हर आदमी को ठीक से भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ तथा काम के अवसर उपलब्ध हो सकें। यातायात की समुचित व्यवस्था हो सके, पर्यावरण प्रदूषण, डेंगू और एड्स जैसी संक्रामक बीमारियों पर नियंत्रण पाया जा सके, आर्थिक विकास हो सके, जिससे गरीबी तथा अपराध की प्रवृत्तियों को रोका जा सके।

36.2. प्रश्न–उत्तर

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. विज्ञान किस तरह जनसंख्या को प्रभावित करता है?

उ. तरह–तरह की दवाइयों, चिकित्सा पद्धतियों तथा वैज्ञानिक उपकरणों की खोज व प्रयोगों से विज्ञान ने मृत्युदर पर तो अवश्य नियंत्रण पा लिया, किंतु जन्मदर की वृद्धि पर नियंत्रण न पा सका जिसके चलते एकदम से जनसंख्या में वृद्धि शुरू हुई, जो आज तक जारी है।

जनसंख्या बढ़ती गई और लोगों ने तेजी से अपने विकास और जीवन में सुविधाओं के ख्याल से वैज्ञानिक उपकरणों का अंधाधुंध प्रयोग शुरू कर दिया जिस कारण पर्यावरण प्रदूषण, ओजोन परत में छेद की आशंका, लोगों का जीवनयापन के लिए शहरों की तरफ पलायन, पीने के पानी की समस्या, गरीबी, बेरोजगारी, पारिस्थितिकीय समस्या तथा एड्स जैसे भयानक रोगों की समस्या उत्पन्न हो गई।

लेकिन ऐसा नहीं है कि जनसंख्या–वृद्धि और इससे उत्पन्न समस्याओं को बढ़ाने में विज्ञान का ही हाथ है। जनसंख्या को रोकने में भी विज्ञान की बड़ी भूमिका है। जिन देशों में

जनसंख्या–वृद्धि बिलकुल सामान्य हो गई है उन देशों में विज्ञान विकास कार्यों में भी लोगों की काफी मदद कर रहा है और जिन देशों में जनसंख्या–वृद्धि से ज्यादा समस्याएँ पैदा हो गई हैं उन देशों में इन समस्याओं से निपटने में भी विज्ञान सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

प्र.2. जनसंख्या–वृद्धि के कोई दो कारण लिखिए –

उ. हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि के निम्नलिखित कारण हैं :–

1. **बेहतर चिकित्सा सुविधा** :– पहले चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध न होने के कारण लोग छोटी–मोटी बीमारियों से ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे। किंतु विज्ञान की तरक्की के कारण वैज्ञानिकों ने मलेरिया, टी.बी. टिटनेस, पोलियो जैसी आम तथा भयानक बीमारियों पर तो नियंत्रण पा ही लिया, स्वास्थ्य संबंधी अन्य परेशानियों का उपचार भी ढूँढ़ लिया है। देश के कोने–कोने में अस्पताल खोले गए तथा मुफ्त चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध करवाई गई। आदमी की औसत उम्र पहले से अधिक हो गई। इस तरह मृत्युदर में काफी कमी आई, किंतु जन्मदर पर तेजी से नियंत्रण के उपाय नहीं किए गए, जिसके कारण देश की जनसंख्या तेजी से बढ़ने लगी।
2. **अशिक्षा** :– हमारे देश के आधे से अधिक लोग आज भी निरक्षर है। जो पढ़े–लिखे हैं उनमें से भी ज्यादातर लोगों की पढ़ाई–लिखाई ठीक से नहीं हुई है। लोगों को देश की बढ़ती हुई जनसंख्या से उत्पन्न होने वाली समस्याओं की जानकारी नहीं है।

कम पढ़े–लिखे या निरक्षर होने के कारण लोगों को परिवार नियोजन के उपायों की ठीक से जानकारी नहीं है। महिलाओं का शिक्षा–स्तर पुरुषों की अपेक्षा काफी कम है। जिससे वे अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत नहीं है तथा अधिक बच्चे पैदा होने से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से अनभिज्ञ हैं। अधिकांश लोगों की धारणा है कि नसबंदी के बाद शरीर कमजोर हो जाता है और काम करने की क्षमता कम हो जाती है। इसीलिए वे नसबंदी नहीं कराते और जनसंख्या बढ़ाते जाते हैं।

प्र.3. पारितंत्रीय या ईकोलोजिकल समस्या से क्या तात्पर्य है?

उ. पारितंत्र उस समूचे वातावरण को कहते हैं, जिसमें जीवधारी आपसी सहयोग के साथ रहते हैं। इस तरह पृथ्वी पर पाए जाने वाले पेड़–पौधे, नदी–तालाब, पर्वत–घाटी, खेत तथा जीव–जंतु सभी पारितंत्र के अंतर्गत आते हैं। जनसंख्या–वृद्धि के कारण पारितंत्रीय समस्याएँ पैदा हो गई है। जनसंख्या–वृद्धि के कारण आवास व अन्न के लिए जमीन की जरूरत बढ़ गई है। जिसके कारण, जहाँ जंगलों वाले भाग थे वहाँ से जंगल तथा पेड़–पौधों को काटकर रहने के लिए आवास तथा खेती योग्य जमीन बनाई जाने लगी। पेड़–पौधों के कटने के कारण वातावरण में कार्बन डाई आक्साइड का अनुपात बढ़ गया। कुल ब्रह्मांडीय गरमी में बढ़ोत्तरी का 50% हिस्सा कार्बन डाइ आक्साइड गैस के कारण है। पेड़–पौधों में कमी के कारण वातावरण में गरमी के साथ–साथ बारिश भी कम होती है, जलाने के लिए लकड़ियों की कमी रहती है तथा बाढ़ के

कारण खेती योग्य भूमि का कटाव तेज हो जाता है। लकड़ियों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए लोगों ने तेजी से जंगलों की कटाई शुरू कर दी जिसके कारण 1970 में जो 230,000 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र बाढ़ से प्रभावित हुआ था वह बढ़कर 1984 में 590,000व कि. हो गया। जंगलों को काटने ने कारण सिंचाई के लिए पानी की आवश्यकता दो गुना बढ़ गई, जिसकी मुख्य वजह जनसंख्या वृद्धि ही थी।

प्र.4. जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है?

उ. जनसंख्या–वृद्धि के साथ–साथ मनुष्य की जरूरतें भी बढ़ीं, जिस कारण मनुष्य ने प्रकृति का दोहन शुरू कर दिया। वैज्ञानिक प्रगति के साथ–साथ औद्योगिक विकास भी तेज हुआ। इस कारण पर्यावरण के हर घटक जैसे जल, मिट्टी, वायु आदि में प्रदूषण बढ़ा। पर्यावरण प्रदूषण के विभिन्न स्वरूप तथा कारण निम्नलिखित हैं –

1. **वायु–प्रदूषण** :– कल–कारखानों तथा मोटर गाड़ियों से निकलने वाला रासायनिक धुंआ वातावरण में धुलकर इसे प्रदूषित कर देता है। इस प्रदूषण के कारण जहाँ लोगों में बीमारियाँ बढ़ रही हैं वहीं पेड़–पौधों तथा वनस्पतियों की गई दुर्लभ प्रजातियाँ भी लुप्त होती जा रही है।
2. **कूड़ा–कचरा आदि से प्रदूषण** :– जनसंख्या वृद्धि के कारण लोगों द्वारा प्रयुक्त वस्तुओं के अवशेष, घरेलू कचरा तथा औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले कचरे की मात्रा काफी बढ़ गयी है। लोग कचरा मोहल्ले या बस्ती के कोने में डाल देते हैं, जो सड़ कर प्रदूषण फैलाता है।
3. **ध्वनि प्रदूषण** :– महानगरों में चलने वाले वाहनों और तेज आवाज करती हुई मशीनों के कारण ध्वनि प्रदूषण होता है। इससे बहरापन, चिड़चिड़ापन और दिल संबंधी बीमारियाँ पैदा होती है।

प्र.5. जनसंख्या नियंत्रण के कोई दो उपाय लिखिए –

उ. जनसंख्या–वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं को देखते हुए इसे नियंत्रित करने के लिए सरकार तथा स्वयं सेवी संगठनों द्वारा कई वैज्ञानिक तथा सामाजिक उपाय किए गए हैं। वे उपाय निम्नलिखित हैं –

1. **जनसंख्या शिक्षा** :– इस कार्यक्रम को सरकार तथा स्वयं सेवी संगठन दोनों अपने–अपने स्तर पर चलाते हैं। इसके माध्यम से लोगों को बढ़ती हुई जनसंख्या, उसके दुष्प्रभावों, खान–पान संबंधी गड़बड़ियों, बीमारियों, विवाह योग्य सही उम्र आदि की जानकारी दी जाती है। जनसंख्या शिक्षा से भविष्य में उत्पन्न होने वाले खतरों को टाला जा सकता है। लोगों को जागरूक बनाकर उनमें फैली भ्रांत धारणाओं को तथा जनसंख्या–वृद्धि को कम किया जा सकता है।

2. **महिला शिक्षा** :– महिलाओं के शिक्षित न होने से वे जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभावों से अवगत नहीं होतीं और अपने खान–पान पर सही ढंग से ध्यान नहीं दे पातीं। जनसंख्या नियंत्रण के उपायों की सही जानकारी उन्हें नहीं मिल पाती और वे जनसंख्या नियंत्रण में योगदान नहीं दे पातीं। पढ़ी–लिखी महिलाएँ जनसंख्या नियंत्रण के प्रति काफी जागरूक हैं। केरल में महिलाओं का शिक्षा स्तर अधिक है इसीलिए वहाँ जनसंख्या वृद्धि कम है। और उत्तर प्रदेश में महिलआों का शिक्षा स्तर कम होने से वहाँ जनसंख्या वृद्धि की दर अधिक है। इस तरह जब महिलाएँ शिक्षित होंगी तो अपने और बच्चे के भविष्य, स्वास्थ्य तथा पोषण के बारे में जागरूक होगी और जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण होगा।

अर्थ स्पष्ट कीजिए :–

1. **ओजोन परत** :– ओजोन एक स्वतः उत्पन्न होने वाली गैस है, जो पृथ्वी के चारों ओर सुरक्षा कवच या छतरी के रूप में मौजूद है।
2. **जन्मदर** :– प्रतिवर्ष प्रति हजार व्यक्ति पर पैदा होने वाले जीवित बच्चों की संख्या को जन्मदर कहते हैं।
3. **मृत्युदर** :– प्रतिवर्ष प्रति हजार व्यक्ति पर मृत व्यक्तियों की संख्या को मृत्युदर कहते हैं।
4. **ग्रीन हाऊस गैसें** :– कार्बन डाई–आक्साइड, मीथेन, नाइट्रस आक्साइड, क्लोरोफ्लोरों कार्बन तथा ओजोन इन पाँच गैसों को ग्रीन हाऊस गैसें कहते हैं।

37. कंप्यूटर और हिंदी

37.1. पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. कंप्यूटर एक मशीन है जो दिए गए निर्देशों का क्रमशः पालन करती है। कंप्यूटर तेजी से गणना कर शुद्ध परिणाम निकालने में सक्षम है। यह बड़े–से–बड़े आँकड़ों की गणना कम–से–कम समय में कर सकता है।
2. कंप्यूटर जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। बैकों में, दुकानों पर, व्यापार, फिल्म उद्योग, फोटोग्राफी, रंगीन चित्र निर्माण, अखबार पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन, बिजली का बिल, पानी–टेलीफोन का बिल आदि से जुडे सभी कार्य कंप्यूटर द्वारा सरलता से नियोजित हो जाते हैं।
3. सामग्री में जोड़–घटाव, संपादन, बदलाव आदि अनेक सुविधाएँ उपलब्ध होने के कारण कंप्यूटर पर कार्य करना आसान है।
4. कंप्यूटर पर समाचार पत्र–पत्रिकाएँ, शादी के कार्ड, विजिटिंग कार्ड, तरह–तरह के पैफ्लेट, विज्ञापन आदि डी.टी.पी. में पेजमेकर द्वारा आसानी से बनाए जा सकते हैं।
5. कंप्यूटर के वे भाग जिन्हें हम छू सकते हैं हार्डवेयर कहलाते हैं, जैसे – की–बोर्ड, प्रिंटर, हार्ड डिस्क में मदर बोर्ड आदि। कंप्यूटर के वे भाग जो कंप्यूटर के संचालन में प्रतिभागी होते हैं, उन्हें हम प्रोग्राम कहते हैं। ये प्रोग्राम ही सॉफ्टवेयर कहलाते हैं।
6. अंग्रेजी और हिंदी में ही नहीं भारत की अनेक भारतीय भाषाओं में आसानी से कार्य किया जा सकता है।
7. 'इस्की' नामक कोड प्रणाली द्वारा सभी भारतीय भाषाओं में आसानी से कार्य किया जा सकता है।
8. भारत ने सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में परम 10,000 सूपर कंप्यूटर का निर्माण कर विश्व में अग्रणी स्थान प्राप्त कर लिया है।
9. हिंदी भाषा में कंप्यूटर पर कार्य करने के लिए कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं, जैसे – आई. एस. एम. अक्षर फॉर विंडोज़, प्रकाशक, श्रीलिपि, आकृति, विंकी, ए. पी. एस. सुविंडोज़ आदि।
10. लिनोटाइप हल पैकेज के ओरिब्सा की सहायता से अरबी–फारसी और उर्दू में भी कंप्यूटर में कार्य किया जा सकता है।
11. इंटरनेट पर हिंदी में वेब दुनिया, नेटजाल, रेडिफ डॉट काम नामक साइट्स उपलब्ध है जिनकी सहायता से हिंदी भाषा में विश्व स्तर पर सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती है, अनुभूति, अभिव्यक्ति डॉट बॉय जैसी पत्र–पत्रिकाएँ पढ़ी जा सकती हैं, किसी भी प्रकार के ग्रीटिंग कार्ड भेजे जा सकते हैं जो ई–पत्र, ई–कार्ड के नाम से विख्यात हैं।
12. भविष्य में भारतीय भाषाओं के लिए चुनौतियाँ –
    - हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के प्रमुख ग्रंथ सी. डी. के रूप में उपलब्ध हों।
    - अधिक–से–अधिक ई–पुस्तकों का निर्माण

- अधिक–से–अधिक वेब ठिकानों का निर्माण
- पूर्णतः स्वचालित अनुवाद प्रणाली का निर्माण
- आवाज/उच्चारण को पहचानने वाले कंप्यूटरों का निर्माण

37.2. प्रश्न–उत्तर

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. कंप्यूटर की विशेषताएँ बताइए।

उ. कंप्यूटर अपनी विशिष्टताओं के कारण अनेक क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध हो चुका है। कंप्यूटर अपनी तीव्रगति, शुद्धता, यथार्थता, अपार सूचनाओं तथा आँकड़ों के स्मृति–भंडारण की विशेषताओं के कारण किसी भी कार्य को पूर्ण समर्थता के साथ संपन्न करता है। यह कभी थकता नहीं है, रात– दिन घंटों तक काम कर सकता है, बड़े से बड़ा और जटिल से जटिल कार्य यह सरलता के साथ कर सकता है। यह मानव के समान प्रत्येक कार्य करने में सक्षम है। परंतु यह एक मशीन होने के कारण भावनाहीन है, इसके पास न ज्ञान है, न अनुभव। किसी भी प्रयोक्ता से यह भेदभाव नहीं करता है। यह तो मात्र मानव द्वारा दिए गए निर्देशों का क्रमशः पालन करता चला जाता है। इसकी प्रमुख विशेषता है कि यह अपार आँकड़े याद रख सकता है और आवश्यकता जाहिर करने पर आपको विविध प्रकार की सूचनाएँ उपलब्ध भी करा सकता है। इसके द्वारा पाई–चार्ट या ग्राफ आदि के रूप में आँकड़ों को प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्र.2. हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर में अंतर स्पष्ट कीजिए :–

उ. **हार्डवेयर** :– कंप्यूटर तथा कंप्यूटर से जुड़े अन्य सभी यंत्रों को हार्डवेयर कहते हैं। इसमें कंप्यूटर के चारों खंड–केंद्रीय संसाधन एकक, आंतरिक स्मृति, बाह्य स्मृति, निवेश और निर्गम एकक। सभी प्रकार के निवेश या निर्गम युक्तियाँ जैसे कुंजी पटल, प्रिंटर आदि। सभी प्रकार की स्मृति– युक्तियाँ, टेपरिकार्डर, डिस्क ड्राइव, फ्लोपी, काम्पेक्ट डिस्क, पेन ड्राइव, मोडेम आदि आते हैं। कंप्यूटर के वे भाग जिन्हें हम छू सकते है हार्डवेयर कहलाते हैं। जैसे :– की–बोर्ड, प्रिंटर, हार्ड डिस्क में मदर बोर्ड आदि।

सॉफ्टवेयर :– कंप्यूटर के वे भाग जो कंप्यूटर के संचालन में प्रतिभागी होते हैं, उन्हें हम प्रोग्राम कहते हैं। ये प्रोग्राम ही सॉफ्टवेयर कहलाते हैं। सॉफ्टवेयर पाँच प्रकार के होते हैं – प्रचालक, भाषा संसाधक, उपयोगिता प्रोग्राम, उपनित्य क्रम और नित्य क्रम। कंप्यूटर का उपयोग करने के लिए कंप्यूटर सॉफ्टवेयर को कार्य और क्षेत्र के अनुसार बनाया जाता है, फिर उन्हें कंप्यूटर में प्रतिस्थापित करके उनका उपयोग किया जाता है।

प्र.3. कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के लिए कौन–कौन से सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं?

उ. भारतीय भाषाओं में काम करने वाले सॉफ्टवेयरों के विकास से सबसे अधिक क्रांति सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आई है। इन भाषाओं में सबसे पहले हिंदी भाषा में काम करने वाले सॉफ्टवेयर विकसित किए गए। भारत में पहली और एक मात्र कंप्यूटर संचालित हिंदी प्रणाली और इसके डाटा–विकास का कार्य आई.बी.एम. ने किया है। इसके पश्चात 1998 में भारत की दो सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर कंपनियों एम.ए.आई और एन.आई.एस.सी.ओ.एम. ने क्षेत्रीय भाषा में कंप्यूटर प्रणाली विकसित करने का कार्य आरंभ किया। इसके अतिरिक्त सी–डैक, सॉफ्टेक, सोनाटा, साइरस, ए.सी.ई.एस.एस.आर. जी.वी.सोफ्ट, आर.के. कंप्यूटर्स नामक कंपनियों ने आई. एस.एम. अक्षर फॉर विंडोज, प्रकाशक, श्रीलिपि, आकृति, विंकी, ए.पी.एस. सुविंडोस, आई.एस.एम नामक सॉफ्टवेयर तैयार किए हैं जो अंग्रेजी और हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी काम करते हैं। इन सभी का प्रयोग एम.एस.वर्ड और एक्सल, पावर पॉइंट के वातावरण में कार्य करने के लिए किया जाता है।

अर्थ स्पष्ट कीजिए :–

1. **लैप टॉप कंप्यूटर** :– वह निजी कंप्यूटर जो हल्के और शक्तिशाली होते हैं। इनके लिए किसी टेबल की जरूरत नहीं होती। इन्हें गोदी में रखकर भी काम किया जा सकता है। अतः ये गोरी कंप्यूटर भी कहलाते हैं।
2. **माऊस** :– निवेशित डिवाइस जो चपटी सतह पर घुमाने से दृश्य पटल पर कर्सर की गतिविधि को नियंत्रित करता है।
3. **हार्डवेयर** :– कंप्यूटर के वे भाग जिन्हें हम छू सकते हैं, हार्डवेयर कहलाते हैं। जैसे की–बोर्ड, प्रिंटर, हार्ड डिस्क, मदर बोर्ड आदि।
4. **फॉंट** :– किसी टाइपफेस अक्षरों का आकार तथा प्रकार
5. **कर्सर** :– कंप्यूटर दृश्य पटल पर उभरा वह चिह्न जो वहाँ लपछप करता है जहाँ अगला डाटा निर्विष्ट करना है।
6. **ई–मेल** :– कोई सूचना जैसे :– संदेश, ज्ञापन, पत्र आदि जो कंप्यूटर तंत्र द्वारा दूसरे व्यक्ति या संस्था को पहुँचाना है। यह कंप्यूटर के प्रयोग से पत्र व्यवहार है। जहाँ दोनों के पास एक e-mail पता होता है।

38. विज्ञान की भाषा

पाठ के स्मरणीय बिन्दु

1. भाषा और ज्ञान परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। भाषा के बिना ज्ञान प्राप्ति तथा ज्ञान के बिना भाषा का सही प्रयोग असंभव है।

सामान्य भाषा	विज्ञान की भाषा
1. सृजनशील पुनरुक्ति युक्त, संदिग्ध और कल्पना पर आधारित, व्यक्तिनिष्ठ अभिव्यक्ति	1. प्रमाणसिद्ध, संक्षिप्त, तर्क पर आधारित, संदिग्धता रहित, अभिव्यक्ति, वस्तुनिष्ठ अभिव्यक्ति
2. पर्यायचाची शब्द, श्लेष–उपमा आदि अलंकारों से युक्त, विस्तृत कथन	2. पारिभाषिक शब्द से युक्त, सूत्रबद्ध भाषा
3. बोलचाल पर आधारित ताकिया–कलाम का प्रयोग, बात से बात निकलना, वक्ता या पाठक का ध्यान आकृष्ट करने की उक्तियाँ।	3. तालिका, आरेख (प्रवाह, रेखीय....) आदि संप्रेषण के शक्तिशाली माध्यम

2. अन्य विषय–क्षेत्रों की भाषा, विज्ञान की भाषा से पूर्णतया भिन्न है। विज्ञान की भाषा, पारिभाषिक तथा तकनीकी शब्दावली से युक्त होती है। तार्किकता, संक्षिप्तता, तथ्यात्मकता, दोहाराव से मुक्त होना, उदाहरणों से पुष्ट होना, इसकी विशेषता है।
3. विज्ञान की भाषाा साहित्यिक और सामान्य भाषा से भिन्न होती है। इसमें सार्वभौमिकता और कथनात्मकता का गुण प्रमुख रूप से होता है।
4. वाक्य–संरचना सरल, स्पष्ट और मुख्यतः कार्य–कारण संबंध पर आधारित होती है।
5. इसमें सूत्रों, संकेतों और प्रतीक चिह्नों का आवश्यकतानुसार भरपूर प्रयोग होता है जिससे स्पष्टता और संक्षिप्तता आ जाती है।
6. विज्ञान में संभावनाओं, अंधविश्वासों और रूढ़ियों का कोई स्थान नहीं होता। अतः विज्ञान की भाषा में 'माना जाए तो....', हो सकता है..., 'यदि संभव हो ....', जैसे वाक्यांशों का प्रयोग भी नहीं होता।
7. पारिभाषिक शब्दावली, संकल्पनात्मक शब्दावली के प्रयोग से विज्ञान की भाषा स्पष्ट और संक्षिप्त बनती है।
8. विज्ञान के क्षेत्र में निश्चित अवधारणा के लिए सुनिश्चित शब्दावली प्रयुक्त होती है जिससे सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथ्यों को अलग किया जाता है। जैसे हृदय से रक्त शरीर के विभिन्न अंगों तक पहुँचाने वाली नलिका 'धमनी' कहलाती है और पूरे शरीर से हृदय तक पहुँचाने वाली नलिका 'शिरा' कहलाती है।

9. कुछ ऐसे मूल शब्द भी हैं, जो विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञानेतर विषयों में संदर्भ के अनुसार अलग–अलग अर्थ देते हैं जैसे 'घन' शब्द हिंदी भाषा के सामान्य प्रयोग में बादल कहलाता है, परंतु गणित के क्षेत्र में जाकर यह n^3 (किसी संख्या पर तीन की घात) हो जाता है। किसी वस्तु की लंबाई–चौड़ाई और ऊँचाई का गुणन 'घन' कहलाता है।
10. विज्ञान में शब्दों का चयन सोच–समझकर किया जाता है जिससे उससे जुड़े अन्य संबंधित शब्द भी निर्मित किए जा सकें।
11. विज्ञान विषयों में तालिका, सारणी, आरेख, प्रवाह चार्ट या रेखांचित्र का भरपूर प्रयोग किया जा सकता है इससे सूचनाओं को स्पष्ट रूप में क्रमानुसार समझा जा सकता है।

38.2. प्रश्न–उत्तर

8 अंक के प्रश्न

प्र.1. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना कब हुई? उसके प्रमुख सिद्धांत क्या है?

उ. राष्ट्रपति के आदेशानुसार शिक्षा मंत्रालय ने अक्तूबर 1961 में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग की स्थापना की। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक और शब्दों के प्रयोग और शब्दावली निर्माण संबंधी नियम निर्धारित किए जो इस प्रकार है –

1. अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए।
2. प्रतीक, रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएँगे परंतु संक्षिप्त रूप विशेषतः साधारण नाप और तौल नागरी और मानक दोनों रूप में भी, लिखे जा सकते हैं।
3. देशज शब्द जो सामान्य प्रयोग के वैज्ञानिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे टेलीग्राम के लिए 'तार' आदि, ये सभी प्रचलित रूप में प्रयोग किये जाने चाहिए।
4. अंग्रेजी, पुर्तगाली आदि अन्य भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं जैसे – टिकट, सिगनल आदि इसी रूप में अपनाए जाना चाहिए।
5. संकर शब्द :– पारिभाषिक शब्दावली में संकर शब्द जैसे – guaranted गारंटित, classics के लिए 'क्लासिकी' आदि के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय प्रक्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं तथा सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।

प्र.2. विज्ञान की भाषा की विशेषताएँ बताइए।

उ. विज्ञान की भाषा की कई विशेषताएँ हैं। जैसे – विज्ञान की भाषा सुनिश्चित, स्पष्ट और सुबोध होती है। वैज्ञानिक अपनी बात को सरल भाषा में तर्कपूर्ण ढंग से कहता है। वह वाक्यों के

दुहराव, अनावश्यक विस्तार और क्लिष्ट शब्द–जाल से बचता है। सहजता, सरलता स्पष्टता और सीधे–सीधे बात को कहना, वैज्ञानिक भाषा का गुण है। विज्ञान की भाषा में 'जहाँ तक हो सके', 'माना जाए तो .....' कभी–कभी ..... जैसे शब्दों के लिए कोई स्थान नहीं होता अर्थात इसका स्वरूप ऐसा होता है जिसमें सब कुछ निश्चित होता है। विज्ञान के हर कार्य के पीछे कोई–न–कोई कारण अवश्य होता है, तर्क अवश्य होता है। इसी कारण विज्ञान की भाषा तार्किक होती है। विज्ञान की भाषा में लघु रूप में तथ्यों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाता है। सूत्रबद्ध रूप से प्रक्रियाओं का वर्णन भी विज्ञान की भाषा की विशेषता है।

वैज्ञानिक शब्दावली का रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय प्रक्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं तथा सुबोधता उपयोगिता और संदीप्तता का ध्यान रखते हुए, व्यवहार में लाना चाहिए।

अर्थ स्पष्ट कीजिए

1. **संकर** :– पारिभाषिक शब्दावली में संकर शब्द सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय प्रक्रिया के अनुसार बनाए गए हैं।
2. **बेकिंग सोडा** :– सोडियम बाई कार्बोनेट $NaHCo_3$ यह पाउडर केक तथा ENO बनाने के काम आता है।
3. **फास्फोरस** :– इसका दियासलाई के बनाने में उपयोग होता है।
4. **आरेख** :– वह रक्षा समूह जो किसी कथन, स्थान या आँकड़ों को निरूपित करें।